उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

BLIS-104
पुस्तकालय वर्गीकरण
प्रायोगिक

खण्ड
1
डी0डी0सी0 (19वां संस्करण): भाग-1

इकाई -1 5
डी०डी०सी० का क्रम विकास एवं संरचना

इकाई -2 27
वर्ग संख्या निर्माण की सरल विधि एवं योजक युक्ति (Add device) का प्रयोग

इकाई -3 40
सारणी-1 मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) का प्रयोग

विशेषज्ञ समिति - पाठ्यक्रम अभिकल्पन

डॉ0 पाण्डेय एस0 के0 शर्मा	अवकाश प्राप्त मुख्य ग्रंथालयी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली,
डॉ0 ए0 पी0 गक्खर	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला0
डॉ0 यू0 सी0 शर्मा	एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
डॉ0 सोनल सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.
डॉ0 ए0 पी0 सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0संजीव सर्राफ	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0 टी0एन0 दुबे (सदस्य सचिव)	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0प्र0रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक मण्डल

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री आर0 जे0 मौर्य	सहायक ग्रन्थालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री राजेश गौतम	प्रवक्ता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 मांगेराम	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,

परिमापक

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के स्वयं के हैं।

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज - 2024
ISBN -

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नही है।

प्रकाशक- उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से विनय कुमार, कुलसचिव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित वर्ष - 2024.

मुद्रक - के0 सी0 प्रिंटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स , पंचवटी , मथुरा - 281003.

खण्ड-1- : डी.डी.सी. (19वाँ संस्करण) : भाग-1

प्रस्तावना

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान के वर्गीकरण क्षेत्र में सर्वाधिक प्रचलित ड्यूई दशमलव वर्गीकरण पद्धति (डी.डी.सी.) का प्रथम संस्करण 44 पृष्ठों में सन् 1876 में प्रकाशित हुआ था। तब से ही यह पद्धति निरन्तर विकसित होती चली गई। एक शताब्दी से भी अधिक अन्तराल के पश्चात इसका 19वाँ संस्करण, जो आपके पाठ्यक्रम में हैं, सन 1979 में तीन खण्डों में (3361 पृष्ठों में) प्रकाशित हुआ।

प्रस्तुत खण्ड तीन इकाइयों में निम्नवत् विभक्त किया गया है:-

इकाई-1 डी.डी.सी. का क्रम विकास एवं संरचना :- इस इकाई के अन्तर्गत आप डी.डी.सी. की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास के साथ ही इसके तीनों खण्डों - प्रस्तावना एवं सारणियों (Introduction and Tables), अनुसूचियाँ (Schedules) तथा सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)से परिचित होंगे।

इकाई-2 वर्ग संख्या निर्माण की सरल विधि एवं योजक युक्ति - इस इकाई के अन्तर्गत डी.डी.सी. में प्रयुक्त तीनों योजकविधियों (आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग, निर्देशित आधार संख्या के साथ अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग एवं योजक चिन्ह तारांकित की सहायता से विषयों का वर्गीकरण) से आप सुपरिचित होंगें। इस इकाई के अन्तर्गत अग्रताक्रम तालिका (Table of precedence) का भी उल्लेख किया गया है।

इकाई-3 सारणी-1 मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) का प्रयोग :- इस इकाई के अन्तर्गत डी.डी.सी. में प्रयुक्त मानक उपविभाज़नों से सुपरिचित कराया गया है। इसमें निर्देशित तथा अनिर्देशित अवस्था में मानक उपविभाजनों के प्रयोग सम्बन्धी नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। मानक उपविभाजनों की सहायता से सारणी 2, 5 एवं 7 के अंकनों को जोड़ने के तरीकों को भी सोदाहरण समझाया गया है।

इकाई–1 – डी.डी.सी. का क्रम, विकास एवं संरचना

1.0 प्रस्तावना

1.1 उद्देश्य

1.2 डी.डी.सी. की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास

1.3. डी.डी.सी. (19वाँ संस्करण) का परिचय

1.3.1 खण्ड-1 - प्रस्तावना एवं सारणियाँ (Introduction and Tables)

1.3.2 खण्ड-2 - अनुसूचियाँ (Schedules)

1.3.2.1 पदानुक्रम

1.3.2.4 अप्रयुक्त प्रविष्टियां

1.3.2.3 वर्ग संख्या लेखन विधि

1.3.3 खण्ड-3 सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index)

1.4 टिप्पणियां

1.5 विशेषताएं-

1.6 सारांश

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.8 हल रहित प्रश्न

1.9 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1.0. प्रस्तावना

विशेष रूप से वर्गीकरण का उद्देश्य एक समान वस्तुओं को एक जगह लाना और असमान वस्तुओं को अलग करना होता है। वर्गीकरण कोई नई प्रणाली नहीं है। हम अपने दैनिक जीवन में भी वर्गीकरण करते ही रहते है। वर्गीकरण का महत्व पुस्तकालयों में पाठय सामग्री के स्थान निर्धारण एवं अवलोकन के लिए और बढ़ जाता है। बिना वर्गीकरण के पुस्तकों का विषयानुसार निर्धारण करना एक कठिन कार्य है। पुस्तक वर्गीकरण हेतु संसार में बहुत सी मानक वर्गीकरण प्रणालियां उपलब्ध है जैसे डी.डी.सी. (ड्यूई डेसिमल क्लासिफिकेशन), एल.सी. सी (लाइब्रेरी ऑफ कॉंग्रेस क्लासिफिकेशन), यू.डी.सी. (यूनिवर्सल डेसिमल

क्लासिफिकेशन), बी.सी0 (बिबलयोग्राफिक क्लासिफिकेशन), तथा सी.सी. (कोलन क्लासिफिकेशन)। इन सभी प्रणालियों में डी.डी.सी. सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रसिद्ध प्रणाली है। यह प्रणाली अमेरिका में मेल्विल ड्यूई ने सन 1873 में प्रतिपादित की थी और यह प्रणाली सर्वप्रथम 1876 में प्रकाशित हुई। इस पद्धति के अब तक 22 संस्करण निकल चुकें हैं। पहली बार 1876 मे इसके संस्करण की 1000 कापियां बनी जिसमें 44 पृष्ठ थे। तत्समय इसकी आख्या में ड्यूई नाम प्रकाशित नहीं हुआ था। डीडीसी विभिन्न आकारों में प्रकाशित हो चुका है। यह 15 वें संस्करण तक एक ही खण्ड में प्रकाशित होता रहा है। इसका 16वां संस्करण दो खण्डों में सन 1958 में प्रकाशित हुआ और 18 वां संस्करण 1971 में तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ। वर्तमान में डीडीसी पद्धति 22वाँ संस्करण चार खण्डों में प्रकाशित है। इसके इलैक्ट्रोनिक संस्करण को बेव ड्यूई (Web Dewey) के नाम से जाना जाता है जो ऑनलाईन उपलब्ध है। इस इकाई में हम 19वें संस्करण पर ही चर्चा करेंगे।

1.1. उद्देश्य

इस इकाई में आप डीडीसी (ड्यूई डेसिमल क्लासिफिकेशन) 19वें संस्करण के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इसके तीनों खण्डों- सारणियों, अनुसूचियां तथा सापेक्षिक अनुक्रमाणिका की भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इस इकाई में आप दशमलव वर्गीकरण प्रणाली की मूल योजना, अंकन व्यवस्था और प्रमुख विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। इसके अलावा दशमलव प्रणाली को प्रयोग करने के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

बोध प्रश्न

1 ड्यूई डेसिमल क्लैसीफिकेशन किसने प्रतिपादित किया।

----

2. डीडीसी का पहला संस्करण कब आया।

----

3. डीडीसी का 19वां संस्करण कब व कितने खण्डों में प्रकाशित हुआ।

1.2. डी.डी.सी. की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं विकास (Historical Background and Development of DDC)

दशमलव वर्गीकरण पद्धति की रचना कोई एक दिन का प्रयास नहीं है। मेलविल ड्यूवी ने इसे प्रारम्भ करने से पूर्व भ्रमण कर अनेक ग्रंथालयों और सूचना केन्द्रों का अवलोकन किया तथा इस बात की आवश्यकता महसूस की कि पुस्तकालय में पुस्तकों का व्यवस्थापन विषयानुसार अधिक सुविधाजनक सिद्ध हो सकता है। इस सम्बन्ध में उन्होंने विभिन्न विद्वानों से सुझाव प्राप्त कर लगभग 6-7 माह तक प्रचलित विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों का गहन अध्ययन किया। ड्यूवी ने इस पद्धति की रचना 1873 में प्रारम्भ कर दी थी तथा 1873-76 तक परीक्षण के तौर पर इसे अमर्हस्ट कालेज में प्रयोग किया। परीक्षण में सफलता प्राप्त होने के फलस्वरूप इसका प्रथम संस्करण 1876 में ग्रंथालयों में ग्रंथों एवं पुस्तिकाओं को कमबद्ध और सूचीबद्ध करने के लिए वर्गीकरण और विषयानुक्रमणिका (A classification and subject index for cataloguing and arranging the books and pamphlets of a library) शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। इस संस्करण के आख्या पृष्ठ (title page) पर ड्यूवी का नाम नहीं था तथा यह संस्करण कुल 44 पेजों में प्रकाशित हुआ जिसमें से 12 पृष्ठ की भूमिका, 12 पृष्ठों की अनुसूची एवं 18 पृष्ठों की अनुक्रमणिका तथा 2 पृष्ठों में स्पष्टीकरण दिये गये थे। अभी तक इस पद्धति के कुल 22 संस्करण प्रकाशित हो चुके है समस्त संस्करणों के विकास कम को निम्नांकित किया गया है:-

डीडीसी का कमिक विकास

संस्करण	प्रकाशन वर्ष	पृष्ठों की संख्या भूमिका	अनुसूची	अनुकमणिका	स्पष्टीकरण	कुल पृष्ठों की संख्या
1	1876	12	12	18	1	44
2	1885	66	162	86		314
3	1888	4	227	185		416
4	1891	41	234	191		466
5	1894	41	235	191		467
6	1899	41	260	210		511
7	1911	48	420	324		792
8	1913	48	462	340		850
9	1915	48	465	342		856

10	1919	48	517	374	940
11	1922	61	551	376	988
12	1927	67	683	491	1243
13	1932	75	902	670	1647
14	1942	80	1048	799	1927
15	1951	55	459	192	716
15.Rev	1952	56	469	402	927
16	1958] 2v.	121	1314	1004	2439
17	1965-67] 2v	158	1382	940	2480
18	1971] 3v.	460	1627	2692	4779
19	1979] 3v.	482	1574	1217	3273
20	1989] 4v.	514	944-864	961	3183
21	1996] 4 v.				4126
22	2003] 4 v.	731	1250-1074	927	3982

प्रारम्भ में ग्रन्थालयी द्वारा निधानियों पर पुस्तकों को व्यवस्थित करने के लिए नियत स्थान का प्रयोग किया जाता था। पुस्तकालयों में पुस्तकों का व्यवस्थापन विषयानुसार था किन्तु एक विशिष्ट या मुख्य विषय को निर्दिष्ट करने के लिए निधानी पर परिग्रहण संख्या से व्यवस्थित किया जाता था। प्रत्येक ग्रंथ को शेल्फ पर निश्चित स्थान को निर्दिष्ट करने के लिए एक शेल्फ मार्कर निर्धारित कर दिया जाता था। बाद में प्रकाशित या आने वाले नये संस्करण को विषय के अन्त में स्थान प्रदान किया जाता था। इसके बाद पुस्तकों के निधानी व्यवस्थापन में एक नया मोड़ आया जिसके फलस्वरूप डा0 ड्यूवी के अन्दर एक विचार उत्पन्न हुआ जो नियत स्थान के विरोध में था। इसे सापेक्ष स्थिति कहा गया। इस प्रकार का विचार उत्पन्न करने वाले ड्यूवी प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने पुस्तकों के वर्गीकरण में दशमलव अंक को निर्दिष्ट किया न कि निधानी को। इसका परिणाम यह हुआ कि नये ग्रन्थों को सम्बन्धित विषय के साथ उचित स्थान पर अन्तर्वेशन किया जाने लगा।

उन्नीसवां संस्करण (19th edition)- डी.डी.सी. का 19वों संस्करण 1979 में प्रकाशित हुआ जो तीन खण्डों में है। उन्नीसवें संस्करण को बहुत से पुस्तकालयों ने वर्गीकरण का आधार बनाया है। इसके प्रथम खण्ड में भूमिका, सारणी (Introduction table), द्वितीय खण्ड में अनुसूची (schedule) तथा तृतीय खण्ड सापेक्ष अनुक्रमणिका (relative index) है। आपने अपनी पद्धति में सिर्फ दशमलव (decimal) अंक का ही प्रयोग किया है। यही कारण है इसे दशमलव वर्गीकरण पद्धति नाम

दिया गया। आगे की इकाईयों में उन्नीसवें संस्करण का ही उल्लेख किया गया है।

1.3. डी.डी.सी. (19वाँ संस्करण) का परिचय

डी.डी.सी. का 19वां संस्करण सन् 1979 में प्रकाशित हुआ। यह बहुत से पुस्तकालयों में वर्गीकरण हेतु मुख्य आधार के रूप में प्रयोग हो रहा है। नए-नए विषय जो इस संस्करण में नहीं है, पुस्तकालय उनकी वर्ग संख्या को नये संस्करणों से ले रहे है और शेष विषयों के लिए इसको ही आधार बनाया है। यह संस्करण 3361 पृष्ठों और तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ है। इसके तीन खण्ड इस प्रकार है –

खण्ड–1 प्रस्तावना, सारणियां

खण्ड–2 अनुसूचियां

खण्ड–3 सापेक्ष अनुक्रमणिका

1.3.1 खण्ड–1 – प्रस्तावना एवं सारणियां : (Introduction and Tables)

डी.डी.सी. में सात सहायक सारणियां दी गई है। प्रस्तावना में डी.डी.सी. का संक्षिप्त परिचय दिया गया है, तथा 19वें संस्करण के विशेष लक्षणों एवं विशेषताओं का वर्णन किया गया है। यह खण्ड डी.डी.सी. के 19 वें संस्करण के बारे में पूरी जानकारी देता है हालांकि इसकी पृष्ठ संख्या कम है। प्रस्तावना के बाद इसमें सात सहायक सारणियां इस प्रकार दी गई है :-

अ. मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions)

यह सारणी स्वतंत्र रूप से प्रयोग होने वाली सारणी है अर्थात इनको प्रयोग करने के लिए निर्देश की आवश्यकता नहीं होती। इस सारणी के अंकनों को कभी अकेले प्रयुक्त नहीं किया जाता। प्रत्येक अंकन डैश (-) के साथ दिये गये हैं, विशिष्ट विषय के साथ जोड़ने पर डैश (-) स्वत: ही समाप्त हो जाता है।

ब. भौगोलिक क्षेत्र (Areas)

इस सारणी का प्रयोग अनुसूची में निर्देश दिये जाने पर एवं अनिर्देशिता अवस्था में भी प्रयोग किये जाने का प्रावधान है। इस सारणी के अंकन भी डैस (-)के साथ दिये गये हैं और वे अकेले प्रयुक्त नहीं होते। द्वितीय सारणी

के अंकन किसी विशिष्ट विषय के साथ जोड़कर विषय की भौगोलिक विशेषता को स्पष्ट करते है।

स. **साहित्य-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of individual literatures)**

तृतीय सारणी में विशिष्ट साहित्य के रूपों को दिया गया है तथा इस सारणी का प्रयोग मुख्य वर्ग साहित्य के 810-890 में सिर्फ उन्ही अंकनों के साथ होगा जिन्हें तारांकित किया गया है। यह साहित्य की पूरक सारणी है। जिसका प्रयोग अकेले नहीं होता। तृतीय सारणी को विस्तार कर सारणी 3ए भी दी गयी है जिससे सारणी 3 में वर्गांक बनाने के लिए अतिरिक्त तथ्यों को भी संश्लेषित किया जा सकता है।

द. **भाषा-विशेष के उपविभाजन (Subdivisions of Individual languages)**

इस सारणी को प्रथम खण्ड में पृष्ठ 404-407 तक वर्णित किया गया है। ये भाषा विषयक उपविभाजन होते हैं। इस सारणी का प्रयोग केवल मुख्य वर्ग 400 भाषा के साथ ही किया जाता है। इनको उन्ही अंकन के साथ जोडा जाता है जिन अंकन को तारांकित किया गया है। चतुर्थ सारणी के अंकन भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं हाते अत: इनका प्रयोग भी अकेले नहीं किया जाता। इन्हें मख्य वर्ग 420-490 में वर्णित एवं तारांकित वर्गांक के साथ ही जोड़ कर पूर्ण वर्गांक बनाया जाता है।

य. **प्रजातीय, मानववंशीय एवं राष्ट्रीय समूह (Racial, ethenic, national groups)**

इस इकाई में विशिष्ट विषयों के साथ प्रजातीय, मानव वंशीय एवं राष्ट्रीय समूह से सम्बन्धित शीर्षकों को नियमों सहित उदाहरण देकर समझाया गया है। सारणी 5 के साथ भौगोलिक क्षेत्र सारणी-2 के प्रयोग से सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। इस सारणी का प्रयोग निर्देशित एवं अनिर्देशित दोनों ही अवस्थाओं में किया जा सकता हें

र. **भाषाएं (Languages)**

प्रथम खण्ड की छंठवीं सारणी में विश्व की अधिकांश भाषाओं को पृष्ठ 418-431 पर वर्णित किया गया है। अन्य सारणियों की भांति यह सारणी भी पूर्ण वर्गांक प्रदान नहीं करती अर्थात इसका प्रयोग भी कभी अकेले नहीं

किया जाता । इस सारणी को विशिष्ट एकल की सारणी कहा जाता है क्योंकि इनका प्रयोग बिना निर्देश के कभी नहीं किया जा सकता।

ल. **व्यक्ति (Persons)**

इस सारणी के अंकनों को अकेले प्रयक्त नहीं किया जाता है। इस सारणी इकाई में विशिष्ट विषय से सम्बन्धित, धर्म से सम्बन्धित, व्यवसाय एवं लिंग से सम्बन्धित व्यक्तियों पर आधारित शीर्षकों को वर्गीकृत करने के नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। इस इकाई में द्वितीय एवं तृतीय सारणी के साथ सातवीं सारणी के प्रयोग एवं प्रथम सारणी के अंकन –024 एवं –088 के माध्यम से सातवीं सारणी के प्रयोग से सम्बन्धित नियमों को भी उदाहरण सहित समझाया गया है।

इन सारणियों का अलग अलग पूरा विवरण विस्तार से अलग इकाइयों में दिया गया है।

1.3.2 खण्ड–2 – अनुसूचियां (Schedules):

खण्ड दो मे अनुसूचियां दी गई हैं। ये अनुसूचियां एक संख्यात्मक क्रम 001 से 999 तक व्यवस्थित की गई हैं। अनुसूचियां विषयों के पदानुक्रम सम्बन्धों को दर्शाती है। संख्याओं के बढते क्रमबोध मान के रूप में व्यवस्थित श्रृंखलाएं दी गई है। सम्पूर्ण विषय जगत को दस भागों में बांटा गया है। इसमें दशमलव का प्रयोग किया गया है। विषयों को दस मुख्य कक्षाओं में इस प्रकार बांटा गया है।

000 जेनरेलिया (Generalities)

100 दर्शन एवं सम्बन्धित विषय (Philosophy and related disciplines)

200 धर्म (Religion)

300 सामाजिक विज्ञान (The Social Sciences)

400 भाषा (Language)

500 शुद्ध विज्ञान (Pure science)

600 प्रौद्योगिकी (अनुप्रयुक्त विज्ञान) Technology (applied sciences)

700 कलाएं (The Arts)

800 साहित्य (Literature)

1.3.2.1 पदानुक्रम -

डी.डी.सी. में पदानुक्रम का ध्यान रखा गया है। विषयों को उनकी विशिष्टता के अनुसार श्रृंखला में उतरते हुए क्रम में व्यवस्थित किया गया है। प्रथमतः डी.डी.सी. को मुख्य दस कक्षाओं में विभक्त किया गया है और फिर 100 भाग और 100 उपभागों में विभक्त किया गया है। किसी भी विषय में पूर्ण-अंश सम्बन्धों को पूरी तरह से दिखाया गया है।

उदाहरणार्थ :

700 The Arts-Fine and decorative arts

720 Architecture

725 Public Structures

725.8 Recreation Buildings

725.82 Buildings for shows and spectacles.

725.822 Theater and opera buildings

अंकन को छोटा करने की कोशिश की गई है। जैसे हम देखते है कि 574 बायोलोजी का प्रतिनिधित्व करता है। इसके उपभागों को 580 और 590 में दर्शाया गया है, इसके उपभाग हम यहां से ले सकते है स्थान-स्थान पर टिप्पणियां भी दी गई है। अंकन को छोटा करने में डी.डी.सी. अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

1.3.2.2 संख्याओं का क्रम और डी.डी.सी. का आधार

जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि डी.डी.सी. में पूर्ण ज्ञान को दस मुख्य कक्षाओं में विभक्त किया गया है। पाठकों एवं उपयोगकर्ताओं की सुविधा के लिए डी.डी.सी. में प्रत्येक पृष्ठ के दोनों उपरी कोनों पर तीन अंको की अनुभाग संख्या अंकित है जिससे उपयोगर्ता किसी भी संख्या तक आसानी से पहुंच सकते है। डी.डी.सी. में संख्याओं का आधार 10 संख्याओं का ही रखा है। उदाहरणार्थः

700 The Arts

710 Civic and landscape art

720 Architecture

730 Plastic arts sculpture

740 Drawing, decorative and minor arts

750 Painting and paintings

760 Graphic arts prints

770 Photography and photographs

780 Music

790 Recreational and performaing arts

प्रत्येक भाग में 0 से 9 तक की संख्याओं का प्रयोग किया गया है। प्रत्येक कक्षा को फिर से उपकक्षाओं में विभक्त किया गया है। जैसे कला में से 720 (architecture) इस प्रकार उपकक्षाओं में विभक्त है :-

720 Architecture

721 Architectural construction

722 Ancient and oriental architecture

723 Medical architecture

724 Modern architecture

725 Public structure

726 Buildings for religions and related purposes

727 Buildings for educational persons

728 Residential buildings

729 Design and decoration

1.3.2.3 वर्ग संख्या लेखन विधि

डी.डी.सी. में हम तीन अंकों के बाद दशमलव मानते है क्योंकि इसमें प्रयुक्त संख्याएं दशमलव भिन्न होती है। यदि किसी वर्ग संख्या में तीन से अधिक संख्याएं आती हैं तो हम उसे इस प्रकार लिखेंगे जैसे 725.8 (Recreational buildings) और 725.822 (Theatre and opera buildings). लम्बी संख्याओं की एकरसता को भंग करने के लिए और स्मृति सहाय के लिए डी.डी.सी. में तीसरे अंक के पश्चात बिन्दु लगाते है।

यद्यपि तीन अंकों के बाद लगने वाला बिन्दु गणित वाला दशमलव बिन्दु नहीं होता क्योंकि गणित में एक दशमलव भिन्न को दोबारा से विभक्त नहीं किया जा सकता। यह बिन्दु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लगाया गया है क्योंकि लम्बी संख्या को याद करना बहुत मुश्किल होता है जैसे हमें 725822 याद करने में मुश्किल होगी जब कि 725.822 में नहीं। डीडीसी में दशमलव बिन्दु को हम स्मृति सहाय के रूप में देखते है। यदि वर्ग संख्या 6 से ज्यादा नौ अंकों की होती है तो प्रत्येक तीन अंकों के बाद एक रिक्त स्थान छोडा जाता है। यह रिक्त स्थान दशमलव बिन्दु के लिए छोडा जाता है जिससे अनुसूचियां अच्छी तरह से सरलता से याद हो सके।

उदाहरणर्थ : 621.38804 को इस प्रकार लिखेंगे 621.388 04

वास्तव में यह रिक्त स्थान दशमलव बिन्दु का उद्देश्य पूरा करता है।

1.3.2.4 अप्रयुक्त प्रविष्टियां -

डीडीसी में अनुसूचियों का प्रयोग करते समय कई वर्ग संख्याओं को जो दीर्घ कोष्ठकों में दी होती हैं उनको अप्रयुक्त रखा गया है। ये अप्रयुक्त प्रविष्टियां भी कई प्रकार की होती है जैसे कुछ शुरू से ही प्रयोग में नहीं है व कुछ को किसी संस्करण में नहीं प्रयोग किया गया है आदि। इस प्रकार हम इन अप्रयुक्त प्रविष्टियों को पांच भागों में बांट सकते है।

अ- प्रारम्भ से अनावंटित संख्याएं

ब- संप्रति अनावंटित संख्याएं

स- रिक्त छोडी गई संख्याएं

द- वैकल्पिक वर्ग संख्याएं

य- पहले टिप्पणियां

अ- प्रारम्भ से अनावंटित संख्याएं -

डीडीसी में कुछ वर्ग संख्याएं ऐसी है जिन्हें 19वें संस्करण तक किसी भी संस्करण में प्रयोग में नहीं लाया गया। लेकिन अब इन प्रविष्टियों की संख्या घट रही है। क्योंकि नए-नए विषय उत्पादित होकर इनका स्थान ग्रहण करते जा रहे है।

उदाहरणर्थ

[004] (Never assigned)

[005] (Never assigned)

[008] (Never assigned)

[009] (Never assigned)

परन्तु यदि हम अब 19वें संस्करण के बाद के संस्करण देखें तो उसमें 004 को कम्प्यूटर हार्डवेयर आदि के लिए प्रयोग किया गया है।

ब- संप्रति अनावंटित संख्याएं

कुछ वर्ग संख्याएं ऐसी है जिन्हें पहले कुछ संस्करणों में प्रयोग किया गया था लेकिन अब रिक्त छोडा गया है :-

जैसे

006 (Unassigned)

Most recently used in 16th edition

[151] (Unassigned)

Most recently used in 16th edition

[244] (Unassigned)

Most recently used in 15th edition

[256] (Unassigned)

Most recently used in 14th edition

257 (Unassigned)

Most recently used in 14th edition

[426] (Unassigned)

Most recently used in 18th edition

[313] (Unassigned

Most recently used in 14th edition)

स-रिक्त छोडी गई संख्याएं

रिक्त छोडी गई वर्ग संख्याएं ऐसी है जिन्हें 19वें संस्करण में खाली छोड़ा

गया है जैसे -

[175.83] Reading commics

(Number discontinued, class in 175.8)

[610.23] Medicine as a profession or occupation

(Do not use; Class in 610.69)

[602.72] Patents

(Do not use, Class in 608)

[362. 615] Services of homes and asylums

Number discontinued; class in 362.61

द- **वैकल्पिक वर्ग संख्याएं**

कुछ वर्ग संख्याएं ऐसी है जिन्हें 19वें संस्करण में बदलकर किसी अन्य वर्ग संख्या के लिए प्रयोग में लाया गया है लेकिन पुस्तकालयध्यक्षों को छूट भी दी गई है कि उक्त पहले से प्रयोग वर्ग संख्या को रख सकते है। जैसे वैज्ञानिकों की जीवनियां 925 में रखी गई हैं लेकिन उन्हें 500 में भी प्राथमिकता दी जा सकती है। 500 संख्या के साथ 092 का प्रयोग करके भी जीवनियां बनाई जा सकती है। भौतिक वैज्ञानिक की जीवनी 530 में 092 में दी गई शर्तों के अनुसार जोड़कर बनाया जा सकता है।

य- **पहले टिप्पणियां (Formerly notes)**

कुछ वर्ग प्रविष्टियां ऐसी है जिन्हे पहले किसी अन्य वर्ग संख्या द्वारा अंकित किया गया था लेकिन अब किसी ओर वर्ग संख्या द्वारा अंकित किया गया है। जैसे

002 The Book (Formerly 001-552] पिछले संस्करण में या संस्करणों में The book के लिए 001.552 प्रयोग किया गया है जो अब 002 द्वारा अंकित किया गया है।

299.934 Theosophy [Formerly 147.212 52] यहां पर theasophy के लिए पहले दर्शन शास्त्र में 147.212 52 पर रखा गया था।

बोध प्रश्न

7. डी.डी.सी. में प्रयुक्त प्रविष्टियां कितने प्रकार की होती है।

------------- ----------------------

----

8. प्रारम्भ से अनावंटित वर्ग संख्या का उदाहरण दीजिए।

----

9. सम्प्रति अनावंटित वर्ग संख्याओं का उदाहरण दीजिए।

----

10 रिक्त छोड़ी गई वर्ग संख्या का उदाहरण दीजिए।

----

11. वैकल्पिक वर्ग संख्याओं के दो उदाहरण दीजिए।

1.3.3 खण्ड–3 – सापेक्ष अनुक्रमणिका (Relative Index) :

डी.डी.सी. 19वें संस्करण का तृतीय खण्ड सापेक्ष अनुक्रमणिका है। अनुक्रमणिका किसी भी ग्रन्थ का एक महत्वपूर्ण भाग होती है इसको हम कुंजी भी कह सकते है। वर्गीकरण प्रणाली में तो अनुक्रमणिका का स्थान और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। यह अनुक्रमणिका साधारण अनुक्रमणिका नहीं है बल्कि एक विशिष्ट सम्बन्धपरक (पदों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने वाली) एक सहायक अनुक्रमणिका है। वर्गीकरण करने वाले को इस अनुक्रमणिका से बहुत ही सहायता मिलती है।

अनुक्रमणिका पदों के मध्य सम्बन्ध एक व्यवस्थित तरीके से स्थापित कर आपसी मूल एवं पदों के मध्य एक स्वतन्त्र अभिगम भी प्रदान करती है। क्लैसीफायर ही नहीं एक सामान्य व्यक्ति भी इसकी सहायता से ज्यादातर वर्ग संख्याओं को खोज सकता है।

उदाहरणार्थ जैसे

Driving

horses

sports 798.6

other aspects see Sports

motor vehicles

soc. & econ. aspects *see* Secondary industries	
sports	796.7
misc. aspects see Sports	
technology	629.283
s.a. spec. appls. e.g. Military engineering	
Libraries	027
accounting	657.832
Community relationships	021.2
Educational institutions	021.3
Govt. control	
activities	350.852
central govts.	351.852
spec. jur.	353-354
local govts.	352.945
govts. depts. *See* Executive departments	
govts. relationships	021.8
Law	344.092
spec. jur.	344.3-.9
publications for	
bibliographies	011.67
spec. kinds	012-016
catalogs	
general	017-019
spec. kinds	012-016
reviews	028.167
Management	658
auditing	657.458
s.a. spec. kinds of enterprise e.g. Insurance accounting	
pub. admin.	350.007
armed forces	355.6
s.a. spec. mil. Branches	
central govts.	351.007

spec. jur.	353-354
local govts.	352.004 7
spec. subj.	s.s.-068
Management – contracts	
internat. management	658.18

Copper

Age	
Archaeology-	930.15
Arts	
Decorative	739.511
Other aspects see metal arts	
Chemistry	
Inorganic	546.652
Orgnaic	547.056 52
Technology	661.065 2
Organic	661.895

19वें संस्करण की अनुक्रमणिका 18 वें संस्करण के पैटर्न पर ही आधारित है। लेकिन इस संस्करण में ज्यादा Synonyms जोड़ दिये गये है। कुछ सन्दर्भ अनुक्रमणिका खत्म कर दी गई है तथा उनके स्थान पर सीधे वर्ग संख्या दे दी गई है। इस प्रकार यह अनुक्रमणिका बहुत ही उपयोगी साबित हुई है। वर्गीकरणकर्ता के सीमित ज्ञान को बढ़ाने में यह सापेक्ष अनुक्रमणिका एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। अभियांत्रिकी और विज्ञान के विषयों में, उप-विषयों में और कठिन शब्दावली की भरमार है और जरूरी नहीं कि वर्गीकरणकर्ता को सभी विषयों की पूर्ण जानकारी हो, ऐसे में सापेक्ष अनुक्रमणिका वर्गीकरणकर्ता का मार्ग दर्शन करती है।

सापेक्ष अनुक्रमणिका का प्रयोग करते समय हमें मूल विषय का ज्ञान होना चाहिए। सिर्फ आख्या देखकर या आख्या के शब्दों को देखकर ही हमें उन्हें तुरन्त सापेक्ष अनुक्रमणिका में नहीं खोजना चाहिए जैसे मुन्सी प्रेमचन्द्र की कहानियां : एक अवलोकन इस आख्या से हमें यह समझ लेना चाहिए कि यहाँ हिन्दी साहित्य की कहानी की बात हो रही है। हमें अवलोकन व मुन्सी प्रेमचन्द शब्दों की खोजने के लिए अनुक्रमणिका का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

उदाहरणार्थ Biogrpahy of Mahatma Gandhi में हमें Mahatma Gandhi

शब्द को अनुक्रमणिका में देखना उपयोगी नहीं होगा।

1.4 टिप्पणियां

डी.डी.सी. मे हम वर्ग संख्या को बिना किसी निर्देश या टिप्पणी के नहीं लिख सकते। यहां बात हो रही है जैसे 'भारत में पुस्तकालय'। पुस्तकालय (020) के साथ हम भारत की संख्या (54) सीधे नहीं जोड़ सकते। जब तक हमें कोई टिप्पणी या निर्देश न मिले। यदि कोई टिप्पणी निर्देश नहीं है तो फिर हम सहायक सारणी संख्या 1 (Standard Subdivision) में से 0954 भारत का नं0 लगा सकते है। डी.डी.सी. में स्थान-स्थान पर विभिन्न प्रकार की टिप्पणियां दी गई है। हमें इन टिप्पणियों को ध्यानपूर्वक पढ कर ही कोई वर्ग संख्या अंकित करनी चाहिए। ये विभिन्न प्रकार की टिप्पणयां जैसे -

026. **Libraries devoted to various specific disciplines and subjects.**

Add 001-999 to base number 026 e.g.,

medical libraries 026.61

340 **Law**

This schedule is completely new, prepared with little or no reference to earlier editions and assigning new meanings to most numbers. Such numbers are italicized

If preferred, class law of a specific discipline or subject with the discipline or subject using "Standard Subdivision" notation 026 from Table 1, e.g., law of education 370.26

521.6 **Theory of satellites**

.62 Of moon (Lunar theory)

.63 -.68 Of other specific satellites

Add to 521.6 the numbers following 523.4 in 523.43 -523.48, e.g., satellites of Mars 521. 3

616.891 6 **Mental therapies**

Add to 616.8916 the numbers following 615.851 in 615.8512 – 615.8516, e.g., hypnotherapy 616.89162

920.1 – 928.9 **Biography of specific classes of persons**

(Use of subdivisions identified by * is optimal; prefer specific discipline or subject using "Standard Subdivision" notation 092 from Table 1. Another option is to class individual biography in 92 or B, collected in 92 or 920 undivided)

इस प्रकार विभिन्न प्रकार के निर्देश एवं टिप्पणियां एक वर्गीकरणकर्ता को सहायता प्रदान करती है। **यहां पर डी.डी.सी. के 19वें संस्करण का केवल संक्षिप्त वर्णन दिया गया है विस्तारपूर्वक वर्णन के लिए अपने आसपास के पुस्तकालय में जाकर 19वें संस्करण का अवलोकन करें।**

1.5 विशेषताएं–

1– डी.डी.सी. 19वें संस्करण को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है।

2-- स्मृति सहाय का भी स्थान-स्थान पर ध्यान रखा गया है जैसे भौगोलिक क्षेत्र 44 को फ्रांस देश के लिए प्रयोग मे लाया गया है और फ्रांस देश के इतिहास के लिए 944। इसी प्रकार इटली के लिए 45 संख्या दी गई है और इटली के इतिहास के लिए 945। भाषाएं मे 2 और 21 अंग्रेजी के लिए 3 और 31 जर्मन के लिए और यदि हम भाषा अनुसूची मे जाएं तो अंग्रेजी के लिए 420 और यदि हम अंग्रेजी साहित्य के लिए जाये तो संख्या 820 होगी। इस प्रकार स्मृति सहाय का स्थान-स्थान पर ध्यान रखा गया है।

3– दशमलव पद्धति में तीन अंकों के बाद एक रिक्त स्थान छोड़ा गया है

4– सापेक्ष अनुक्रमणिका वर्गीकरणकर्ता के सीमित ज्ञान को बढ़ाती है।

5– डी.डी.सी. एक लचीली प्रणाली है जिसको साधारण एवं विशिष्टता के साथ प्रयोग मे लाया जा सकता है।

6– सहायक सारणियां वर्गीकरणकर्ता को वर्ग संख्या बनाने मे सहायता प्रदान करती है।

7– डी.डी.सी. मे स्थान-स्थान पर टिप्पणियां एवं निर्देश दिये गये है।

8– डी.डी.सी. को समय-समय पर एक टीम द्वारा अधतन (update) किया जाता है और अब तक इसके 22 संस्करण आ चुके है।

यहां पर डी.डी.सी. की मुख्य विशषताओं का केवल संक्षिप्त वर्णन दिया गया है।

1.6 सारांश

वर्गीकरण कोई नई प्रणाली नहीं है। हम अपने दैनिक जीवन में भी वर्गीकरण करते ही रहते है। वर्गीकरण का महत्व पुस्तकालयों में पाठय सामग्री के स्थान निर्धारण एवं अवलोकन के लिए और बढ़ जाता हे। बिना वर्गीकरण के पुस्तकों का विषयानुसार निर्धारण करना एक कठिन कार्य है। डी.डी.सी. सर्वाधिक प्रचलित एवं प्रसिद्ध प्रणाली है। यह प्रणाली अमेरिका में मेल्विल ड्यूई ने सन 1873 में प्रतिपादित की और यह प्रणाली सर्वप्रथम 1876 में प्रकाशित हुई। इस पद्धति के अब तक 22 संस्करण निकल चुके है। 19वां संस्करण सन 1979 में प्रकाशित हुआ। यह बहुत से पुस्तकालयों में मुख्य आधार के रूप में प्रयोग हो रहा है। डी.डी.सी. 19वें संस्करण को तीन खण्डों में विभक्त किया गया है। दशमलव पद्धति में तीन अंकों के बाद एक रिक्त स्थान छोड़ा जाता है। डी.डी. सी. में सात सहायक सारणियां दी गई हैं। इसके तीन खण्ड इस प्रकार है -खण्ड-1 प्रस्तावना एवं सारणियां, खण्ड-2 अनुसूचियां, खण्ड-3 सापेक्ष अनुक्रमणिका। डी. डी.सी. में संख्याओं का आधार 10 संख्याओं का है।

1.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ड्यूई डेसिमल क्लैसिफिकेशन मेल्विल ड्यूई ने प्रतिपादित किया।
2. डी.डी.सी. का पहला संस्करण 1876 में आया।
3. डी.डी.सी. का 19वाँ संस्करण 1979 में और यह तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ।
4. 19वें संस्करण को तीन निम्न खण्डों में विभक्त किया गया है -
   (1) प्रस्तावना, सारणियाँ
   (2) अनुसूचियाँ
   (3) सापेक्ष अनुक्रमणिका
5. सहायक सारणियों की संख्या डी.डी.सी. में सात है।
6. डी.डी.सी. में विषयों को दस मुख्य कक्षाओं में बांटा गया है।
7. डी.डी.सी. में अप्रयुक्त प्रविष्टियां पांच प्रकार की होती है जो इस प्रकार है:-
   अ- प्रारम्भ से अनावंटित संख्याएं
   ब- संप्रति अनावंटित संख्याएं
   स- रिक्त छोड़ी गई संख्याएं
   द- वैकल्पिक वर्ग संख्याएं

य- पहले टिप्पणियां

8. [004] unassigned प्रारम्भ से ही अप्रयुक्त प्रविष्टि है।

9. [313] unassigned-mostly used in 14th edition

10. [175.83 Reading commics, Number discontinued]

11. 925 वैज्ञानिक जीवनी को 500 वर्ग संख्या के साथ 092 जोड़कर भी व्यक्त किया जा सकता है।

925.1 गणित वैज्ञानिक जीवनी को 510 वर्ग संख्या के साथ 092 जोड़कर भी व्यक्त किया जा सकता है।

1.8 हल रहित प्रश्न

1.8.1 कृपया निम्न प्रश्नों के उत्तर दिये गये स्थान पर लिखिए।

1. डी.डी.सी. का कौन सा संस्करण पहली बार तीन खण्डों में प्रकाशित हुआ।

----

2. डी.डी.सी. का कौन सा संस्करण पहली बार चार खण्डों में प्रकाशित हुआ।

----

3. डी.डी.सी. के इलेक्ट्रोनिक संस्करण को किस नाम से जाना जाता है जो ऑनलाईन उपलब्ध है।

----

4. डी.डी.सी. के 2010 तक कितने संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

----

5. डी.डी.सी. की अप्रयुक्त प्रविष्टियां के बारे मे एक सक्षिंप्त नोट लिखिए।

----

6. प्रारम्भ से अनावंटित वर्ग संख्या के दो उदाहरण दीजिए।

----

7. सम्प्रति अनावंटित वर्ग संख्याओं का उदाहरण दीजिए।

----

8. रिक्त छोडी गई वर्ग संख्या का उदाहरण दीजिए।

----

9. वैकल्पिक वर्ग संख्याओं के दो उदाहरण दीजिए।

----

10. पहले टिप्पणियां (Formerly notes) के दो उदाहरण दीजिए।

1.8.2. कृपया निम्न आख्याओं की वर्ग संख्या दिये गये स्थान पर लिखिए।

1. Who's Who in 19th century.

2. Treatment of Tuberculosis in old age persons

3. Danish – English Dictionary.

4. Bibliography of microbes' books.

5. Indian National Bibliography

6. Classification of books on music.

7. Critical Study of 20th century Telugu poetry

____

8. Training of horses in India.

____

9. Higher education in Rural – India.

____

10. History of ancient Japan.

____

11. Mathematical Dictionary in Irish Language.

____

12. Urea Fertilizer in wheat crop.

____

13. Biography of Telugu Dramatist.

____

14. IASLIC, 1955, Calcutta

____

15. History of Freedom struggle of Bangladesh.

____

16. Cold storage of potato in U.P.

____

17. Prevention of Bacterial Disease in Dogs.

____

18. Analytical Biochemistry of Copper.

____

19. Intelligence test for school Children.

____

20. Mines as military equipment.

____

21. Spinning of cotton for textiles.

____

22. Women Education in Developing countries.

____

23. Indexing and abstracting of microfilms.

____

24. Lung cancer in Female of srilanka.

____

25. Founder of Jain Religion.

____

1.9 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Mannual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press

2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.

3. Dhyani, P (1985). Dhyani's guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi:Meropolitan.

4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,

5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.

6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.

7. Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.

8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi:Sterling Publishers.

9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi:Ess Ess Publication.

10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur:RBSA

इकाई–2 – वर्ग सख्या निर्माण की सरल विधि एवं योजक युक्ति (Add device) का प्रयोग

2.0 प्रस्तावना

2.1 उद्देश्य

2.2 योजक विधियों द्वारा ग्रन्थों का वर्गीकरण : एक परिचय

2.2.1 आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग

2.2.2. निर्देशित आधार संख्या के साथ किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग

2.2.3. योजक चिन्ह तारांकित की सहायता से विषयों का वर्गीकरण

2.3 सारांश

2.4 बोध प्रश्न

2.5 हल रहित प्रश्न

2.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

2.0 प्रस्तावना

किसी वर्गीकरण पद्धति में अंकनों को योजक विधियों के आधार पर जोड़कर, नियमों का समावेश कर, अनुसूची के आकार को छोटा किया जा सकता है तथा साथ ही वर्गीकरण प्रकिया में विशिष्ट वर्गांक निर्मित करने में भी सहायता मिलती है। इस इकाई में डी.डी.सी. में प्रयुक्त तीनों योजक विधियों (आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग, निर्देशित आधार संख्या के साथ किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग एवं योजक चिन्ह तारांकित की सहायता से विषयों का वर्गीकरण) से सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित दर्शाया गया है। इस इकाई में अग्रताक्रम तालिका को समझाते हुए सम्बन्धित उदाहरणों को भी समझाया गया है।

2.1. उद्देश्य

1. योजक विधियों के प्रयोग सम्बन्धी जानकारी देना।
2. प्रत्येक योजक विधियों की आवश्यकता, महत्व एवं उपयोग करने से सम्बन्धित नियमों का उदाहरण सहित समझाना।

3. अग्रताक्रम तालिका को परिभाषित करना।
4. इस तालिका का समावेश एवं इनके उपयोग सम्बन्धी शीर्षक उदाहरण सहित प्रस्तुत करना आदि।

2.2. योजक विधियों द्वारा ग्रन्थों का वर्गीकरणः एक परिचय

अनुसूची में दिये गये अनुक्रमों में एक विषय के अनुक्रमों के साथ उसी विषय के दूसरे अनुक्रम या अन्य विषय के किसी अनुक्रम को प्रयोग किये जाने के प्रावधान से उस वर्गीकरण पद्धति की वर्गीकरण क्षमता में विस्तार तो होता ही साथ ही अनुसूची के आकार में वृद्धि को सीमित भी किया जा सकता है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति में अनुसूची को अनावश्यक विस्तार से बचाने के लिए कई स्थानों पर योजक विधियों का प्रयोग किया गया है। इन योजक विधियों से सम्बन्धित दिये गये निर्देशानुसार अंकों को जोड़ा जाता है। इससे नये अनुक्रम की रचना हो जाती है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मुख्य रूप से तीन प्रकार की योजक विधियों का प्रावधान किया गया है। सभी योजक विधियों को उदाहरण सहित निम्नलिखित प्रकार से समझाया जा सकता है: -

2.2.1 आधार अंक के साथ अन्य अनुक्रम की पूर्ण संख्या का प्रयोग

दशमलव वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची में कई स्थानों पर, जहाँ आवश्यकता है, सम्पूर्ण वर्ग संख्या को प्रयुक्त करने के निर्देश दिये गये हैं। इस विधि द्वारा दिये गये निर्देशानुसार किसी निर्दिष्ट आधार अंक वाली वर्ग संख्या के साथ 001-999 या 100-999 तक के किसी भी अंकन को पूर्ण रूप से जोडकर वर्गाक बनाया जा सकता है। इस योजक विधि को द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति की विषय विधि की अभिव्यक्ति मानते है।

उदाहरण-1 Bibliography of analytical chemistry

विश्लेषक रसायन विज्ञान की ग्रन्थसूची

016 + 543 = 016.543

अनुसूची में मुख्य वर्ग 010 Bibliography के उपविभाजन 016 subject bibliographies and catalogs विशिष्ट विषयों की ग्रन्थ सूची दिया गया है तथा इसके अन्तर्गत 016.1-.9 में यह निर्देश दिया गया है कि निर्दिष्ट आधार अंक 016 के साथ 100-900 के किसी भी उपयुक्त वर्ग संख्या को जोडकर वर्गाक बनाया जा सकता है। उपर्युक्त निर्मित वर्गाक में 543 Analytical chemistry के लिए प्रयुक्त हुआ है।

उदाहरण-2 Science Library

विज्ञान विषयक पुस्तकालय

026 + 5[00] = 026-5

अनुसूची में मुख्य वर्ग 020 Library Science के विभाजन 026 के सामने Library devoted to various specific disciplines and subjects विशिष्ट विषयों के पुस्तकालय पद दिया गया है तथा इसके अन्तर्गत 001-999 के किसी भी अंकन को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त निर्मित वर्गांक में 500 विज्ञान के लिए प्रयुक्त हुआ है। नियमानुसार दाहिने अन्त के दोनों शून्य हटाये गये हैं क्योंकि बिन्दु के बाद अन्त में शून्य नही लिखे जाते है।

उदाहरण-3 Indexing and abstracting of biological literature.

जीव विज्ञान के साहित्य का अनुक्रमणीकरण एवं सारकरण

025.06 + 574 = 025.065 74

अनुसूची में मुख्य वर्ग 020 Library Science के उपविभाजन 025.06 में पद Information storage and retrieval systems devoted to specific disciplines and subjects) दिया गया है तथा इसी के अंतर्गत विशिष्ट विषय के प्रलेखन को वर्गीकृत Class here documentation of specific disciplines and subjects) करने का प्रावधान है। इसके नीचे अनुसूची में उल्लिखित 001-999 तक की किसी भी उपयुक्त वर्ग संख्या के जोडने का निर्देश दिया गया है। जीव विज्ञान के लिए अंकन 574 इसी नियम के आधार पर जोड़ा गया है।

उदाहरण-4 Trade union of documentationist

ट्रेड यूनियन ऑफ डाकूमेंटेंशनिस्ट

331.8811 + 025 = 331.881 102 5

अनुसूची में मुख्य वर्ग 331 Labour Economics के उपविभाजन 331.8811 "other than extractive, manufacturing, construction" के नीचे अनुसूची में उल्लिखित 001-999 तक की किसी भी उपयुक्त वर्ग संख्या को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। डाकूमेंटेशनिश्ट के लिए अंकन 025 Library operations के अंतर्गत निर्देशित Class here documentation इसी नियम के आधार पर जोड़ा गया है।

उदाहरण-5 Climate and weather photography

जलवायु एवं मौसम की फोटोग्राफी

778.538 + 551-69 = 778.538 551 69

अनुसूची में मुख्य वर्ग 770 photography and photographs के विभाजन 778 के उपविभाजन 778.538 'Photography of specific subjects के नीचे 001-999 तक की किसी भी उपयुक्त वर्ग संख्या को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। यहां पर अंकन 551.69 को उसी निर्देश के आधार पर climate and weather के लिए जोडा गया है।

डी.डी.सी. में हम तीन अंकों के बाद दशमलव मानते है क्योंकि इसमें प्रयुक्त संख्याएं दशमलव भिन्न होती है। यदि किसी वर्ग संख्या में तीन से अधिक संख्याएं आती हैं तो हम उसे इस प्रकार लिखेंगे जैसे 725.8 (Recreational buildings) और 725.822 (Theatre and opera buildings)। लम्बी संख्याओं की एकरसता को भंग करने के लिए और स्मृति सहाय के लिए डी.डी.सी. में तीसरे अंक के पश्चात बिन्दु लगाते है।

यद्यपि तीन अंकों के बाद लगने वाला बिन्दु गणित वाला दशमलव बिन्दु नहीं होता क्योंकि गणित में एक दशमलव भिन्न को दोबारा से विभक्त नहीं किया जा सकता। यह बिन्दु मनोवैज्ञानिक दृष्टि से लगाया गया है क्योंकि लम्बी संख्या को याद करना बहुत मुश्किल होता है जैसे हमें 725822 याद करने में मुश्किल होगी जब कि 725.822 में नहीं। डी.डी.सी. में दशमलव बिन्दु को हम स्मृति सहाय के रूप में देखते है। यदि वर्ग संख्या 6 से ज्यादा नौ अंकों की होती है तो प्रत्येक तीन अंकों के बाद एक रिक्त स्थान छोड़ा जाता है। यह रिक्त स्थान दशमलव बिन्दु के लिए छोडा जाता है जिससे अनुसूचियां अच्छी तरह से सरलता से याद हो सके।

उदाहरणर्थ : 621.38804 को इस प्रकार लिखेंगे 621.388 04

वास्तव में यह रिक्त स्थान दशमलव बिन्दु का उद्देश्य पूरा करता है।

2.2.2. निर्देशित आधार संख्या के साथ किसी अन्य वर्ग संख्या के कुछ भाग का प्रयोग।

दशमलव वर्गीकरण पद्धति में इस योजक विधि का प्रयोग सर्वाधिक किया गया है। अनुसूची में जिस वर्ग संख्या के नीचे इस प्रकार के निर्देश दिये रहते हैं वहां पर इस प्रकार का निर्देश मिलता है कि इस आधार अंक के साथ इस ....वर्गांक में से ये अंक......छोडते हुए जोडिये (Add to base number .... following ... in ......)यहाँ पर यह बात विशेष ध्यान में रखी जानी चाहिए कि सम्बन्धित वर्ग संख्या में से वर्गीकार को निर्देशानुसार कुछ आगे के अंक हटाकर

मात्र आवश्यक अंक ही लेने होते है।

उदाहरण-6 Regional physiology of human head

रीजनल फिजियोलोजी ऑफ ह्यूमन हेड

अनुसूची में पद Regional physiology के लिए अंकन 612.9 दिया गया है तथा इसके नीचे 612.9 आधार अंक लेते हुए अंकन 611.91 - 611.98 तक के किसी उपयुक्त अंकन को लिए जाने का प्रावधान है तथा इसमें से 611.9 अंकन को हटाना है। उपर्युक्त उदाहरण का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

612.9 + [611.9]1 = 612.91

उदाहरण-7 Priests in Budhism

बौद्ध धर्म में साधु/पुजारी

अनुसूची में पद Buddhism के लिए 294.3 अंकन दिया गया है। इसके अंतर्गत 294.361- .364 अंकन के सामने Leaders and their works दिया गया है तथा इसी के नीचे 294.36 आधार अंक में 291.6 को हटाते हुए 291.61 - 291. 64 तक के किसी भी अंकन को जोड़ने का निर्देश मिलता है। नीचे दिये गये वर्गाक में 291.61 Priest के लिए प्रयुक्त हुआ है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गाक इस प्रकार निर्मित होगा -

294.36 + [291.6] 1= 294.361

उदाहरण-8 Sheep production for hair

बालों (ऊन) के लिए भेड़ों का उत्पादन

अनुसूचौ में पद sheep के लिए 636.3 अंकन दिया गया है। इसके अंतर्गत sheep for specific purposes दिया गया है इसके नीचे पद Production मिलता है तथा आधार अंक 636.31 को लेते हुए अंकन 636.0881 -636.0889 तक के अंकन में से 636.088 को छोडते हुए उपयुक्त अंकन को जोडे जाने का निर्देश भी दिया गया है। उपयुक्त शीर्षक में हेयर के लिए (636.088)45 प्रयुक्त किया गया है अत: वर्गाक इस प्रकार निर्मित होगा -

636.31 + [636.088]45=636.314 5

उदाहरण-9 Plant Nutrition

पोधों का पोषण/आहार

अनुसूची में पद Tissue, cellular, molecular botany के लिए 581.8 अंकन प्रयुक्त हुआ है। इसके नीचे 581.8 आधार अंक लेते हुए 574.82-574.88 में से 574.8 अंकन को छोडते हुए उपयुक्त अंकन को जोडने का निर्देश दिया गया है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

581.8 + [574.8] 761 = 581.876 1

उदाहरण-10 Statistics on death due to T.B. क्षय रोग से होने वाली मृत्यु के आंकड़े

अनुसूची में पद (statistics on) death caused by disease का अंकन 312.26 दिया गया है तथा इसके अंतर्गत अंकन 312.261- 269 के नीचे यह निर्देश दिया गया है कि आधार अंक 312.26 के साथ 616 को हटाते हुए 616.1-616.9 के किसी भी उप-विभाजन को जोड़ा जा सकता है। अनुसूची में अंकन 616.995 के सामने Tuberculosis मिलता है । इस निर्देशाानुसार उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

312.26+[616]995=312.269 95

2.2.3. योजक चिन्ह तारांकित की सहायता से विषयों का वर्गीकरण

तारांकित योजक विधि में किसी अंकन के नीचे उस विषय के विभिन्न पहलुओं के अंकन दिये होते है और उनका प्रयोग उस वर्ग के तारांकित अंकनों के साथ किया जा सकता है। उदाहरणार्थ अंकन 617 Surgery and related topics, 346 private law, 584 Monocotyledons 372 creative and manual arts and 618.1 Gynaecology आदि। इस तारांकित चिन्ह कें माध्यम से उसी पृष्ठ के नीचे दिये गये पाद टिप्पणी निर्देश Add as instructed under....... को पढते हुए उस तालिका में जाते है जहां के लिए नीचे निर्देश दिया गया होता है।

उदाहरण-11 Salt of sodium

सोडियम के लवण

अनुसूची में पद सोडियम के लिए 546.382 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 546 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में साल्ट का अंकन 24 दिया गया है। उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

546.382 + 24 = 546.382 24

उदाहरण-12 Safety measures for air and space transportations

वायु एवं थल यातायात के लिए सुरक्षा

अनुसूची में पद Air and space transportations के लिए 363.124 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 362-363 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में safety measures के लिए अंकन 75 दिया गया है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

363.124 + 75 = 363.124 75

उदाहरण-13 Electrotherapy for disease of bones

हड्डियों की बीमारी के लिए इलेक्ट्रोथेरेपी

अनुसूची में पद Disease of bones के लिए 616.71 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 616.1 - 616.9 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में therapy के लिए 06 अंकन दिया गया है इसके अंतर्गत 062-069 other therapy दिया गया है तथा इसके नीचे 06 अंकन के साथ 615.82-615.89 में से 615.8 अंकन को हटाते हुए उपयुक्त अंकन को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

616.71 + 06 + [615.8] 45 = 616.710 645

उदाहरण-14 Atomic structure of thorium

थोरियम की परमाणु संरचना

अनुसूची में पद थोरियम के लिए 546.422 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 546 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोडने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में 4 अंकन के सामने Theoretical chemistry दिया गया है, इसके नीचे 4 अंकन के साथ 541.22-541.28 में से 541.2 अंकन को हटाते हुए आवश्यकतानुसार उपयुक्त अंकन को जोडने का निर्देश दिया गया है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

546.422+4[541.2] 4= 546.422 44

उदाहरण-15 Tax accounting in hotels and restaurants

होटल में पद Hotels and restaurants के लिए 657,837 दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। पाद टिप्पणी में अंकन 657.8 के अंतर्गत दी गयी तालिका के अंकनों को जोडने का निर्देश दिया गया है। उक्त तालिका में 01-07 के सामने specific fields of accounting दिया गया है, इसके नीचे शून्य (0) के साथ 657.1-657.7 में से 657 अंकन को हटाते हुए आवश्यकतानुसार उपयुक्त अंकन को जोड़ने का निर्देश दिया गया है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

= 657.837+0 + [657] 46 = 657.837 046

2.3 सारांश

किसी वर्गीकरण पद्धति में अंकनों को योजक विधियों के आधार पर जोड़कर नियमों का समावेश कर अनुसूची के आकार को छोटा किया जा सकता है साथ ही वर्गीकरण प्रक्रिया में विशिष्ट वर्गांक निर्मित करने में भी सहायता मिलती है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति में अनुसूची के स्वरूप को अनावश्यक विस्तार से बचाने के लिए कई स्थानों पर योजक विधियों का प्रयोग किया गया है। इन योजक विधियों से सम्बन्धित दिये गये निर्देशानुसार अंकों को जोड़ा जाता है। इससे नये अनुक्रम की रचना हो जाती है। दशमलव वर्गीकरण पद्धति में मुख्य रूप से तीन प्रकार की योजक विधियों का प्रावधान किया गया है।

2.4 बोध प्रश्न

1. Law Library

   विधि ग्रन्थालय

   026 + 34(o) = 026-34

2. Maintenance and repairing of ancient Japanese architecture

   प्राचीन जापानी वास्तुकला का रख रखाव एवं मरम्मत

   722.12 + 0289 = 722.120 289

3. Design of Tom Tom instrument

   टॉम-टॉम संयत्र की बनावट

   789.1 + 2 = 789.12

4. Prevention of heart disease

   हश्दय रोग की रोकथाम

616.12 + 05 = 616.120 5

5. Classification of botany books

वनस्पति विज्ञान के ग्रन्थों का वर्गीकरण

025.46 + 581 = 025.465 81

6. Experimental research on malaria

मलेरिया पर प्रयोगात्मक शोध

616.9362 + 027 = 616.936 202 7

7. Plant bio-physics

पौधे की जैव भौतिकी

581.19 + [574.19] 1 = 581.191

8. Teacher students' relation in university of India

भारत के विश्वविद्यालय में शिक्षक-छात्र सम्बन्ध

371.102+0711+54= 371.102 071 154

9. Medicinal fungus plants

भेषजिक कवक पौधे

589.2 + 04 + [581].634 = 589.204 634

10. Fish physiology

मछली की शरीर क्रिया विज्ञान

597.0 + [591] 1 = 597.01

11. Bibliography of chemistry

रसायन विज्ञान ग्रन्थों की ग्रन्थसूची

016+54[o]= 016.54

12. Mutation in insects

कीटवर्ग में परिवर्तन

595.70 = [591]1592 = 595.701 592

13. Uniform in marine forces

समुद्री सेना की पोशाक

359.96 + [355] 14 = 359.961 4

14. Training of dogs for guarding

सुरक्षा के लिए कुत्तों का प्रशिक्षण

636.70 + [636.0] 886 = 636.708 86

15. Urea used is rice agriculture

चावल की खेती में यूरिया का प्रयोग

633.18 + 89[631.8]41 = 633.188 941

16. Training of goats for games

खेलों के लिए बकरियों को प्रशिक्षण

636.391 + [636.088]8 = 636.391 8

17. Science curriculum in elementary school

प्राथमिक विद्यालयों में विज्ञान पाठयक्रम

372.35 + 043 = 372.350 43

18. Heredity of rose plant

गुलाब के पौधों में वंशानुगतता

583.372 + 04 + [581]15= 583.372 041 5

20. Mysticism in Hindu religious

हिन्दू धर्म में अध्यात्मवाद

294.54 + [291.4]2 = 294.542

अन्य प्रश्न हल सहित

1. Political Conditions in Buddhist countries of Asia

   320.917 643 05

2. Manufacture of Equipment for shooting turkeys.

   688.792 486 19

3. Works of mongalaid races

   572.803 5

4. History of teaching in engineering.

   620.007

5. Boxes and cartons of paper and paperboard contains

   676.32

6. Climatotherapy for tuberculosis of bones

   616.995 710 634

7. Studies of human qualities in Kannada Drama

   894.814 200 935 3

8. All India law reporter (A.I.R.) – A Journal

   348.540 410 5

9. Explorations of Antarctica by India in 20th century.

   915.404 052

2. Child Labour among Indians.

   331.310 899.141 1

2.5 हल रहित प्रश्न

निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1 . Teaching of library & Information Science Through Distance mode.

____

2 . Treatment of Disease in Cattle.

____

3 . Lay out of Football Play ground in Brazil

____

4 . Financial Powers of the US Senate

____

5 . X-ray Diagnosis of lung Tuberculosis in horses

____

6 . International law of trade in coffee

____

7 . Ecology of the Indian ocean area

____

8. Sacred music of Sikhs

____

9. Rats as Wheat Pests

____

10 . Dance music Festivals in Holland

____

11 . Marriage life in Fiction of Premchand (born 1880)

____

12. Biography of Pratibha Devi Singh Patil

13. Court Decision on the marriage law in Pakistan

14. Conversion rate of Italian Lira into Japanese Yen

15. Forts of India

16. Foreign travelers in Indian history

17. Construction of railway bridge in West Bengal

18. Concept of Sport in Hindi Film

19. Developmental Programms in Rural India

20. Physical Chemistry of Potassium

2.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Manual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press

2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.

3. Dhyani, P (1985). Dhyani's guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi:Meropolitan.

4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,

5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.

6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.

7. Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.

8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi:Sterling Publishers.

9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi:Ess Ess Publication.

10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur : RBSA

इकाई–3 – सारणी–1 मानक उपविभाजन (Standard Subdivisions) का प्रयोग

3.0 प्रस्तावना
3.1 उद्देश्य
3.2 मानक उप-विभाजन : अर्थ एवं परिभाषा
3.2.1 मानक उप-विभाजनों के प्रकार
3.2.2 मानक उप-विभाजनों के प्रयोग सम्बन्धी निर्देश
3.2.3 अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग
3.2.4 मानक उप-विभाजनों के प्रयोग के अपवाद
3.2.5 शून्यों का विलोपन
3.2.6 भाषा एवं विषय शब्दकोष या विश्वकोष
3.2.7 सारणी-1 के साथ भौगोलिक क्षेत्र का प्रयोग
3.2.8 सारणी-1 के साथ सारणी-5 एवं 7 का प्रयोग
3.2.9 वैकल्पिक प्रावधान (Alternative provision)
3.3 सारांश
3.4 बोध प्रश्नों के उत्तर
3.5 हल रहित प्रश्न
3.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

3.0 प्रस्तावना

वर्तमान में ग्रन्थ विभिन्न दृष्टिकोणों से लिखे जाते है एवं विभिन्न रूपों में प्रकाशित किये जाते हैं। इस इकाई में मानक उप-विभाजन का तात्पर्य उनकी उपयोगिता तथा उपयोग किये जाने के नियमों के उल्लेख से है। यह सारणी स्वतंत्र रूप से प्रयोग होने वाली सारणी है अर्थात इनको प्रयोग करने के लिए निर्देश की आवश्यकता नहीं होती। इस सारणी के अंकनों को कभी अकेले प्रयुक्त नहीं किया जाता। प्रत्येक अंकन डैश (–) के साथ दिये गये हैं। विशिष्ट विषय के साथ जोड़ने पर डैश स्वत: ही समाप्त हो जाता है। इस इकाई में मानक उप-विभाजन पर आधारित शीर्षकों को उदाहरण के रूप में विस्तृत रूप से समझाया गया है।

3.1 उददेश्य (Objectives)

1. मानक उप-विभाजनों के अर्थ, उपयोगिता तथा उनके प्रयोग का ज्ञान

कराना।

2. निर्देशित तथा अनिर्देशित अवस्था में मानक उप-विभाजनों के प्रयोग सम्बन्धी नियमों को उदाहरण सहित समझाना।

3. प्रथम सारणी की सहायता से सारणी 2, 5 एवं 7 के अंकनों को जोड़ने के तरीकों को उदाहरण सहित समझाना।

3.2 मानक उप-विभाजन : अर्थ एवं परिभाषा

ग्रन्थालयों में ग्रन्थों के वर्गीकरण के मुख्य आधार विषय होते हैं। वर्तमान युग में ग्रन्थ अनेक दृष्टिकोणों से लिखे जाते है जिन्हें कई विभिन्न रूपों में प्रकाशित किया जाता है। कुछ विषय ऐसे होते हैं जो विषय के सैद्धान्तिक दृष्टिकोण पर आधारित होते हैं जबकि कुछ ग्रन्थ विषय के संकलन, विश्वकोश, शब्दकोश, वार्षिकी, निर्देशिका आदि के रूप में प्रकाशित होते है। ऐसे ग्रन्थ विवेचन एवं वर्गीकरण की दृष्टि से विशेष महत्व के होते हैं। उपयोगकर्ताओं की सुविधा एवं इन ग्रन्थों को शीघ्रताशीघ्र उपयोगकर्ताओं को प्रदान करने की दृष्टि से ग्रन्थालय में इन्हें आवश्यकतानुसार अलग-2 व्यवस्थित किया जाता है। सभी वर्गीकरण पद्धतियों में ऐसे ग्रन्थों को दर्शाने हेतु रूप विभाजन की व्यवस्था की गयी है, जिन्हें विभिन्न वर्गीकरण पद्धतियों में पृथक नाम से जाना जाता है। इस तरह के सामान्य उप-विभाजनों को विभिन्न विषयों के साथ समान पद व समान अंकनों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। ऐसे उपविभाजनों को डीडीसी के द्वितीय संस्करण से बारहवें संस्करण तक रूप विभाजन, तेरहवें संस्करण में सामान्य उप-विभाजन, चौदहवें संस्करण में एकरूप उप-विभाजन, पन्द्रहवें से सोलहवें संस्करण में पुन: रूप विभाजन तथा सत्रहवें से वर्तमान संस्करण तक इसे मानक उपविभाजन के नाम से उल्लेख किया गया है।

इस सारणी में दिये गये समस्त उप-विभाजन न तो कोई विषय हो सकते है, न ही स्वयं पूर्ण वर्गांक हो सकते है और न ही इन्हें अकेले प्रयुक्त किया जा सकता है। इन्हें सारणी में डैश (-) के साथ सूचीबद्ध किया गया है। जब इन अंकनों को किसी विषय के साथ जोड़ते हैं तो डैश (-) स्वत: ही समाप्त हो जाता है। इन मानक उप-विभाजनों को अनुसूची में दिये गये किसी भी अंकन के साथ आवश्यकता पड़ने पर बिना निर्देश के प्रयुक्त किया जाता है। मानक उपविभाजनों को शून्य के साथ सूचीबद्ध किया गया है लेकिन इनका प्रयोग हमेशा एक समान रूप से नहीं होता इसलिए इनके प्रयोग में सावधानी रखना अतिआवश्यक है ताकि त्रुटियों से बचा जा सके। कभी इनका प्रयोग शून्य को हटाते हुए, कभी एक, दो, तीन या चार शून्य के साथ किया जाता है। इन

उप-विभाजनों का प्रयोग किस प्रकार किया जाना है, यह उस विषय के ऊपर निर्भर करता है, जिस विषय के साथ इन उप-विभाजनों को प्रयुक्त होना है।

मानक उप-विभाजनों को प्रत्येक मुख्य वर्ग में अलग अलग वर्णित करना उचित नहीं था क्योंकि ये सर्व-सामान्य उप-विभाजन है जिन्हें किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सकता है। इससे अनुसूची के आकार में वृद्धि भी नहीं होती। डी.डी.सी. में मानक उप-विभाजनों का प्रयोग इसके द्वितीय संस्करण (1885) से किया जा रहा है।

परिभाषा

इन उप-विभाजनों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है -

- ऐसे उप-विभाजन/एकल जिनका प्रयोग आवश्यकता पड़ने पर अनुसूची में वर्णित किसी भी मुख्य वर्ग या उनके उप-विभाजन के साथ बिना किसी निर्देश के किया जा सके।
- विषयों अथवा ज्ञान क्षेत्रों के निरूपण के लिए प्रयुक्त ऐसे रूप जो सामान्यतया सभी विषयों पर लागू हो सकते है।
- A table of notations designating certains frequently recurring forms or methods of treatment applicable to any subject or discipline. May be added, as required to any number in the schedules.

मानक उप-विभाजनों को प्रथम खण्ड की प्रथम सारणी में वर्णित किया गया है। इन्हें मुख्य रूप से 9 वर्गों में विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है -

-01 Philosophy and Theory — दर्शन एवं सिद्धान्त

-02 Miscellany — विविध

-03 Dictionaries, Encyclopaedias, concordances
शब्दकोश,विश्वकोश, शब्दानुक्रमणिकाएं

-04 Special topics of general applicability — सामान्य प्रयोग के विशिष्ट प्रकरण

-05 Serial publications — धारावाहिक प्रकाशन

-06 Organisation and management — संस्थाएं एवं प्रबन्ध

-07 Study and teaching — अध्ययन एवं अध्यापन

-08 History and description of the subject among groups of persons
व्यक्तियों के समूह के मध्य विषय का इतिहास व वर्णन

-09 Historical and geographical treatment — ऐतिहासिक एवं भौगोलिक विवरण

3.2.1 मानक उप विभाजनों के प्रकार (Types of standard subdivisions)

सारिणी-1 मानक उप-विभाजन का प्रयोग

मानक उप-विभाजनों के विभिन्न प्रकार मुख्य रूप से निम्नलिखित है -

1. ऐसे उप विभाजन जो ग्रन्थात्मक रूप को दर्शाते हैं जैसे विश्वकोश, सामयिक प्रकाशन इत्यादि।
2. वाह्य स्वरूप एवं विशिष्ट दृष्टिकोणों से सम्बन्धित जैसे सारांश, रूपरेखा इत्यादि।
3. ऐसे उप-विभाजन जो सीमित परिस्थितियों में सम्पूर्ण विषय को प्रस्तुत करते है जैसे-क्षेत्र, ऐतिहासिक काल एवं व्यक्तियों के प्रकार।
4. आन्तरिक संरचना एवं दृष्टिकोण से सम्बन्धित जैसे सिद्धान्त, तकनीक, इतिहास, अध्ययन एवं अध्यापन।
5. मिश्रित उप-विभाजन जैसे- जीवनियां।
6. ऐसे उप विभाजन जो विषय के बारे में विशिष्ट प्रकार की सूचनाएं प्रदान करने में सहायक होते है जैसे निर्देशिकाएं, उत्पाद सूची आदि।
7. ऐसे उप-विभाजन जो विषय का उसके उपयोगकर्ता से सम्बन्ध स्थापित करने में सहायक होते है जैसे विषय एक व्यवसाय की तरह, विशिष्ट उपयोगकर्ताओं के लिए कार्य।

3.2.2 मानक उप–विभाजनों के प्रयोंग सम्बन्धी निर्देश (Instructions related to use of standard subdivision)

1. मानक उप-विभाजन के प्रयोग से सम्बन्धित निर्देश की आवश्यकता नहीं होती। ये किसी भी मुख्य वर्ग के साथ आवश्यकता पड़ने पर प्रयुक्त हो सकते है।
2. इनका कभी स्वतंत्र प्रयोग नहीं होता।
3. ये पूर्ण वर्गांक नहीं होते और न ही किसी विषय को इंगित करते है, इनका प्रयोग अनुसूची में वर्णित वर्गांक के साथ होता है।
4. प्रत्येक मानक उप-विभाजन एक शून्य से प्रारम्भ होता है लेकिन यदि निर्देश हो तो इन्हें बिना शून्य के या एक से अधिक शून्यों के साथ जोड़ा जाता है।

5. किसी एक वर्ग संख्या के साथ मानक उप-विभाजन का प्रयोग सिर्फ एक बार ही किया जा सकता है। यदि ग्रन्थ के विषय में मानक उप-विभाजन से सम्बन्धित तत्व एक से अधिक बार प्रयुक्त हुए हों तो केवल एक उप-विभाजन को ही प्राथमिकता के आधार पर चुना जायेगा। प्राथमिकता का निर्धारण वरीयताक्रम सारणी की सहायता से किया जायेगा। यह सारणी प्रथम सारणी के प्रारम्भ में पृष्ठ संख्या 1 पर दी गयी है।

6. कभी-कभी अनुसूची में विषय के साथ ही मानक उप-विभाजन का उल्लेख भी मिलता है। अगर ऐसा हो तो अनुसूची में वर्णित वर्गांक को ही प्राथमिकता प्रदान की जानी चाहिए। सारणी में वर्णित उप-विभाजन को नहीं। यदि आवश्यकता पड़ती है तो सारणी 1 से वर्गांक को विस्तार किया जा सकता है।

उदाहरण: History of Teaching in medical science: with special reference to human anatomy

अनुसूची में मुख्य वर्ग 611 (Human Anatomy, Cytology, tissue biology) के नीचे .001-.009 standard subdivisions of human anatomy के अंकनों को सारणी 1 से लाने का निर्देश है। इस शीर्षक में दो मानक उप-विभाजन 09 History तथा 07 Study and teaching का प्रयोग हुआ है। अग्रताक्रम तालिका देखें तो study and teaching को History पर वरीयता प्राप्त है। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक निम्नलिखित होगा -

611 + - 007 = 611.007

उदाहरण: Organisation of library and information centres

अनुसूची में मुख्य वर्ग 020 (Library and Information Science) के नीचे कुछ मानक उप-विभाजनों का उल्लेख है इसलिए इनसे सम्बन्धित विचारों की अभिव्यक्ति के लिए इन्ही अंकनों का प्रयोग किया जायेगा न कि सारणी 1 से। अत: उपर्युक्त शीर्षक का वर्गांक निम्नलिखित होगा-

020+6 = 020.6

उदाहरण 3: Personnel Management of Library and Information centres

मुख्य वर्ग 020 में .6 organisation and management मानक उपविभाजन का उल्लेख किया गया है चूंकि इस उदाहरण में कर्मचारी प्रबन्ध का वर्णन है इसलिए वर्गांक को सारणी 1 से विस्तार किया जायेगा।

020.6 + [06]83=020.683

3.2.3 अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग (Use of table of precedence)

सारिणी-1 मानक उप-विभाजन का प्रयोग

जब एक ही शीर्षक में दो या अधिक उपविभाजनों का प्रयोग हुआ हो तो वर्गाकार के सामने ये समस्या आ जाती है कि वह उनमें से किसका प्रयोग करें अर्थात किसे प्राथमिकता दें। इस समस्या का समाधान अग्रताक्रम/वरीयताक्रम तालिका से किया जाना चाहिए। यह सारणी वर्गीकार को यह सुनिश्चित करने में मदद करती है कि जब विषय के साथ दो या दो से अधिक मानक उपविभाजनों को प्रयुक्त किया गया हो तो उसमें विषय का वर्गांक बनाने के लिए किस मानक विभाजन को प्रयुक्त किया जायेगा। मानक उप-विभाजन की अग्रताक्रम तालिका में समस्त उप विभाजनों को प्राथमिकता के आधार पर सूचीबद्ध किया गया है। इसी सारणी के आधार पर मानक उपविभाजन का चुनाव किया जाना चाहिए।

उदाहरण - Serials on history of chemistry

इस उदाहरण में विषय कैमिस्ट्री है तथा इसमें दो मानक उप-विभाजन सीरियल तथा हिस्ट्री का प्रयोग हुआ है। अग्रताक्रम तालिका देखों 09 History को 05 serials से वरीयता प्रदान की गयी है इसीलिए इसका वर्गांक बनाते समय 05 serials को छोड़ दिया गया है।

54[0]+-09 = 540.9

3.2.4 मानक उप-विभाजनों के प्रयोग में अपवाद (Exceptions in use of standard subdivision)

डी.डी.सी. में एक शीर्षक में सिर्फ एक ही मानक उप-विभाजन का प्रयोग किया जाता है इसके बाबजूद कहीं कहीं पर अपवाद देखने को मिलते है जैसे- 1 -04 special topics of general applicability- यह निर्देश दिया गया है कि इस उप विभाजन को उपयोग में तभी लाएं जब अनुसूची में यह विशिष्ट रूप से उल्लिखित किया गया हो। इसके तथा इसके उप-विभाजनों के बाद जब आवश्यक हो तो सारणी 1 में वर्णित मानक उप-विभाजन -01 से -09 में दिये गये अन्य मानक उप-विभाजनों को भी जोड़ा जा सकता है।

उदाहरण- Financial management of private schools

372.104 22 Private schools

-0681 Financial management

वर्गांक - 372.104 220 681

2. जब किसी मुख्य वर्ग के अंतर्गत मानक उप-विभाजनों का अर्थ परिवर्तित कर या विस्तृत कर सूचीबद्ध किया गया हो तो इस वर्गांक के पश्चात सारणी 1 में दिये गये उप-विभाजनों का प्रयोग पुनः किया जा सकता है।

उदाहरण- Periodicals on vocational education

370-1 Philosophy Theories

.113 vocational educations

-05 Serials (T.1)

वर्गांक - 370.113 05

3. कभी कभी मानक उप-विभाजन वाले विचार को अनुसूची के विषय में सम्मिलित कर लिया जाता है किन्तु इनके प्रारम्भ में लगे शून्य को हटा दिया जाता है। ऐसा -09 Historical and geographical treatment के लिए प्रायः देखा गया है

उदाहरण- An Index of British penal institutions

365- Penal and related institutions

.9- Historical, geographical treatment

-Add "Aroas" notation -1-9 from table 2 to base no.365.9

वर्गांक - 365.9+41 + 016 = 365.941 016

3.2.5 शून्यों का विलोपन (Ommission of zeros)

मानक उप-विभाजनों को हम किसी भी विशिष्ट विषय के साथ दो अवस्थाओं में प्रयुक्त कर सकते है - निर्देश होने पर तथा निर्देश न होने पर। जब अनुसूची में सारणी 1 के प्रयोग से सम्बन्धित किसी प्रकार का निर्देश दिया गया हो तो हमें वर्गांक को इसी निर्देशानुसार वर्गीकृत करना चाहिए। यदि अनुसूची में इनको प्रयुक्त करने के लिए निर्देश न दिये गये हों तो नियमानुसार शून्यों को विलोपन किया जाना चाहिए जैसे -

(अ) निर्देश न होने पर-

(i) यदि विशिष्ट विषय के वर्गांक के अन्त में शून्य न हो तथा मानक उप-विभाजन को प्रयोग करने का निर्देश भी नहीं दिया गया हो तो वर्गांक इस प्रकार निर्मित किया जायेगा-

उदाहरण-

1. -(Outlines of Criminology)

364 + 0202 = 364.020 2

2. Research on D.D.C.

025.431 + 072 = 025.431 072

3. Philosophy of Hinduism

294.5 + 01 = 294.501

4. Study of steam locomotives

625.261 + 7 = 625.261 07

5. German glossary of Botany

581 + 03 + 31 = 581.033 1

जब विशिष्ट विषय का वर्गांक एक शून्य के साथ समाप्त होता है तथा साथ में सारणी 1 को प्रयुक्त करना हो तो एक शून्य को हटाते हुए वर्गांक निर्मित किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण -

1. Dictionary of chemical terms

54[0]+ -03 = 540.3

2. Awards in medicine

61[0]+ -79 = 610.79

3. Formulas of Chemistry

54[0]+-0212 = 540.212

(iii) जब विशिष्ट विषय का वर्गांक दो शून्यों के साथ समाप्त होता है तथा दशमलव बिन्दु के बांए तरफ दो शून्य तथा दांये तरफ एक शून्य हो तो वर्गांक निर्मित करते समय दो शून्यों को हटा दिया जायेगा। जैसे-

उदाहरण-

1. History of science

5[00]+-09 = 509

2. Encyclopaedia of applied sciences

6[00]+-03 = 603

3. Literary organisation

8[00]+-06 = 806

4. Serial publicaitons of Fins and decorative arts

7[00]+-05 = 705

(ब) निर्देश होने पर –

जब अनुसूची में निर्देशित किया गया हो कि मानक उपविभाजन को प्रयोग शून्य हटाते हुए करना है या एक, दो, तीन, चार शून्य के साथ तो हमें उस निर्देश का पालन सख्ती से करना चाहिए भले ही वर्गांक में दशमलव बिन्दु से पहले एक शून्य या दो शून्य प्रयुक्त हुए हों। ऐसा प्रावधान अनुसूची में पहले से ही शून्य के साथ दिये गये विभाजन एवं सारणी 1 के उप-विभाजनों की स्पष्टता को व्यक्त करने के लिए एवं उपयुक्त विश्लेषण हेतु निर्देशित किया जाता है।

उदाहरण-1 Philosophy of Library & Society

021 - Library and Society

यहाँ पर मानक उप-विभाजन के अंकनों को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश है। अत: वर्गाक इस प्रकार निर्मित किया जायेगा -

021 + -001

= 021.001

इसी प्रकार -

2- Scales in land economics

333 + -002 28

=333.002 28

3- Teaching of social law in universities

344 + 00711 = 344.00711

4- Classification vertibrates

596+0012 = 596.0012

5- Study of curriculum

Curriculums – 375

Study - 07 (T1)

नोट- यहाँ पर सारणी 1 को तीन शून्यों के साथ प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। अत: वर्गाक इस प्रकार निर्मित किया जायेगा।

375+ - 0007 = 375.0007

इसी प्रकार-

6- Periodical of public administration

350 + - 0005 = 350.0005

7- Directory of special libraries

026+ -00025 = 026.000 25

8- Manual of stubject classification

025.46 + -000 202 = 025.460 002 02

3.2.6 भाषा एवं विषय शब्दकोश या विश्वकोश (Language and subject dictionary or encyclopedia)

1. यदि किसी भाषा के शब्दकोश या विश्वकोश का वर्गांक बनाना हो तो मुख्य वर्ग भाषा (400) से भाषा अंकन तथा साथ में सारणी 1 से शब्द कोष या विश्वकोष के अंकन को जोड़ा जायेगा। यदि द्विभाषी शब्दकोश हो तो दूसरी भाषा को सारणी 6 से लाया जायेगा। ऐसा निर्देश सारणी 1 के .03 (add language notation 2-9 from table 6 to base number 03) के अंतर्गत निर्देशित किया गया है। जैसे- नोट- यदि भाषा के साथ शब्दकोष का अंकन जोड़ना हो तो इसे सारणी 4 से जोड़ा जायेगा।

उदाहरण-

1. Hindi encyclopaedia

   891.43 + 3 = 891.433

2. Glossary of Botany in English

   581+-03 + -21=581.032 1

   (T1) (T6)

3. Dictionary of chemical terms

   54[0]+-3 = 540.3

4- English Dictionary

   42[0]+3 = 423

नोट - English Dictionary में 3 को सारणी 4 से लिया गया है।

3.2.7 सारणी 1 के साथ भौगोलिक क्षेत्र का प्रयोग (Use of area with table-1)

जब किसी विशिष्ट विषय के साथ किसी भौगोलिक क्षेत्र को जोड़ने की आवश्यकता हो तो विषय के साथ सीधे जोड़ने के निर्देश अनुसूची पर दिये गये है। लेकिन यदि निर्देश न दिये गये हो तो सारणी 1 से .09 लेते हुए सारणी 2 के किसी भी अंकन का प्रयोग किया जा सकता हे। जैसे उदाहरण-

(1) Agricultural sociology of underdeveloped countries

307.72 + 09 + -1724

=307.720 917 24

(2) Human disease in Madhya Pradesl

616+-009 +-543 = 616.009 543

(3) Military science in India

355+ -009+54=355.009 54

(4) Social Structure of china

305+-09+-51 = 305.095 1

नोट- उपरोक्त उदाहरण में 9 को दो शून्य के साथ निर्देशानुसार प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार-Industrial Research in India

6[00]+0720+54=607.2-05 4

उपर्युक्त उदाहरण में रिसर्च के अंकन को सारणी 1 से लिया गया है वहां पर .072 के साथ एक शून्य जोडते हुए सारणी 2 के अंकन 1-9 को प्रयोग करने का निर्देश है।

5. Indian Association of special libraries and information centre (IASLIC)

026 + 00060 + 54

=026.000 605 4

उपर्युक्त उदाहरण में मुख्य वर्ग 026 के अंतर्गत सारणी 1 के अंकनों को तीन शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश है। सारणी 1 में -06 के अंतर्गत एक शून्य बाद में जोड़ते हुए सारणी 2 को प्रयोग करने का प्रावधान है।

6. Directory of Public libraries of America

027.4+ - 025(T.1) + 73(T.2)
= 027.402 573

उपर्युक्त उदाहरण में --025 डाइरेक्टरी को सारणी 1 से लिया गया है इसके अंतर्गत 'Add area notation 1-9 from table 2 to base number -025 निर्देशित किया गया है। 72- अमेरिका को सारणी 2 से लिया गया है ।

7. Librarianship as a profession in England

02 [0] + 023 (T.1) + 42 (T2)

=020.234 2

यहाँ पर -023 को सारणी 1 से Profession के लिए लिया गया है। इसके नीचे Add area notation 1-9 from table 2 to base number 023' निर्देशित किया गया है। इसी आधार पर 42 England को सारणी 2 से लेकर प्रयुक्त किया गया है।

उपर्युक्त के अतिरिक्त सारणी 1 के अंकन -.294 Price lists and trade catalogs, -07 study and teaching, -074 museums, collections, exhibits के अंतर्गत भी सारणी 2 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

3.2.8 सारणी 1 के साथ सारणी 5 एवं 7 का प्रयोग (Use of table 5 & 7 with table 1)

किसी विशिष्ट विषय के साथ सारणी 5 एवं 7 के अंकनों को प्रयोग करने से सम्बन्धित निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं। अनिर्देशित अवस्था में इन सारणी के अंकनों को सारणी 1 से -08 History and Description of the subject among groups of persons के अंतर्गत दिये गये दो विभाजनों क्रमश: 088 Treatment among groups of specific kind of persons एवं -089 Treatment among specific racial, ethnic, national groups की सहायता से क्रमश: सारणी 7 एवं 5 के अंकनों को प्रयुक्त किया जा सकता हे। सारणी 7 के अंकनों को सारणी 1 के -024 को जोडते हुए भी प्रयोग किया जाता है। जैसे -

उदाहरण-

1. Folk arts by the blind persons

745 – falk arts

-088 -Table 1

-08161 - Blind persons

वर्गांक 745+088+08161=745.088 081 61

2. Sex instructions for adult

613.96 – manual of sexual techniques

-088 -Table 1

-056 - Adults

वर्गांक 613.96+088+056=613.960 880 56

3. Calculus for management scientists

515 – Calculus

-024 – Works for specific types of users (Table 1)

-65 – Management scientists

वर्गांक 515+024+65=515.024 65

4. Personal finance for cricketers

332.024- personal Finance for specific class of persons

796.35 – cricketers (Table 7)

वर्गांक 332.024 796 35

नोट- सारणी 1 में -024 एवं -088 के नीचे सारणी 7 के अंकनों को जोड़ने के निर्देश दिये गये है।

उदाहरण

5. A study of general pattern of social behaviour of Tamils

306 – General patterns of social behaviour

-089 – Table 1

-94811 – Table 5 (Tamils)

वर्गांक 306+ - 089 + - 94811 = 306.089 94811

6. Social law of Australian native races

344 – Social law

-0089 – Table 1 दो शून्य का प्रयोग निर्देशानुसार

-9915 – Australian native races

वर्गांक 344+0089 + 9915 = 344.008 999 15

3.2.9 वैकल्पिक प्रावधान (Alternative provision)

अनुसूची के पृष्ठ 13-14 पर विशिष्ट विषय से सम्बन्धित ग्रन्थ सूची का वर्गांक बनाने के लिए अंकन 016 से सम्बन्धित विषय का अंकन 100-900 तक

जोड़ने का निर्देश दिया गया है। यदि विषय ग्रन्थ सूची को उसके विषय के साथ रखना उचित हो तो विशिष्ट विषय के साथ सारणी 1 के अंकन -016 इन्डेक्स को प्रयुक्त किया जा सकता है लेकिन याद रहे इस अंकन का प्रयोग विकल्प के रूप में किया जाना चाहिए ताकि मुख्य वर्ग के अंकन 016 को प्राथमिकता प्रदान किया जाना चाहिए।

सारिणी-1 मानक उप-विभाजन का प्रयोग

उदाहरण-

6. An index to plant breeding

   631.53 + - 016 (Table 1)

   =631.530 16

   OR

   016+ 631.53 = 016.631 53

2. Bibliography of medical sc. literature

   61[0]+ - 016 = 610.16

   OR

   016 + 61 = 016.61

3.3 सारांश

यह सारणी स्वतंत्र रूप से प्रयोग होने वाली सारणी है अर्थात इनको प्रयोग करने के लिए निर्देश की आवश्यकता नहीं होती। इस सारणी के अंकनों को कभी अकेले प्रयुक्त नहीं किया जाता। प्रत्येक अंकन डैश के साथ दिये गये है, विशिष्ट विषय के साथ जोड़ने पर डैश स्वत: ही समाप्त हो जाता है। मानक उप-विभाजनों को प्रत्येक मुख्य वर्ग में अलग अलग वर्णित करना उचित नहीं था क्योंकि ये सर्व-सामान्य उप-विभाजन है जिन्हें किसी भी विषय के साथ जोड़ा जा सकता है इससे अनुसूची के आकार में वृद्धि भी नहीं होती। डी.डी.सी. में मानक उप-विभाजनों का प्रयोग इसके द्वितीय संस्करण (1885) से किया जा रहा है।

3.4 बोध प्रश्नों के उत्तर

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझायी गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइये। बड़े कोष्ठक में दिये गये अंकनों को अन्तिम वर्गांक बनाते समय नियमानुसार हटाया गया है।

1. Dewey Decimal classifications for Indian practitioners -

025.431+024+03+919411 = 025.431 024 039 141 1

2. Arithmetic for managers =513+24+658 = 513.024 658

3. Trade catalogue of soaps 668.12+ - 0294 = 668.120 294

4. Reading interests of lawyers 028.9+ 088+ - 34 = 028.908 834

5. History of philosophy in India 1[00]+ - 09 + 54 = 109.54

6. Research in library classfication in canada 025.42+ -072+0+71

   = 025.420 720 71

7. Exercise in the DDc 025.431+ -076 = 25.431+ -076

8. Indian history through pictures 9+54+ - 00222 = 954.002 22

9. Teaching of geometry 516+ -007 = 516.007

10. Political conditions in the 21 century 320.90 +[090] 5 = 320.905

11. Audiovisual treatment of color classification 025.435+0208 = 025.435 020 8

12 Dictionary of analytical chemistry 543+003 = 543.003

13. Directory of college & University lirbaries 027.7 + -025 = 027.702 5

14. Bibliography of space flight 629.41+ -016 = 629.410 16

    016+629.41 = 016.629 41

15. History of textile technology in 20th Century 677+ 00904 = 677.009 04

16. Women in Indian history 9+54+0088+042 = 954.008 804 2

17. Research on stage lighting792.025 + - 0724 = 792.025 072 4

18. Statistics of customs taxes 336.26 + - 0212 = 336.260 212

19. Serial publications on Aristo-lelian philosophy 185+ - 05 = 185.05

20. Scholarship in Economics 33[0]+ - 079 = 330.79

21 Scientific principles of silver technology 669.23+ -015 = 669.230 15

22. Chemical principles of silver technology 669.23+ -015 + [5] 4[0] = 669.230 154

23. Social reseach in India 30(0)+ 072+0+54 = 300.720 54

24. Biography of Literatures 8(00)+09 = 809

25. Philosophy & Theory of British history 9+41+ -001 = 941.001

3.5 हल रहित प्रश्न

निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. Study and teaching of applied physics.

   ____

2. Dictionary of agriculture in Bengali.

   ____

3. Research on pathology.

   ____

4. Journal of public finance.

   ____

5. Scientific principles of physical geography.

   ____

6. Rajasthan public library act.

   ____

7. Bibliography on trade agreement of Italy.

3.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Mannual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press
2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.
3. Dhyani, P (1985). Dhyani's guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi: Metropolitan.
4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,
5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.
6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.
7. Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.
8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi: Sterling Publishers.

9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi :Ess Ess Publication.

10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur:RBSA

BLIS-104

पुस्तकालय वर्गीकरण

प्रायोगिक

उत्तर प्रदेश

राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

प्रयागराज

खण्ड

2

डी0डी0सी0 (19वां संस्करणः) भाग 2

इकाई -4 **61**

सारणी - 2 -भौगोलिक उपविभाजन (Area) का प्रयोग

इकाई -5 **78**

सारणी - 3 - विशिष्ट साहित्य-उप विभाजन (Subdivision of Individual Literature) का प्रयोग

इकाई -6 **95**

सारणी -4 ,5 ,6 ,7 (भाषा विषयक उपविभाजन, प्रजातीय मानवंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति) एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

विशेषज्ञ समिति - पाठ्यक्रम अभिकल्पन

डॉ0 पाण्डेय एस0 के0 शर्मा	अवकाश प्राप्त मुख्य ग्रंथालयी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली,
डॉ0 ए0 पी0 गक्खर	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला0
डॉ0 यू0 सी0 शर्मा	एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
डॉ0 सोनल सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.
डॉ0 ए0 पी0 सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0संजीव सर्राफ	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0 टी0एन0 दुबे (सदस्य सचिव)	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0प्र0रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक मण्डल

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री आर0 जे0 मौर्य	सहायक ग्रन्थालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री राजेश गौतम	प्रवक्ता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 मांगेराम	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,

परिमापक

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के स्वयं के हैं।

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, **प्रयागराज**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना, मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

खण्ड-2: डी0डी0सी0 (19वां संस्करणः) भाग 2

प्रस्तावना

डयूई दशमलव वर्गीकरण (19वाँ संस्करण) के प्रथम खण्ड के द्वितीय भाग में सात सहायक सारणियाँ दी गई हैं। इन सारणियों की प्रमुख विशेषता यह है कि इनमें दिये गये अंक किसी अनुसूची के वर्गांक नहीं बन सकते।

प्रस्तुत खण्ड में इन्हीं सारणियों के प्रयोग की विधि को समझाया गया है। यह खण्ड निम्न इकाइयों में विभाजित हैः-

इकाई-4 = सारणी 2 भौगोलिक उपविभाजन (Area)का प्रयोग :- इस इकाई के अन्तर्गत स्थान से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के क्षेत्रों का उल्लेख है। इस सूची का प्रयोग द्वितीय खण्ड में वर्णित अनुसूचियों में 001 से 999 तक किसी भी वर्गांक के साथ किया जा सकता है, चाहे निर्देश मिले या नहीं।

इकाई-5 = सारणी 3 विशिष्ट साहित्य उपविभाजन (Subdivision of Individual LIterature):- इस इकाई के अन्तर्गत भाषाओं के साहित्यपरक उपविभाजन - काव्य, नाटक, कथा साहित्य, निबन्ध संग्रह आदि दिये गये हैं। इसमें उल्लिखित उपविभाजनों का प्रयोग कभी भी अकेले नहीं किया जा सकता। इनका प्रयोग विशेष रूप से खण्ड 2 की अनुसूचियों में उल्लिखित 810 से 890 तक की तारांकित वर्ग संख्याओं के साथ ही किया जा सकता हैं।

इकाई-6 = सारणी 4, 5, 6, 7 भाषा विषयक उपविभाजन, प्रजातीय मानव वंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोगः- इस इकाई के अन्तर्गत उपरोक्त चारों सारणी के प्रायोगिक वर्गांक कैसे बनाये जायेंगे, उसकी विधि को विस्तार से उदाहरण सहित समझाया गया है।

इकाई–4 – सारणी– 2 – भौगोलिक उपविभाजन (Area) का प्रयोग

4.0 प्रस्तावना

4.1 उद्देश्य

4.2. भौगोलिक विभाजनों का परिचय

4.2.1 सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि (-1)

4.2.2 व्यक्ति (-2)

4.2.3 प्राचीन विश्व (-3)

4.2.4 आधुनिक विश्व (-4-9)

4.2.5 प्रायोगिक प्रक्रिया

4.2.6 भौगोलिक विभाजनों को उपयोग करने के नियम

(अ) निर्देश होने पर

(ब) निर्देश न होने पर

4.2.7 निर्देशित अवस्था में भी -09 का प्रयोग

4.2.8 सामान्य क्षेत्र, स्थान का प्रयोग

4.2.9 दो देशों के मध्य सम्बन्ध

4.2.10 सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट देश का एक साथ प्रयोग

4.3 सारांश

4.4 बोध प्रश्न

4.5 हल रहित प्रश्न

4.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

4.0 प्रस्तावना

भौगोलिक वर्गांक को संश्लेशित करने के लिए डी.डी.सी. में द्वितीय सारणी का प्रयोग महत्वपूर्ण हे। इस सारणी में अनुसूची में निर्देश दिये जाने पर एवं अनिर्देशित अवस्था में भी प्रयोग किये जाने सम्बन्धी नियमों का प्रावधान है। इस सारणी के अंकन भी डैस के साथ दिये गये है एवं अकेले प्रयुक्त नहीं होते। द्वितीय सारणी के अंकन किसी विशिष्ट विषय के साथ जोड़कर विषय की भौगोलिक विशेषता को स्पष्ट करते है। इस सारणी को डीडीसी में विस्तृत रूप से उल्लिखित किया गया है तथा 9 भागों में विभाजित किया गया है।

4.1. उद्देश्य (Objectives)

1. भौगोलिक विभाजनों का परिचय तथा उनके प्रयोग का ज्ञान करना।
2. इनको प्रयोग करने के विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित समझाना।
3. सामान्य क्षेत्रों एवं विशिष्ट स्थानों का एक साथ प्रयोग करने या दो विशिष्ट देशों का एक साथ प्रयोग करने से सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

4.2. भौगोलिक विभाजनों का परिचय

भौगोलिक विभाजनों को प्रथम खण्ड की सारणी-2 में वर्णित किया गया है। डीडीसी के 16 वें संस्करण तक भौगोलिक विभाजन मुख्य वर्ग 900 के अन्तर्गत 940-999 तक निर्दिष्ट किये गये जो विभिन्न देशों के आधुनिक इतिहास को प्रकट करते है। 930-939 तक के विभाजन प्राचीन इतिहास को दर्शाता हे। आवश्यकता पडने पर इतिहास के वर्गाक भौगोलिक विभाजन को दर्शाने हेतु उपयोग किया जाता था। जबकि 17 वें और 18 वें संस्करण में 930-939 की भांति विभाजित कीजिए संकेत के स्थान पर क्षेत्र अंकन जोडिये 1-9, 3-9, 4-9 (Add area notations 1-9,3-9, 4-9) निर्देश दिये गये है। डीडीसी-19 खण्ड 1 के पृष्ठ 14-386 तक भौगोलिक उप विभाजनों की एक विस्तृत सारणी दी गयी है। इस सारणी का उपयोग भौगोलिक क्षेत्रों की वर्ग संख्याओं का पता लगाने के लिए किया जाता है। जैसे महाद्वीप, देश, राज्य, शहर, समुद्री सीमाएं आदि। भौगोलिक विभाजन की सारणी सातों सहायक सारणियों में सबसे बड़ी सारणी है। इण्डो-अरेबिक न्यूमरल्स के सीमित आधार के कारण सम्पूर्ण सारणी को 9 भागों में विभक्त किया गया है।

विभिन्न विषयों का अध्ययन विभिन्न प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर भी किया जा सकता है। विशेषकर किसी देश के इतिहास के लिए भौगोलिक अंकन का महत्व और भी अधिक हो जाता है, जैसे भारत, अमेरिका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली के इतिहास एक दूसरे से भिन्न होंगे। इसी प्रकार इन देशों की संस्कृति, कला रीति-रिवाज, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत आदि एक-दूसरे से पृथक होते है।

इस वर्गीकरण पद्धति में भौगोलिक उपविभाजनों को निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर विभक्त किया गया है -

कटिबन्धीय क्षेत्र

4.1. उद्देश्य (Objectives)

1. भौगोलिक विभाजनों का परिचय तथा उनके प्रयोग का ज्ञान करना।
2. इनको प्रयोग करने के विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित समझाना।
3. सामान्य क्षेत्रों एवं विशिष्ट स्थानों का एक साथ प्रयोग करने या दो विशिष्ट देशों का एक साथ प्रयोग करने से सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित स्पष्ट करना।

4.2. भौगोलिक विभाजनों का परिचय

भौगोलिक विभाजनों को प्रथम खण्ड की सारणी-2 में वर्णित किया गया है। डीडीसी के 16 वें संस्करण तक भौगोलिक विभाजन मुख्य वर्ग 900 के अन्तर्गत 940-999 तक निर्दिष्ट किये गये जो विभिन्न देशों के आधुनिक इतिहास को प्रकट करते है। 930-939 तक के विभाजन प्राचीन इतिहास को दर्शाता हे। आवश्यकता पडने पर इतिहास के वर्गांक भौगोलिक विभाजन को दर्शाने हेतु उपयोग किया जाता था। जबकि 17 वें और 18 वें संस्करण में 930-939 की भांति विभाजित कीजिए संकेत के स्थान पर क्षेत्र अंकन जोडिये 1-9, 3-9, 4-9 (Add area notations 1-9,3-9, 4-9) निर्देश दिये गये है। डीडीसी-19 खण्ड 1 के पृष्ठ 14-386 तक भौगोलिक उप विभाजनों की एक विस्तृत सारणी दी गयी है। इस सारणी का उपयोग भौगोलिक क्षेत्रों की वर्ग संख्याओं का पता लगाने के लिए किया जाता है। जैसे महाद्वीप, देश, राज्य, शहर, समुद्री सीमाएं आदि। भौगोलिक विभाजन की सारणी सातों सहायक सारणियों में सबसे बड़ी सारणी है। इण्डो-अरेबिक न्यूमरल्स के सीमित आधार के कारण सम्पूर्ण सारणी को 9 भागों में विभक्त किया गया है।

विभिन्न विषयों का अध्ययन विभिन्न प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर भी किया जा सकता है। विशेषकर किसी देश के इतिहास के लिए भौगोलिक अंकन का महत्व और भी अधिक हो जाता है, जैसे भारत, अमेरिका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली के इतिहास एक दूसरे से भिन्न होंगे। इसी प्रकार इन देशों की संस्कृति, कला रीति-रिवाज, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत आदि एक-दूसरे से पृथक होते है।

इस वर्गीकरण पद्धति में भौगोलिक उपविभाजनों को निम्नलिखित विशेषताओं के आधार पर विभक्त किया गया है -

कटिबन्धीय क्षेत्र

4.2.1 सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि (–1) (Area regions, places in general)

सामान्य क्षेत्र, स्थान आदि के लिए –1 अंकन को आवंटित किया गया है तथा इन्हें निम्नलिखित वर्गो में विभक्त किया गया है –

- -11 Frigid zones
- -12 Temperate zones (Middle Latitude zones)
- -13 Torrid zones (Tropics)
- -14 Land and Land forms
- -15 Regions by types of vegetation
- -16 Air and water
- -17 Socioeconomic regions
- -18 Other kinds of terrestrial regions
- -19 Space

4.2.2. व्यक्ति (-2)

जब स्थान अंकन 1–9 को जोड़ने का निर्देश प्रत्यक्ष रूप से दिया गया हो तो जीवनी पत्राचार आत्मकथा आदि का अंकन सीधे क्रमश: 22–24 बिना मानक उपविभाजन जोड़ते हुए प्रयुक्त किये जाऐंगे, जेसे

उदाहरण – Elementary educators

372.92 न कि 372.092

4.2.3. प्राचीन विश्व (–3)

प्राचीन विश्व – भौगोलिक विभाजन के अंकन –3 को प्राचीन विश्व को निर्दिष्ट करने हेतु निर्धारित किया गया है। इनको निम्नलिखित प्रकार से सूचीबद्ध किया गया है–

- -31 China
- -32 Egypt
- -33 Palestine
- -34 India
- -35 Mesopotamia and Iranian plateau

-36 Europe north and west of Italian peninsula

-37 Italian peninsula and adjacent territories

-38 Greece

-39 Other parts of ancient world

4.2.4. आधुनिक विश्व (–4–9)

भौगोलिक अंकन -4-9 तक आधुनिक विश्व को वर्गीकृत किया जाता है। यहां पर पद आधुनिक विश्व का प्रयोग नहीं किया गया है लेकिन जब शीर्षक में प्राचीन विचारधारा का समावेश न हो तो इसे आधुनिक मानते हुए 4-9 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए। आस्ट्रेलिया महाद्वीप को अलग अंक आवंटित न करके इसकी उपेक्षा की गयी है जबकि अमेरिका को दो अंक (7,8) प्रदान किये गये है। एशिया, यूरोप एवं अफ्रीका को एक-एक अंक निर्धारित किये गये हैं। इस पद्धति में आधुनिक विश्व को निम्नलिखित भागों में विभक्त किया गया है-

-4 Europe यूरोप

-5 Asia एशिया

-6 Africa अफ्रीका

-7 North America उत्तरी अमरीका

-8 South America दक्षिणी अमरीका

-9 Other parts of the world विश्व के अन्य भाग

प्रत्येक महाद्वीप को 9 प्रमुख देशों में बांटा गया है। उदाहरण के लिए -5 एशिया को नीचे देखें :-

-51 China and adjacent areas

-52 Japan and adjacent islands

-53 Arabian peninsula and adjacent areas

-54 South Asia India

-55 Iran (Persia)

-56 Middle east (Near East)

-57 Siberia (Asiatic Russia)

-58 Central Asia

-59 Southeast Asia

प्रत्येक देश को पुनः विभाजित किया गया है -

-541 North Eastern India

-542 Uttar Pradesh

-543 Madya Pradesh

-544 Rajasthan

-545 Punjab region of India

-546 Jammu and Kashmir

-547 Western India

-548 Southern India

-549 Other jurisdication

4.2.5. प्रायोगिक प्रकिया (Practical Process)

सारणी 2 में वर्णित वर्गांक भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं है अर्थात ये अकेले प्रयुक्त नहीं हाते इनको अनुसूची में दिये गये वर्गांक के साथ जोड़ा जाता है। इस सारणी के अंकनों को डैश (-) के साथ वर्णित किया गया है। जब किसी वर्गांक के साथ भौगोलिक विभाजनों को जोड़ा जाता है तो डैश को हटा दिया जाता है। समस्त महाद्वीप को पुनः देशों में विभक्त किया है तथा कुछ देशों को दो स्थानों पर अंकित किया गया है जैसे चीन के लिए -51 और -31 अंकनों का निर्धारित किया गया है। -51 आधुनिक तथा -31 प्राचीन चीन के लिये हे। अगर शीर्षक में आधुनिक शब्द का प्रयोग हुआ हो या नहीं भी हुआ हो तो शीर्षक को आधुनिक के अन्तर्गत ही वर्गीकृत किया जायेगा लेकिन यदि प्राचीन शब्द का प्रयोग हुआ हो तो प्राचीन के अंतर्गत ही वर्गीकृत किया जायेगा।जैसे-

उदाहरण

1. History of Modern India
   9 + 54 = 954
2. History of India
   9 + 54 = 954
3. History of Ancient India
   9 + 34 = 934

सारिणी-2 भौगोलिक उप-विभाजन का प्रयोग

4.2.6 भौगोलिक विभाजनों को उपयोग करने के नियम (Rules for use of Geogrpahical Divisions)

भौगोलिक विभाजन के अंकनों का प्रयोग अकेले नहीं किया जा सकता। इनका प्रयोग किसी भी विशिष्ट विषय के साथ किया जाता है। इनको जोड़ने के लिए अलग अलग परिस्थितियों में पृथक पृथक नियमों का प्रावधान किया है।

(अ) निर्देश होने पर -

जब अनुसूची में किसी अंकन के साथ भौगोलिक अंकन को जोडने की आवश्यकता हो तथा उसके अन्तर्गत भौगोलिक अंकन जोड़ने का निर्देश Add area notation दिया हो तो इस अवस्था में भौगोलिक अंकन को अनुसूची के अंकन के साथ सीधे जोड़ देते है। इस अवस्था में निम्नलिखित निर्देश दिया रहता है - Add area notation 1-9 3-9 अथवा 4-9 from table 2 to the base number.... इस प्रकार इन निर्देशों के अनुसार अनुसूची में वर्णित किसी भी वर्गांक के अंतर्गत दिये गये निर्दिष्ट आधार अंक के साथ भौगोलिक विभाजन सारणी में दिये गये अंकन 1-9, 3-9 या 4-9 को जोड़ा जा सकता है। जैसे -

उदाहरण - 1. General Libraries of U.S.A 027.073

अनुसूची में General Libraries वर्ग अंकन 027 दिया गया है तथा इसके नीचे 01-09 Geographical treatment के अंतर्गत Add `areas' notation 1-9 from table 2 to base number 027.0' निर्देश दिया गया है अत:वर्गांक इस प्रकार बनेगा-

027.0 + 73 = 027.073

2. Foreign policy of India 327.54

अनुसूची में foreign policy के लिए अंकन 327 दिया गया है तथा विशिष्ट भौगोलिक विभाजन को जोड़ने के लिए .3-.9 में यह निर्देशित किया गया है कि आधार अंक 327 में भौगोलिक अंकन को सीधे जोड़ दीजिए। अत: वर्गांक इस प्रकार बनेगा -

327+ -54 = 327.54

आगे जो उदाहरण दिये जा रहे है वे इन्ही नियमों पर आधारित है -

3. Education of women in U.K.

376- Education of Women

376.9- Historical and geographical treatment (Base number)

41 – U.K.

376.9+41 = 376.941

4. Political parties in NewZealand

Political Parties	-	324.2
Instruction	-	Geographical treatment Add areas notation 4-9 from table 2 to base number 324.2
Area	-	New Zealand – 93 (T2)
	=	324.2 + 93 = 324.293

5. National Library of India

Governmentlibraries	-	027.5
Instruction	-	.53-.59 specific institutions Add `areas'notation 3-9 from table 2 to base number 027.5
India	=	54 (table 2)
	=	027.5+54= 027.554

यहां पर कुछ अन्य उदाहरण संक्षिप्त में दर्शाये गये है –

6. Birds of mountains –
598.29 + - 143 (T.2) = 598.291 43
7. Folk music of china
781.7 + -51 = 781.751
8. Historical atlas of India
911 + 54 = 911.54
9. Economic policy of Germany
337+ -43 = 337.43
10. Japanese diet
328 + -52 = 328.52
11. National Bibliography of America
015+ -73 = 015.73

(ब) निर्देश न होने पर

यदि किसी वर्ग संख्या के नीचे भौगोलिक उप-विभाजनों को जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिया गया हो तो सारणी – 1 मानक उप-विभाजन के अंकन .09 की सहायता से भौगोलिक उपविभाजन का प्रयोग किया जा सकता है । लेकिन .09 मानक उपविभाजन का प्रयोग करते समय उन सभी नियमों का व

सारिणी-2 भौगोलिक उप-विभाजन का प्रयोग

.09 की सहायता से भौगोलिक उपविभाजन का प्रयोग किया जा सकता है । लेकिन .09 मानक उपविभाजन का प्रयोग करते समय उन सभी नियमों का व निर्देशों का पालन करना चाहिए जो कि मानक उपविभाजन के प्रयोग के लिए बनाए गये हें अर्थात .09 का प्रयोग बिना शून्य के या एक दो तीन शून्य के साथ आदि। जेसे

उदाहरण -

1. Bureaucracy in Thailand

Bureaucracy - 351.001

Thailand - 593.(T.2)

यहां पर भौगोलिक विभाजन जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिये गये हैं। इसलिए सारणी 1 से .09 जोडा जायेगा इसके बाद सारणी 2 के अंकन प्रयुक्त होगें। अत: वर्गांक होगा -

351.001 + -09 + 593 = 351.001 095 93

2. Life of Jesus in England

Life of Jesus -- 232.9

England - 42 (T.2)

यहां पर सारणी 1 को दो शून्य से प्रयुक्त करने का निर्देश है। अत: वर्गांक इस प्रकार बनेगा -

232.9 + 009+42 = 232.900 942

3. Cancer disease in china

Cancer disease = 616.994

China = -51 (T.2)

यहां पर भौगोलिक विभाजन जोड़ने के लिए निर्देश नहीं दिये गये लेकिन मानक उपविभाजन को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है।अत: वर्गांक इस प्रकार बनेगा -

616.994 + -009 + -51 = 616.994 009 51

4. Military Science in India

Military Science = 355

India = -54 (T.2)

यहां भी निर्देश नहीं है इसलिए मानक उपविभाजन के अंकन को जोड़ा

5. Medical Sciences in America

61[0] + -09 + -73 = 610.973

नोट- नियमानुसार एक शून्य हटाया गया है। अत: जिस वांछित वर्गांक के बाद भौगोलिक उपविभाजन को जोड़ने के लिए सारणी 1 से .09 जोड़ना हो तो वांछित वर्गांक के नीचे यह अवश्य देख लें कि मानक उपविभाजन का प्रयोग किस प्रकार करना है जैसे -

Use - .01-.09 for standard subdivisions

Use - .001-.009 for standard subdivisions

Use - .0001-.0009 for standard subdivisions

Use - .00001-.00009 for standard subdivisions

4.2.7 निर्देशित अवस्था में भी-09 का प्रयोग (Use of -09 in the position of instructions)

इस पद्धति में कहीं कहीं पर भौगोलिक अंकनों को जोड़ने के लिए निर्देश .09 के साथ दिये रहते हैं जबकि इसका प्रयोग तभी किया जाता है जब निर्देश न दिये गये हों। उदाहरण के लिए यदि अनुसूची के पृष्ठ 556 पर देखें तो अंकन 382 (International commerce) के अंतर्गत अंकन 382.09 Historical and Geographical treatment के नीचे आधार अंक 382.09 के साथ भौगोलिक सारणी के अंकनों के प्रयोग के निर्देश है। भौगोलिक सारणी में जापान का अंकन –52 दिया गया है। अत:

उदाहरण - Foreign trade of Japan

382.09 + 52 = 382.095 2

4.2.8 सामान्य क्षेत्र, स्थान का प्रयोग

(-1 use of Areas, Places in general)

सामान्य क्षेत्र का प्रयोग भी विशिष्ट स्थान देश की भांति ही किया जाता है वह चाहे निर्देशित, अथवा अनिर्देशित अवस्था में हो। जैसे-

उदाहरण–1 Botanical gardens in tropical regions

580.744+ -13 = 580.744 13

अनुसूची में आधार अंक 580.744 के साथ सारणी 2 से भौगोलिक उपविभाजन -1 लाकर जोड़ने का निर्देश दिया गया है। सारणी 2 में Tropical

regions के लिए -13 अंकन दिया गया है।

सारिणी-2 भौगोलिक उप-विभाजन का प्रयोग

2 Elementary Education in Village

372.9 + -173 4 = 372.917 34

अनुसूची में 372.9 के सामने पद Historical and geographical treatment of elementary education दिया गया है तथा इसके अंतर्गत आधार अंक 372.9 के साथ सारणी-2 से भौगोलिक विभाजन 1-9 तक के अंकनों को जोड़ने का निर्देश है।

अन्य उदाहरण-

3. Library and Informations centres in rural area

027.0 + -173 4 = 027.017 34

4. Economic assistance by communist countries

388.91 + - 1717 = 338.911 717

5. Standard of living in rural areas

339.47 + -09 + -1734 = 339.470 917 34

4.2.9 दो देशों के मध्य सम्बन्ध (Relation between two countries)

किसी एक देश का सम्बन्ध विश्व के अनेक देशों से होता है। इस सम्बन्ध का दृष्टिकोण कुछ भी हो सकता है जैसे - आर्थिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक आदि। अनुसूची के निर्देशानुसार दो देशों के अंकनों को शून्य या -09 की सहायता से जोड़ते है किन्तु जब इस प्रकार का कोई निर्देश न दिया गया हो कि दो देशों के अंकन को इस प्रकार जोड़िए तो इन्हें नहीं जोडा जा सकता । जहाँ पर दो देशों के अंकनों को जोड़ने सम्ब्रन्धी निर्देश दिये गये है वहाँ पर दोनों देशों के अंकन को प्राथमिकता के आधार पर जोड़ना चाहिए। जैसे-

अ. अगर किसी ग्रन्थ में एक देश को अधिक महत्व प्रदान किया गया हो तो उसी देश के अंकन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए भले ही देश, शीर्षक एवं सारणी में पहले प्रयुक्त हुआ हो या बाद में।

ब. यदि ग्रन्थ में दोनों देशों को समान महत्व दिया गया हो तो भौगोलिक सारणी में जिसे पहले वर्णित किया गया हो उसे प्राथमिकता दी जानी चाहिए न कि जो शीर्षक में पहले प्रयुक्त हुआ हो।

स. स्थानीय देश को महत्व देने के लिए क्रम को ध्यान में न रखते हुए स्थानीय देश के अंकन को प्राथमिकता दी जा सकती है।

उदाहरण-

1. Foreign relation between India and Great Britain

   327+54+0+41 = 327.540 41

2. Japanese financial assistance to Korea

   338.91+52+0-519 = 338.915 205 19

3. Foreign trade between Great Britain and USA

   382.9+ -41+0+-73 = 382.94 107 3

4. Exchange rate of currencies between India and Iraq

   332.45609 + 54+0+-567 = 332.456 095 405 67

5. Economic policy of Germany towards France

   337+43+0+44= 337.430 44

कहीं-कहीं पर दूसरे देश को -09 के साथ जोड़ने के निर्देश दिये गये है जबकि प्रथम देश अंकन को विषय अंकन के साथ सीधे प्रयुक्त करने के निर्देश है।

उदाहरण - Colonization by Great Britain in India

325.3 + -41 + -09 + -54= 325.341 095 4

अनुसूची में 325.3 Colonization के अंतर्गत 33-.39 Colonization by specific countries में निर्देशित किया गया हे कि जिस राष्ट्र द्वारा औपनिवेश किया गया है उसका अंकन भौगोलिक सारणी से लेकर सीधे जोड़ा जायेगा तत्पश्चात सारणी 1 से -09 लेते हुए दूसरे देश के अंकन को जोड़ना चाहिए।

4.2.10 सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट देश का एक साथ प्रयोग (Use of places in general and specific countries)

अधिकांशत: अनुसूची में किसी वांछित शीर्षक के अंतर्गत भौगोलिक उपविभाजन जोड़ने के लिए निम्नलिखित प्रकार के निर्देश दिये रहते है। Add areas notation -1 from table 2, Add areas notation 1-9, add areas notation 3-9 या Add areas notation 4-9 आदि। लेकिन विषय की मांग देखते हुए कहीं कहीं पर सामान्य क्षेत्र एवं विशिष्ट महाद्वीप, देश को एक साथ प्रयोग करने के निर्देश दिये रहते है। ये निर्देश न भी दिये गये हों तो सारणी 2 के पृष्ठ 14 एवं 27 पर इनको प्रयोग करने से सम्बन्धित निर्देश दिये गये हें। इनको एक साथ प्रयोग करने की दो विधियां है।

इनको प्रयोग करने से सम्बन्धित निर्देश दिये गये हैं। इनको एक साथ प्रयोग करने की दो विधियां है।

सारिणी-2 भौगोलिक उप-विभाजन का प्रयोग

प्रथम विधि - सारणी 2 के पृष्ठ 14 पर उल्लिखित किया गया है कि भौगोलिक विभाजन के सामान्य क्षेत्र -1 या उसके किसी उपखण्ड के साथ भौगोलिक विभाजन -3-9 तक किसी भी अंकन का प्रयोग संयोजी चिन्ह शून्य के साथ जोड़ा जा सकता है। जैसे-

Torrid zone of Asia - -13+0+5=130 5

उदाहरण- Cattles of torrid zones of Asia

636.2 + -009 + -13 + 0 + -5

अनुसूची में 636.2 कैटल के लिए प्रयोग हुआ है इसके नीचे मानक उपविभाजन को दो शून्य के साथ प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। सारणी 2 के पृष्ठ 14 पर दिये गये निर्देशानुसार पहले Torried zone के लिए -13 तत्पश्चात शून्य जोड़ते हुए एशिया के लिए अंकन -5 को प्रयुक्त किया गया है अत: वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा -

636.200 913 05

दूसरी विधि - इस दूसरी विधि का वर्णन सारणी 2 के पृष्ठ 27 पर किया गया है इसमें यह निर्देशित किया गया है कि भौगोलिक उपविभाजन -3-9 तक के अंतर्गत दिये गये किसी भी अंकन का प्रयोग पहले होगा तत्पश्चात् योजक चिन्ह -009 के बाद भौगोलिक अंकन -11-19 तक के किसी भी अंकन को जोड़ा जा सकता हे लेकिन [-1] को छोड़ दिया जायेगा।

जैसे - Torried zone of Asia

-5+ -009 + [1]3 = -500 93

उदाहरण-

Birds of forest of China

598.29 + -51 +009+[1] 52

= 598.295 100 952

अन्य उदाहरण-

A study of curriculums for rural region in Pakistan

375.009+ - 1734+0+5491 = 375.009 173 405 491

Libraries and information centres in rural areas of India

027.0 + -173 4 + 0 + -54 = 027.017 340 54

या

027.0 + -54 + -009 + [-1] 734= 027.054 009 734

Disease of lungs in deltas of Europe

616.24+-009+-146+0+4= 616.240 091 460 4

4.3 सारांश

भौगोलिक वर्गांक को संश्लेषित करने के लिए डी.डी.सी. में द्वितीय सारणी का प्रयोग महत्वपूर्ण है। इस सारणी का प्रयोग अनुसूची में निर्देश दिये जाने पर एवं अनिर्देशित अवस्था में भी प्रयोग किये जाने सम्बन्धी नियमों का प्रावधान है। इस सारणी के अंकन भी डैस (-) के साथ दिये गये है तथा अकेले प्रयुक्त नहीं होते। द्वितीय सारणी के अंकन को किसी विशिष्ट विषय के साथ जोड़कर विषय की भौगोलिक विशेषता को स्पष्ट किया जाता हे। विभिन्न विषयों का अध् ययन विभिन्न प्रकार के भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर भी किया जा सकता है। विशेषकर किसी देश के इतिहास के लिए भौगोलिक अंकन का महत्व और भी अधिक हो जाता है, जैसे भारत, अमेरिका, जापान, जर्मनी, फ्रांस, इटली के इतिहास एक दूसरे से भिन्न होंगे इसी प्राकर इन देशों की संस्कृति, कला रीति-रिवाज, मूर्तिकला, नृत्य, संगीत आदि एक-दूसरे से पृथक होते है।

4.4 बोध प्रश्न

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझायी गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइये। बड़े कोष्ठक में दिये गये अंकनों को अन्तिम वर्गांक बनाते समय नियमानुसार हटाया गया है।

1. The Central government of India

   354+ -54 = 354.54

2. Atmospheric pressure in Forests

   551.54 + -09 + -152 = 551.540 915 2

3. Library of congress: A National library of America

   027.5 + -73 = 027.573

4. History of India during British period

   9 + 54 + [954].03 = 954.03

5. Executive of M.P. Universities

   378.1011 + -09 + -543 = 378.101 109 543

6.	Conversion of Italian Lira into Pound sterling		
	332.456+-09+-45+0+-41	=	332.456 094 504 1
7.	Secondary education and schools in Canada		
	373 + -71	=	373.71
8.	Employment problems in London (greater)		
	362.64 + -09 + -421	=	362.640 942 1
9.	French trade with England		
	382.09 + 44+ -0 +-42	=	382.094 404 2
10.	Emigration from Burma to saudi Arabia		
	325.2 + -591 + 09 + -538	=	325.259 109 538
11.	Tax revenues in uttar pradesh		
	336.2 + -009 + -541 2	=	336.200 954 12
12.	Treaties between India and china		
	341.026 6 + -54+0+-51	=	341.026 654 051
13.	Disease of ovaries in Ancient Greece		
	618.11 + -009 + -38	=	618.110 093 8
14.	Sugarcane in the region where Punjab Language is Predominates		
	611.61 + -09+ -175 + -9142	=	633.610 917 591 42
15.	Sheep in the region where Singhalese predominate		
	636.3 + -009 + -174 + -914 8	=	636.300 917 491 48
16.	special libraries in the region with muslim religion dominating area		
	026+ -0009 + -176 + -[29]71	=	026.000 917 671
17.	World history of developing countries		
	909.09+[-1] 723	=	909.097 23
18.	Islamic public workship in Iran		
	297.3 + -009 + -55	=	297.300 955
19.	Future of intercaste marriages in India		
	306.84+ -09 + -54	=	306.840 954
20.	Population movement from Bangladesh to India – its social implication		
	304.8 + -54+0+-5492	=	304.854 054 92

4.5 हल रहित प्रश्न

निम्नलिखीत शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. National library of India.

___

2. Wheat agriculture in Canada.

___

3. Who s /who in Japan.

___

4. Land Economics of Japan.

___

5. Monument of population from China to France.

___

6. Social problems in underdeveloped countries.

___

7. Cancer disease in Libya.

___

4.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Mannual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press

2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.

3. Dhyani, P (1985). Dhyani's guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi:Meropolitan.

4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,

5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.

6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.

7. Raju. A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.

8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi:Sterling Publishers.

9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi:Ess Ess Publication.

10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur:RBSA

इकाई-5 - सारणी-3 - विशिष्ट साहित्य उपविभाजन (Subdivisions of Individual Literature) का प्रयोग

5.0 प्रस्तावना

5.1 उद्देश्य

5.2. सारणी-3 का परिचय

5.2.1 सारणी-3 को प्रयोग करने के नियम

5.2.2 सारणी-3 में वर्णित विशिष्ट रूप

5.2.3 यदि शीर्षक में भाषा न दी गयी हो

5.2.4 जब साहित्य की भाषा शीर्षक में दी गयी हो।

5.2.5 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार

5.2.6 विलियम शेक्सपियर के कार्यों की तालिका

5.2.7 सारणी 3 ए के अंतर्गत वरीयताक्रम सारणी

5.2.8 कृत्रिम भाषाओं का साहित्य

5.3 सारांश

5.4 बोध प्रश्न

5.5 हल रहित प्रश्न

5.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

5.0 प्रस्तावना

तृतीय सारणी में साहित्यिक रूपों को दिया गया है तथा इस सारणी का प्रयोग मुख्य वर्ग साहित्य में 810-890 में सिर्फ उन्ही अंकनों के साथ होगा जिन्हें तारांकित किया गया है। यह साहित्य की पूरक सारणी है जिसका प्रयोग अकेले नहीं होता। तृतीय सारणी को विस्तार कर सारणी 3-ए भी दी गयी है जिससे सारणी 3 में वर्गांक बनाने के लिए अतिरिक्त तत्वों को भी संश्लेशित किया जा सकता है। इस इकाई में इस सारणी के प्रयोग सम्बन्धी नियमों को विस्तार से उदाहरणों सहित समझाया गया है।

5.1 उद्देश्य (Objectives)

1 मुख्य वर्ग साहित्य के साथ सारणी 3 की उपयोगिता को बताना।

2. साहित्य के विभिन्न रूपों को वर्णित करना।

3. साहित्यिक विशेषताओं का विश्लेषण करते हुए नियमों का उल्लेख करना तथा उदाहरण सहित समझाना।

4. सारणी 3 की विस्तारित सारणी 3-ए की उपयोगिता एवं इसके उपयोग करने के प्रावधानों को उदाहरणों साहित स्पष्ट करना।

5.2. सारणी-3 का परिचय

इस सारणी को विशिष्ट एकलों की श्रेणी में रखा गया है क्योंकि इस सारणी के अंकन का प्रयोग सिर्फ मुख्य वर्ग साहित्य 800 के साथ किया जाता है। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक निर्मित नहीं करते अर्थात ये अंकन भी अकेले प्रयुक्त नहीं होते। अनुसूची में 808 में वर्णित विषयों के साथ इनके प्रयोग के लिए विशिष्ट निर्देश दिये गये है तथा आधार अंक 810-890 के साथ इस सारणी का प्रयोग उन्हो अंकनों के साथ किया जायेगा जिन्हें तारांकित किया गया है। कुछ तारांकित वर्ग संख्याओं के अंतर्गत तो आधार अंक निर्दिष्ट कर दिये गये है जबकि कुछ तारांकित वर्ग संख्याओं के अंतर्गत आधार अंक नहीं दिये गये । जहां पर आधार अंक नहीं दिये गये वहां पर तारांकित वर्ग संख्या को ही आधार अंक मान लिया जाता है। सारणी 3 में ऐसे विभिन्न विषयों के लिए अंकन दिये गये है जो विभिन्न साहित्यों में पाये जाते है जैसे साहित्य की विविध विधायें या रूप अर्थात कहानी, नाटक, पद्य आदि। ये विभिन्न रूप प्रत्येक भाषा के साहित्य में पाये जाते है जैसे हिन्दी कविता, अंग्रेजी नाटक, उर्दू नाटक, जर्मन उपन्यास आदि। इन्हें सारणी 3 में एक साथ सूचीबद्ध किया गया है।

सारणी 3 को विस्तार करके एक उप-सारणी 3-ए दी गयी है, यह सारणी 3 की पूरक सारणी हें इस सारणी में उन विशिष्ट विधाओं को वर्णित किया गया है जिन दृष्टिकोणों को साहित्यों में चित्रित किया जाता है।

5.2.1. सारणी-3 को प्रयोग करने के नियम (Rules for use of Table 3)

1. सारणी को सिर्फ मुख्य वर्ग 800 में 808 के अंतर्गत दिये गये निर्देश द्वारा या 810-890 में दिये गये तारांकित उपविभाजनों के साथ ही प्रयोग किया जाता है।

2 जब साहित्य की भाषा न दी गयी हो, भाषा दी गयी हो या विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार दिये गये हों तो इन तीनों ही अवस्थाओं में -08, एवं 09 आदि का प्रयोग सावधानी से करना चाहिए।

3. जब शीर्षक में साहित्य की भाषा दी गयी हो लेकिन रूप न दिया गया

हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 389 पर वर्णित शून्य से प्रारम्भ होने वाले -01-09 के उपयुक्त अंकन का प्रयोग किया जायेगा।

4. जब शीर्षक में साहित्य की भाषा एवं रूप दोनों ही उपस्थित हों तो सारणी 3 के पृष्ठ 391 पर -1 Poetry के साथ वर्णित 1001-1007, 1008, 1009 का प्रयोग सम्बन्धित रूप के अंकन को जोडते हुए किया जाता है।

5. जब विशिष्ट रूप के विशिष्ट प्रकार का वर्ग हो जिन्हें तारांकित भी किया गया होता है, के साथ सारणी -3 के पृष्ठ 390 पर वर्णित -01-07, -08 -09 का प्रयोग किया जाता है।

6. जब साहित्य में एक से अधिक भाषा दी गयी हो या किसी भी भाषा का उल्लेख न हो तो इसे अनुसूची के 801-809 के अंतर्गत वर्गीकृत करने का निर्देश है।

सारणी 3-ए का प्रयोग सारणी 3 में दिये गये निर्देश द्वारा या अनुसूची में 808-809 कें अंतर्गत दिये निर्देश द्वारा ही किया जाता है।

5.2.2. सारणी-3 में वर्णित विशिष्ट रूप (Specific forms given in table-3)

साहित्य के विशिष्ट रूपों को सारणी 3 के पृष्ठ 391 में वर्णित किया गया है जो इस प्रकार है-

-1 Poetry पद्य/कविता

-2 Drama नाटक

-3 Fiction उपन्यास

-4 Essays निबन्ध

-5 Speeches भाषण

-6 Letters पत्र

-7 Satire and Humor उपहासपूर्ण एवं विनोदपूर्ण लेख

-8 Miscellaneous writings विविध लेखन

उपर्युक्त विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों का भी उल्लेख किया गया है, जेसे-

-2 Drama

-202 For radio and television

-203 For motion pictures

-204 Drama of restricted scope

-3 Fiction

-301 Short stories

-306 Cartoon fiction (comics)

-308 Specific types of fiction

-3085 Love and romance

अब साहित्य में उपलब्ध विशेषताओं के आधार पर निर्मित शीर्षकों को वर्गीकृत करने हेतु विभिन्न नियमों का उल्लेख किया जा रहा है-

5.2.3 यदि शीर्षक में भाषा न दी गयी हो

- जब शीर्षक में साहित्य की भाषा न दी गयी हो या सहित्य एक से अधिक भाषाओं से सम्बन्धित हो तो इन दोनों ही स्थितियों में शीर्षक को वर्ग संख्या 801-809 के अंतर्गत निर्दिष्ट सम्बन्धित अंकन के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए।

(अ.1) जब पद साहित्य रचना (Rhetoric/composition) दिया गया हो -

यदि साहित्य के शीर्षक में पद साहित्य रचना को उल्लिखित किया गया हो तो उसे 800 या 808.1-808.7 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण- Russian rhetoric

808.04+-917 1 = 808.049 171

अनुसूची में 808.4 (Rhetoric in specific language) के अंतर्गत 808. 043 - 808.049 में अन्य भाषा को सारणी-6 से लाने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में आधार अंक 808.04 में रशियन भाषा का अंकन -9171 सारणी-6 से लिया गया है।

(अ.2) मानक उप-विभाजन का प्रयोग - यदि शीर्षक में ऐसे पद का प्रयोग हुआ हो जो मानक उप-विभाजन के अंकन -01-07 से सम्बन्धित हो तो उसे अंकन 801-807 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। - जैसे

उदाहरण- Literary organization

8[00] + -06 = 806

मुख्य वर्ग 800 साहित्य में -06 मानक उपविभाजन से लिया गया है तथा नियमानुसार अन्तिम वर्गांक बनाते समय दो शून्यों को हटा दिया गया है।

(अ.3) यदि पद संग्रह (collection) उपस्थित हो - यदि शीर्षक में पद संग्रह का प्रयोग हुआ हो तो इसे 808.8 में उपयुक्त वर्गांक के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। यदि संग्रह के साथ विशिष्ट रूप भी उपस्थित हो तो इसे अंकन 808.801-808.803 के अंतर्गत तथा यदि विशिष्ट रूप का उल्लेख न हो तो इसे 808.8001-808.8005 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। जेसे -

उदाहरण- Collection of literature displaying realism

808.80+ -12 = 808.810 2

अनुसूची में 808.8 (collection from more than one literature) के अंतर्गत 808.801-808.803 (collections displaying specific features) में सारणी-3 ए के अंकन 1-3 को जोडने का निर्देश है। उपर्युक्त उदाहरण में Realism के लिए -12 अंकन को सारणी 3 ए से लिया गया है।

उदाहरण- Collection of literature displaying cartoon fiction

808.83+ [-30] 6 = 808.836

अनुसूची में 808.83 (Collection of fiction) के अंतर्गत 808.831-808.838 (specific scopes and types) में सारणी 3 के -30 को हटाते हुए 301-308 अंकन को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में cartoon fiction के लिए अंकन -306 को (30 छोड़ते हुए) सारणी-3 से लिया गया है।

(अ.4) यदि शीर्षक में समय (periods) भी दिया गया हो- यदि शीर्षक में विशिष्ट रूप के साथ समय का भी उल्लेख किया गया हो इसे 808.81-808.89 के अंतर्गत तारांकित नियमों का पालन करते हुए विशिष्ट तालिका में -01-05 Historical period के अंतर्गत निर्देशानुसार -090 हटाते हुए मानक उप-विभाजन सारणी से काल अंकन को जोड़ने का प्रावधान है। जैसे-

उदाहरण- Collection of 20th Century fiction

808.83+ 0+[-090] 4 = 808.830 4

(अ.5) किसी विशिष्ट व्यक्तियों के लिये/या द्वारा संग्रह- जब साहित्य को किसी व्यक्तियों के लिए संग्रह किया गया हो या किसी व्यक्तियों द्वारा संग्रह किया हो तो इसे 808.89 (Collections for and by specific kinds of persons) के अंतर्गत वर्गीकृत किया जाना चाहिए। यहों पर सारणी 3ए के अंकन 8-9 को प्रयोग करने का निर्देश मिलता है। सारणी 3ए के अंकन 8 (literature for and by various specific, racial, ethnic groups) के अंतर्गत सारणी-5 के अंकन

-03-99 को लाने के लिए निर्देशित किया गया है। जैसे-

उदाहरण- Collection of literature by Burmese

808.89+-8+-958=808.898 958

उपर्युक्त उदाहरण में निर्देशानुसार बर्मीज के लिए -958 अंकन को सारणी-5 से लिया गया है।

(अ.6) यदि शीर्षक में जीवनी, इतिहास, आलोचना एवं मूल्यांकन आदि उपस्थित हो- यदि शीर्षक में उपर्युक्त विचारों का समावेश किया गया हो तो इसे 809 अंकन के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण- Critical history of 19th century literature

8[00]+09034 = 809.034

उपर्युक्त उदाहरण में नियमानुसार 19वीं शताब्दी के अंकन को दो शून्य हटाते हुए प्रयोग किया गया है।

इसी प्रकार -

Critical appraisal of short stories

809+[808.8]3+[-30] 1 = 809.31

Biography of literature

809

5.2.4. जब साहित्य की भाषा शीर्षक में दी गयी हो।

यदि शीर्षक में साहित्य की भाषा का उल्लेख हो तो इसे मुख्य वर्ग साहित्य के 810-890 के अंतर्गत वर्गीकृत किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण - Modern Persian literature

891.55

(ब.1) यदि शीर्षक में साहित्य का विशिष्ट रूप न हो - यदि शीर्षक में साहित्य की भाषा का तो उल्लेख हो किन्तु इसका विशिष्ट रूप न दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 389 पर वर्णित जीरो से प्रारम्भ होने वाले -01-09 अंकन में से उपयुक्त वर्ग का प्रयोग किया जा सकता है।

Crirtical appraisal of German Literature

83[0]+09 = 830.9

(ब.1a) मानक उपविभाजन का प्रयोग- जब भाषा साहित्य में मानक उपविभाजन का प्रयोग करना हो तो उपयुक्त मानक उपविभाजन -01-07 का प्रयोग सारणी-1 से किया जा सकता है जबकि 08-09 का उल्लेख सारणी 3 में ही किया गया है। जैसे-

उदाहरण- Encyclopaedia of Marathi literature

891.46+ -03 = 891.460 3

अनुसूची में मराठी साहित्य के लिए 891.46 दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। नियमानुसार विश्वकोष के लिए -03 अंकन को मानक उप-विभाजन से लिया गया है।

(ब.1b) यदि पद संग्रह उपस्थित हो - यदि साहित्य की भाषा के साथ संग्रह का उल्लेख किया गया हो तो शीर्षक की भाषा के साथ सारणी-3 के अंकन -08 का प्रयोग किया जाता है। अंकन -08 में आधार अंक -080 लेते हुए सारणी 3ए के अंकन 01-99 को प्रयोग करने का निर्देश भी दिया गया है। नीचे क्रमश: दो उदाहरणों में इन नियमों का पालन किया गया है।

उदाहरण- Collection of Punjabi literature

891.42+-08 = 891.420 8

अनुसूची में 891.42 पंजाबी साहित्य के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा इसे तारांकित भी किया गया है। नियमानुसार संग्रह के लिए -08 अंकन को सारणी-3 से लिया गया है।

उदाहरण- Collection of Punjabi literature displaying naturalism

यह उदाहरण उपर्युक्त को विस्तार किया गया है पंजाबी साहित्य में संग्रह के लिए -08 जोडने के पश्चात आधार अंक -080 लेते हुए सारणी 3-ए का प्रयोग करना है। अत:-

891.42 + 080 + -12 = 891.420 801 2

इस वर्गांक में -12 अंकन को सारणी 3 ए से Naturalism के लिए प्रयुक्त हुआ है।

(ब.1c) यदि शीर्षक में पद इतिहास, समीक्षा, मूल्यांकन, जीवनी आदि दिये गये हों - यदि भाषा के साथ समीक्षा, इतिहास, विवरण आदि का उल्लेख किया गया हो तो इसके लिए सारणी 3 के अंकन -09 (History, description, critical appraisal) का प्रयोग किया जायेगा, जिसे पुन: दो भागों में विभाजित किया गया

है - पहले समय का अंकन जोड़ने के लिए तथा दूसरा सारणी 3ए के अंकनों को जोडने के लिए।

सारिणी-3 विशिष्ट साहित्य उप-विभाजन का प्रयोग

उदाहरण- History of Telgu literature

894.827 + -09 = 894.827 09

Critical study of Tamil literature

894.811 + -09 = 894.811 09

उपयुक्त दोनों उदाहरणों में साहित्य की भाषा को तारांकित किया गया है तथा नियमानुसार -09 अंकन को सारणी-3 से लिया गया है।

उदाहरण- Criticism of Hindi literature

Displaying marriage life

891.43+-09+-354=891.430 935 4

अनुसूची में हिन्दी साहित्य के लिए 891.43 अंकन प्रयुक्त हुआ है इसे तारांकित भी किया गया है। आलोचना के लिए -09 को सारणी-3 से लिया गया है इसके नीचे -091-099 के अंतर्गत सारणी 3 ए को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। सारणी 3ए से अंकन -354 मैरिज लाइफ के लिए जोड़ा गया है।

उदाहरण Critical analysis of 20th century German literature

83 + -0900 + -91 = 830.900 91

उपर्युक्त उदाहरण में 83 अंकन जर्मन साहित्य के लिए प्रयुक्त हुआ हैं। सारणी -3 में -09 क्रिटिकल को वर्णित करता है इसके नीचे -090 01-090 09 निर्देशित करता है कि काल/समय को जोड़ने के लिए आधार अंक -0900 लेते हुए सम्बन्धित साहित्य के लिए दी गयी समय तालिका से उपयुक्त अंकन को जोड़िये। उपर्युक्त उदाहरण में -91 बीसवीं शताब्दी के लिए जर्मन भाषा के लिए वर्णित समय तालिका से लिया गया है।

(ब.2) यदि साहित्य की भाषा के साथ उसका विशिष्ट रूप भी दिया गया हो - यदि शीर्षक में साहित्य की भाषा के साथ उसका विशिष्ट रूप भी दिया गया हो तो सारणी 3 के पृष्ठ 391-398 पर वर्णित उप-विभाजन -1-8 एवं उनके उपखण्डों का प्रयोग किया जायेगा। जैसे-

उदाहरण- Sanskrit Drama

891.2 + 2 (Table 3) = 891.22

Hindi Poetry

891.43+1 (T3) = 891.431

English Fiction

82+1(T3) = 821

(ब.2ए) मानक उप-विभाजन का प्रयोग - जब शीर्षक में साहित्य की भाषा एवं उसके विशिष्ट रूप के साथ मानक उपविभाजन की (.01-09) आवश्यकता हो तो सम्बन्धित मानक उपविभाजन को सारणी 1 से लाकर -001-007 तक के अंकन का प्रयोग किया जायेगा। -008-009 का उल्लेख पृष्ठ 391 पर ही किया गया है। ये सारे मानक उपविभाजन पद्य के साथ संयुक्त रूप से दिये गये है यदि दूसरा विशिष्ट रूप हो तो पद्य के अंकन में 1 को हटाकर उस रूप का अंकन जोड़ देते है। जैसे -2001, -3001, -4001 आदि।

उदाहरण-

- Encyclopaedia of Russian Poetry

  891.7+ 1003 = 891.710 03

- Encyclopaedia of Russian Drama

  891.7 + 200 +[-100]3 = 891.720 03

- Research on Sanskrit fiction

  891.2 +-300 +[-100]72 = 891.230 072

- Collection of French Poetry

  84 + -1008 = 841.008

- History of Telgu Drama

  894.827+-200 +[-100]9 = 894.827 200 9

- Biographyof Hindi Poets

  891.43 +-1009 = 891.431 009

(ब.2b) पद संग्रह के साथ सारणी 3-ए का प्रयोग

जब शीर्षक में साहित्य की भाषा, उसका विशिष्ट रूप, एवं संग्रह के साथ सारणी 3 ए का प्रयोग करना हो तो आधार अंक संग्रह के साथ एक शून्य को जोड़कर (-08+0) किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण- Collection of German Drama displaying Romanticism

83+-200+[-100]80 + 145= 832.008 0145

उपर्युक्त उदाहरण में जर्मन साहित्य के लिए 83 आधार अंक अनुसूची से लिया गया हे। -2 अंकन नाटक के लिए प्रयुक्त हुआ है तत्पश्चात निर्देशानुसार दो शून्य को जोड़ा गया है एवं -100 हटाते हुए 8 संगह के लिए प्रयुक्त हुआ हें सारणी 3 ए जाने के लिए -80 आधार अंक लिया गया है तथा -145 अंकन रोमांस के लिए प्रयुक्त हुआ हैं इसी प्रकार-

- Collection of English Fiction displaying fantasy

  82+-300 + [-100]80 + -15=823.008 015

- Collection of French Poetry about everyday life

  84+-10080+355=841.008 035 5

- Collection of Tamil Drama displaying ghosts

  894.811+ - 200+[-100]80 + 375 = 894.811 200 803 75

(ब.2c) विशिष्ट रूप के साथ इतिहास, मूल्यांकन तत्पश्चात सारणी 3 ए का प्रयोग

यदि शीर्षक में रूप के साथ पद मूल्यांकन, जीवनी, विवरण, आलोचना एवं समीक्षा आदि दिये गये हों तो सारणी-3 के उपविभाजन -1009 का प्रयोग आवश्यकतानुसार विशिष्ट रूप को परिवर्तित करते हुए किया जायेगा। जैसे Biography of poets (-1009), Biography of dramatist (-2009) इत्यादि। सारणी -3 में -1009 के अंतर्गत ही 3ए के अंकनों को प्रयोग करने का प्रावधान है।

उदाहरण- History of Burmese poetry

895.8 + [-100]9 = 895.810 09

अनुसूची में बर्मीज भाषा के साहित्य के लिए 895.8 अंकन प्रयुक्त हुआ है। इसके साथ सारणी 3 से पोइट्री के -1 एवं इतिहास के लिए -009 अर्थात संयुक्त नम्बर -1009 का प्रयोग किया गया है।

उदाहरण - History of human qualities in Hindi drama

891.43+-200 (-100)9+353=891.432 009 353

उपर्युक्त उदाहरण में Human qualities के लिए अंकन 353 को सारणी 3ए से लिया गया है।

- Evaluation of Urdu poetry displaying horror

891.439+-1009+16=891.439 100 916

Rajasthani poetry displaying special days : critical study

891.479+-1009+33 = 891.479 100 933

(ब.2d) विशिष्ट रूप के साथ काल का प्रयोग-यदि साहित्य का किसी अवधि के दृष्टिकोण पर अध्ययन किया गया हो अर्थात जब शीर्षक में रूप के साथ काल भी दिया गया हो तो इसे सारणी-3 में सम्बन्धित रूप के अन्तर्गत वर्णित केन्द्रित शीर्षक -11-19 Poetry of Specific periods, -31-39 fiction of specific period आदि के अंतर्गत दिये गये निर्देशानुसार वर्गांक निर्मित किया जायेगा। इसके लिए निम्नलिखित कम का प्रयोग किया जाता है -

साहित्य की भाषा + विशिष्ट रूप + काल +-10 को हटाते हुए -100-1009

नोट- अनुसूची में सूचीबद्ध भाषा के अंतर्गत काल तालिका का उल्लेख किया गया है। यदि जिस भाषा के अन्तर्गत इसको नहीं दिया गया, तो वहाँ पर जिस भाषा के अंतर्गत वर्णित काल तालिका को प्रयुक्त करना है का निर्देश दिया गया है जैसे बंगाली राजस्थानी आदि साहित्य के अंतर्गत 891.4 में वर्णित काल तालिका को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

उदाहरण- Collection of Hindi drama of 19th Century

891.43+-2+4+[-10]08 = 891.432 408

उपर्युक्त उदाहरण में हिन्दी के लिए 891.43 प्रयोग हुआ है, नाटक के लिए -2 तथा हिन्दी साहित्य के नीचे वर्णित तालिका से 4 उन्नीसवीं शताब्दी के लिए लिया गया है। नियमानुसार -10 को हटाते हुए 08 संग्रह के लिए प्रयोग हुआ है। यदि इसके साथ सारणी 3ए का प्रयोग करना हो तो 08 में एक शून्य बढाते हुए 3ए को प्रयोग किया जा सकता है। जैसे -

उदाहरण- Collection of later 20th century Tamil fiction about animal

894.811+-3+7+[-10]080+36

=894.811 370 803 6

उदाहरण- Critical analysis of 20th century German fiction

83+-3+91+[-10]09 = 833.910 9

उपर्युक्त उदाहरण में जर्मन साहित्य के लिए 83 अंकन प्रयुक्त हुआ है। उपन्यास हेतु सारणी -3 से 3 लिया गया है। जर्मन साहित्य के अंतर्गत वर्णित

सारिणी-3 विशिष्ट साहित्य उप-विभाजन का प्रयोग

काल तालिका से 91 को बीसवीं शताब्दी के लिए जोड़ा गया है। सारणी 3 में दिये गये -31-39 Fiction of specific periods निर्देशानुसार -10 को हटाते हुए 09 आलोचनात्मक विश्लेषण के लिए प्रयुक्त हुआ है। यदि शीर्षक की मांग हो तो 09 के बाद सीधे सारणी 3ए का प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि -1009 के अतर्गत निर्देश दिया गया है जैसे -

उदाहरण - Critical appraisal of fairies tales in later 20th century

in Hindi fiction

891.43+-3+7+[-10]09+375

=891.433 709 375

उपर्युक्त उदाहरण में 375 को सारणी 3ए से Fairies tales के लिए लिया गया है।

5.2.5 विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार

सारणी 3 में वर्णित विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों - 102, 108, 202, 301, 501 आदि का प्रयोग आवश्यकतानुसार किया जायेमा। इन सबकों तारांकित भी किया गया है। इनको तारांकित करने का तात्पर्य है कि -1-8 Specific forms के अंतर्गत ऐसे तारांकित अंकनों के साथ मानक उपविभाजन -01-07-08, -09 पद के अंकन को आवश्कतानुसार जोड़ने का प्रावधान है। अंकन -08 एवं -09 को पुनः सारणी 3A द्वारा उपविभाजित कर और अधिक सहविस्तृत बनाया गया है। कुछ अंकनों को तारांकित नही किया गया जैसे -802-808। जिन अंकनों को तारांकित नहीं किया गया उनके साथ केन्द्रित शीर्षक -1-8 के अंतर्गत दिये गये निर्देशों का पालन नहीं किया जायेगा। इन उदाहरणों में उपर्युक्त नियमों का प्रयोग हुआ है -

उदाहरण -

- Collection of realism Hindi drama for radio and television

  891.43+-202+-08+12=891.432 020 812

- Collection of English short stories

  82+-301 + -08 = 823.010 8

- Evaluation of Hindi love stories by singhlese

  891.43+-3085+-09+8+-9148

=891.433 085 098 914 8

History of Tragedy drama of French

84+-20512+-09=842 051 209

(ब.2f) विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकारों के साथ काल का प्रयोग।

यदि शीर्षक में विशिष्ट रूपों के विशिष्ट प्रकार के साथ काल का प्रयोग हुआ हो तो भाषा + विशिष्ट रूप + काल अंकन + विशिष्ट रूप के प्रकार को लिखते है। इसके बाद आवश्कयतानुसार केन्द्रित शीर्षक 1-8 के अंतर्गत दिये गये निर्देश का प्रयोग किया जा सकता हे। जैसे -

उदाहरण - Collection of 20th century realism Hindi drama for radio and television

891.43+202+7+08+12 = 891.432 027 081 2

Evaluation of Russian adventure of 20th century about Social themes

891.7 + -3 + 4 +-087+09+355

=891.734 087 093 55 अंकन

5.2.6 विलियम शेक्सपियर के कार्यो की तालिका

अनुसूची में शेक्सपियर के कार्यो की पृथक तालिका दी गयी है जिसे अंकन 822.33 के अंतर्गत वर्णित किया गया है। इसमें वर्णानुकम (alphabetical order) का प्रयोग किया गया है। शेक्सपियर के व्यक्तिगत कार्यो को O-Z तक सूचीबद्ध किया गया है,जिसमें O-R तक हास्य, S-V दुःखद. W-X एंतिहासिक, Y कविताएं तथा Z संसय कृतियों का उललेख किया गया है। कृतियों को अंग्रेजी वर्णमाला के साथ दो संख्याओं को डैश से जोड़ा गया है। इसमें पहली संख्या मूल पाठ के लिए तथा दूसरी संख्या उसकी आलोचना, समीक्षा से सम्बन्धित है।

यदि मूल कृति का वर्गाक बनाना हो तो अंग्रेजी वर्णमाला के साथ पहली संख्या का प्रयोग होगा लेकिन जब किसी मूलकृति की समीक्षा आदि का वर्णन हो तो अंग्रेजी वर्णमाला के साथ सिर्फ दूसरी संख्या का प्रयोग किया जायेगा। याद रहे दोनों संख्याओं का एक साथ प्रयोग किये जाने का प्रावधान नहीं है। उपर्युक्त नियमों पर आधारित उदाहरण निम्नलिखित है-

उदाहरण-

- Biography of Shakespeare

822.33B

- As you like it

822.33 03

- Criticism on As you like it

822.33 04

- Complete works on tragedies of Shakespeare

822.33 S-V

5.2.7 सारणी 3 ए के अंतर्गत वरीयताक्रम सारणी

सारणी 3ए में केन्द्रित शीर्षक 8-9 "Literature for and by specific kinds of persons" के अंतर्गत वरीयता क्रम सारणी दी गयी है। अत: आवश्यकता पडने पर इस सारणी का प्रयोग करें।

5.2.8 कृत्रिम भाषाओं का साहित्य

अनुसूची के पश्ष्ठ 1434 पर वर्गांक '899 other literatures' के अंतर्गत कृत्रिम भाषाओं के साहित्य को सारणी 6 की सहायता से वर्गीकृत करने का प्रावधान किया गया है।

5.3 सारांश

तृतीय सारणी में साहित्यिक रूपों को दिया गया है तथा इस सारणी का प्रयोग मुख्य वर्ग साहित्य में 810-890 में सिर्फ उन्ही अंकनों के साथ होगा जिन्हें तारांकित किया गया है। यह साहित्य की पूरक सारणी है। जिसका प्रयोग अकेले नहीं होता। तृतीय सारणी को विस्तार कर सारणी 3ए भी दी गयी है जिससे सारणी 3 में वर्गांक बनाने के लिए अतिरिक्त तथ्यों को भी संश्लेशित किया जा सकता है। सारणी 3 में ऐसे विभिन्न विषयों के लिए अंकन दिये गये है जो विभिन्न साहित्यों में पाये जाते है जैसे साहित्य की विविध विधाएं या रूप अर्थात कहानी, नाटक, पद्य आदि। ये विभिन्न रूप प्रत्येक भाषा के साहित्य में पाये जाते है जैसे हिन्दी कविता, अंग्रेजी नाटक, उर्दू नाटक, जर्मन उपन्यास आदि। इन्हें सारणी 3 में एक साथ सूचीबद्ध किया गया है। सारणी 3 को विस्तार करके एक उप-सारणी 3 ए दी गयी है,यह सारणी 3 की पूरक सारणी हें इस सारणी में उन विशिष्ट विधाओं को वर्णित किया गया है जिन दशष्ट्रिकोणों को साहित्यों में चित्रित किया जाता है।

5.4 बोध प्रश्न

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझायी गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइये। बड़े कोष्ठक में दिये गये अंकनों को अन्तिम वर्गांक बनाते समय नियमानुसार हटाया गया है।

1 Stream of consciousness in 20th English Novel

82+-3+91+-09+25 = 823.910 925

2 Collection of Hindi Poetry for children

891.43+-10080 + 9282 = 891.431 008 -92 8 2

3 Hindu religion in British fiction

82+-300+[-100]9 + 4 + 294.5= 823.009 429 45

4. Collection of English literature written by Negroes

82+-08+0+8+-036 = 820.808 036

5. All India conference on American literature

81+-060 + -54 = 810.605 4

6. Critical appraisal of Victorian fiction

82+-3+8+-09 = 823.809

7. Collection of 20th century literature

808.800 + [-090]4 = 808.800 4

8. Post Elizabethan English drama

82+-2+4 = 822.4

9. History of lyric poetry

809+[808.8]1+[-10]4 = 809.14

10. Collection of drama for motion pictures

808.82 + [-20]3 = 808.823

11. Biography of Rabindra Nath Tagore (Bengali poet, born in 1869)

891.44 + -1+4+[-10]09 = 891.441 409

12. Complete works of Shakespeare in English without notes

    823.33 + 1 = 822.331

13. History of Greek literature displaying social themes

    889+-09 + 355 = 889.093 55

14. Biography of English debators

    82+ - 503 + -09 = 825.030 9

15. French short story – a bibliography

    84+ -301+-016 = 843.010 16

5.5 हल रहित प्रश्न

निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. Critical study of Italian Drama.

   ____

2. Collections of Punjabi sonnets about love.

   ____

3. Biography of Hindi Poets.

   ____

4. History of English Drama of Elizabethan Period.

   ____

5. Collection of Drama.

   ____

6. Russian letters.

   ____

7. Every day life in French Fiction.

   ____

5.6 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Mannual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press

2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.

3. Dhyani, P (1985). Dhyani's guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi:Meropolitan.

4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,

5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.

6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.

7. Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.

8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi:Sterling Publishers.

9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi: Ess Ess Publication.

10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur:RBSA

इकाई-6- सारणी- 4, 5, 6, 7 (भाषा विषयक उप-विभाजन, प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति)एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

6.0 प्रस्तावना

6.1 उद्देश्य

6.2 सारणी-4 - विशिष्ट भाषाओं में उपविभाजन: (Subdivisions of Individual Languages): एक परिचय

6.2.1. भाषा उप-विभाजनों को प्रयोग करने के नियम

5.2.2 मुख्य वर्ग भाषा 400 के साथ सारणी 1 का प्रयोग

6.2.3. भाषा उप-विभाजन सारणी 4 का भाषाएं सारणी 6 द्वारा विस्तारण

6.2.4. एक भाषिक शब्दकोश

6.2.5. द्विभाषीय शब्दकोश

6.2.6. विशिष्ट शब्दकोश

6.2.7. विषय शब्दकोश

6.3. सारणी- 5 - प्रजातीय, मानववंशीय, राष्ट्रीय समूह (Racial, Ethenic, National Groups) : एक परिचय

6.3.1 सारणी-5 को प्रयोग करने के नियम

6.3.2 अनिर्देशित अवस्था में सारणी-5 का प्रयोग

6.3.3 सारणी 2 के माध्यम से सारणी-5 का प्रयोग

6.3.4 सारणी-3 के माध्यम से सारणी-5 का प्रयोग

6.3.5 सारणी-7 के माध्यम से सारणी-5 का प्रयोग

6.3.6 सारणी-5 तथा 2 का एक साथ प्रयोग

6.4 सारणी-6 - भाषाएं (Languages): एक परिचय

6.4.1 सारणी-6 को प्रयोग करने के नियम

6.4.2 सारणी-6 की संक्षिप्त तालिका

6.4.3 विभिन्न सारणियों में दिये गये निर्देश

अ- सारणी-1 मानक उपविभाजन

ब- सारणी-2 भौगोलिक क्षेत्र

स- सारणी-4 विशिष्ट भाषाओं के उपविभाजन

6.4.4. अनुसूची में दिये गये निर्देश

6.5 सारणी-7 - व्यक्ति (Persons): एक परिचय

6.5.1. विशेषज्ञ

6.5.2. सारणी 7 को प्रयोग करने के नियम

6.5.3. अनुसूची में दिये गये निर्देश द्वारा सारणी 7 का प्रयोग

6.5.4. अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन -024 का प्रयोग

6.5.5. अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन -088 का प्रयोग

6.5.6. सारणी-2 के माध्यम से सारणी-7 का प्रयोग

6.5.7. सारणी-3 के माध्यम से सारणी-7 का प्रयोग

6.5.8. सारणी-7 के लिए वरीयताक्रम सारणी

6.6 अग्रताक्रम तालिका (Table of Precedence) एवं उसका प्रये

6.7 सारांश

6.8 बोध प्रश्न

6.9 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

6.0 प्रस्तावना

सारणी- 4 में भाषा के उपविभाजनों का उल्लेख किया गया है। इनका प्रयोग मुख्य वर्ग 400 भाषा में तारांकित अंकनों के साथ ही किया जाता है। इस इकाई में चतुर्थ सारणी से सम्बन्धित शीर्षकों को वर्गीकृत करके समझाया गया है जिससे इस सारणी के प्रयोग सम्बन्धी नियमों का शिक्षार्थियों को ज्ञान हो सके।

सारणी- 5 में विशिष्ट विषयों के साथ प्रजातीय, मानव वंशीय एवं राष्ट्रीय समूह से सम्बन्धित शीर्षकों को नियमों सहित उदाहरण देकर समझाया गया है। सारणी 5 के साथ भौगोलिक क्षेत्र सारणी-2 के प्रयोग से सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। इस सारणी का प्रयोग निर्देशित एवं अनिर्देशित दोनों ही अवस्थाओं में किया जा सकता हें इससे सम्बन्धित उदाहरणों का भी उल्लेख किया गया है।

सारणी- 6 में भाषा के लिए प्रयुक्त प्रावधानों को समझाया गया है। इस सारणी के अंकनों का भी प्रयोग अकेले नहीं किया जाता लेकिन इन्हें उन्ही

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

अंकनों के साथ प्रयुक्त किया जाता है जिनके लिए अनुसूची या सारणी में निर्देश दिया गया हो। इससे सम्बन्धित नियमों को उदाहरण सहित दर्शाया गया है।

सारणी- 7 के अंकनों को अकेले प्रयकुत नहीं किया जाता है। इस इकाई में विशिष्ट विषय से सम्बन्धित, धर्म से सम्बन्धित, व्यवसाय एवं लिंग से सम्बन्धित व्यक्तियों पर आधारित शीर्षकों को वर्गीकृत करने के नियमों को उदाहरण सहित समझाया गया है। इस इकाई में द्वितीय एवं तृतीय सारणी के साथ सातवीं सारणी के प्रयोग एवं प्रथम सारणी के अंकन -024 एवं -088 के माध्यम से सातवीं सारणी के प्रयोग से सम्बन्धित नियमों को भी उदाहरण सहित समझाया गया है।

एक विषय की अनेक विशेषताएं हो सकती हैं। अनुसूची में इन विशेषताओं के आधार पर किये जाने वाले विभाजनों का सही क्रम बनाने वाली तालिका को अग्रताक्रम तालिका कहते है। डीडीसी के परिगणनात्मक पद्धति होने के कारण सम्भावित विशिष्ट विषय या एक विशिष्ट विषय के सभी सम्भावित पहलुओं को सह-विस्तृत वर्गांक प्रदान किया जा सके सम्भव नहीं है, ऐसी परिस्थिति में जब ग्रन्थ के विशिष्ट विषय का निर्माण करते समय एक से अधिक अंकनों को जोड़ना शीर्षक की मांग के अनुसार आवश्यक हो लेकिन उन्हें संश्लेषित करना असंभव हो तो अनुसूची में दी गई अग्रताक्रम तालिका की सहायता से उस पद के अंकन को चुना जाना चाहिए जिसे इस तालिका में अग्रता प्राप्त हो। अनुसूची में कुछ वर्गों के अंतर्गत इस अग्रताक्रम तालिका का समावेश किया गया है। यह तालिका वर्गीकार को यह निर्णय लेने में सक्षम तो बनाती ही है बल्कि मार्गदर्शन भी करती है, कि किस अंकन को छोड़ना है तथा किस अंकन को चुनना है। इससे बनने वाले वर्गांक में एक रूपता बनी रहती है।

6.1 उद्देश्य (Objectives)

1 सारणी - 4 मे भाषा उप-विभाजनों का ज्ञान कराना।
2. मुख्य वर्ग 400 भाषा के साथ इनको प्रयोग करने के नियमों को समझाना।
3. भाषा एवं विषय शब्दकोशों को वर्गीकृत करने के लिए विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित समझाना।
4. सारणी - 5 में प्रजातीय, मानववंशीय एवं राष्ट्रीय समूह के बारे में परिचय कराना।
5. इस सारणी को प्रयोग करने के विभिन्न प्रावधानों एवं नियमों को उदाहरण सहित समझाना। आदि।

6. सारणी 5 एवं 2 के अंकनों को एक साथ प्रयोग सम्बन्धी नियमों को उदाहरण सहित समझाना।

7. सारणी छः मे भाषा पर आधारित ग्रन्थों को वर्गीकृत करने सम्बन्धी नियमों को बताना।

8. विशिष्ट भाषा को बोलने वाले लोगों को वर्गीकृत करने के नियमों का उल्लेख करना।

9. भाषा पर आधारित क्षेत्रों के विषयों को वर्गीकृत करने के लिए नियमों एवं उदाहरण को समझाना।

10. सारणी- 7 में जिन विशेषताओं के आधार पर व्यक्तियों को समूहों में श्रेणीबद्ध किया गया है, से अवगत कराना।

11. इस सारणी की उपयोगिता एवं उपयोग करने के विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित समझाना आदि।

12. अग्रताकम तालिका का परिचय तथा उनके प्रयोग का ज्ञान करना।

13. इनको प्रयोग करने के विभिन्न नियमों को उदाहरण सहित समझाना।

6.2 विशिष्ट भाषाओं में उपविभाजन (Subdividion or Individual Languages) : एक परिचय

इस सारणी को प्रथम खण्ड में ही पृष्ठ 404-407 तक वर्णित किया गया है। ये भाषा विषयक उपविभाजन होते हैं। इस सारणी का प्रयोग केवल मुख्य वर्ग 400 भाषा के साथ ही किया जाता है। इनको उन्ही अंकन के साथ जोड़ा जाता है जिन अंकन को तारांकित किया गया है। चतुर्थ सारणी के अंकन भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं होते। अतः इनका प्रयोग भी अकेले नहीं किया जाता। ये अंकन मुख्य वर्ग 420-490 में वर्णित एवं तारांकित वर्गांक के साथ जोडने के बाद ही पूर्ण वर्गांक बनते है। इन अंकनों को प्रयोग करने के लिए 420-490 अनुसूची में विशिष्ट भाषाओं के नीचे निर्देश दिये गये है।

6.2.1 भाषा उपविभाजनों को प्रयोग करने के नियम

भाषा उप-विभाजनों को प्रयोग करने के लिए मुख्य नियम इस प्रकार हैं

1. इनका प्रयोग सिर्फ मुख्य वर्ग भाषा (400) में 420-490 के अंतर्गत तारांकित वर्गांक के साथ ही में ही किया जायेगा।

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन, प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

2. अनुसूची में जो भाषा शून्य पर समाप्त होती है उनके लिए आधार अंक शून्य को हटाते हुए प्रयोग किये जाने का निर्देश है।

3. यदि भाषा मुख्य वर्ग के साथ सारणी 4 के किसी अंकन का प्रयोग हो चुका हो फिर भी शब्दकोशों का अंकन जोड़ा जाना हो तो शब्दकोश के लिए मानक उपविभाजन के अंकन 3 का प्रयोग किया जायेगा।

4. द्विभाषी शब्दकोश में प्रथम भाषा का अंकन मुख्यवर्ग 400 से तथा दूसरी भाषा का अंकन सारणी 6 से लाया जायेगा।

इस सारणी में विभिन्न भाषाओं के विविध पहलुओं जैसे स्वरलिपि, पुरालिपिशास्त्र, ध्वनिशास्त्र, उच्चारण, शब्दकोश तथा व्याकरण आदि का उल्लेख किया गया है। इस सारणी पर आधारित कुछ वर्गीकृत शीर्षक इस प्रकार है -

उदाहरण-

1. Pronunciation in Urdu words

   491.439+-81 = 491.439 81

अनुसूची में तारांकित पद उर्दू भाषा का अंकन 491.439 दिया गया है। सारणी भाषा उपविभाजन में -81 शब्द Pronunciation के लिए प्रयुक्त हुआ है। उपर्युक्त शीर्षक इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

2. Phonology in Swedish language

   439.7+-15 = 439.715

अनुसूची में तारांकित पद स्वीडिश भाषा के लिए 439.7 प्रयुक्त हुआ है जबकि Phonology के लिए अंकन -15 सारणी 4 से लिया गया है।

3. Pitch and pauses in German language

   43 +-16 = 431.6

अनुसूची में जर्मन भाषा के लिए 430 अंकन दिया गया है लेकिन इसके नीचे आधार अंक 43 लेने का निर्देश है। इसे तारांकित भी किया गया है जबकि -16 Pitch and pauses को सारणी 4 से लिया गया है।

6.2.2 मुख्य वर्ग भाषा 400 के साथ सारणी 1 का प्रयोग (Use of Table 1 with main class language (400)

सारणी 4 में मानक उपविभाजन -01-02, -03,-.05-09 को प्रथम सारणी से लाने के लिए निर्देशित किया गया है। अतः भाषा मुख्य वर्ग में मानक उपविभाजन को एक शून्य के साथ प्रयोग किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण- 1 Directory of Marathi language

491.46+-025 = 491.460 25

अनुसूची में मराठी भाषा के लिए तारांकित अंकन 491.46 निर्धारित किया गया है। नियमानुसार सारणी 4 में जाने पर सारणी 1 पर जाने का निर्देश मिलता है अतः सारणी 1 के मानक उपविभाजन -025 का प्रयोग डाइरेक्टरी के लिए किया गया है।

2. Periodicals in French language

44 +-05 = 440.5

अनुसूची में फ्रेंच भाषा के लिए 440 अंकन दिया गया है जिसके नीचे आधार अंक 44 लेने का निर्देश है। अंकन -05 सारणी 1 से पीरियोडिकल के लिए प्रयुक्त हुआ है।

6.2.3. भाषा उप विभाजन सारणी 4 का भाषाएं सारणी 6 द्वारा विस्तारण (Extension of Table 4 by Table 6)

कभी-कभी एक भाषा के मौलिक स्वरूप में अन्य भाषा के शब्द इस प्रकार समाहित हो जाते है कि दोनों भाषाओं के शब्दों में पहचान कर पाना मुश्किल हो जाता है क्योंकि वह उसी भाषा के शब्द प्रतीत होने लगते है। यदि इस प्रकार का कोई ग्रन्थ लिखा गया हो तो शीर्षक को अंकन -24 Foreign elements (सारणी 4) का प्रयोग करके दूसरी भाषा को सारणी 6 से लाने का निर्देश दिया गया है। जैसे -

उदाहरण-

1. Use of French words in Russian language

491-7 + -24 + - 41 = 491.724 41

अनुसूची में रशियन भाषा के लिए 491.7 अंकन प्रयुक्त हुआ है। सारणी 4 से Foreign elements के लिए -24 अंकन को जोड़ा गया है। इसके नीचे दिये गये निर्देशानुसार फ्रेंच भाषा का अंकन -41 सारणी 6 से लाकर प्रयुक्त किया गया है। कुछ इसी प्रकार के उदाहरण नीचे दिये जा रहे है -

2. Latin words adopted in English language

42+-24 + -71 = 422.471

3. Test of English for English speaking people

42+-864 + 91431 = 428.649 1431

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

4- Sanskrit words in Telgu language

494.827 +-24 + -912 = 494.827 249 12

6.2.4. एक भाषिक शब्दकोश (Unilingual Dictionary)

एक भाषिक शब्दकोश उन शब्दकोशों को कहते है जिनमें शब्द एवं शब्दों के अर्थ एक ही भाषा में दिये गये होते है। इस प्रकार के शीर्षकों के लिए भाषा अंकन को मुख्य वर्ग 400 से लिया जायेगा तथा शब्दकोष के लिए सारणी 4 के अंकन 3 को जोड़ा जायेगा। यहां पर एक विशेष बात यह है कि मानक उपविभाजन के अंकन -03 का प्रयोग इस दशा में नही किया जाना चाहिए। -03 का प्रयोग सिर्फ विशिष्ट शब्दकोश (specialised dictionary) के लिए ही प्रयोग किया जायेगा। जैसे -

उदाहरण-

1 Hindi dictionary

491.43 + -3 = 491.433

अनुसूची में हिन्दी भाषा के लिए 491.43 अंकन दिया गया है तथा इसे तारांकित भी किया गया है डिक्शनरी के लिए सारणी-4 से -03 अंकन लिया गया है।

2 Oxford English to English Dictionary

42 + -3 =423

अनुसूची में अंग्रेजी भाषा के लिए 420 अंकन दिया गया है लेकिन इसके लिए आधार अंक 42 लेने का निर्देश है जबकि -3 अंकन शब्दकोष के लिए सारणी 4 से लिया गया है। इसी नियमों पर आधारित कुछ उदाहरण निम्नलिखित है -

3 Marathi language dictionary

491.46 + -3 = 491.463

4. Alphabetical dictionary in Spanish language

465 + -3 = 465.3

5- Pocket dictionary in Rajasthani language

491.479+-3 = 491.479 3

6.2.5. द्विभाषीय शब्दकोश (Bilingual Dictionary)

द्विभाषीय शब्दकोश वे होते है जिनके शब्दकोश में शब्द व उनके अर्थ की भाषा में भिन्नता होती है। ऐसे शब्दकोशों को वर्गीकृत करने के लिए सारणी 4 के पृष्ठ 405 में -32-39 Bilingual दिये गए निर्देश का पालन किया जाता है। इसके नीचे शब्दकोश की दूसरी भाषा को सारणी-6 से लाने का निर्देश है। द्विभाषीय शब्दकोश को वर्गीकृत करने के नियम इस प्रकार है -

(अ) जब एक भाषा कम समझी जाने वाली हो -

जब शब्दकोश द्विभाषीय हो तो कम समझी जाने वाली या कम प्रचलित भाषा का अंकन पहले आयेगा क्योंकि ऐसे शबदकोष का प्रयोग वे ही पाठक करेंगे जो कि उस भाषा का अर्थ जानना चाहेंगें। अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक समझी जानेवाली भाषा है। लेकिन जब हिन्दी के साथ इसे वर्गीकृत करेंगे तो अंग्रेजी कम समझी जाने वाली भाषा माना जायेगा क्योंकि हिन्दी हमारी मातृ भाषा है। इसलिए द्विभाषीय शब्दकोश का वर्गांक विभिन्न देशों में अलग-अलग हो सकता है।

उदाहरण

1. Hindi-English dictionary

   42 + -3 + -914 31 = 423.914 31

उपर्युक्त शीर्षक में अंग्रेजी भाषा हिन्दी भाषा की तुलना में कम प्रयोग में आने वाली भाषा है इसीलिए अंग्रेजी का अंकन पहले आया है। अंकन - 3 को सारणी 4 से लेते हुए हिन्दी भाषा का अंकन - 91431 को सारणी 6 से लाया गया है।

इसी नियम पर आधारित कुछ उदाहरण निम्नलिखित है -

2. German – Hindi dictionary

   43 + 3 + 914 31 = 433.914 31

3. English – Greek dictionary

   48 + -3 + 21 = 483.21

4. Tamil – Hindi dictionary

   494.811 + -3 + 914 31 = 494.811 391 431

(ब) यदि शब्दकोश की दोनों भाषाओं का महत्व समान हो -

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

जिस शब्दकोश की दोनों भाषाएं समान महत्व की हों अर्थात कौन सी भाषा कम प्रचलित है तथा कौन सी अधिक प्रचलित है इसका निर्धारण न हो सके तो इस प्रकार के शब्दकोश को वर्गीकृत करने के लिए उस भाषा के अंकन को प्राथमिकता प्रदान की जायेगी जिस भाषा के अंकन को अनुसूची में बाद में वर्णित किया गया है तथा जिस भाषा अंकन का वर्णन पहले है उसे शब्दकोष का अंकन लगाते हुए सारणी 6 से लाने का निर्देश दिया गया है। जैसे -

उदाहरण

1. German – French dictionary

   44 + -3 + 31 = 443.31

अनुसूची में फ्रेंच भाषा का अंकन 440 तथा जर्मन के लिए 430 दिया गया है नियमानुसार फ्रेंच के लिए आधार अंक 44 लेते हुए शब्दकोश के लिए सारणी 4 से -3 लिया गया है तथा जर्मन भाषा के लिए -31 अंकन सारणी-6 से लेकर जोड़ा गया है। इन्ही नियमों पर आधारित कुछ उदाहरण नीचे दिये गये है -

2. Punjabi – Bengali dictionary

   491.44 + -3 + -9142 = 491.443 9142

3. Concise Arabic – English dictionary

   492.7 + -3 + 21 = 491.732 1

6.2.6 विशिष्ट शब्दकोश (Specialised Dictionary)

कुछ भाषाओं के विशिष्ट कोश जैसे पर्यायवाची शब्द, शब्द संक्षेप, विलोम शब्द, समनाम आदि को वर्गीकृत करना हो तो सारणी 4 के अंकन -31 विशिष्ट शब्दकोष का प्रयोग किया जता हे। जैसे -

उदाहरण-

1. Dictionary of French abbreviations

   44 + -31 = 443.1

2. Dictionary of German homonym

   43 + -31 = 433.1

3. Synonyms in Urdu – dictionary

   491.439+-31 = 491.439 31

नोट - यदि दो से अधिक भाषाओं के शब्दकोश को वर्गीकृत करना हो

तो शीर्षक में प्रथम दो भाषाओं के बाद वाली भाषा को छोड़ दिया जात है क्योंकि दो से अधिक भाषा के अंकन को जोड़ने का प्रावधान नहीं है।

उदाहरण- Greek-German – French dictionary

उपर्युक्त शीर्षक में फ्रेंच भाषा को छोड़ दिया गया है तथा अनुसूची में ग्रीक भाषा के लिए 480 तथा जर्मन भाषा के लिए 430 प्रयुक्त किया गया है। दोनों समान महत्व की भाषाएं है इसलिए अनुसूची में बाद में वर्णित भाषा ग्रीक के लिए आधार अंक 48 लिया गया है तथा दूसरी भाषा के अंकन -31 को सारणी-6 से लिया गया है। अत: वर्गांक इस प्रकार निर्मित होगा - 48+-3+31 = 483.31

6.2.7 विषय शब्दकोश (Subject Dictionary)

विषय शब्दकोश से सम्बन्धित विषय की परिभाषा, शब्दों के अर्थ, प्रयोग, उत्पत्ति आदि के बारे में जानकारी मिलती है इसलिए इन्हें विषय वर्गांक के साथ वर्गीकृत किया जाता है इसके लिए सारणी -1 से -03 अंकन शब्दकोश हेतु प्रयोग किया जाता है न कि सारणी -4 से -3 अंकन। यदि शब्दकोश के साथ भाषा के अंकन को जोडना हो तो -03 के नीचे दिये गये निर्देश -032-039 by language के द्वारा भाषा अंकन को सारणी 6 से लेकर प्रयोग करते है। यदि विषय शब्दकोष में दो भाषाओं का उल्लेख किया गया हो तो शीर्षक में प्रयुक्त दूसरी भाषा को छोड दिया जाता है।

उदाहरण-

1. Glossary of Physics

   530 +-03 = 530.03

2. Dictionary of library classification in English

   025.42 + 03 + 21 = 025.420 321

3. Hindi-French dictionary of Microbiology

   576+-03 + 914 31 = 576.039 143 1

नोट- अन्तिम तीसरे उदाहरण में नियमानुसार फ्रेंच भाषा का अंकन प्रयुक्त नहीं किया गया है।

6.3 प्रजातीय, मानववंशीय, राष्ट्रीय समूह एक परिचय

प्रजातीय मानव वंशीय, राष्ट्रीय समूह को प्रथम खण्ड के पृष्ठ 408-417 तक सारणी-5 के अंतर्गत वर्णित किया गया है। सम्पूर्ण मानव जाति, राष्ट्रीय, स्थान आधारित प्रजातीय आधारित आदि कई समूहों में परिकल्पित हो सकती है

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

जेसे - नेपाली, भारतीय, पंजाबी, नीग्रो, अंग्रेजी भाषी, भारतीय आदि। सारणी-5 एवं 6 में भाषा के आधार पर व्यक्तियों को दर्शाने वाले अंकनों में समानता है। इन दोनों सारणियों के अंकन तथा मुख्य वर्ग भाषा 420-490 में भी समानता है। इस प्रकार के अंकनों के प्रयोग होने से डी.डी.सी. में स्मृति सहायक का गुण स्पष्ट रूप से दृष्टिगत होता है।

जैसे	सारणी-5	सारणी-6	मुख्य वर्ग भाषा
इंग्लिश	-2	-2	420
फ्रेन्च	-4	-4	440

6.3.1 सारणी-5 को प्रयोग करने के नियम

1 अन्य सारणियों की भांति इस सारणी का प्रयोग भी अकेले नहीं किया जा सकता अर्थात इसके अंकन भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नहीं होते।

2. इसका प्रयोग अनुसूची में विषयों के अंतर्गत दिये गये निर्देश के माध्यम से किया जाता है।

3 यदि अनसूची में इस सारणी को प्रयोग करने के लिए निर्देशित नहीं किया गया हो लेकिन शीर्षक में इसके अंकन को जोड़ने की आवश्यकता हो तो सारणी-1 मानक उपविभाजन के अंकन -089 (Treatment among specific racial, ethnic, national groups) की सहायता से सारणी-5 के 01-99 तक के किसी भी अंकन को प्रयुक्त किया जा सकता है। ऐसा निर्देश दिया गया है।

उदाहरण-

1 Psychology of Italians

155.84+-51 = 155.845 1

अनुसूची में मुख्य वर्ग 150 के उपविभाजन 155.8 में Ethnopsychology and national psychology के अंतर्गत 155.84 में सारणी-5 में -01-99 तक के अंकन को प्रयुक्त करने का निर्देश दिया गया है। उपयुक्त उदाहरण में -51 अंकन को सारणी-5 से इटेलियन के लियें प्रयोग हुआ है।

2 Education of Indians

371.97 + -914 11 = 371.979 141 1

अनुसूची में 371.97 में Special education for racial ethnic etc. groups के अंतर्गत सारणी-5 का प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। अंकन -914

11 भारतीयों के लिये प्रयुक्त हुआ है।

6.3.2. अनिर्देशित अवस्था में सारणी-5 का प्रयोग (Use of Table 5 without instruction)

यदि शीर्षक को वर्गीकृत करने के लिए सारणी-5 का प्रयोग आवश्यक हो लेकिन अनुसूची में इसके लिये निर्देश न दिया गया हो तो सारणी-1 मानक उपविभाजन-089 (Treatment among specific racial ethnic national groups) की सहायता से सारणी-5 के अंकनों को प्रयुक्त किया जा सकता है। मानक उपविभाजन -089 को प्रयुक्त करते समय यह ध्यान देना आवश्यक है कि इसका प्रयोग एक शून्य दो शून्य या अधिक या शून्य हटाते हुए किया जाना है।

उदाहरण- Manaul of husband – wife relationship for Americans

306.87 + -089+-13 = 306.870 89 13

अनुसूची में 306.87 में husband wife relationship दिया गया है लेकिन यहाँ अमेरिकन के लिए निर्देश नहीं है जो सारणी 5 में वर्णित है। अत: नियमानुसार मानक उपविभाजन के -089 अंकन की सहायता से अमेरिकन के लिए -13 अंकन को सारणी-5 से लिया गया है।

6.3.3. सारणी-2 के माध्यम से सारणी- 5 का प्रयोग (Use of Table 5 through Table 2)

इस सारणी का प्रयोग सारणी 2 के माध्यम से भी किया जा सकता है क्योंकि सारणी 2 के पृष्ठ 25 पर अंकन -174 (Regions where specific racial, ethnic, national groups predominate) दिया गया है तकि इसके अंतर्गत सारणी-5 के अंकन 01-99 को प्रयोग किये जाने का निर्देश है। जैसे -

उदाहरण- Adults education in the areas where Chinese predominate

374.9 + -174 +-951 – 374.917 495 1

अनुसूची में 374.9 में सारणी 2 को जोडने का निर्देश दिया गया है। सारणी 2 के अंकन -174 में दिये गये निर्देशानुसार सारणी-5 से चाइनीज के लिए -951 अंकन प्रयुक्त किया गया है।

6.3.4. सारणी-3 के माध्यम से सारणी-5 का प्रयोग (use of Table 5 through Table 3)

सारणी 3 का विस्तार 3ए के रूप में किया गया है। इस सारणी का प्रयोग मुख्य वर्ग 800 साहित्य के साथ किया जाता है। सारणी 3 में 08 एवं 09 के

अंतर्गत सारणी 3ए जाने का निर्देश है तथा 3ए में अंकन 8 के नीचे सारणी 5 के अंकन -03-99 को प्रयोग करने का निर्देश दिया गया है।

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

उदाहरण - Contributions of Bengalis to Hindi

891.43 + -09 + -914 4 = 891.430 991 44

6.3.5. सारणी-7 के माध्यम से सारणी-5 का प्रयोग (Use of table 5 through table 7)

सारणी 7 का प्रयोग नियमानुसार करने के बाद इस सारणी के -03 अंकन Persons by racial,ethnic, national background) के अंतर्गत सारणी 5 के अंकन -01-99 को प्रयोग करने का निर्देश है।

उदाहरण - Colon classification for Japanese practitioners

025.435+-024 + -03 + -956

=025.435 024 039 56

अनुसूची में कालन वर्गीकरण के लिए 025.435 अंकन दिया गया है। नियमानुसार -024 को सारणी 1 से लेते हुए -03 अंकन को सारणी 7 से लिया गया है। यहां पर -03 के अंतर्गत दिये गये निर्देशानुसार जापानीज के लिए -956 अंकन को सारणी 5 से लिया गया है।

6.3.6 सारणी-5 तथा 2 का एक साथ प्रयोग (Use of both table 5 and 2)

सारणी 5 की भूमिका में स्पष्टरूप से उल्लेख किया गया हे कि यदि अनुसूची में किसी प्रकार का निर्देश दिया गया है तो उसी का पालन किया जायेगा नहीं तो सारणी -5 के साथ सारणी 2 के अंकन को एक शून्य को जोड़ते हुए प्रयोग किया जायेगा। सबसे पहले अनुसूची में विषय का आधार अंक लीजिए इसके बाद यदि निर्देश हो तो निर्देशानुसार या मानक उप-विभाजन के -089 के माध्यम से सारणी 5 के अंकन को जोड़िये इसके बाद एक शून्य (ऐसे निर्देश अनुसूची में भी दिये रहते है) को जोड़ते हुए सारणी 2 के अंकन को जोडा जाना चाहिए। नीचे दिये गये उदाहरण इन्ही नियमों पर आधारित है -

उदाहरण - Descrimination agaisnt Indians living in Fiji

305-8+914 11 + 0+9611 = 305-891 411 096 11

अनुसूची में 305.8 के अंतर्गत सारणी 5 के अंकन एवं तत्पश्चात एक शून्य जोड़ते हुए सारणी 2 को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

इसी प्रकार -

World history of Indo-Aryan

909.04 + -914 = 909.049 14

Biography of Chinese

920.0092 +-951 = 920.009 295 1

Ethnic cookery of Koreans in India

641.592 + -957+0+54 = 641-592 957 054

Indian Handicraftsman in England

745-5 + -089 + -91411 + 0 +-42 = 745-508 991 411

6.4 भाषाएं (Languages): एक परिचय

प्रथम खण्ड की छठवीं सारणी में विश्व की अधिकांश भाषाओं को पृष्ठ 418-431 तक वर्णित किया गया है। अन्य सारणियों की भांति यह सारणी भी पूर्ण वर्गांक प्रदान नहीं करती अर्थात इसका प्रयोग भी कभी अकेले नहीं किया जाता। इस सारणी को विशिष्ट एकल की सारणी कहा जाता है क्योंकि इनका प्रयोग बिना निर्देश के नहीं किया जा सकता।

6.4.1 सारणी-6 को प्रयोग करने के नियम

(1) इस सारणी का प्रयोग भी अकेले पूर्ण वर्गांक के रूप में नहीं किया जाता।

(2) इस सारणी के अंकनों का प्रयोग कभी भी बिना निर्देश के नहीं किया जा सकता।

(3) इसका प्रयोग सहायक सारणियों या अनुसूची में दिये गये निर्देश के अनुसार ही किया जायेगा।

(4) यदि शीर्षक की मांग भाषा अंकन को जोड़ने की हो लेकिन विशिष्ट विषय के अंतर्गत या सहायक सारणियों में सारणी 6 को जोड़ने के निर्देश नहीं दिये गये हों तो वर्गांक अधूरा ही निर्मित किया जायेगा।

6.4.2 सारणी-6 की संक्षिप्त तालिका

-1 Indo-European (Indo-Germanic) languages

-2 English and Anglo-Saxon languages

-3 Germanic (Teutonic) language

-4 Romance languages

-5 Italian, Romanian, Rhaeto-Romanic

-6 Spanish and Portuguese

-7 Italic languages

-8 Hellenic languages

-9 Other languages

6.4.3 विभिन्न सारणियों में दिये गये निर्देश (Instructions given in different table)

(अ) सारणी-1 मानक उपविभाजन-

मानक उपविभाजन में -03 अंकन के अंतर्गत -032-039 में यह सारणी-6 के अंकन 2-9 को लाने के लिए निर्देशित किया गया है।

उदाहरण- Encyclopaedia of science and Technology in English

5[00]+-03 + - 21 = 503.21

मुख्य वर्ग विज्ञान 500 में सारणी 1 से विश्वकोष के लिए -03 का प्रयोग नियमानुसार दो शून्य हटाते हुए तथा -03 के अंतर्गत दिये गये निर्देश के आधार पर अंग्रेजी के लिए -21 अंकन सारणी -6 से लिया गया है।

(ब) सारणी-2 भौगोलिक क्षेत्र -

सारणी-2 के साथ सारणी-6 को प्रयोग करने के लिए अनुसूची में निर्देश मिलते है एवं सारणी-2 के अंकन -175 में दिये गये निर्देश के आधार पर भी सारणी-6 का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण-

History of general libraries in Urdu speaking countries

027.0 +-175+ - 91431 = 027.017 591 431

अनुसूची में 027 अंकन सामान्य ग्रन्थालयों के लिए प्रयुक्त हुआ है वहां पर .01-.09 Geographical treatment के अंतर्गत आधार अंक 027.0 में सारणी 2 के अंकन -1-9 को जोडने का निर्देश है। सारणी 2 के अंकन -175 Regions where specific language predominate के लिए प्रयुक्त हुआ

है इसके अंतर्गत सारणी 6 के अंकन -1-9 को जोडने का निर्देश है। उपर्युक्त उदाहरण इसी आधार पर वर्गीकृत किया गया है।

स- सारणी-4 विशिष्ट भाषाओं के उपविभाजन

इस सारणी में -3 शब्दकोश, -824 For those whose native languae is different एवं -864 के अंतर्गत सारणी 6 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देश दिये गये है।

उदाहरण- Persian – Hindi dictionary

491.55 + -3 + -91431 = 491.553 914 31

6.4.4 अनुसूची में दिये गये निर्देश

अनुसूची में जहां पर आवश्यकता महसूस की गयी है वहां पर सारणी-6 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देश मिलते है। अनुसूची में सारणी 6 का प्रयोग निर्देश होने पर ही किया जायेगा।

उदाहरण -1. Translation of Koran in German

297.1225 + -31 = 297.122 531

अनुसूची में 297.122 अंकन कुरान के लिये प्रयुक्त हुआ है इसके उपविभाजन 297.1225 में अनुवाद पद दिया गया है इसके अंतर्गत सारणी 6 के अंकन 1-9 को प्रयोग करने का निर्देश मिलता है। अंकन -31 को जर्मन भाषा के लिए सारणी-6 से लिया गया है।

2. Romanian Encyclopaedia

03 + -59 = 035.9

अनुसूची में 035 रोमैनियम-इटेलियन आदि भाषा के लिए प्रयुक्त हुआ है। इसके अंतर्गत आधार अंक 03 में सारणी 6 के 51-59 तक के अंकन को प्रयोग करने के निर्देश है। अंकन -59 को सारणी-6 से लिया गया है।

3. Encyclopaedia in Hindi language

039 + -91431 = 039.914 31

अनुसूची में 039 अन्य भाषा के विश्वकोश के लिए प्रयुक्त हुआ है यहां पर सारणी 6 के -2-9 तक के अंकन को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। हिन्दी के लिए अंकन -914 31 को सारणी-6 से लिया गया है।

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

इसी नियम पर आधारित कुछ उदाहरण इस प्रकार है -

4. Folk literature in Dutch language

   398.204 + - 3931 = 398.204 3931

5. Bibliographics in Punjabi language

   011.2 + - 914 2 = 011.291 42

6. Hindi translation of Bible

   220.5 +-914 31 = 220.591 431

6.5 सारणी - 7 - व्यक्ति (Persons): एक परिचय

यह प्रथम खण्ड की अन्तिम सारणी है जिसे पृष्ठ 432-452 में वर्णित किया गया है। इस सारणी में व्यक्तियों को विभिन्न विशेषताओं के आधार पर कई समूहों में विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक नहीं होते। जब शीर्षक में व्यक्तियों का, व्यक्तियों द्वारा एवं व्यक्तियों के लिए उल्लेख हुआ हो तो इस सारणी से ही इनसे सम्बन्धित अंकन प्रयुक्त किये जाते है।

इस सारणी के अंकनों को मुख्यतः दो प्रकार से विभाजित किया गया है प्रथम विभाजन -01-09 इन विभाजनों की रूपरेखा इस प्रकार है -

-01 Individual persons

-02 Groups of persons

-03 Persons by racial, ethnic, national groups

-04 Persons by sex kinship characteristics

-05 Persons by age

-06 Persons by social and economic characteristics

-07 Persons by physical and mental characteristics

-08 Generalists and novics

6.5.1 विशेषज्ञ

विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ, व्यवसाय, रूचि आदि से सम्बन्धित व्यक्तियों को -1-9 अंकन में श्रेणीबद्ध किया गया है।

-1 Persons occupied with philosophy and related discipline

-2 Persons occupied with or adherent to religi‹

-3 Persons occupied with the social science and socioeconomic activities

-4 Persons occupied with linguistics and lexicography

-5 Persons occupied with pure sciences

-6 Persons occupied with applied sciences (Technologists)

-7 Persons occupied with the arts

-8 Persons occupied with creative writing and speaking

-9 Persons occupied with geography, history, related disciplines and activities

6.5.2. सारणी 7 को प्रयोग करने के नियम (Rules for use of table-7)

1 अन्य सारणियों की भांति इस सारणी का प्रयोग भी स्वतंत्र रूप से नहीं किया जा सकता।

2 इसका प्रयोग अनुसूची में प्राप्त आधार अंक के साथ किया जाता है

3. अनुसूची में निर्देश मिलने पर इसका प्रयोग निर्देशानुसार किया जाता है।

4. यदि अनुसूची में निर्देश नहीं दिये गये हों लेकिन इस सारणी के अंकन को जोड़ना आवश्यक हो तो सारणी-1 मानक उपविभाजन के अंकन -088 या -024 की सहायता से इस सारणी के अंकन को प्रयुक्त किया जा सकता है।

5. मानक उपविभाजन के अंकन -024 का प्रयोग तब किया जाता है जब विषय में झुकाव स्पष्ट हो रहा हो। शेष अन्य अवस्थाओं में -088 का ही प्रयोग किया जाता है।

6. इस सारणी का प्रयोग निर्देशानुसार सारणी 2 एवं 3 की सहायता से भी किया जाता है।

6.5.3. अनुसूची में दिये गये निर्देश द्वारा सारणी 7 का प्रयोग

अनुसूची में उन विषयान्तर्गत सारणी 7 के अंकनों को प्रयोग करने के निर्देश दिये गये है जहां पर इनका प्रयोग करना आवश्यक प्रतीत हुआ है ताकि

विषय को स्पष्ट किया जा सके। अनुसूची में निर्धारित आधार अंक के साथ सीधे इस सारणी को जोडने के निर्देश दिये गये हैं। जैसे -

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

उदाहरण- 1. Customs of lawyers

390.4 +-344 = 390.434 4

अनुसूची में 390.4 (Customs of people of various specific occupations) वर्णित है उसके अंतर्गत सारणी 7 के 09-99 अंकन को जोडने के लिए निर्देशित किया गया है।

2. Personal finance to politicians

332.024 + - 329 = 332.024 329

अनुसूची में 332.024 में personal finance दिया गया है इसके अंतर्गत 02403-.02499 में personal finance for specific classes of persons के नीचे सारणी-7 को प्रयोग करने के लिए निर्देश दिया गया है।

6.5.4 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन -024 का प्रयोग

जब अनुसूची में निर्देश न दिया गया हो तथा शीर्षक में झुकाव या पक्षात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट हो रहा हो तो सारणी-1 मानक उप-विभाजन -024 works for specific types of users के अंतर्गत सारणी-7 के अंकनों को प्रयोग किया जाना चाहिए।

उदाहरण- 1. Calculus for Management scientists

515+-024 +-65= 515.024 65

अनुसूची में 515 केलकुलस के अंतर्गत सारणी-7 को प्रयोग करने के निर्देश नहीं दिये गये इसलिए Management scientists के लिए -65 अंकन का प्रयोग सारणी-1 मानक उपविभाजन के अंकन -024 के साथ किया गया है।

2. Works on gardening for Women

635+-024+-042 = 635.024 042

अनुसूची में 635 Garden crops के लिए प्रयुक्त हुआ है लेकिन सारणी-7 को प्रयोग करने के निर्देश नहीं दिये गये हैं इसलिए मानक उपविभाजन के अंकन -024 के माध्यम से औरत के लिए 042 अंकन को सारणी-7 से लिया गया है।

6.5.5 अनिर्देशित अवस्था में सारणी 1 के अंकन -088 का प्रयोग

जब अनुसूची में निर्देश न दिया गया हो तथा विषय में झुकाव स्पष्ट न हो तो मानक उपविभाजन के अंकन -088 का प्रयोग सारणी-7 के अंकनों को

जोड़ने के लिए किया जाता है।

उदाहरण- 1. Folk arts by the blind persons

745+-088+-08161 = 745.088 08161

अनुसूची में 745 decorative and minor arts के अंतर्गत फोक आर्ट दिया गया है लेकिन सारणी-7 को जोड़ने के लिए निर्देश नही दिये गये इसलिए सारणी-1 -088 का प्रयोग करते हुए -08161 अंकन Blind persons के लिए प्रयुक्त हुआ है। जो सारणी-7 से प्रयुक्त हुआ है।

2. Sex instructions to adults

613.96 +—088 +-056 = 613.960 880 56

अनुसूची में 613.96 manual sexual technique के लिए प्रयुक्त हुआ है। चूँकि यहां पर सारणी 7 को जोड़ने के लिए निर्देश नहीं है इसलिए सारणी 1 से .088 लेते हुए व्यक्ति के लिए .058 अंकन को सारणी-7 से लेकर प्रयुक्त किया गया है।

6.5.6. सारणी-2 के माध्यम से सारणी-7 का प्रयोग

यह पीछे बतलाया जा चुका है कि सारणी-2 का प्रयोग निर्देशित एवं अनिर्देशित अवस्था दोनों ही स्थितियों में किया जा सकता है। इस नियम का पालन करते हुए सारणी-2 के अंकन -176 Regions where specific religion predominate के अंतर्गत -1762-1769 में सारणी-7 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है।

उदाहरण- 2. Political conditions in Muslim countries

320-9+-176+-[29]71=320.917 671

अनुसूची में 320.9 अंकन political situations and conditions के लिए प्रयुक्त हुआ है तथा इसके अंतर्गत सारणी-2 के अंकनों को प्रयोग करने के लिए निर्देशित किया गया है। सारणी-2 में अंकन -176 में सारणी-7 के उपविभाजनों को -29 को छोडते हुए प्रयोग करने का निर्देश है।

6.5.7. सारणी-3 के माध्यम से सारणी-7 का प्रयोग

सारणी-3 की विस्तारित सारणी 3A में साहित्य के अन्य विशिष्ट तत्वों का वर्णन किया गया है। अंकन -92 (for and by persons of specific classes) के अंतर्गत दिये गये निर्देश के माध्यम से जिस वर्ग के व्यक्तियों के लिए या व्यक्तियों द्वारा साहित्य लिखा गया हो, उसे सारणी-7 से लाकर जोड़ा जा सकता

है। इन अंकनों को प्रयोग करने के निर्देश -9204-9279 तथा -929 के अंतर्गत दिये गये है।

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

उदाहरण- Collection of literature for Psychologist

808.89+-92 +-15 = 808.899 215

अनुसूची में मुख्य वर्ग 800 साहित्य में 808.89 (collection for and by specific kinds of persons) के लिए प्रयुक्त हुआ है यहों पर सारणी-3 ए के अंकन -8-9 जोड़ने का निर्देश दिया गया है। सारणी -3ए में -92 (for and by persons of specific classes) के अंतर्गत सारणी-7 से -04-79 अंकन जोड़ने का निर्देश दिया गया है। उपर्युक्त उदाहरण में -15 Psychologist के लिए सारणी-7 से लिया गया है।

6.5.8 सारणी-7 के लिए वरीयताकम सारणी

यदि ग्रन्थ/शीर्षक में सारणी-7 में वर्णित एक से अधिक पदों का प्रतिनिधित्व हुआ हो तो आधार संख्या के साथ उनमें से किसी एक को प्राथमिकता के आधार पर जोड़ते है। सारणी-7 के लिए निम्नलिखित प्राथमिकता सारणी निध ारित की गयी हे।

-08 Persons by physical and mental characteristics

-06 Persons by social and economic characteristics

-05 Persons by age

-04 Persons by sex and kinship characteristics

-03 Persons by racial, ethnic, national background

नोट- सारणी-7 की रूपरेखा में -03-08 तक के अंकन को उल्टेकम में रखकर ही वरीयताकम निर्धारित किया गया है।

6.6 अग्रताकम तालिका एवं उसका प्रयोग

एक विषय की अनेक विशेषताएं हो सकती है अनुसूची में इन विशेषताओं के आधार पर किये जाने वाले विभाजनों का सही क्रम बनाने वाली तालिका को अग्रताकम तालिका कहते है। जब शीर्षक में दो या दो से अधिक मानक उपविभाजन के अंकनों को जोड़ने की आवश्यकता हो तो किसी भी परिस्थिति में सिर्फ एक ही अंकन का प्रयोग किया जाता है। यह निर्णय सारणी-1 के पृष्ठ 1 पर दी गयी अग्रताकम तालिका में प्राप्त अग्रता के आधार पर लिया जाता है।

मानक उपविभाजन के प्रयोग सम्बन्धी दी गयी अग्रताक्रम तालिका इस प्रकार है-

-	special topics of general applicability	-04
-	Persons associated with the subject	-092
-	Techniques, precedures, apparatus, equipment, materials	-028
-	Study and teaching (except -074, -076, -077)	-07
-	Management	-068
-	Philosophy and theory	-01

क्रमशः इसी प्रकार इस तालिका को विस्तारित रूप से प्रथम सारणी के पृष्ठ 1 पर देखा जा सकता है। अनुसूची में विशिष्ट विषयों के अंतर्गत सूचीबद्ध अग्रताक्रम तालिकाओं में से कुछ तालिका नीचे दी जा रही है।

155- Differential and genetic psychology के अंतर्गत

-	Specific situations	155.93
-	Appraisals and tests	155.28
-	Psychology of specific ages and sexes	155.4-.6
-	Ethnopsychology and national psychology	155.8
-	Evolutional psychology	155.7
-	Environmental psychology	155.9
-	Sex psychology	155.3
-	Individual psychology	155.2

351.84 - Social Welfare and corrections के अंतर्गत

-	Services to the Psysically ill	351.841
-	Services to the mentally retarded	351.843
-	Services to the mentally ill	351.842
-	Services to the handicapped	351.844
-	Correctional administration	351.849
-	Services to the people aged 65 and over	351.846
-	Services to the young	351.847
-	Services to other groups	351.848
-	Services to the poor	351.845

364 - Criminology के अंतर्गत

-	Penalogy	364.6
-	Treatment of discharged offenders	364.8
-	offenders	364.3
-	Prevention of crime and deliquency	364.4
-	Causes of crime and deliquency	364.2
-	Criminal offenses	364.1
-	Historical and geographical treatment of crime and alleviation	364.9

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

इसी प्रकार वर्ग 362 Social welfare problems and services, 641.5 cookery, 658.304 Management of specific kinds of personnel, 704.942 Human figures and their parts, 808.81-.88 collection of specific forms, 809.8 literature for and by specific kinds of persons, 8-9 literature for and by specific kinds of persons (Table -3A) आदि के अंतर्गत अग्रताक्रम सारणी का समावेश किया गया है।

6.7 सारांश

चतुर्थ सारणी में भाषा के उपविभाजनों का उल्लेख किया गया है। इनका प्रयोग मुख्य वर्ग 400 भाषा में तारांकित अंकनों के साथ ही किया जाता है। इस इकाई में चतुर्थ सारणी से सम्बन्धित शीर्षकों को वर्गीकृत कर सभझाया गया है। ये भाषा विषयक उपविभाजन होते हैं। इस सारणी का प्रयोग केवल मुख्य वर्ग 400 भाषा के साथ ही किया जाता है। इनको उन्ही अंकन के साथ जोड़ा जाता है जिन अंकन को तारांकित किया गया है। चतुर्थ सारणी के अंकन भी अपने आप में पूर्ण वर्गांक नही होते। अत: इनका प्रयोग भी अकेले नहीं किया जाता। ये मख्य वर्ग 420-490 में वर्णित एवं तारांकित वर्गांक के साथ जोड़ने के बाद ही पूर्ण वर्गांक बनते है।

पाँचवीं सारणी प्रजातीय मानव वंशीय, राष्ट्रीय समूह को प्रथम खण्ड के पृष्ठ 408-417 वर्णित किया गया है। सम्पूर्ण मानव जाति राष्ट्रीय, स्थान आधारित, प्रजातीय आधारित आदि कई समूहों में परिकल्पित हो सकती है जैसे - नेपाली, भारतीय, पंजाबी, नीग्रो, अंग्रेजी भाषी भारतीय आदि। सारणी-5 एवं 6 में भाषा के आधार पर व्यक्तियों को दर्शाने वाले अंकनों में समानता है। इन दोनों सारणियों के अंकन तथा मुख्य वर्ग भाषा 420-490 में भी समानता है। इस प्रकार के अंकनों

के प्रयोग होने से डीडीसी में स्मशति सहायक का गुण स्पष्ट रूप से दशष्टिगत होता है।

छटवीं सारणी के अंकनों का प्रयोग अकेले नहीं किया जाता लेकिन इन्हें उन्ही अंकनों के साथ प्रयुक्त किया जाता है। इस सारणी में विश्व की अधिकांश भाषाओं को पृष्ठ 418-431 तक वर्णित किया गया है। अन्य सारणियों की भांति यह सारणी भी पूर्ण वर्गांक प्रदान नहीं करती अर्थात इसका प्रयोग भी कभी अकेले नहीं किया जाता। इस सारणी को विशिष्ट एकल की सारणी कहा जाता है क्योंकि इनका प्रयोग बिना निर्देश के कभी भी नहीं किया जा सकता।

सातवीं सारणी व्यक्ति प्रथम खण्ड की अन्तिम सारणी है जिसे पृष्ठ 432-452 में वर्णित किया गया है। इस सारणी में व्यक्तियों को विभिन्न विशेषताओं के आधार पर कई समूहों में विभाजित कर सूचीबद्ध किया गया है। इस सारणी के अंकन भी पूर्ण वर्गांक नहीं होते। जब शीर्षक में व्यक्तियों का, व्यक्तियों द्वारा एवं व्यक्तियों के लिए उल्लेख हुआ हो तो इस सारणी से ही इनसे सम्बन्धित अंकन प्रयुक्त किया जाता है। यदि अनुसूची में निर्देश नहीं दिये गये हों लेकिन इस सारणी के अंकन को जोड़ना आवश्यक हो तो सारणी-1 मानक उपविभाजन के अंकन -088 या -024 की सहायता से इस सारणी के अंकन को प्रयुक्त किया जा सकता है।

6.8 बोध प्रश्न

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझायी गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइये।

6.8.1 सारणी चतुर्थ

1. How to translate in Hindi from other languagess

   491.43 + -802 = 491.438 02

2 Derivation of Sanskrit words

   491.2 + - 2 = 491.22

3. Spelling of Russian words

   491.7 + -81 = 491.781

4. French for beginners

   44 + -842 = 448.42

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन, प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

5. Chinese words in Arabic language

492.7 + -24 + -951 = 492.724 951

6. Capitalization in French language

44 + -1 = 441

7. Glossary of Library Science in English

02[0] + -03 +-21 = 020.321

8 learn English through structural approach

42 + -82 = 428.2

9 Slangs in Hindi language

491.43 + -7 = 491.437

10 English pronounciation dictionary

42 + -81 + -03 = 428.103

हल रहित प्रश्न

निम्नलिखीत शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. Use of Alphabet in French language.

____

2. English, Russian Dictionary.

____

3. Kannada Grammar.

____

4. Swedish Phonology.

____

5. Use of Grammar Words in English language.

____

6. Dictionary of Grammar Homonym.

____

7. Slangs in French language.

____

6.8.2 सारणी पांच

1 Reading habits in Indians

028.9 + -089 + - 91411 = 028.908 991 411

2 World history of Jews

909-04 + - 924 = 909.049 24

3. Sinhalese migrant labour in New York state

331.63 + - 914+0+-747 = 331.639 140 747

4. Education of Punjabis in Canada

371.97 + 9142 + 0 + 71 = 371.979 142 071

5. Psychology of the Canadians of French origin

155.84 + - 114 = 155.841 14

6. Burmese non dominant aggregates in Africa

305.8+-958 + 0 + -6 = 305.895 806

7. Collection of literature for Sindhi

808.89 + -8 + -948 = 808.898 948

8. Dravidians races a biological study

572.8 + - 948 = 572.894 8

9. Celetic Folk Music

781.72 + -916 = 781.729 16

10. Labour stikes in the areas where Nepalis predominate

331.892 9 + -174 + -91495 = 331.892 917 491 495

11. Social relation of state with Sudanese

323.11 + - 5496 = 323.115 496

12. Bibliography of books writen by Indonesians

013 + -089 + -992 2 = 013.089 992 2

13. Economic conditions of regions where Eskimos predomenate

330.9 + - 174 + -97 = 330.917 497

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन, प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

14. Wedding and marriage customs among Indo-Aryans in Brazil

392.5 + -089 + -914+0+-81 = 392.508 991 408 1

15. Punjabi folk music in England

789.2 + 914 2 +0+-42 = 789.291 420 42

हल रहित प्रश्न

निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. World history of Thais people

___

2. Civil rights of Indians in Pakistan

___

3. Public Libraries in the regions where Japanese predominat

___

4. Collection of children literature.

___

5. Civilization among Chinese people

___

6. Education of Russian people in India.

___

7. Bulgarian folk Music.

___

6.8.3 सारणी छः

1. Dictionary of Punjabi Proverbs

398.9 + - 914 2 + - 03 = 398.991 420 3

2. Teaching of Tamil language in elementary school

372.65 +-948 11 = 372.659 481 1

3. Philippine language

499 + [-99] 21 = 499.21

4. India today – A Hindi weekly

059 + 914 31 = 059.914 31

5. General collections of quotations in Gujrati

   089 + -914 71 = 089.914 71

6. Social structure of Hindi speaking people in Uganda

   305.7 + - 914 31 + 0 + -676 1 = 305.791 431 067 61

7. General Rheotoric collection in Portuguese language

   808.04 +-69 = 808.046 9

8. History of general libraries in Danish speaking coutries

   027.0+-175+-398 1 = 027.017 539 81

9. Urdu Calligraphy

   745.619 +-914 39 = 745.619 914 39

10. Cancer disease in English speaking countries

    616.994 +-009 + -175+-21=616.994 009 175 21

हल रहित प्रश्न

निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. Special Libraries in Urban regions

____

2. Danish – Swedish Dictionary

____

3. Folk Literature in Punjabi language

____

4. Translation of Bhagwad Gita in French

____

5. General Encyclopedia in German Language

____

6. Grihlaxmi – A Hindi Monthly

____

7. Teaching of Italian Language in elementary Schools

____

6.8.4 सारणी सात

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

उपर्युक्त ढंग से विश्लेषित एवं समझाई गयी विधि द्वारा निम्नलिखित शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा सामने दिये गये वर्ग संख्या से मिलाइये।

1 Libraries in Islamic countries of Europe

027.0+4009+[1]76 + [-29] 71 = 027.040 097 671

2 Political situation in Budhist countries

320.9+-176+[-29]43 = 320.917 643

3. Library classification for philosophers

025.42+-024+-11 = 025.420 241 1

हल रहित प्रश्न

निम्नलिखीत शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. Collection of literature by Architect.

____

2. Folk arts by the blind persons.

____

3. Works on gardening for women.

____

4. Sex instruction for adult.

____

5. Works on homeopathy for dabblers.

____

6. List of Works of Librarian

____

7. Ethics of Widowed persons.

____

6.8.5 अग्रताक्रम तालिका

1. Child care of mentally retarted school boys

मन्दमतिक स्कूली लड़कों का पालन-पोषण

649.15 + [371.9] 28 = 649.152 8

2. Religious Priests, Reformers & Exorcistes = 291.6

धार्मिक पुरोहित, सुधारक एवं ओझा

3. Cutwork embroidery on table covers = 749.96

मेजपोषों पर कटवर्क काशीदाकारी

4. History of organising conferences in lib.Sc. 020.6

ग्रन्थालय विज्ञान सम्मेलनों के आयोजन का इतिहास

5. Paintings of groups of nude women= 757.4

वस्त्रहीन महिला समूहों के चित्र

6. Collection of English epigrams of = 828.302 080 92827

भारतीय लडकियों द्वारा एलिजाबेथ की अंग्रेजी सूक्तियों का संग्रह

7. Problems of Punjabi urban women 362.799

पंजाबी शहरी महिलाओं की समस्याएं

हल रहित प्रश्न

निम्नलिखीत शीर्षकों को वर्गीकृत कीजिए तथा दिये गये स्थान मे वर्ग संख्या लिखिए।

1. General statistics on crimes.

....

2. Medical Lab Technologist Association

....

3. Trade Catalogue of Hidni periodicals

....

4. Experimental research on heart disease

....

5. Bibliogrpahy of specific subject

....

6. Budhistic religious sects and reform movement in Italy

....

7. Higher educaiton in Afghan.

....

8. Geogrpahy of Himachal Pradesh

....

9. Arabic manuscript of chemistry

....

10. Ecology of salt water plant

....

11. Study of botanical herbariums.

....

12. Forecasting of fogs and mist.

....

13. Compound of Uranium.

....

14. Powers of Indian President

....

15. Biochemistry of Protozoa

....

16. Herald of Library Science: A quarterly (1962)

....

17. Scientific principle of Ibn Majals.

....

18. General Bibliogrpahy ofworks for girls & young women.

....

19. Guru Nanak: Founder of Sikkhism (Born in 1469)

....

20. Small Pox vaccination in children during 1970s.

....

21. Problems of unmarried women.

....

22. Japanese elementary educaiton for effective use of leisure.

....

23. Auditorium in university and colleges in Goa.

....

24. English to English dictionary of chemical terms.

....

25. Pathological anatomy of golden alge

....

!6. Terorissm from Pakistan to India.

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

....

27. Plays of Tagore (1861-1941)

....

28. An anthology of German poetry.

....

29. Ethnopsychology of Jews.

....

30. Journalism in Scandinavia.

....

31. Curriculums in Dewey Decimal classification.

....

32. Influence of religion on political activities and ideologies.

....

33. Document selection in Univeristy libraries.

....

34. Theft of Nations: the structure and operation of crime in U.K.

....

35. Foreign trade directory of china.

....

36. Contribution of Bengalis to Hindi poetry of past 1950 era.

....

37. Proceedings of the International organisation on fine and decorative arts, conference held at Japan.

....

38. Rashtriya Panchayat: Parliament of Nepal.

....

39. Migration to Saudia–Arabia from poor countries.

....

40. Commentaries and criticism recent Indian laws and regulations relating to Foreign exchange.

....

41. Directory of Indian public library.

....

42. Teaching history of Eastern Eurpoe

....

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

43. Bibliogrpahies ofgovt. of India publicaitons.

....

44. Critical appraisal of 'Devdas' – A Hindi motion picture.

....

45. Relation of consumption an saving

....

46. Madras public library act.

....

47. A study of news paper in areas where parsi speaking people.

....

48. Sahni English-Hindi dictionary.

....

49. History of general libraries in English speaking countries.

....

50. Bibliogrpahy of books written by Eskimos.

....

51. World history of Israilies.

....

52. German Abbreviations.

....

53. International conference on cataloging Principles (ICCP) held at paris in 1961.

....

54. Everyday life in Frenchdrama.

....

55. Collection of English epigrams of Elizabethan period by British girls.

....

56. Collection of Danish literature displaying romanticism.

....

57. Formulas of chemistry

....

58. Indira Gandhi (former P.M. of India, 1971-77)

....

59. POSDCORB

....

60. School of Courses of home science in India.

....

61. Economic causes of war and warfare.

....

62. Gross National Product (GNP)

....

63. National Public finance in Europe.

....

64. Chemistry and religion.

....

65. Vocational interest tests in India.

....

66. Cataloging of microfilm.

....

67. All India law reporters (AIR) – A periodical.

....

68. Photo duplicaiton techniqeus for lirbarian.

....

69. Botling of grape wine.

....

70. Drug treatment of veternary viral disease in cat.

....

71. Nitrate fertilizer in cirtrus fruits.

....

72. X-Ray diagnosis of mouth cancer.

....

73. Production of round in crocodile.

....

74. Uniforms in military forces.

....

75. Local administration of public telephones.

....

76. Civil exams in India.

....

77. Physical geogrpahy of Rajasthan

....

78 Biography of chemists.

....

79. Who's who in 18th century.

....

80. Social conditions of under developed countries.

....

सारिणी-4,5,6,7 भाषाविषयक उपविभाजन,प्रजातीय मानववंशीय राष्ट्रीय समूह, भाषायें, व्यक्ति एवं अग्रताक्रम तालिका का प्रयोग

6.9 सन्दर्भ एवं पाठय सामग्री

1. Comaromi, John P. [et al] (1982). Mannual for Use of Dewey Decimal Classification, 19th Ed. Albany, New York: Forest Press
2. Dewey, Melvil (1979). Dewey Decimal Classification and Relative Index. 3vols. 19th edition. Albany. New York: Forest Press.
3. Dhyani, P (1985). Dhyani`s guide to Dewey Decimal Classification. New Delhi: Meropolitan.
4. Gautam, J.N. and Singh, Niranjan. (2006). Dewey Decimal Classification: Practical Analysis (Ed.19 & 20). Agra: Y.K. Publisher,
5. Kumar, PSG. (1990). Practical guide to DDC 20: Dewey Decimal Classification. Nagpur: Dattsons.
6. Osborn, Jean (1982). Dewey Decimal Classification 19th edition: A study manual. Littleton: Libraries Unlimited.
7. Raju, A.A.N. (1995). Dewey Decimal Classification (DDC 20), theory and Practice: A self Instruction manual. Madras: T.R Publications.
8. Satija, M.P and Comaromi, John P. (1987). Introduction to the Practice of Decimal Classification. New Delhi: Sterling Publishers.
9. Sharma, Pandey S.K. (1998). Practical approach to DDC . New Delhi:Ess Ess Publication.
10. Sood, S.P. and Rawtani, M R. (1987). Practical Dewey Decimal Classification (Hindi). Jaipur:RBSA

।। सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ।।

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

BLIS-104
पुस्तकालय वर्गीकरण
प्रायोगिक

खण्ड

3

कोलन क्लासीफिकेशन (6वाँ संशोधित संस्करण) भाग-1

इकाई -7

कोलन क्लासीफिकेशन का परिचय, क्रम विकास एवं संरचना 135

इकाई -8

मूलभूत श्रेणियों का परिचय एवं प्रयोग 145

इकाई -9

वर्गीकरण के नौ चरण 157

विशेषज्ञ समिति - पाठ्यक्रम अभिकल्पन

डॉ0 पाण्डेय एस0 के0 शर्मा	अवकाश प्राप्त मुख्य ग्रंथालयी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली,
डॉ0 ए0 पी0 गक्खर	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला0
डॉ0 यू0 सी0 शर्मा	एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
डॉ0 सोनल सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
डॉ0 ए0 पी0 सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0संजीव सर्राफ	उप पुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0 टी0एन0 दुबे (सदस्य सचिव)	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0प्र0रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक मण्डल

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री आर0 जे0 मौर्य	सहायक ग्रन्थालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री राजेश गौतम	प्रवक्ता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 यू0 सी0 शर्मा	एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

परिमापक

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के स्वयं के हैं।

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना, मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

खण्ड-3: कोलन क्लासीफिकेशन (6वाँ संशोधित संस्करण) भाग-1

प्रस्तावना

डॉ0 एस0आर0रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति अन्य उपलब्ध वर्गीकरण पद्धतियों से मौलिक रूप में पूर्णतया भिन्न है। यह मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है। निरन्तर वर्धनशील बहुआयामी विषय जगत का सफलता से वर्गीकरण करने में यह पद्धति पूर्णतः सक्षम है। अब तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं किन्तु पाठ्यक्रम के अनुसार प्रस्तुत खण्ड में इसके छठें संस्करण के प्रायोगिक उपयोग की जानकारी प्रदान की गई है। इसका प्रथम संस्करण 1933 में प्रकाशित हुआ तथा इसका छठाँ संस्करण 1960 में तथा आवश्यक परिवर्तनों से युक्त परिशिष्ट के साथ 1963 में पाठ्यक्रम सम्बन्धी छठें संस्करण का पुनर्मुद्रण किया गया है।

यह खण्ड निम्नलिखित इकाइयों में विभक्त किया गया है :-

इकाई -7 कोलन क्लासीफिकेशन का परिचय, क्रम विकास एवं संरचना:- इस इकाई के अन्तर्गत द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का उदभव और विकास, इस पद्धति के विभिन्न भागों के उपयोग करने का तरीका, पद्धति में प्रयुक्त अंकन एवं संरचना तथा वर्गांक निर्मित करने के विभिन्न चरणों का प्रायोगिक उल्लेख किया गया है।

इकाई-8 मूलभूत श्रेणियों का परिचय एवं प्रयोग:- इस इकाई के अन्तर्गत मूलभूत श्रेणियों का अर्थ एवं प्रकार, पक्ष परिसूत्र का तात्पर्य एवं प्रयोग, अवशेष का सिद्धान्त, मूलभूत श्रेणियों के अनुसार वर्गांक निर्माण तथा आवर्तन एवं स्तर की अवधारणा को स्पष्ट किया गया है।

इकाई-9 वर्गीकरण के नौ चरण :- इस इकाई के अन्तर्गत आप यह जानने में सक्षम होंगे कि डॉ. रंगनाथन द्वारा वर्गीकरण करने हेतु कौन कौन से चरणों की चर्चा की गई है तथा पुस्तकों को वर्गीकृत करने में कौन कौन से चरणों में चलने के बाद वर्गांक निर्मित किये जाते हैं।

इकाई -7 : कोलन क्लासीफिकेशन का परिचय क्रम विकास एवं संरचना

संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 विषय प्रवेश

7.2 अवधारणा एवं विकास

7.3 6वाँ संशोधित संस्करण

7.3.1 परिशिष्ट

7.3.2 नियमावली

7.3.3 अनुसूची

7.3.4 क्लासिक्स

7.4 अंकन एवं द्विलघु वर्गीकरण में संरचना

7.5 मुख्य वर्ग

7.6 सारांश

7.7 अभ्यास हेतु प्रश्न

7.8 संदर्भ एवं इतर पाठ्य सामग्री

7.0 उद्देश्य

वर्गीकरण पुस्तकालय की आधारशिला है । किसी भी ग्रन्थालय के लिए पुस्तकों को व्यवस्थित करना सबसे प्रमुख एवं कठिन कार्य है। ग्रन्थालय वर्गीकरण को परिभाषित करते हुए पुस्तकालय विज्ञान के जनक डॉ0 रंगनाथन ने कहा था कि किसी भी पुस्तक के विशिष्ट विषय को ग्रन्थालय की कृत्रिम भाषा में अनुवादित करना ही ग्रन्थालय वर्गीकरण है अर्थात् पुस्तकालय में आने वाली पुस्तकों को वर्गीकरण पद्धति के आधार पर वर्गांक प्रदान करना पुस्तकालय अध्यक्ष का प्रमुख कार्य है। इस पाठ्यक्रम में दो वर्गीकरण पद्धतियों के द्वारा वर्गांक बनाने का प्रावधान की चर्चा होगी। प्रथम दशमलव वर्गीकरण पद्धति एवं द्वितीय - द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति। दशमलव वर्गीकरण पद्धति द्वारा वर्गांक बनाने की विधि का उल्लेख इसी प्रश्नपत्र की प्रथम 6 इकाईयों में वर्णित किया जा चुका है। जबकि इस पाठ्यक्रम की आगामी इकाईयों में आप द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के आधार पर वर्गांक बनाना सीखेंगे।

अतः इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपको ज्ञात होगा :-

1- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का उद्भव एवं विकास।

2- इस पद्धति के विभिन्न भागों के उपयोग करने का तरीका।

3- वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त अंकन एवं संरचना ।

4- मुख्य वर्ग एवं वर्गांक प्रदान करने के विभिन्न चरण।

7.1 विषय प्रवेश

इस पद्धति को हिन्दी भाषा में द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के नाम से जाना जाता है। इसका प्रतिपादन भारत में पुस्तकालय वैज्ञानिक डॉ० एस० आर० रंगनाथन द्वारा 1933 में किया गया। आज तक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन 7वें संस्करण (1987) की अनुक्रमणिका के प्रकाशित न होने के कारण अध्ययन/अध्यापन की दृष्टि से 6वाँ संशोधित संस्करण ही प्रयोग में लाया जाता है। इसका 6वाँ संस्करण 1960 में प्रकाशित हुआ था जिसको 1963 एवं 1990 में संशोधित कर दिया गया है।

7.2 अवधारणा एवं विकास

इस पद्धति के प्रकाशन से पूर्व परिगणनात्मक पद्धति ही पुस्तकालयों में वर्गांक प्रदान करने हेतु प्रयोग में लाई जा रही थी। परिगणनात्मक पद्धति की विशेषता यह होती है कि उसमें प्रत्येक विषय में वर्गांक प्रतिपादन द्वारा ही निरूपित किये जाते हैं। वर्गाकार किसी वर्गांक को निरूपित नहीं कर सकता। चूंकि रंगनाथन का सम्बन्ध मूल रूप से गणित विषय से था अतः एक नई तरह की स्कीम के निर्माण की कल्पना में एक दिन एक मिस्त्री को मशीन के पुर्जों को रिंच की मदद से अलग-अलग करते हुए देखा अलग करने के पश्चात् पुनः उसे मूलरूप में जोड़ते हुए देखा। इस क्रिया के पश्चात् रंगनाथन ने निश्चित किया कि ज्ञान व्यवस्थापन की चुनौतियों का सामना करने के लिए एक ऐसी पद्धति का निर्माण होना चाहिए जिसमें विषय को पहले तोड़ा (विश्लेषित) जाय और वर्गांक बनाने के लिए उसे जोड़ा (संश्लेषित) किया जाय। वर्गाकार को इतनी स्वायत्तता भी होनी चाहिए कि वह अपनी इच्छानुसार पुस्तकों का सूक्ष्म वर्गांक बना सके। इसीलिए द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति को वैश्लेषी - संश्लेषणात्मक (Analytico Synthetic) वर्गीकरण पद्धति के रूप मे जाना जाता है। यह वर्गीकरण पद्धति, ग्रन्थालय वर्गीकरण

के मौलिक सिद्धान्त, जिसमें पुस्तकालय विज्ञान के पाँच सूत्र, उपसूत्र, नियम, उपनियम तथा अधिनियम (Postulates) पर आधारित होने के कारण पूर्णतः वैज्ञानिक पद्धति है। डॉ. रंगनाथन द्वारा ग्रन्थालय वर्गीकरण के सूत्र, उपसूत्र, नियम, उपनियम एवं अभिगमों का विस्तृत विवेचन Prolegomena to Library Classification नामक पुस्तक में किया गया है।

विभिन्न संस्करण :- द्विबिन्दु वर्गीकरण के विभिन्न संस्करण निम्नवत् हैं :-

प्रथम संस्करण (1933) - इस संस्करण में केवल एक ही योजक चिन्ह कोलन (:) का प्रयोग किया गया था इसी के आधार पर इस पद्धति का नाम द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति पड़ा। इस संस्करण में सामान्य विभाजनों में भौगोलिक विभाजन, कालक्रम विभाजन, भाषा विभाजन की अनुसूचियाँ थी। इसमें अंग्रेजी के 26 अक्षरों का प्रतिनिधित्व कर 26 मुख्य वर्ग का प्रावधान है।

द्वितीय संस्करण (1939) - इस संस्करण में Δ डेल्टा नामक मुख्य वर्ग (Spritual Experience and Mysticism) को शामिल किया गया। आन्तक सिद्धान्त (Octave device) एवं स्वपनीय सिद्धान्त (Favour device) का भी प्रतिपादन किया गया। इसके साथ-साथ डॉ0 रंगनाथन ने अनुसूची एवं नियम के अतिरिक्त तीन हजार ग्रन्थों के वर्गांक बनाकर तृतीय भाग में सम्मिलित किया ताकि पुस्तकालयाध्यक्षों को पुस्तकों के सूक्ष्म वर्गांक बनाने में सहायता मिल सके।

तृतीय संस्करण (1950) - इस संस्करण के अन्तर्गत रंगनाथन द्वारा मूलभूत श्रेणियों में Personality, Matter एवं Energy के योजक चिन्ह (:) के स्थान पर क्रमशः (,) कामा, (;) सेमीकोलन, (:) कोलन, किया गया। विभिन्न प्रकार की युक्तियों में भौगोलिक विधि, काल विधि, अध्यारोपण विधि एवं वर्णक्रम विधि के उपयोग पर अधिक जोर प्रदान करते हुए सरलतम रूप में प्रस्तुत किया। इसमें नया योजक चिन्ह हाइफन (–) जोड़ा गया।

चतुर्थ संस्करण (1952) - इस संस्करण; में डॉ0 रंगनाथन द्वारा वर्गांक प्रदान करने में प्रयुक्त योजक चिन्हों को क्रमबोध मान निर्धारित किया गया तथा वर्गांकों में दिये गये पक्ष परिसूत्र में आवर्तन एवं स्तर की विचारधारा को वैज्ञानिक ढंग से शामिल किया गया।

पंचम संस्करण (1957) - इस संस्करण में नियमों एवं अनुसूचियों में

अनेक परिवर्तन किये गये। चतुर्थ संस्करण में सम्मिलित ग्रीक अक्षरों को मुख्य वर्गों में क्रमबोध स्थान प्रदान करते हुए अंकन में असीमित ग्राह्यता को प्राप्त करने के लिए Empty, Empting, Empty-Empting digit के द्वारा असीमित ग्राह्यता प्रदान की गई। स्थान और काल श्रेणी के द्वितीय स्तर की अवधारणा को निरूपित कर वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया।

6वाँ संस्करण (1960) - इस संस्करण में रंगनाथन द्वारा अर्थशास्त्र विषय को विभिन्न Sector में पुनः विश्लेषित करते हुए Partial Comprehensive Classes की विचारधारा को शामिल किया गया। वर्गीकरण पद्धति जिसका अध्ययन आप कर रहे हैं, की समस्त अनुसूचियाँ एवं नियम इसी संस्करण के आधार पर निरूपित की गई है।

6वाँ संशोधित संस्करण (1963)- डॉ0 रंगनाथन द्वारा 6वें संस्करण का संशोधन किया गया जो कि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रारम्भ में ही पृष्ठ संख्या 19 से 28 तक उल्लिखित है। सबसे प्रमुख संशोधन पृष्ठ - 19 से द्वितीय पैराग्राफ में मूलभूत श्रेणी समय का योजक चिन्ह डाट (.) के स्थान पर इनवर्टेड कामा (') के रूप में निरूपित किया। इस संस्करण में V :19—History, foreign policy, एवं M–Useful arts में मुख्य रूप से परिवर्तन किया गया है।

7वाँ संस्करण (1987) - 24 सितम्बर 1972 को रंगनाथन का देहावसान हो गया लेकिन इससे पूर्व ही 1969 में इस संस्करण का सार उन्होंने प्रकाशित कर दिया था। इस संस्करण में मूलभूत श्रेणी को तीन भागों में विभाजित किया matter material, matter property एवं matter method । यह संस्करण द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का वृहद संस्करण है जिसमें रंगनाथन का अथक प्रयास सम्मिलित है, यह संस्करण 1987 में प्रकाशित हुआ। लेकिन इस संस्करण की अनुक्रमणिका आज तक प्रकाशित न होने के कारण इसका उपयोग अध्ययन/अध्यापन में नहीं किया जा रहा है।

7.3 6वाँ संशोधित संस्करण 1963

इस पद्धति को समझने एवं इस पाठ्य सामग्री को पढ़ने से पूर्व कोलन क्लासीफिकेशन के 6वें संशोधित संस्करण की प्रति अपने समक्ष रखिए। इस वर्गीकरण पद्धति को शारदा रंगनाथन इनडाउमेन्ट फॉर लाइब्रेरी साइंस, बैंगलोर द्वारा प्रकाशित किया गया है, जो कि बाजार में आसानी से उपलब्ध है। इसकी पृष्ठ संख्या 9 पर 6वें संस्करण में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को दर्शाया गया है तथा पृष्ठ 12-16 तक इस

पद्धति का परिचय संक्षिप्त में प्रदान किया गया है। इसका अध्ययन कर आप इस वर्गीकरण पद्धति को आसानी से समझ सकते हैं।

7.3.1 परिशिष्ट (Annexure) :

वर्गीकरण पद्धति को समझने के लिए डॉ॰ रंगनाथन द्वारा इसको तीन भागों में विभक्त किया गया है। लेकिन आपके उपयोग के लिए एक अतिरिक्त भाग भी है जिसको परिशिष्ट के नाम से जाना जाता है। यह पद्धति के पृष्ठ सख्या 19 से 28 तक दिया गया है। इस भाग में 6वें संस्करण में होने वाले परिवर्तनों को व्यक्त किया गया है। परिवर्तनों को रंगनाथन द्वारा पृष्ठ संख्या के आधार पर दर्शाया गया है। सर्व प्रथम आप पेज संख्या के आधार पर परिवर्तनों को पूरी पुस्तक में संशोधित कर लीजिए। इस संशोधनोपरान्त आपको वर्ग संख्या के निर्माण में सुविधा होगी।

7.3.2 नियमावली (Rules) Part-1

वर्गीकरण पद्धति के इस भाग में डॉ॰ रंगनाथन द्वारा विभिन्न मुख्य वर्गों, वर्गीकरण में प्रयुक्त होने वाले नियमों, उपनियमों से सम्बंधित समस्त नियमों का विस्तृत वर्णन किया गया है। रंगनाथन ने इस भाग को भाग-1 कहा है। अतः जहाँ तक पेज संख्या 1. (एक दशमलव) जायेगी वहाँ तक यह भाग निरूपित है। इस भाग में कुल 124पृष्ठ है जब भी किसी नियम को आपको देखना हो 1 (एक दशमलव) पृष्ठ संख्या तक आप जा सकते हैं। पृष्ठ के ऊपर चैप्टर संख्या एवं मुख्य वर्गों के वर्गांक भी निरूपित किये गए हैं, जो नियमावली में देखने में सहायक हैं। पृष्ठ संख्या 1.123 पर एक Index का भी उल्लेख है।

7.3.3 अनुसूची (Schedules) Part-2

पद्धति के इस भाग का नाम अनुसूची है जिसको लेखक द्वारा संख्या-दो के रूप में निरूपित किया गया है। इस भाग में पृष्टों को 2. (दो दशमलव) से शुरू किया गया है। इस भाग में केवल 172 पृष्ठ है। मुख्यरूप से 48 भाग आप के लिए अत्यन्त उपयोगी है इसी भाग की सहायता से आप पुस्तकों को वर्गांक प्रदान करेंगे। 2.3 पृष्ठ पर रंगनाथन द्वारा पुस्तक को विशिष्टता प्रदान करने के लिए ग्रंथ संख्या (Book Number) बनाने का प्रावधान किया गया है। वर्गीकरण पद्धति के इतिहास में यह अकेली ऐसी पद्धति है जिसमें Book Number को बनाने की अनुसूची प्रावधानित है।

सर्वप्रथम आप पृष्ठ संख्या 2.4 खोलकर सभी मुख्यवर्गों की वर्ग संख्या कंठस्थ

कर लीजिए जो कि आगे आपके लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इस पृष्ठ पर रंगनाथन द्वारा विभिन्न मुख्य विषयों हेतु वर्गांक दिये हैं।

पृष्ठ संख्या 2.5 एवं 2.6 पर सामान्य एकलों (Common Isolates) का विवेचन किया गया है। जिसको अध्याय दो के रूप में दिया गया है। अध्याय-3 पृष्ठ 2.7समय एकल (Time Isolate) किसी भी मुख्य विषय के साथ समय का वर्गांक निरूपित करने हेतु प्रयुक्त किया जाता है। इसी प्रकार पृष्ठ संख्या 2.8 से स्थान एकल (Space Isolate) शुरू होता है और किसी भी मुख्य विषय के साथ स्थान का वर्गांक पृष्ठ संख्या 2.8 से प्राप्त करेंगे।

स्थान को वर्गांक प्रदान करते समय यह अवश्य ध्यान रखना होगा कि 44 India के नीचे पृष्ठ संख्या 2.9 पर As before 1956 लिखा मिलेगा तथा पृष्ठ संख्या 2.12 पर प्रथम पंक्ति में After 1956 लिखा मिलेगा। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि As before 1956 में किसी भी वर्गांक का प्रयोग आपके द्वारा तब किया जायेगा जब 1956 के पूर्व के स्थान एकल की आवश्यकता है। 1956 में भारतीय राज्यों का पुनर्गठन हुआ था। अतः 1956 के बाद के स्थान एकल का प्रयोग After 1956 की वर्ग संख्या से करना है। भारत में किसी भी शहर गाँव-तहसील का वर्गांक निरूपित करने के लिए Annexure में वर्णित पृष्ठ संख्या 22पर निरूपित Population cluster device से वर्गांक निर्मित किये जायेंगे। पृष्ठ संख्या 2.18 – 2.25 पर स्थान एकल की जानकारी प्राप्त करने के लिए (Geographil Index) का उल्लेख है। इससे सुविधा होती है कि अकरादि क्रम में किसी भी भौगोलिक स्थान का वर्गांक ढूँढ़ा जा सकता है।

भाषा सम्बन्धी वर्ग संख्या का उल्लेख अध्याय 5 पृष्ठ संख्या 2.26 पर किया गया है तथा अध्याय 6 में पृष्ठ संख्या 2.28 पर दशा सम्बन्धों (Phase Relation) का प्रावधान है। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि अध्याय 2 से 6 तक का उपयोग सभी मुख्य वर्गों में आवश्यकतानुसार सामान्य रूप से किया जायेगा। इसके उपरान्त समस्त मुख्य वर्गो को उनके मुख्य वर्ग में वर्गांक के आधार पर निरूपित किया गया है। पृष्ठ संख्या 2.124 से 2.172 पर Index का उल्लेख है। इसके माध्यम से किसी भी विषय के किसी भी पद Term को अकारादि क्रम Alphabetical Order बड़ी सुविधाजनक रूप से ढूँढ़ा जा सकता है। इसके अतिरिक्त निम्न दो Index और भी है जो निम्नवत् है। (a) Botany Index - P.2.61 - 2.63 (b) Zoology Index - P.72 - 2.78.

7.3.4 क्लासिक्स : (Classics) Part-3

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का यह तृतीय भाग है इसमें डॉ0 रंगनाथन द्वारा पूर्व उल्लिखित दो भागों की तरह ही पृष्ठ संख्या 3 (तीन दशमलव) के आधार पर निरूपण

है। इस भाग में कुल 126 पृष्ठ हैं। इसमें रंगनाथन ने अनुसूची के अनुसार (प्राचीन एवं धार्मिक) विभिन्न विषयों के वर्गांकों को खुद निरूपित किया है। जिनका उपयोग ग्रन्थालय में वर्गीकरण करते समय पुस्तकालयाध्यक्ष कर सकते हैं। आपके पाठ्याक्रमानुसार इसका उपयोग नहीं किया जाता।

7.4 अंकन एवं द्विबिन्दु वर्गीकरण की संरचना :

अंकन से तात्पर्य ग्रन्थों के वर्गांक में प्रयुक्त विभिन्न प्रकार के संकेतांक एवं चिन्हों से है। अंकन दो प्रकार के होते हैं। शुद्ध अंकन (Pure Notation) एवं मिश्रित अंकन (Mixed Notation) । शुद्ध अंकन से तात्पर्य उस अंकन से है जिसमें एक ही प्रकार की संकेतांकों का प्रयोग किया जाय जैसा आप दशमलव वर्गीकरण पद्धति में पढ़ चुके हैं कि इन्डो अरैबिक अंकों (Indo Arabic Numarles) का प्रयोग विषयों के वर्गांक बनाने के किया गया है। अतः यह शुद्ध अंकन है।

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में मिश्रित अंकन (Mixed Notation) का प्रयोग किया गया है जिसमें –

— अंग्रेजी वर्णमाला में बड़े अक्षर (Roman Capitals) A- Z कुल 26

— रोमन स्माल (Roman Small) a - z (i, *l*, O को छोड़कर कुल 23)

— अरैवियन संख्यायें (Indo-Arabian Numarals) 1 - 9

— ग्रीक अक्षर Δ $\sum$ कुल 2

— योजक चिन्ह जीरो, [0] हाइफन [-], स्टॉटर [( ], अरेस्टर [ )], कामा [,], सेमी कोलन [;], कोलन [:], डाट [.], इनवर्टेड कामा ['], डबल इनवर्टेड कामा ["] इम्परसेन्ट [&] , भविष्यकाल [→], भूत काल [←].

रोमन स्माल i, *l* और o को इसलिए छोड़ दिया गया है क्योंकि डॉ0 रंगनाथन ने अपनी अनुवर्ग सूची सी॰सी॰सी॰ में हमेशा वर्गांक पेन्सिल से लिखने की सिफारिस की है। रोमन स्माल i को सेमीकोलन [;], से *1* को रोमन स्माल [*l*] से एवं जीरो [0] को रोमन स्माल o से सन्देह हो सकता है। इसलिए इन अक्षरों को छोड़ दिया गया है।

उपरोक्त अंकनों में से डॉ0 रंगनाथन द्वारा रोमन कैपिटल्स का प्रयोग (A-Z) मुख्य वर्ग के लिए, रोमन स्माल्स को सामान्य एकल एवं दशा सम्बन्ध; अरैबिक संख्याओं का प्रयोग मुख्य वर्गों को पुनः विभाजित करने के लिए किया गया है।

7.5 मुख्य वर्ग : (Main Class)

पद्धति के पृष्ठ संख्या 2.4 पर मुख्य वर्गांक (Main Class) को निरूपित किया गया है। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के पृष्ठ संख्या 2.4 पर डॉ॰ रंगनाथन ने मुख्य वर्गो का उल्लेख किया है। डॉ॰ रंगानाथन ने सर्वप्रथम सम्पूर्ण ज्ञान जगत् को मुख्यतःतीन महाविषय में निम्नवत् विभाजित किया है :-

(1) A **Natural Sciences (प्राकृतिक विज्ञान)** - इसके अन्तर्गत निम्न मुख्यवर्गों को रखा है।

AZ = Mathematical Sciences — (गणितीय विज्ञान)
B = Mathematics — (गणित)
BZ = Physical Sciences — (भौतिकीय विज्ञान)
C = Physics — (भौतिकी)
D = Engineering — (अभियान्त्रिकी)
E = Chemistry — (रसायनशास्त्र)
F = Technology — (प्रौद्योगिकी)
G = Biology — (जीव विज्ञान)
H = Geology — (भूगर्भ विज्ञान)
HZ = Mining — (खनिकर्म)
I = Botany — (वनस्पतिशास्त्र)
J = Agriculture — (कृषि विज्ञान)
K = Zoology — (जन्तु विज्ञान)
KZ = Animal Husbandry — (पशुपालन)
L = Medicine — (चिकित्साशास्त्र)
LX = Phamacognosy — (औषधि विज्ञान)
M = Useful Arts — (उपयोगी कलायें)

(2) MZA **Humanities (मानविकी)** - डॉ॰ रंगनाथन ने इस महाविषय के अन्तर्गत निम्नलिखित मुख्य वर्गों की संस्थापना की है।

N = Fine Arts — (ललित कलायें)
NZ = Literature and Language — (साहित्य एवं भाषा)

O = Literature	—	(साहित्य)
P = Linguisties	—	(भाषा विज्ञान)
Q = Religion	—	(धर्म)
R = Philosophy	—	(दर्शन)
S = Psychology	—	(मनोविज्ञान)

(3) **SZ** **Social Sciences (सामाजिक विज्ञान) -** इस महाविषय के अन्तर्गत डॉ0 रंगनाथन ने निम्न मुख्य वर्गों को अंगीकार किया है :-

T = Education	—	(शिक्षाशास्त्र)
U = Geography	—	(भूगोल)
V = History	—	(इतिहास)
W = Political Science	—	(राजनीतिशास्त्र)
X= Economics	—	(अर्थशास्त्र)
Y = Sociology	—	(समाजशास्त्र)
YX = Social Work	—	(सामाजिक कार्य)
Z= Law	—	(विधि शास्त्र)

उपरोक्त के अतिरिक्त डॉ॰ रंगनाथन ने कुछ ऐसे मुख्य वर्गों को निरूपित किया है जो सामान्य प्रवृत्ति (General Nature) के हैं, जो निम्नवत् हैं :-

z = Generalia	—	(सामान्य वर्ग)
1 = Universe of Knowledge	—	(ज्ञान जगत)
2 = Library Science	—	(पुस्तकालय विज्ञान)
3 = Book Science	—	(ग्रन्थ विज्ञान)
4 = Jourlalism	—	(पत्रकारिता)
Δ= Spritual Experience and Mysticism	—	(आध्यात्मिक अनुभूति एवं रहस्यवाद)

इस प्रकार डॉ॰ रंगनाथन ने उपर्युक्त महाविषयों के अन्तर्गत विषयों (मुख्यवर्गों) को विभाजित किया है। पुनः इन मुख्यवर्गों के विभिन्न एकलों (उपविषयों) को उनकी विशेषताओं के आधार पर पाँच मूलभूत श्रेणियों (Five Fundamental Categories) में विभक्त किया है। उसके उपरान्त प्रत्येक पक्ष को पुनः एकलों (Isolates) एवं उप एकलों (Sub Isolates) में विभक्त कर सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्गीकरण (Micro Classification) को आगे बढ़ाने में अपना योगदान दिया है।

7.6 सारांश :

उपरोक्त अध्यनोपरान्त आप यह सीख चुके हैं कि —

1- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति का प्रादुर्भाव एवं उसका ऐतिहासिक विकास कैसे हुआ।

2- परिगणनात्मक एवं वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक पद्धति में क्या अन्तर है।

3- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति को आप किस प्रकार प्रयोग करेंगे।

4- इस पद्धति का अंकन क्या है।

5- डॉ. रंगनाथन द्वारा अंकन का आवंटन किस प्रकार किया गया है तथा मुख्य वर्गों के निर्माण में किन वैज्ञानिक नियमों का प्रयोग किया गया है।

7.7 अभ्यास हेतु प्रश्न :

1- ग्रन्थालय वर्गीकरण क्या है?

2- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के विकास की अवस्थाओं का उल्लेख कीजिए।

3- अंकन क्या है? द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त अंकन संरचना का विवेचन किजिए।

7.8 सन्दर्भ हेतु इतर पाठ्य सामग्री :

1. Colon Classification 6th revised edition.

2. Sewa Singh, Colon Classification : New Practical Mannual, B.R. Publishing Corporation, Delhi, 2006

3. Sharma, U.C. etc. द्विबिन्दु वर्गीकरण : एक सरल अध्ययन, वाई0 के0 पब्लिशर्स, आगरा, 2002।

इकाई -8 : मूलभूत श्रेणियों का परिचय एवं प्रयोग

संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 विषय प्रवेश

8.2 मूलभूत श्रेणियाँ

 8.2.1 अवशेष का सिद्धान्त

 8.2.2 समय

 8.2.3 स्थान

 8.2.4 ऊर्जा

 8.2.5 पदार्थ

 8.2.6 व्यक्तित्व

8.3 आवर्तन एवं स्तर

 8.3.1 आवर्तन

 8.3.2 स्तर

8.4 सारांश

8.5 अभ्यास हेतु प्रश्न

8.0 उद्देश्य

इस इकाई का प्रमुख उद्देश्य डॉ0 रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विषय की संरचना के अनुसार, मुख्य वर्गों को पुनः विभाजित करते हुए वर्गांक प्रदान करने की प्रक्रिया से है। जैसा कि पूर्व में विवेचन किया गया है कि रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित यह वर्गीकरण पद्धति वर्गांक प्रदान करने से पूर्व विषय को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित करती हैं तथा वर्गाकार को इतनी स्वायत्तता प्रदान करती हैं कि वर्गीकरण पद्धति में यदि वर्गांक नहीं भी है तो वर्गाकार वर्गांक का निर्माण अपनी स्वायत्तता से कर सकता है।

अतः इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आपको ज्ञात होगा कि —

1- मूलभूत श्रेणियाँ क्या हैं और कितनी हैं?

2- पक्ष परिसूत्र क्या है तथा इसका उपयोग कैसे करेंगे?

3- अवशेष का सिद्धान्त क्या है? तथा विभिन्न मूलभूत श्रेणियों के वर्गांक किस प्रकार निर्मित किये जायेंगे?

4- आर्वतन एवं स्तर की अवधारणा क्या है?

8.1 विषय प्रवेश

डॉ0 रंगनाथन द्वारा 1927 से इस वर्गीकरण पद्धति के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया गया। रगनाथन मूलरूप से हिन्दू ब्राह्मण थे। इनकी माँ एक सात्विक प्रवृत्ति की महिला थी। रगनाथन ने वेदों का अध्ययन किया था। अतः मूलभूत श्रेणियों के निर्माण में हिन्दू दर्शन का प्रभाव रंगनाथन की द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति पर भी दृष्टिगोचर होता है। डॉ0 रंगनाथन द्वारा श्रेणियों (Categories) के निर्माण के समय अध्ययन किया गया कि मानव का शरीर पाँच मूल तत्वों से मिलकर निर्मित हुआ है - क्षिति, जल, पावक, गगन, समीर। ये पाँच तत्व मिलकर ही मानव शरीर का निर्माण करते हैं तथा मानव ही ज्ञान का निर्माण करता है। अतः रंगनाथन ने सोचा ज्ञान को उत्पन्न करने वाले मनुष्य का निर्माण जब पाँच तत्वों से मिलकर हुआ है तो ज्ञान जगत से सम्बन्धित मूलभूत श्रेणियाँ भी पाँच से अधिक नहीं हो सकती। इसीलिए रंगनाथन ने लिखा है कि किसी विषय को केवल पाँच ही श्रेणियों में अधिकतम विभक्त किया जा सकता है।

8.2 मूलभूत श्रेणियाँ

रंगनाथन द्वारा निर्मित पाँच मूलभूत श्रेणियाँ [P], [M], [E], [S], [T] जिनका क्रम भी डॉ0 रंगनाथन द्वारा निर्धारित किया गया है, को निर्धारित करते समय उनमें निहित मूर्तता (Concreteness) को आधार माना गया है। इसी के आधार पर क्रम निर्धारित है। सबसे पहले P उसके बाद M उसके बाद E उसके बाद S एवं अन्त में T श्रेणी का उल्लेख है। 6वें संशोधित संस्करण के अनुसार इन सभी मूलभूत श्रेणियों के योजक चिन्ह निम्न प्रकार हैः-

P = (Personality) — व्यक्तित्व पक्ष	[,]	कामा
M = (Matter) — पदार्थ पक्ष	[;]	सेमी कोलन
E = (Energy) — ऊर्जा पक्ष	[:]	कोलन
S = (Space) — स्थान पक्ष	[.]	डॉट
T = (Time) — समय पक्ष	[']	इन्वर्टेड कामा

8.2.1 अवशेष का सिद्धान्त :

मूलभूत श्रेंणियों को पहचानने के लिए डा. रंगनाथन द्वारा एक सिद्धान्त प्रतिपादित किया गया है जिसका नाम है अवशेष का सिद्धान्त । यह सिद्धान्त यह निश्चित करता है कि जब किसी विषय में मूलभूत श्रेणियों को पहचानना है तो सबसे पहले [T] को पहचानिए उसके उपरान्त स्थान [S] को उसके उपेरान्त उर्जा {E] को उसके उपरान्त पदार्थ [M] को शेष जो बचेगा वह मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व [P] से सम्बन्धित रहेगा। इसको हम निम्नांकित उदाहरण द्वारा भी समझ सकते हैं।

Classification of newspaper in university libraries of India in 1952.
E M S T

उपरोक्त उदाहरण में सर्वप्रथम हम समय को पहचानेगे। जो कि 1952है। इसके बाद स्थान पहचानेंगे जो कि India है। तदुपरान्त उर्जा को पहचानेंगे जो उर्जा हमेशा किसी कार्य अथवा क्रिया को व्यक्त करता है। उपरोक्त उदाहरण में कार्य के रूप में Classification हो रहा है अतः वह उर्जा [E] है। मूलभूत श्रेणी [M] हमेशा पदार्थ से निर्मित होगा अथवा जिस पर कार्य हो रहा होगा उसक व्यक्त करेगा। उपरोक्त उदाहरण में कार्य Newspaper पर हो रहा है अतः Newspaper मूलभूत श्रेणी पदार्थ [M] को व्यक्त करेगा। इन सभी को पहचानने के पश्चात जो शेष बचेगा वह [P] व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी होगा जो कि University Library है।

8.2.2 समय (Time)

मूलभूत श्रेंणी समय सर्वाधिक मूर्त श्रेणियों में प्रतिपादित है। यह हमेशा किसी भी कार्य एवं घटना के समय, काल चक्र को व्यक्त करती है। वर्गांक बनाने के लिए पद्धति में समय हमेशा अनुसूची की पृष्ठ संख्या 2.7 पर अध्याय 3 से प्राप्त किया जायेगा। इसका योजक चिन्ह पहले तीन संस्करण में कोलन [:] फिर डाट [.] था 1963 में जब छठवें संस्करण को संशोधित किया गया तो इसका योजक चिह्न इन्वर्टेड कामा ['] हो गया जो परिशिष्ट के दूसरे पैराग्राफ में दृष्टिगोचर है। समय के वर्गांक बनाते समय आप स्पष्ट समझ लें कि Year से छोटा समय जैसे month, week, day, minute, second के वर्गोंक बनाने की आवश्यकता आप को नहीं है।यदि आवश्यकता पड़ती है तो पृष्ठ 2.7 पर समय मूलभूत श्रेणी के द्वितीय स्तर पर निरूपित है तो आप प्रयोग करेंगे अन्यथा वर्गांक बनाने की आवश्यकता नहीं हैं उदाहरणार्थ -

Libraries in 17 Jan 2005

2 'PO5

उपरोक्त उदाहरण में 2005 का वर्गांक P05 है 17 जनवरी का वर्गांक प्रदान नहीं किया जायेगा। यहाँ हम कह सकते हैं कि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति समय के सूक्ष्म वर्गांक प्रदान करने में असमर्थ है।

समय के वर्गांक बनाने के तीन प्रावधान कोलन, क्लासीफिकेशन पद्धति में विद्धमान है।

(a) विशिष्ट वर्ष (Specific Year)

(b) दशक (Decade)

(c) प्रभावी दशक (Effective Decade)

(a) विशिष्ट वर्ष (Specific Year)- किसी भी विशिष्ट वर्ष का वर्गांक बनाना अत्यन्त सरल है। किसी भी साल का वर्गांक बनाने के लिए शताब्दी का वर्गांक अनुसूची के पृष्ट संख्या 2.7 से प्राप्त करके सैकड़ा और हजार के स्थान पर शताब्दी का वर्गांक लिख दिया जाय तथा इकाई और दहाई की संख्या जैसी दी गई है वैसे लिख दिया जाय तो विशिष्ट वर्ष का वर्गांक बन जायेगा। जैसे 1975 का वर्गांक बनाना है तो इसमें 5 इकाई के स्थान, पर 7 दहाई को, 9 सैकड़ा और 1 हजार के स्थान पर निरूपित है। अनुसची में 1900-1999 के लिए वर्गांक N प्रदान किया हुआ है। 1975 में से 19 के स्थान पर N लिख दिया जाय तथा 7 और 5 को वैसे ही लिख दिया जाय तो 75 वर्गांक होगा इस प्रकार ' ›75 का वर्गांक N75 बनेगा।

(b) दशक (Decade) - डॉ. रंगनाथन द्वारा समय का वर्गांक बनाने के लिए द्वितीय प्रावधान, दशक का प्रावधान किया गया। इसका वर्गांक उस समय बनाया जायेगा जब आपके विषय में 90ˢ, 30ˢ इस प्रकार का वाक्य लिखा हो। डा. रंगनाथन द्वारा एक शताब्दी को 10 बराबर भागों में बाँटा गया है। वर्गांक बनाते समय शताब्दी का अंकन लिखकर दहाई के स्थान पर दशक के लिए निरूपित संख्या लिखा जाता है। जैसे 1975 में शताब्दी 19 की जगह N, दहाई की जगह 7 निरूपित है।अतः 1975 का दशक वर्गांक होगा N7 ।

(c) प्रभावी दशक (Effective Decade) - डा. रंगनाथन द्वारा नियमावली के पृष्ठ संख्या 1.49 पर नियम संख्या 311–312 पर प्रभावी दशक (Effective

Decade) के वर्गांक बनाने के नियम का उल्लेख है। प्रभावी दशक हमेशा 20 वर्ष का होगा। नियम संख्या 311 के अनुसार प्रभावी दशक हमेशा अंकन 1, 3, 5, 7, 9 में ही निर्मित किया जा सकता है।वर्गांक बनाने की प्रक्रिया बड़ी सरल है। सर्वप्रथम दशक बना लिया जाय और यदि दशक सम संख्या में आता है तो नियम संख्या 312 के तहत 1 बढ़ाकर नियम संख्या में परिवर्तित करके वर्गांक बनाया जा सकता है। लेकिन यदि दशक विसम संख्या में आता है तो नियम संख्या 312 के तहत उसे ऐसे ही छोड़ दिया जायेगा अर्थात विसम संख्या का दशक और प्रभावी दशक एक ही होगा।

उदाहरणार्थ 1965 में दहाई अंक 6 सम संख्या है अतः उसका प्रभावी दशक N7 होगा। लेकिन यदि 1978 है तो इसका प्रभावी दशक N7 होगा क्योंकि दहाई अंक 7 विसम संख्या है।

- **समय पक्ष का द्वितीय स्तर :-** द्विबिन्दु वर्गीकरण के पृष्ठ संख्या 2.7 पर उपविभाजन 32 के अन्तर्गत समय के दूसरे स्तर पर Featured Time का उल्लेख है जैसे - Day Time, Summer, Winter आदि। इसका प्रयोग T2 के रूप में निम्नवत् प्रकार से किया जाता है। उदाहरणार्थ -

  Temperature during summer of 2010 — U284 'P10 'n3

  उपरोक्त उदाहरण में 2010 (P10) का प्रयोग समय पक्ष (Time Fact) के पहले स्तर के लिए किया गया है तथा पुनः दूसरे स्तर पर (Summer (n3)) का प्रयोग किया गया है। दूसरे स्तर के प्रयोग करने के पूर्व पुनः समय पक्ष का संयोजक चिन्ह (') का प्रयोग किया जाता है।

- **परिसीमित समय अवधि (Bounded Time) :-** जब किसी विषय के प्रारम्भिकं समय से अन्तिम समय तक यानी दोनों वर्षों का उल्लेख करना हो तो अन्तिम वर्ष को पहले उल्लेख कर पश्चमुखी तीर (←) का प्रयोग कर प्रारम्भिक वर्ष का उल्लेख निम्नवत् करते हैं :- उदाहरणार्थ :-

  Indian History from 1942 To 1956

  V44 'N56 ←N42

  उपरोक्त उदाहरण में अन्तिम वर्ष (1956) को पहले एवं प्रारम्भिक वर्ष (1942) का उल्लेख पश्चात् हुआ है।

भूतकाल एवं भविष्य काल :- किसी विषय के भूतकाल अथवा भविष्यकाल का उल्लेख करना है तो भविष्यकाल के लिए अग्रमुखी तीर (→) एवं भूतकाल के लिए पश्मुखी तीर (←) का प्रयोग निम्नवत् करते हैं। उदाहरणार्थ :-

Indian History after 1947 = V44 'N47 →

Indian History before 1947 = V44 'N47 ←

उपरोक्त प्रथम उदाहरण में भविष्य समय का प्रयोग अग्रमुखी तीर के माध्यम से एवं भूतकाल के समय को दर्शाने हेतु पश्चमुखी तीर का प्रयोग किया गया है।

8.2.3 स्थान (Space) -

इससे सम्बन्धित नियम नियमावली के पृष्ठ 1.51 तथा अनुसूची के पृष्ठ संख्या 2.8 अध्याय 4 में दिये गये हैं। प्रथम तीन संस्करणों में इसका योजक चिह्न कोलन (:) था । चतुर्थ संस्करण के बाद इसका योजक चिह्न डाट [.] है। यह श्रेणी भी समय की तरह केवल स्तर (Level) में ही निरूपित है। और इसमें आवर्तन (rounds) नहीं होता। इसके द्वितीय स्तर (Level) को परिशिष्ट में पृष्ट संख्या 26पर परिवर्तित कर दिया गया है। अतः पृष्ठ 2.17 पर उल्लिखित 42 की एकल संख्याओं को परिशिष्ट के पृष्ठ संख्या 26 पर परिवर्तित कर दिया गया है। स्थान अनुसूची में संख्या 1-world के लिए प्रदान किया गया है। अतः ऐसे स्थान जो किसी साम्राज्य से सम्बन्धित हो तथा एक से अधिक देशों में पाये जाते हों का वर्गांक 1 से निरूपित होगा इसका दूसरा वर्गांक करने के लिए अध्यारोपण विधि (Superimposition Device) के प्रयोग का भी प्रावधान किया गया है।

अनुसूची का वर्गांक संख्या 2- Mother country के लिए किया गया है। भारत आपकी मातृ भूमि है। अतः India के लिए 2 का प्रयोग कर सकते है। अनुसूची में संख्या 3 Favoured country के लिए है यह वह देश होता है जिसका साहित्य Mother country के बाद सबस अधिक पुस्तकालय में विद्यमान है। Favoured country हर पुस्तकालय का अलग अलग हो सकता है। 4 एशिया के लिए, 5 यूरोप, 6 अफ्रीका, 7 अमेरिका, 8 आस्ट्रेलिया महाद्वीप के लिए प्रयुक्त है। महाद्वीपों के अन्दर आने वाले राष्ट्रों के वर्गांक महाद्वीपों के विभाजन में ही प्रदत्त हैं जैसे India एशिया में है England यूरोप में है। ब्राजील अमेरिकन महाद्वीप में है। इनके वर्गांक क्रमशः 44, 561,7918 है।

44 के नीचे as before 1956 तथा 2.12 पृष्ठ पर after1956 दो प्रकार के वर्गांक दिये गये हैं। Before 1956 के वर्गांक भारत के सन्दर्भ में वर्जित है इनका प्रयोग केवल विशिष्ट ग्रन्थों, जो ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से सम्बन्धित है उसी के लिए किया जायेगा। साधारणतया आप मानकर चलिये कि भारत में किसी भी शहर, तालुका, गाँव स्तर इत्यादि का वर्गांक निर्मित करने के लिए after 1956 के वर्गांकों का प्रयोग करेंगें तथा भारत में किसी भी शहर का निर्माण करने के लिए परिशिष्ट के पृष्ठ संख्या 22 पर प्रदत्त नियम संख्या 4 B population cluster के आधार पर निर्मित किये जायेगें । उदाहरणार्थ यदि आगरा का वर्गांक निर्मित करना है तो Before 1956 में इसका वर्गांक 445244 है। जिसका प्रयोग वर्जित है अतः after 1956 में Uttar Pradesh का वर्गांक 4452 है population cluster Device का उपयोग करने के बाद आगरा का वर्गांक 4452.A होगा। यहाँ पर .A का प्रयोग परिशिष्ट के नियम 4B के अनुसार Alphabetical Device से निरूपित किया जायेगा।

पृष्ठ संख्या 2.18 पर एक भौगोलिक अनुक्रमणिका (Geographical Index) प्रदान की गयी है इसका प्रयोग स्थान के वर्गांक को आसानी से ढूँढने हेतु किया जाता है।

8.2.4 उर्जा पक्ष [Energy] -

मूलभूत श्रेणी उर्जा का योजक चिन्ह प्रथम संस्करण से लेकर आज तक कोलन (:) है। यह मूलभूत श्रेणी किसी भी कार्य, प्रक्रिया, समस्या, प्रतिक्रिया, आचरण इत्यादि को व्यक्त करती है। इस श्रेणी का कभी भी स्तर (Level) नहीं होता, हमेशा यह श्रेणी आवर्तन (Round) में व्यक्त की जाती है। यह भी एक नियम है कि उर्जा का प्रत्येक आवर्तन मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व के साथ ही होगा। प्रत्येक मुख्य वर्ग के पक्ष परिसूत्र में personality, matter, energy तक ही मूलभूत श्रेणियों को सम्मिलित किया गया है। उदाहरणार्थ -

1. Classification of thesis in college libraries
   यहाँ classification उर्जा पक्ष को व्यक्त कर रहा हे।
2. Treatment of lungs tuberculosis of children in U.P.
   उपरोक्त उदाहरण में Lung व्यक्तित्व है disease प्रथम आवर्तन की उर्जा है। Treatment द्वितीय आवर्तन की उर्जा है।

8.2.5 पदार्थ पक्ष [Matter] -

पदार्थ मूलभूत श्रेणी का योजक चिह्न प्रथम तीन संस्करणों में कोलन (:) था किन्तु चौथे संस्करण (1952) से इसका योजक चिह्न सेमीकोलन (;) हो गया। तब से आज तक इस मूलभूत श्रेणी का योजक चिह्न सेमीकोलन (;) है । पदार्थ की पहचान उर्जा मूलभूत श्रेणी से कठिन है। सामान्यतया पदार्थ का बोध सामग्री अथवा इसके बराबर के किसी अवयव, जिससे किसी वस्तु का बोध होता है, पदार्थ की श्रेणी में आता है। कभी कभी व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी एवं पदार्थ मूलभूत श्रेणी के मध्य भ्रामक स्थिति उत्पन्न हो जाती है। अतः यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि विषय के विश्लेषण करते समय कच्ची वस्तु, तैयार माल सम्बन्धी अवधारणा को ध्यान में रखते हुए पदार्थ की पहचान की जाय।

द्विबिन्दु वर्गीकरण के छठवें संस्करण के सभी विषयों (मुख्य वर्गों)में इस मूलभूत श्रेणी का उल्लेख नहीं है। लेकिन इसके सातवें संस्करण में पदार्थ को दो अर्थों में लिया गया है। पदार्थ सामग्री (Matter material)एवं पदार्थ गुण (Matter property)। उदाहरणार्थ-

1. Classification of books in university libraries

इस उदाहरण में books पदार्थ मूलभूत श्रेणी को व्यक्त कर रही है।

8.2.6 व्यक्तित्व पक्ष (Personality) -

व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी की पहचान सर्वाधिक कठिन होती है। इसकी पहचान के लिए डा. रंगनाथन द्वारा अवशेष का सिद्धान्त (Method of residue) प्रतिपादित किया गया है। जिसमें यह कहा गया कि पांचों मूलभूत श्रेणियों में से क्रमशः समय, स्थान, उर्जा एवं पदार्थ की पहचान करने के बाद जो शेष बचे वह मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व के अन्तर्गत आयेगा। इसका कारण स्पष्ट है कि मूलभूत श्रेणी पाँच और सिर्फ पांच ही होती हैं। अतः जो समय, स्थान, उर्जा और पदार्थ नहीं है वह व्यक्तित्व ही होगा।

इस मूलभूत श्रेणी का योजक चिह्न कामा (,) है। द्विबिन्दु वर्गीकरण के प्रथम तीन संस्करणों में इस श्रेणी का योजक चिन्ह कोलन (:) था किन्तु चौथे संस्करण से यह (,) हो गया है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात है कि जब व्यक्तित्व श्रेणी पहली बार मुख्य वर्ग के तुरन्त बाद अथवा उर्जा मूलभूत श्रेणी के द्वितीय अथवा तृतीय आवर्तन में आती है तो इसका योजक चिह्न नहीं लगाया जाता है। उदाहरणार्थ -

1. Disease of lung

L45 : 4

इस उदाहरण में वर्ग संख्या 45 मुख्य वर्ग (L. Medicine) के बाद व्यक्तित्व पक्ष के रूप में आता है अतः इसे मुख्य वर्ग के साथ जोड़ते वक्त योजक चिह्न (,) का प्रयोग नहीं किया गया है।

2. Artificial production of pearl

H198 : 164

इस उदाहरण में Artificial production[E] cum [2P] को प्रदर्शित करता है जिसके लिए 164 को प्रयुक्त किया गया है किन्तु इसमें कहीं भी योजक चिह्न का प्रयोग नहीं किया गया है क्योंकि व्यक्तित्व पक्ष [P] उर्जा [E] के साथ ही आ रहा है।

व्यक्तित्व [P] मूलभूत श्रेणी जब system अथवा Special के साथ आता है तो उसका योजक चिह्न कामा (,) लगाया जाता है, भले ही उसकी आवृत्ति प्रथम बार हो उदाहरणार्थ-

Ayurvedic Treatment of paralysis

LB, 76:411:6

इस उदाहरण में LB Ayurvedic Medicine System के रूप में आया है और 76 Nerve system है जो मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व को प्रदर्शित करता है दोनों के मध्य योजक चिह्न कामा (,) का प्रयोग किया गया है।

8.3 आवर्तन एवं स्तर (Round and Levels)

डा. रंगनाथन के अनुसार विषयों का निर्माण सिर्फ और सिर्फ पांच मूलभूत श्रेणियों के द्वारा हुआ है। ये श्रेणियाँ किसी भी विषय में एक से अधिक बार आ सकती है। और इनका एक से अधिक बार आना ही आवर्तनों (Round) एवं स्तरों (Levels) का निर्माण करता है।

8.3.1 आवर्तन (Round) -

व्यक्तित्व मूलभूत श्रेणी की पहचान सर्वाधिक कठिन होती है।

जहाँ तक आवर्तन का प्रश्न है इसमें सिर्फ तीन मूलभूत श्रेणियों P M E की ही

अभिव्यक्ति होती है । आवर्तन का निर्माण उर्जा श्रेणी द्वारा होता है किसी भी विषय में यह श्रेणी एक से अधिक बार आ सकती है । दो बार अथवा तीन बार जब इसकी अभिव्यक्ति होती है तो इसे क्रमशः द्वितीय आवर्तन की उर्जा [2E] अथवा तृतीय आवर्तन की उर्जा [3E] कहा जाता है। कोलन क्लासीफिकेशन के छठवें संस्करण में मुख्य वर्ग कृषि, औषधि विज्ञान, समाज शास्त्र इत्यादि में उर्जा कई आवर्तनों में व्यक्त हुई हैं। उदाहरण -

Soil improvement

J : 1 : 6

प्रथम आवर्तन की उर्जा -[1E] [2E]द्वितीय आवर्तन की उर्जा

यहाँ पर यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिर्फ प्रथम तीन मूलभूत श्रेणियों का ही आवर्तन होता है जिन्हें स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित चिह्न का प्रयोग किया जाता है।

प्रथम आवर्तन व्यक्तित्व	[1P]	(पक्ष परिसूत्र में 1 न लिखते हुए केवल [P] से दर्शाया जाता है)
द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व	[2P]	
तृतीय आवर्तन व्यक्तित्व	[3P]	
प्रथम आवर्तन पदार्थ	[1M]	(पक्ष परिसूत्र में 1 का उल्लेख न
द्वितीय आवर्तन पदार्थ	[2M]	कर केवल [M] दर्शाया जाता है।
तृतीय आवर्तन पदार्थ	[3M]	
प्रथम आवर्तन उर्जा	[1E]	(पक्ष परिसूत्र में 1 का उल्लेख न
द्वितीय आवर्तन उर्जा	[2E]	कर केवल [E] दर्शाया जाता है।
तृतीय आवर्तन उर्जा	[3E]	

क्योकि उर्जा का एक से अधिक बार आना आवर्तन (Round) का निर्माण करता है। अतः जब प्रथम बार उर्जा के आने के बाद द्वितीय आवर्तन शुरू होता है और दूसरी बार उर्जा के आगमन के बाद तीसरा **आवर्तन**। नीचे दिये गये उदाहरण में स्पष्ट हो रहा है।

Control measures for bacterial deseases in wheat plant

J 382 : 424 : 55

↓ ↓ ↓ ↓

[MC] [1P] [E] cum [2P] [2E] cum [3P]

8.3.2 स्तर : (P)

जब मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व [P] एवं पदार्थ [M] एक से अधिक बार होता हैं तो स्तर (level) का निर्माण होता हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण के छठवें संस्करण में मुख्य वर्ग Generalia Bibliography, Literature एवं Law आदि में मूलभूत श्रेणी व्यक्तित्व एक से अधिक बार आई है और स्तर का निर्माण करती है। स्तर को प्रदर्शित करने के लिए निम्न तरीके प्रयोग में लाये जाते हैं।

जब प्रथम आवर्तन के अन्तर्गत हो तो

[1P1] प्रथम आवर्तन व्यक्तित्व का प्रथम स्तर

[1P2] प्रथम आवर्तन व्यक्तित्व का द्वितीय स्तर

[1P3] प्रथम आवर्तन व्यक्तित्व का तृतीय स्तर

[1M1] प्रथम आवर्तन पदार्थ का प्रथम स्तर

[1M2] प्रथम आवर्तन पदार्थ का द्वितीय स्तर इत्यादि

जब द्वितीय आवर्तन के अन्तर्गत हो तो

[2P1] द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व प्रथम स्तर

[2P2] द्वितीय आवर्तन व्यक्तित्व द्वितीय स्तर

[2M1] द्वितीय आवर्तन पदार्थ प्रथम स्तर इत्यादि

उदाहरण

British National Bibliography

```
 a      14,   156,  N50
 |      |      |     |
[MC]  [1P]  [1P2] [1P3]
```

8.4 सारांश

इस इकाई में डा.रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित पांच मूलभूत श्रेणियों की अवधारणा को स्पष्ट किया गया और इनकी पहचान के तरीके भी बताये गये। इसके साथ साथ आपने आवर्तन एवं स्तर की अवधारणा को भी जाना और इनके प्रयोग को स्पष्ट रूप से समझा। इस इकाई के अध्यनोपरान्त आप द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में पांचों मूलभूत श्रेणियों एवं उनके योजक चिह्नों के प्रयोग को जान गये हैं।

8.5 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. पांच मूलभूत श्रेणियाँ कौन कौन सी है ? इनकी पहचान कैसे करेंगे?
2. आवर्तन एवं स्तर कीं अवधारणा को स्पष्ट कीजिए?
3. उदाहरण के माध्यम से पाँचों मूलभूत श्रेणियों, उनके योजक चिह्नों के प्रयोग तथा उनके आवर्तन एवं स्तर की अभिरूचि को स्पष्ट कीजिए?

इकाई -9 : वर्गीकरण के नौ चरण

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 विषय प्रवेश

9.2 वर्गीकरण के चरण

9.3 सारांश

9.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

9.0 उद्देश्य

वर्गीकरण एक बौद्धिक प्रक्रिया है जिसमें विषयों को, जो नैसर्गिक रूप में दिये गये होते हैं, कृत्रिम भाषा में परिवर्तित करके विशिष्ट प्रकार के अंकनों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। जैसा कि आप जानते हैं कि वर्गीकरण का मूल उद्देश्य पुस्तकों को पुस्तक निधानियों पर एक निश्चित क्रम में व्यवस्थित करना होता है। जिससे उनकी पुर्नप्राप्ति आवश्यकता पड़ने पर सुनिश्चित की जा सके। इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप यह जानने में सक्षम होंगे कि डा. रंगनाथन द्वारा वर्गीकरण करने हेतु कौन कौन से चरणों की चर्चा की गई है तथा पुस्तकों को वर्गीकृत करने में कौन कौन से चरणों में चलने के बाद वर्गांक निर्मित किये जाते हैं।

9.1 विषय प्रवेश

डा. रंगनाथन द्वारा वर्गीकरण के सिद्धान्तों को तीन धरातलों में विभाजित किया गया है। वैचारिक धरातल, भौतिक धरातल एवं अंकन धरातल। वैचारिक धरातल के अन्तर्गत उन सिद्धान्तों को व्यक्त किया गया है, जिनका सम्बन्ध वर्गाकार द्वारा नियमों के मानसिक विश्लेषण से सम्बन्धित है क्योंकि वर्गीकरण एक मानसिक एवं बौद्धिक प्रक्रिया है। भौतिक धरातल में किसी भी विचार को भिन्न भिन्न नामों से जाना जाता है अतः वर्गाकार को विचार के उचित नाम का निर्धारण करना होता है। अंकन धरातल का सम्बन्ध वर्गीकरण पद्धति में दिये गये पद के अनुसार वर्गांक निर्मित करने से है। वैचारिक धरातल से अंकन के धरातल तक की प्रक्रिया को विभिन्न चरणों में डा. रंगनाथन द्वारा निम्न प्रकार से विभक्त किया गया है।

9.2 वर्गीकरण के चरण

वर्गीकरण के प्रमुख नौ चरण हैं जो निम्नवत है -

चरण 0 - अपरिष्कृत आख्या (Raw Title)

चरण 1 - अभिव्यंजक आख्या (Expressive Title)

चरण 2 - सारपदीय आख्या (Title in Kernel Term)

चरण 3 - विश्लेषित आख्या (Analysed Title)

चरण 4 - परिवर्तित आख्या (Transformed Title)

चरण 5 - मानक पदीय आख्या (Title in Standard Term)

चरण 6 - संकेन्द्रित अंकों में आख्या (Title in Focal number)

चरण 7 - संश्लेषित अंकों में आख्या (Title in synthesised term)

चरण 8 - पुर्नरूपान्तरण द्वारा सत्यापन (Verification by Reverse Trans -lation)

चरण 0 से 4 तक डा. रंगनाथन द्वारा बताये गये चरण वैचारिक धरातल से सम्बन्धित है जबकि चरण 5 शाब्दिक धरातल एवं चरण 6 एवं 7 अंकन धरातल से सम्बन्धित है। चरण 8 सभी धरातलों में किये गये कार्य का परीक्षण करता है।

चरण 0 - अपरिष्कृत आख्या - पुस्तक में जिस रूप में आख्या दी गई होती है उसे अपरिष्कृत आख्या कहते हैं जैसे -

पुस्तकालय वर्गीकरण के सिद्धान्त

इसे अपरिष्कृत आख्या कहने के पीछे कारण यह है कि इसे वर्गांक प्रदान करने के पूर्व कुछ परिष्कृत करना पड़ता है। प्रायः पुस्तक की आख्या देखने से ही उसमें विषय का ज्ञान हो जाता है परन्तु ध्यान से देखने पर निम्नलिखित तथ्य सामने आते है।

(1) कई बार पुस्तक में प्रदत्त आख्या विषय के सभी आयामों को स्पष्ट नहीं करती। जैसे Hamlet एक पुस्तक है जो अंग्रेजी साहित्य से सम्बन्धित है। इसके विविध आयाम जो आख्या देखने से स्पष्ट नहीं होते वे है। मुख्य वर्ग- English Literature (language) Drama (Form)

एवं लेखक William Shakespear

(2) कुछ आख्यायें ऐसी होती हैं जिनको देखने से उनका विषय बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं होता क्योंकि कुछ लेखक ललित आख्याओं (Fanciful titles) का प्रयोग करते हैं। जैसे 'गुलाब' इसे देखने से यह स्पष्ट नही हो रहा है कि उक्त आख्या का विषय कृषि है अथवा आयुर्वेद है या साहित्य है। अतः व्यवहारिक वर्गीकरण के दृष्टिकोण से इसे हम अपरिष्कृत आख्या ही मानते हैं।

चरण -1 अभिव्यंजक आख्या - इस चरण में आख्या के साथ उसका मुख्य वर्ग यदि नहीं दिया गया है तो उसे जोड़ लेते हैं और उसे पुस्तक में वर्णित विषय के सभी एकलों में विभक्त कर लेते हैं।इस प्रकार अपरिष्कृत आख्या के अनुपस्थित पदों को पूरा किया जाता है ऐसी आख्या विषय के विशिष्ट विषय को अभिव्यक्त करती है। अतः इसे अभिव्यंजक आख्या कहा जाता है।

उदाहरण स्वरूप - Curing of viral deseases of Tulip (अपरिष्कृत आख्या)

Curing of viral desease of the floral plant Tulip in Agriculture (अभिव्यंजक आख्या)

चरण - 2 सारपदीय आख्या - इस चरण में अभिव्यंजक आख्या के स्तर पर प्रयुक्त समस्त वर्गीकरण की दृष्टि से अनुप्रयोज्य शब्द जैसे - in, of, an, on, etc. को आख्या में से हटा दिया जाता है और केवल महत्वपूर्ण शब्दों/पदों को रखा जाता है क्योंकि इस चरण में केवल अभिव्यंजक आख्या में से सार पदों को रख लेते हैं शेष को छोड़ देते हैं। इसे सारपदीय आख्या कहा जाता है। जैसे - चरण 1 में वर्णित उदाहरण को इस चरण में निम्नवत लिखेंगे।

Curing, Viral disease, Floral plant Tulip, Agriculture.

चरण -3 विश्लेषित आख्या - इस चरण में आख्या को विश्लेषित करके उनके सार पदों (Kernal terms) को अभिव्यक्त करने वाली मूलभूत श्रेणियों का निर्धारण किया जाता है जैसे उपर्युक्त उदाहरण को निम्न प्रकार से लिखेंगे।

Curing [2E], Viral [2P], Disease [E] Floral lplant Tulip [P] Agriculture [M.C.]

चरण - 4 परिवर्तित आख्या - इस आख्या को प्राप्त करने हेतु आख्या के सभी सारपदों को उनके श्रेणी क्रम में रखा जाता है। जैसे -

Agriculture [MC], Floral plant Tulip [P], Desease [E], Viral [2P] Curing [2E]

चरण - 5 मानक पदीय आख्या - इस चरण में यदि आख्या के विभिन्न सार पदों को मानक पदों में नहीं लिखा गया है तो उन्हें वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त मानक पदों में परिवर्तित कर दिया जाता है। जैसे मुख्य वर्ग Medicine में Treatment के लिए Therapeutics पद का प्रयोग किया गया है तो यदि किसी आख्या में treatment शब्द है तो उसे therapeutics में परिवर्तित कर लेते है। उपयुर्क्त उदाहरण को निम्नवत लिखेंगे।

Agriculture [MC], Tulip [P], Disease [E] Virus [2P] Curing [2E].

चरण- 6 संकेन्द्रित अंकों में आख्या - इस आख्या को प्राप्त करने हेतु मानक पदों में व्यक्त आख्या को उनके लिए वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त मूल वर्ग संख्या अथवा पक्ष संख्या द्वारा प्रतिस्थापित कर देते हैं। उपर्युक्त उदाहरणानुसार -

J [MC], 16912 [P], 4[E], 23 [2P], 6 [2E]

चरण - 7 - संश्लेषित अंकों में आख्या - इस चरण में वर्गांक बनाने हेतु विभिन्न पदों को उनकी मूलभूत श्रेणीनुसार योजक चिह्नों का प्रयोग करते हुए जोड़ दिया जाता है। यथा उपयुर्क्त आख्या J16912 : 423 : 6 को निम्नवत किया जायेगा।

चरण - 8 - पुर्नरूपान्तरण द्वारा सत्यापन - इस चरण में बनाये गये वर्गांक की जाँच की जाती है कि वर्गांक सही है अथवा नहीं। इसके लिए सारे संकेन्द्रित अंकों को एक दूसरे के नीचे लिखते हैं तथा उनके सामने उनके पक्ष तथा पद का नाम लिखते हैं। इसे अंक प्रति अंक (Digit by digit translation) अनुवाद की भी संज्ञा दी जाती है। इसे निम्नवत व्यक्त किया जा सकता है।

J	[MC or BF]	Agriculture
16912	[P]	Tulip
4	[E]	Disease
23	[2P]	virus
6	[2E]	Curing

इस तरह इसका सत्यापन किया जाता है और संश्लेषित वर्गांक को नैसर्गिक भाषा में अनुवाद किया जाता है।

9.3 सारांश

डॉ. रंगनाथन द्वारा समझाये गये उपरोक्त चरण व्यवहारिक वर्गीकरण सीखने के दृष्टिकोण से अत्यन्त ही उपयोगी है। वर्गीकरण करने की प्रक्रिया वास्तव में शाब्दिक धरातल से आंकिक धरातल में अनुवाद है। इसके सम्यक अध्ययनोपरान्त आप

पुस्तकालय विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में प्राकृतिक भाषा को कृत्रिम भाषा के अनुवाद में सक्षम हो गये हैं। यह सारे चरण आपको वर्गीकरण की प्रक्रिया को समझाने के लिए हैं ताकि आपको इस पूरी प्रक्रिया का सम्यक ज्ञान हो जाये। कुछ समय बाद जब आप इस प्रक्रिया में निपुण हो जायेगें तो इन सभी चरणों को दुहराने की आवश्यकता नहीं रह जायेगी।

9.4 हल सहित उदाहरण

आख्या : Feeding of Cattle in India.

Step 0 : अपरिष्कृत आख्या - Feeding of cattle in India.

Step 1 : अभिव्यंजक आख्या - Feeding of cattle in India in Animal Husbandary

Step 2 : सार पदीय आख्या - Feeding, Cattle, India, Animal Husbandary.

Step 3 : विश्लेषित आख्या - Feeding [E], Cattle [P], India [S], Animal Husbandary [BC]

Step 4 : परिवर्तित आख्या - Animal Husandary [BC], Cattle [P], Feeding [E], India [S].

Step 5 : मानक पदीय आख्या - Animal Husbandary [BC], Cattle [p], Feeding [E], India [S].

Step 6 : संकेन्द्रित अंकों में आख्या - KZ [BC], 2 [P], 1[E], 44 [S].

Step 7 : संश्लेषित अंकों में आख्या - KZ 2 : 1. 44

Step 8 : पुर्न रूपान्तरण द्वारा सत्यापन -

KZ	[BC]	Animal Husbandary
2	[P]	Cattle
1	[E]	Feeding
44	[S]	India

9.5 अभ्यास हेतु प्रश्न

निम्नांकित उदाहरणों की वर्गांक संख्या निर्माण हेतु नौ चरणों को स्पष्ट कीजिए।

1. Audio - Visual Aids in Secondary Education
2. Treatment of Lung desease
3. Cultivation of wheat.
4. Statistics for librarians.
5. Flora and Fauna of Himalayas.

। । सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् । ।

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

BLIS-104
पुस्तकालय वर्गीकरण
प्रायोगिक

खण्ड
4

कोलन क्लासीफिकेशन (6वां संशोधित संस्करण) भाग-2

इकाई -10 167

विभिन्न युक्तियों (Devices) का परिचय एवं प्रयोग

इकाई -11 177

सामान्य एकलों (Common Isolates) का परिचय एवं प्रयोग

इकाई -12 201

दशा सम्बन्ध (Phase relation) का वर्ग संख्या निर्माण में प्रयोग

विशेषज्ञ समिति - पाठ्यक्रम अभिकल्पन

डॉ0 पाण्डेय एस0 के0 शर्मा	अवकाश प्राप्त मुख्य ग्रंथालयी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली,
डॉ0 ए0 पी0 गक्खर	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला0
डॉ0 यू0 सी0 शर्मा	एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा
डॉ0 सोनल सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.
डॉ0 ए0 पी0 सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0संजीव सर्राफ	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
डॉ0 टी0एन0 दुबे (सदस्य सचिव)	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0प्र0रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक मण्डल

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री आर0 जे0 मौर्य	सहायक ग्रन्थालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
श्री राजेश गौतम	प्रवक्ता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 मांगेराम	उपपुस्तकालयाध्यक्ष, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,

परिमापक

डॉ0 टी0 एन0 दुबे	विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के स्वयं के हैं।

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, **प्रयागराज**

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना, मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

खण्ड - 4: कोलन क्लासीफिकेशन (6वां संशोधित संस्करण) भाग-2

प्रस्तावना

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति एक वैश्लेषी - संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है। इस पद्धति में विषयों के पूर्व निर्मित वर्गांक उपलब्ध नहीं है। इस पद्धति के अन्तर्गत विभिन्न पक्षों के लिये पृथक-पृथक मानक इकाइयों को व्यक्त करने वाली अनुसूचियाँ, विभिन्न प्रकार की युक्तियाँ,सामान्य एवं विशिष्ट एकल तथा मिश्रित विषयों की पुस्तकों के वर्गांक निर्मित करने हेतु दशा सम्बन्ध का उल्लेख किया गया है।

प्रस्तुत खण्ड को निम्नवत् इकाइयों में विभक्त किया गया है :-

इकाई-10 विभिन्न युक्तियों का परिचय एवं प्रयोग:- इस इकाई के अन्तर्गत वर्गांक निर्माण हेतु कालक्रम युक्ति, भौगोलिक युक्ति, विषय युक्ति, वर्णक्रम युक्ति, दशा सम्बन्ध युक्ति, अध्यारोपण युक्ति, स्मृति सहायक युक्ति, पक्ष युक्ति एवं खण्ड युक्ति का सोदाहरण उल्लेख किया गया है।

इकाई-11 सामान्य एकलों का परिचय एवं प्रयोग :- इस इकाई के अध्ययनोपरान्त सामान्य एकल क्या होते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं तथा सामान्य एकलों के प्रयोग द्वारा कैसे विषयों हेतु वर्गांकों का निर्माण किया जाता है, इसकी जानकारी प्राप्त करेंगे।

इकाई-12 दशा सम्बन्ध का वर्ग निर्माण में प्रयोग :- वर्तमान में हो रहे अर्न्तविषय शोध एवं प्रकाशनों में विभिन्न विषयों में आपसी तालमेल बहुत अधिक बढ़ गया है जिससे यह आवश्यक होता है कि एक विषय को दूसरे विषय में अध्ययन किस प्रकार किया जाय, जैसे - सामान्य अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन, भेदात्मक अध्ययन, प्रभाव अध्ययन आदि। रंगनाथन ने इस प्रकार दो विषयों के अध्ययनों को वर्गीकरण की दृष्टि से दशा सम्बन्धों के प्रयोग किया है, जिनका विस्तृत अध्ययन हम इस इकाई में करेंगे।

इकाई -10 : विभिन्न युक्तियों का (Devices) परिचय एवं प्रयोग

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य (Objective)

10.1 विषय प्रवेश (Introduction)

10.2 युक्तियाँ (Devices)

10.2.1 युक्तियों के प्रकार (Types of Devices)

10.2.1.1 कालक्रम युक्ति (Chronological Device)

10.2.1.2 भौगोलिक युक्ति (Geographical Device)

10.2.1.3 विषय युक्ति (Subject Device)

10.2.1.4 वर्णक्रम युक्ति (Alphabetical Device)

10.2.1.5 दशा सम्बन्ध युक्ति (Phase Relation Device)

10.2.1.6 अध्यारोपण युक्ति (Super Imposition De vice)

10.2.1.7 स्मृति सहायक युक्ति (Menemonic Device)

10.2.1.8 पक्ष युक्ति (Facet Device)

10.2.1.9 खण्ड युक्ति (Sector Device)

10.3 सारांश

10.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

10.0 उद्देश्य

ग्रन्थालय वर्गीकरण की द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति एक संश्लेषणात्मक पद्धति है। इसमें ज्ञान जगत के सम्पूर्ण विषयों के वर्गीकरण करने की सुनिश्चितता प्रदान की गई है। ज्ञान जगत के सम्पूर्ण विषयों में वर्गीकरण की सुनिश्चितता हेतु विभिन्न तरह की युक्तियों का प्रयोग किया गया है। इस इकाई में हम इन्हीं युक्तियों के बारे में अध्ययन करेंगे कि ये युक्तियाँ होती क्या हैं, ये कितने प्रकार की हैं। इनके प्रयोग के माध्यम से किस तरह सभी विषयों के वर्गीकरण को द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सुनिश्चितता प्रदान की गई है।

10.1 विषय प्रवेश (Introduction)

वर्तमान समय को सूचना एवं ज्ञान के तीव्र विस्तार का समय कहा जाता है क्योंकि सूचना उत्पादन के दृष्टिकोण से विस्फोटक का रूप धारण कर चुकी है। नित नये नये विषयों का जन्म हो रहा है। अतः किसी भी पुस्तकालय वर्गीकरण पद्धति के दीर्घकालीन प्रथा क्रियाशील रहने के लिए आवश्यक है कि उसमें इन नवीन विषयों को आत्मसात करने की क्षमता हो। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में इसी क्षमता के लिए विभिन्न तरह की युक्तियों का प्रयोग किया गया है जिन्हें हम इस इकाई में विस्तारपूर्वक जानेंगे मुख्यतया ये विधियाँ ही विषयों के नये रूपों को ग्रहण करने हेतु आधार का कार्य करती हैं तथा इन्हीं के द्वारा ही पुरातन एकलों को अधिक तीक्ष्णता प्रदान की जाती है।

10.2 युक्तियाँ (Devices)

वर्गीकरण करते समय यह अनुभव किया जाता है कि किसी भी पक्ष के अन्तर्गत कुछ ऐसे महत्वपूर्ण बिन्दु अथवा विचार (Isolate) जो विषय के विभाजन के लिए महत्वपूर्ण है, किन्तु उक्त पक्ष में या तो पूर्णतया अथवा आंशिक रूप से विद्यमान नहीं होते, ऐसी दशा में ऐसी रिक्तता को भरने हेतु जिन अंकन का प्रयोग किया जात है उसे युक्ति (Device) कहते है। डॉ. एस.आर.रंगनाथन ने द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विभिन्न प्रकार की युक्तियों की व्यवस्था दी है जिसके द्वारा किसी भी सूक्ष्म विषय क वर्गांक निर्माण किया जा सकता है। वर्गीकरण पद्धति में युक्तियों के प्रयोग के निम्नांकित लाभ गिनाये जा सकते हैं।

(1) युक्तियों के प्रयोग के माध्यम से अनावश्यक परिगणना से मुक्ति मिल जाती है जिससे अनुसूची की लम्बाई अनावश्यक रूप से नहीं बढ़ती और मितव्ययिता के नियम का पालन होता है।

(2) वर्गीकार (Classifier) को उसके कार्य में स्वतंत्रता प्राप्त होती है।

(3) वर्गांकों को तीक्ष्ण बनाने में सहायता प्राप्त होती है।

(4) युक्तियों के माध्यम से सुसंगत अनुक्रम सूत्र (Canon of consistent sequence), सहायक अनुक्रम सिद्धान्त, पंक्ति की ग्राह्यता (hospitality in array) तथा शृंखला की ग्राहयता (Hospitality in chain)को अनुसरित करने में सुविधा होती है।

(5) एक ही एकल विचार (Isolate)को सभी जगहों पर एक ही अंकन द्वारा अभिव्यक्त करना संभव होता है।

10.2.1 युक्तियों के प्रकार (Types of Devices)

द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया गया है जिसके कारण विभिन्न प्रकार की युक्तियों का प्रयोग इस वर्गीकरण पद्धति में अधिक प्रभावशाली ढंग से हो सका है। इस प्रणाली के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाली युक्तियाँ निम्न हैं -

(1) कालक्रम विधि (Chronological Device) (CD)

(2) भौगोलिक विधि (Geographical Device) (GD)

(3) विषय विधि (Subject device) (SD)

(4) वर्णक्रम विधि (Alphabetical Device)(AD)

(5) दशा सम्बन्ध विधि (Phase.Relation Device)(PRD)

(6) अध्यारोपण विधि (Super imposition Device)(SID)

(7) स्मृति सहायक अंक विधि (Mnemonic Device) (MD)

(8) पक्ष विधि (Facet Device) (FD)

(9) खण्ड विधि (Sector Device) (SD)

10.2.1.1 कालक्रम विधि (Chronological Device) - कालक्रम विधि Isolates in [T] तथा Chronological Division का पर्यायवाची है। इस विधि के प्रयोग द्वारा कालक्रमिक विशेषताओं के आधार पर मुख्य वर्ग के किसी पक्ष या वर्ग पंक्ति में नवीन एकलों की रचना की जा सकती है। इसके द्वारा विद्यमान एकलों के वाच्यार्थ को अधिक गहनता प्रदान कर उन्हें विशिष्ट बनाया जा सकता है। कालक्रम विधि एकलों की विशेषता प्रकट करने, सत्ता के जन्म, उदभव व प्रारम्भ के काल या उसके प्रथम आविष्कार, प्रथम खोज के वर्ष, उसके प्रवर्तन, उसकी प्राप्ति के प्रथम वर्ष को माना जाता है।

द्वि-बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में जहाँ जहाँ पर इस विधि का प्रयोग हुआ है वहाँ इसका उल्लेख अनुसूचियों में निर्देश रूप में दिया है। अनेक स्थानों में इसका प्रयोग करने हेतु प्रभावी दशक (ED), अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में निर्देश मिलते

है। कालक्रम विधि के प्रयोग के लिए कालक्रम सारणी (Time Isolate पाठ-3 पृष्ठ 2.7) से एकल अंक प्राप्त करने का प्रावधान किया गया है। यदि इसके प्रयोग के नियम अनुसूचियों में नहीं दिये गये हों तो नियम संख्या 0581 पृष्ठ 1.29पर जो भी नियम उपयुक्त हो प्रयोग में लाना चाहिए। काल एकल संख्या को मुख्य वर्ग अथवा उसके किसी पक्ष के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधा जोड़ देना चाहिए।

डॉ.रंगनाथन के अनुसार वर्गांक को अत्यधिक सूक्ष्म बनाने के लिए तीन अंकों को प्रयोग में लाया जाना चाहिए। नियम 0581 पृष्ट 1.29 वर्गांक को छोटा व सरल बनाने की दृष्टि से बनाया गया है।

Example.

(1) EC (Expensive Classification scheme) (1896)

2:51M9

इसी प्रकार -

DDC (Decimal Classification Scheme) (1876)

2:51M

इस विधि का प्रयोग किसी देश के राजनैतिक दलों (Political parties) को, उनके स्थापना वर्ष के आधार पर अलग अलग व्यक्तित्व प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। जैसे-

Example : Janta Party of India (स्थापित 1977)

V44, 4N77

ये उदाहरण मुख्य वर्ग V History के [P2] पक्ष में राजनैतिक दलों के वर्गांक बनाने के है।

मुख्य वर्ग Q Religion में अनेक धर्मों के वर्गांक बनाने के लिए धर्म के स्थापना वर्ष को (CD) के द्वारा प्राप्त वर्ष की प्रतीक एकल संख्या प्राप्त करने के निर्देश हैं-

Example : Q29M8 Arya Samaj

Q78M5 Bahaism

10.2.1.2 भौगोलिक विधि (Geographical Device) - जब मुख्य वर्ग के

किसी भी पक्ष या पंक्ति में एकल अंकों का निर्माण भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर होता है, उसे भौगोलिक विधि से सम्बोधित किया जाता है। इसके अतिरिक्त नवीन एकल संख्याओं के निर्माण, विद्यमान एकलों के वाच्यार्थ को तीक्ष्ण बनाने के लिए भी इस विधि का प्रयोग किया जाता है।

अनुसूचियो में इस विधि के प्रयोग के लिए निर्देश To be got by (GD) या Other systems by (GD) के रूप में स्थान स्थान पर मिलते हैं। इसके अतिरिक्त नियम भाग 0582पृष्ठ 1.30 पर प्रयोग के नियम मिलते हैं। इस विधि की एकल संख्या Space Isolate chapter-4 से प्राप्त की जाती है। भौगोलिक एकल संख्या को नियंत्रक वर्ग संख्या (Host Class Number) के साथ सीधा जोड़ दिया जाता है इसके लिये किसी संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती।

मुख्य वर्ग V History तथा Z Law में भौगोलिक विधि (GD) को [P] पक्ष के रूप में वर्णित किया गया है :-

Example : History of India

V44

Indian Law

Z44

N Fine Arts का [P] पक्ष भी भौगोलिक विधि (GD) से निर्मित होता है।

Example : NR44 Indian Music

NA5 European Architecture

मुख्य वर्ग R= Philosophy में भी R8 एकल संख्या Other Systems के अन्तर्गत दूसरे देशों के दर्शन शास्त्रों के वर्गांक भौगोलिक विधि से बनाने के निर्देश हैं।

Example: Chinese Philosophy

R841

10.2.1.3 विषय विधि (Subject Device) - द्वि-बिन्दु वर्गीकरण पद्धति के अन्तर्गत वर्गांक को विषय की तीक्ष्णता (गहनता) को ध्यान में रखकर बनाया जाता है यही कारण है कि इसके अन्तर्गत प्रयुक्त विभिन्न विधियाँ तथा एकल संख्याओं का प्रयोग पंक्ति तथा शृंखला में असीम ग्राह्यता लाता है।इस विधि के अन्तर्गत मुख्य वर्गों के पंक्ति

एवं शृंखला एकलों का उल्लेख करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि यथा सम्भव उस विशिष्ट विषय से सम्बन्धित सभी एकल विचारों को सम्मिलित कर लिया जाये। आज के युग में निरन्तर ज्ञान के विकास तथा विषयों के पारस्परिक निर्भरता के कारण वर्गीकरण की अनुसूचियों में सभी विषयों को उल्लेख करना सम्भव नहीं है। आवश्यकता पड़ने पर अस्थायी रूप से उपयुक्त एकल संख्याओं को अन्य मुख्य वर्ग से लाकर प्रयोग कर सकते हैं। इस विधि का प्रयोग करने के लिए निर्देश अनुसूचियों में यथास्थान दिये गये हैं। निर्देश उन्हीं जगहों पर है जहाँ पर विषय विधि प्रयोग की आवश्यकता है। नियम भाग के पृष्ठ 1.31 संख्या 0583(SD) में दिये गये निर्देशानुसार विषय विधि के रूप में जिन एकल संख्याओं का प्रयोग किया जाता है उन्हें वर्तुलाकार कोष्ठक (Circular brackets)में रखा जाता है।

X Economics मुख्य वर्ग एकल संख्या 8 = Industry को विभाजित कर असंख्य प्रकार के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के वर्गांक निम्नवत् बनाये जा सकते हैं :-

Example ; Agriculture Economics

X8 (J)

Coal Industry

X8 (F551)

[P2] पक्ष की एकल संख्याओं को विभाजित कर विशिष्टता प्रदान करने के लिए- Example : D6,8 (B) = Computer

R3, (Q) = Philosophy of religion

[E] पक्ष की एकल संख्याओं को विभाजित कर विशिष्टता प्रदान करने के लिए-

Example : Teaching of Mathematics

T : 3 (B)

[S] पक्ष की एकल संख्याओं को विभाजित कर विशिष्टता प्रदान करने के लिए-

Example : 1(Q7) Muslim Countries

10.2.1.4 वर्णक्रम विधि (Alphabetical Device) - द्वि-बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में वर्णक्रम विधि (Alphabetical Device) या संक्षेप में (AD) का तात्पर्य किसी मुख्य वर्ग की विशिष्ट अनुसूचियों अथवा अन्य अनुसूचियों के किसी भी पंक्ति के एकलों के लिए एकल अंकों का निर्माण उस एकल विचार सम्बन्धी सत्ता के नाम का प्रथम,

प्रथम दो, या प्रथम तीन अक्षर और यदि आवश्यकता हो तो तीन से अधिक अक्षरों के उपयोग से करना होता है। ये अक्षर रोमन दीर्घ अक्षरों (Roman Capitals) में लिखे जाते हैं। इस पद्धति में इस विधि का व्यापक उपयोग किया गया है -

परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकलों (Posteriorising common Isolates) के [P] पक्ष के स्थानीकृत संस्थाओं से सम्बन्धित एकलों के लिए एकल संख्याओं के निर्माण में यथा -

Example: Guru Nanak Dev University

T4.4443, d,G

J=Agriculture मुख्य वर्ग में [P] पक्ष के एकलों से सम्बन्धित कृषि उपजों के लिए एकल अंक देना -

Example: Basmati Rice plant

J381B

मुख्य वर्ग O=Literature में [P3] तथा [P4]पक्ष में AD का प्रयोग हुआ है। [P3] पक्ष Author Number के अन्तर्गत सन 1800 के पश्चात के लेखकों जिन के जन्म का वर्ष ज्ञात नहीं है के लिए एकल अंक AD द्वारा दिया जाता है, नियम भाग 404, पृष्ठ 20 पर देखें।

Example: Shakespear's Hemlet

[P4]

0111, 21 J 64,H

Comedy poet Shail Chaturvedi

[P3]

0152, 1NS

10.2.1.5 दशा सम्बन्ध युक्ति (Phase relation Device)- विषयों के पारस्परिक रूप से प्रभावित अथवा उनके मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाने हेतु जिस युक्ति का प्रयोग किया जाता है उसे दशा सम्बन्ध युक्ति की संज्ञा दी जाती है। यह सम्बन्ध तीन तरह का होता है।

(क) अन्तंविषयी दशा सम्बन्ध (Inter-Subject Phase relation)

(ख) अन्तंपक्षीय दशा सम्बन्ध (Intra-Facet Phase relation)

(ग) अर्न्तपक्तिीय दशा सम्बन्ध (Intra-array Phase relation)

इसके बारे में विस्तार पूर्वक आप इकाई 13 में जानकारी प्राप्त कर सकेंगें।

10.2.1.6 अध्यारोपण विधि (Super-Imposition Device)- किसी मुख्य वर्ग के अंतर्गत एक ही पक्ष के अनुसूची में दिये हुए दो एकलों के सयोजन से किसी एक अन्य एकल का निर्माण हो तो उसे अध्यारोपण विधि (Super-imposition device)कहते हैं। एक पक्ष की अनुसूची में से एक वर्गांक के केवल एक ही एकल संख्या को जोड़ा जा सकता है। अध्यारोपण एकल के लिए एकल संख्या अध्यारोपण विधि (Super imposition device)संक्षेप में SID से दिये जाते हैं। इस विधि में दी गयी एकल संख्याओं को Hyphen (-) से जोड़कर अध्यारोपित एकल संख्या द्वारा वर्गांक बनाये जा सकते हैं। जैसे Veins of arms के लिए L163-36 इस अध्यारोपित एकल संख्या को एक एकल संख्या माना जायेगा। इस विधि के अन्तर्गत दो एकलों में से एक प्रधान और दूसरा गौण होता है। प्रधान एकल को पहले तथा गौण एकल को बाद में रखा जाता है - उदाहरणार्थ -

History of French India - V44-6

Urban youth

Y12-33

Working class women

Y15-49

Psychology of blind child

S1-68

Female university students

T4-55

10.2.1.7 स्मृति सहायक अंक विधि (Menemonic Device)- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के मुख्य वर्गों की अनुसूचियों में जब एक ही विचार अथवा धारणा को अभिव्यक्त करने के लिए किसी भी निश्चित अंक का प्रयोग समान रूप से किया जाय तो अंकों के इस स्मृति सहायक प्रयोग को स्मृति सहायक अंक कहते हैं। इसके लिए यह आवश्यक नहीं है कि उस विशिष्ट अंक का अनुक्रम प्रत्येक मुख्य वर्ग में एक बार ही हो यह अंक भिन्न अनुक्रम में प्रयुक्त होते हुए भी उस समान विचार धारणा को अभिव्यक्त कर सकता है।

Example: 2'N = Library science in 20th century

V'N = History in 20th century

2a = Bibliography of library science

Ya = Bibliography of Sociology

अंक 2 का प्रयोग अनेक अर्थों में -

Example:

V44:2 = Constitution of India

L72:2 = Structure of Human Brain

10.2.1.8 पक्ष युक्ति (Facet Device)- जब किसी नवीन पक्ष (Facet) को जोड़कर किसी विषय को तीक्ष्णता प्रदान की जाती है तो इस युक्ति को पक्ष युक्ति कहते हैं। अंकन के दृष्टिकोण से संयोजक चिह्न (Connecting symbol/Indicator digit)को पहले लगाकर किसी वर्गांक के साथ एकल संख्या को जोड़ा जाता है जिससे विषय की पूर्ण अभिव्यक्ति हो सके।

उदाहरणार्थ -

J386.44 = Agriculture of Barley in India

KZ 351:4.44 = Poultry diseases in India

उपर्युक्त उदहारणों में मुख्य वर्गांकों के साथ India पक्ष को जोड़कर विषय का निर्माण किया गया है।

10.2.1.9 खण्ड युक्ति (Sector Device)- इस युक्ति के माध्यम से पंक्तियों में ग्राह्यता एवं वृद्धि लाई जाती है। जो द्विबिन्दु वर्गीकरण की अपनी अलग तरह की विशेषता को दर्शाती है। खण्ड युक्ति के रूप में प्रयुक्त अंकों का केवल क्रमिक मूल्य (Cordinal value) होता.है; अभिप्राय या अभिव्यक्ति मूल्य (Ordinal value) नहीं होता है। खण्ड युक्ति पंक्ति को विस्तार प्रदान करती है जिससे नये विषयों को स्थान प्राप्त होता है।

10.3 सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न युक्तियों के माध्यम से द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति को एक वैज्ञानिक एवं सुव्यवस्थित आधार प्रदान किया गया है और ये युक्तियाँ नित नये विषयों को द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में आत्मसात करने एवं अभिव्यक्त करने में

सक्षम बनाती है।इनके माध्यम से ही किसी भी विषय को अपेक्षित तीक्ष्णता एवं उपयुक्त विस्तार प्रदान किया जाता है।

10.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. युक्ति को परिभाषित करते हुए इनके महत्व को स्पष्ट कीजिए?
2. द्विबिन्दु वर्गीकरण में प्रयुक्त युक्तियाँ कितने प्रकार की होती हैं? और इनके प्रयोग को दर्शाइये?

इकाई -11 : सामान्य एकलों (Common Isolates) का परिचय एवं प्रयोग

इकाई की रूपरेखा

11.0 उद्देश्य (Objective)

11.1 विषय प्रवेश (Introduction)

11.2 परिभाषा (Definition)

11.3 द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल (Common isolates in colon classification)

11.3.1 पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising common isolate)

11.3.1.1 देश पक्ष के पूर्व प्रयोग होने वाले (Applicable before space facet)

11.3.1.2 केवल देश पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after space facet)

11.3.1.3 केवल काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after time facet)

11.3.2 परवर्ती सामान्य एकल (Posteriorising common isolates)

11.3.2.1 (Energy) उर्जा

11.3.2.2 (Personality) व्यक्तित्व

11.4 भौगोलिक एकल (Space isolate)

11.5 भाषा एकल (Language isolate)

11.6 काल एकल (Time isolate)

11.7 सारांश (Summary)

11.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

11.0 उद्देश्य (Objectives)

द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति एक संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है जिसमें विभिन्न विषयों का निर्माण एकलों के एक निश्चित क्रम में संयोजन के द्वारा किया जाता है। इस

इकाई के अध्ययनोपरान्त आप निम्न बातों को जानने में सक्षम होंगे ।

1. सामान्य एकल क्या होते हैं और ये कितने प्रकार के होते हैं?

2. सामान्य एकलों के प्रयोग द्वारा कैसे विषयों हेतु वर्गांकों का निर्माण किया जाता है?

11.1 विषय प्रवेश (Introduction)

सामान्य एकल, विषय अथवा विचार की वह इकाई है जो अपने आप में विषय का स्थान नहीं ले सकती है, किन्तु किसी मूलवर्ग (Main Class) के साथ जुड़कर एक नये विषय का निर्माण करती हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में ज्ञान जगत के मूल वर्गों (Main classes) को पक्षों (facets) में एवं पक्षों को एकलों (Isolates)में विभाजित किया गया है। इस प्रकार एकल ज्ञान जगत की वह छोटी इकाई है जिसका प्रयोग वर्गीकरण पद्धति में विषयों के उपविभाजनों का प्रतिनिधित्व करने हेतु किया जाता है। एकलों (isolates) को दो भागों में बाँटा जा सकता है।

(1) विशिष्ट एकल (Special isolates)

(2) सामान्य एकल (Common isolates)

विशिष्ट एकल किसी मुख्य वर्ग की विशेषताओं से सम्बन्धित होते हैं जबकि सामान्य एकल किसी भी विषय के साथ जोड़े जा सकते हैं और जोड़े जाने के उपरान्त एक नये विषय को जन्म देते हैं। इस इकाई में हम सामान्य एकलों के बारे में एवं उनके प्रयोग के बारे में विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

11.2 परिभाषा (Definition)

जैसा कि नाम से ही पता लग रहा है कि सामान्य एकल वह संख्याएं होती हैं जो किसी भी मुख्य वर्ग, प्रामाणिक वर्ग एवं इनके किसी भी पक्ष के साथ प्रयोग की जा सकती है। सामान्य एकलों की तालिका द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के भाग-2, पृष्ठ 2.5 पर दी है तथा इनका प्रयोग कैसे किया जाए इस सम्बन्ध में निर्देश नियम भाग 1, पृष्ठ 1.45 पर दिये गए हैं।

11.3 द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकल (Common Isolate in Colon Classification)

महान मनीषी डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने सामान्य एकलों को प्रमुख रूप से दो भागों में बाँटा है। सामान्य एकलों को प्रदर्शित करने के लिए (a to z) अक्षरों का प्रयोग किया गया है।

- सामान्य एकल (Common Isolate)
  - पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising Common Isolate)
    - (a) देश पक्ष से पूर्व प्रयोग होने वाले (Applicable before space Facet)
    - (b) केवल देश पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after space facet)
    - (c) केवल काल पक्ष के बाद प्रयोग होने वाले (Applicable only after time facet)
  - परवर्ती सामान्य एकल (Posteriorising Common Isolate)
    - (a) व्यक्तित्व (Personality)
    - (b) पदार्थ (Matter)
    - (c) ऊर्जा (Energy)

11.3.1 पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising common isolate)-

सामान्य रूप से किसी विषय के साथ जोड़ने वाले एकल को पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anterioring Common Isolate)कहते है। ये किसी भी मुख्य वर्ग अथवा किसी पक्ष के साथ सीधे जोड़ दिये जाते हैं। इनको जोड़ने के लिए किसी संयोजी चिन्ह (Connecting Symbol) की आवश्यकता नहीं होती है। पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising common isolate) निम्नवत् तीन प्रकार के होते हैं ।

11.3.1.1 देश पक्ष के पूर्व प्रयुक्त (Applicable before Space Facet)- ये सामान्य एकल वह होते हैं जिनका प्रयोग किसी भी विषय के मुख्य वर्ग के साथ किया जा सकता है। परन्तु इसका प्रयोग व्यक्तित्व (Personality),पदार्थ (Matter), ऊर्जा (Energy) के बाद तथा Space Facet से पहले होता है।

उदाहरणार्थ :-

History of Christian and Hindu religion

Q2-6v

नोट : इन पूर्ववर्ती सामान्य एकलों की एक पूरी तालिका द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के भाग 2 में पृष्ठ 2.5 पर प्रस्तुत की है। इस तालिका में प्रस्तुत किये गये सामान्य एकलों के अलग अलग पक्ष परिसूत्र भी दिये गए हैं उन्हीं के अनुसार एकलों का प्रयोग करना होता है। इन परिसूत्रों के प्रयोग करने की व्यवस्था नियम भाग में पृष्ठ 1.45पर दी गयी है।

a= Bibliography (वाङ्मय सूची) - इसके परिसूत्र a[T] के अनुसार a के साथ काल पक्ष [T] के प्रयोग करने का प्रावधान है जिसे नियमानुसार LED (Latest Effective Decade) के रूप में अर्थात अन्तिम प्रभावी दशक का प्रयोग किया जाता है। इससे सम्बन्धित नियम 311 एवं 312 पृष्ठ 1.49 पर दिये गए हैं।

Example : Bibliography of Library Science brought up to 1990

2aN9

Bibliography of Medicine period covered up to 1978

LaN7

c= Concordance (शब्दानुक्रमणिका) - इस सामान्य एकल का कोई परिसूत्र नहीं है अतः यह किसी मुख्य वर्ग या उसके पक्ष के साथ प्रयोग हो सकता है।

Example: Concordance of Sanksrit Literarure

015c

d = Table (सारणियाँ) - सामान्य एकल d तथा c दोनों का कोई भी परिसूत्र नहीं है। इन दोनों को किसी मुख्य वर्ग अथवा उसके पक्ष के साथ सीधा जोड़ा जा सकता है।

Example: Formula of Manufacture of Liril Bath Soap

F94966Le

f= Atlas (मानचित्रावली) - f का परिसूत्र भी a के समान है इसके साथ [T] पक्ष का प्रयोग होता है यहाँ पर भी Time Facet को अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में बिना योजक चिन्ह के जोड़ा जाता है।

Example: Geographical atlas up to 1989

UfN9

k - Cyclopaedia / Dictionary (विश्वकोश/शब्दकोश)

परिसूत्र - K[P], [P2]

[P]पक्ष में उस भौगोलिक क्षेत्र को रखा जाता है जिसके सम्बन्ध में विश्वकोश की सूचना दी गई हों।

[P2] पक्ष में उस वर्ष की प्रतीक एकल संख्या दी जाती है जिसमें विश्वकोश पहली बार प्रकाशित हुआ हो। इसे कालक्रम विधि (CD)से प्राप्त किया जाता है।[P] तथा [P2]को जोड़ने के लिए संयोजक चिन्ह [Comma (,)] कोमा लगाने का प्रावधान है।

Example: Indian Encyclopedia of Botany
(First published in 1974)
I k44,N74

International Encyclopaedia of science (first published in 1930)

Ak1, N30

m = Periodicals/Journals /Magazines - इस सामान्य एकल के अन्तर्गत दैनिक पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक, त्रैमासिक तथा अर्द्धवार्षिक पत्र पत्रिकाएँ आती हैं।

परिसूत्र - m [P], [P2]

[P] वह देश जहाँ पर पत्र पत्रिका प्रकाशित होती है उसे (GD) से प्राप्त करना होता है। [P2] पत्रिका के प्रकाशन का वर्ष (year of publication) (CD) कालक्रम विधि द्वारा प्राप्त किया जाता है। याद रहे कि [P] और [P2] के बीच संयोजक चिन्ह Comma (,) जोड़ने का प्रावधान है।

Example: LIBRA (Journal Library Science [Indian first published, 1964]
2m 44, N64

n = Serial -

इसका परिसूत्र भी k एकल तथा m एकल के समान है तथा m और k के समान [P]पक्ष में एकल अंक (GD) तथा [P2]पक्ष [CD] द्वारा प्राप्त किया जाता है।

Example: India - A Reference Annual [First published, 1953]

n44, N53

44 = P पक्ष- इस पक्ष में प्रकाशन का स्थान न देकर उस भौगोलिक क्षेत्र का अंक दिया है जिसके लिए वार्षिकी में सूचना दी गयी है।

N53=[P2] पक्ष के अन्तर्गत उस वर्ष की प्रतीक एकल संख्या दी है जिस वर्ष वार्षिकी का प्रथम प्रकाशन हुआ है। सामान्य एकल n का प्रयोग Directory के लिए भी किया जाता है।

P = Conference Proceedings

परिसूत्र - P [P], [P2]

[P] पक्ष को Geographical area of perview के अनुसार प्राप्त करते हैं जिसका अर्थ वह भौगोलिक क्षेत्र है जहाँ के प्रतिनिधि सम्मेलन में मुख्य रूप से सम्मिलित होते हैं, यह एकल संख्या (GD)से प्राप्त की जाती है। [P2] पक्ष के अन्तर्गत सम्मेलन का वर्ष का उल्लेख किया जाता है जो (CD)से प्राप्त किया जाता है।

Example: Indian Conference of Doctors (held at Delhi in the year 1964)

Lp44, N64

नोट :-

(i) यदि सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित नहीं किया जाता तब वर्ष की प्रतीक संख्या को तीन अंकों में लिखेंगें।

(ii) यदि सम्मेलन क्रमिक रूप से आयोजित किया जाता है तो सम्मेलन के प्रारम्भ होने का दशक या शताब्दी अंक दिया जाना चाहिए।

Example: Proceedings of Indian Pharmacists (Conference held at Delhi, Year 1975)

LX3p44,N7

International Conference on Hindu law (Held at Bombay, Year 1965)

Z (Q2) p44, N65

V = History -

परिसूत्र - v[S] '[T]

v History सामान्य एकल के [T]पक्ष में उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या को दिया जाता है जहाँ से सम्बन्धित विषय का इतिहास प्रदर्शित करना हो। यह

Space Isolate Table 4 से प्राप्त करना होता है।

Examples: History of Library Science in America

2v 73

Hindi Sahitya Ka Itihas in India

O152v44

[T] पक्ष के रूप में उस काल की प्रतीक संख्या प्राप्त की जाती है। जिस काल से सम्बन्धित विषय का इतिहास प्रदर्शित करना हो इसे Time Isolate Table 3 से प्राप्त करते है। [T] पक्ष को LED के रूप में प्राप्त करने का नियम पृष्ठ 1.46 में दिया है।

Example: History of Education in Indian up to 1955

Tv 44'N5

w = Biography

Biographies (जीवनीयों) को निम्न भागों में विभाजित किया गया है :-

(i) General Biographies or Collective Biographies (सामान्य अथवा सामूहिक जीवनियाँ) - इस श्रेणी में एक निश्चित विषय से सम्बन्धित किसी विशिष्ठ भौगोलिक क्षेत्र के एक से अधिक व्यक्तियों की जीवनियों को वर्गीकृत किया जाता है, जैसे - Indians, Botanists, etc. ये एक व्यक्ति विशेष की जीवनी न होकर अनेक व्यक्तियों की जीवनी होती है।

परिसूत्र = w [P], [P2]

[P] पक्ष में उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या को दिया जाता है जिस देश या क्षेत्र के वे व्यक्ति है। इसे (GD) से प्राप्त किया जाता है।

[P2] पक्ष में सबसे कम आयु के व्यक्ति (Youngest born) के जन्म वर्ष को अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में देने का नियम है (नियम 21w5 पृष्ठ 1.47)

Examples: Scientific Biography [International, Youngest born, 1950]

Aw1,N5

Biography of Indian Botanists (Youngest born 1933)

Iw44, N3

Biographies of Indian librarians (Youngest born in 1939)

2w44, N3

(ii) Individual Biographies (व्यक्तिगत या एक व्यक्ति की जीवनी) - इस प्रकार की जीवनी सामूहिक न होकर किसी विशेष व्यक्ति से सम्बन्धित होती है।

परिसूत्र - [P]

[P] पक्ष में व्यक्ति का जन्म वर्ष (CD) से प्राप्त कर तीन अंकों में लिखा जाता है।

Example: Biography of S.R. Ranganathan born, 1892

2wM92

(iii) Autobiography (आत्मकथा), Ana तथा Letters.

यदि किसी व्यक्ति द्वारा लिखी गयी स्वयं की जीवनी (Autobiography) (आत्मकथा) संस्मरण (Ana) तथा पत्रों (Letters) से सम्बन्धित पुस्तकों को भी w Biography के अन्तर्गत रखा जायेगा तथा इनके लिए Comma (,) के पश्चात क्रमशः 1,2 तथा 4 अंक दिये जायेंगे।

Example: 1. Letters of Dr. S.R. Ranganathan

2wM92,4

2. Authobiography of Dr S.R. Ranganathan

2wM92,1

3. Ana of Dr. S.R. Ranganathan.

2wM92,2

x = Works (Collection or Selection) रचनाएँ = सामान्य एकल x का प्रयोग लेखक की रचनाओं के संग्रह या संकलन के लिए होता है। यह निम्नवत् दो भागों में विभक्त है :-(i) General works (सामान्य संकलन)

परिसूत्र — x[P], [P2]

[P] पक्ष को (GD) से प्राप्त किया जाता है। (GD) के द्वारा उस भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या प्राप्त की जाती जिस क्षेत्र के लेखकों की रचनाओं का संग्रह हैं।

Example: Selected works of American Physicians

Cx73

[P2] पक्ष को (CD) से प्राप्त करते है।(CD) के द्वारा सबसे कम आयु के लेखक के जन्म वर्ष की प्रतीक एकल संख्या का अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप

में प्रयोग होता है। [P] तथा [P2] पक्षों को जोड़ने के लिए Comma (,) का प्रयोग होता है।

Example: Works of Indian Mathematicians (Youngest born in 1959)

Bx 44, N5

उपर्युक्त उदाहरण में सबसे कम आयु के व्यक्ति का जन्म वर्ष [P2] पक्ष के रूप में (LED) के माध्यम से उल्लिखित किया गया है।

(ii) — Individual works (व्यक्तिगत संकलन)

परिसूत्र - x[P]

[P] पक्ष को (CD) से प्राप्त किया जाता है। (CD) के द्वारा लेखक का जन्म वर्ष तीन अंकों में प्राप्त करने का प्रावधान है।

Example: Works of Ramanujan (born in 1887)

Bx M87

y7 Case Study (केस अध्ययन) - महान देश प्रेमी या अपने राष्ट्र प्रदेश तथा इलाके के इतिहास के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाले की Biography या उनकी जीवनी के लिए w सामान्य एकल की जगह y7 सामान्य एकल का प्रयोग करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को मुख्यवर्ग V History के अन्तर्गत वर्गीकृत करना चाहिए तथा [P]पक्ष के रूप में सम्बन्धित देश प्रदेश अथवा क्षेत्र की एकल संख्या (GD) से प्राप्त करनी चाहिए। इस प्रकार वर्गांक के साथ सामान्य एकल y7 का प्रयोग करके सम्बन्धित व्यक्ति का जन्म वर्ष (CD) से प्राप्त करके सीधा जोड़ देते हैं।

परिसूत्र = Same as for w.

y7 के लिए वही परिसूत्र प्रयोग में लाया जाता है जो w के लिए है।

Example: Biography of Jawahar Lal Nehru (Late Prime Minister of India, Born in 1889)

V44y7M89

Autobiography of Dr. Rajendra Prasad (First President of Indian Republic born in 1880)

V44y7 M80,1

Correspondence of Hitler (born in 1892)

V55y7M92,4

उपर्युक्त उदाहरणों में V History मुख्य वर्ग का प्रयोग कर [P] पक्ष Space से लिया है साथ ही y7 के अन्तर्गत वर्गांक निर्मित है। तथा w के परिसूत्र के अनुसार [P] Space के लिए (GD) एवं Time के लिए (CD)से लिया जाता है और बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधे जोड़ा गया है।

Biographies of Friends, Relatives and Associates of an Important person (महत्वपूर्ण व्यक्ति के सम्बन्धियों तथा सहयोगियों की जीवनियाँ) - यदि किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति के सम्बन्धियों, मित्रों या सहयोगियों की जीवनी का वर्गांक बनाने के लिए नियम 21w4, पृष्ठ 1.47) के अनुसार y7 एकल का प्रयोग करेंगे। इसका कारण यह भी है कि उनकी जीवनियाँ उस महत्वपूर्ण व्यक्ति के जीवन के विषय में विशेष सूचना प्रदान करती है।

Examples: Biography of Smt. Kamla Nehru (Wife of Jawahar Lal Nehru, born in 1889)

V44y7M89

y8 = Digest (सारांश पत्रिका)- Manual/Hand-book/outlines) आदि के अर्थ में किया जाता है, इसका कोई परिसूत्र नहीं है -

Examples : Human Resource Management Manual

X:8y8

Hand book of Political Science

Wy8

11.3.1.2 केवल देश पक्ष के बाद प्रयुक्त होने वाले (Applicable only after space facet)

ACI के इस श्रेणी के सामान्य एकलों का प्रयोग केवल Space Facet [S] के बाद ही होता है। [S] से पहले नहीं। इस श्रेणी में निम्न वर्णित केवल दो पूर्ववर्ती सामान्य एकल (ACI) आते हैं :-

r = Administrative Report (प्रशासनिक रिपोर्ट) - इस एकल संख्या के अन्तर्गत सरकार के प्रशासनिक विभाग जैसे - श्रम, वित्त, सूचना एवं प्रसारण, शिक्षा, कानून आदि की रिपोर्ट के लिए पूर्ववर्ती सामान्य एकल का प्रयोग किया जाता है इसका कोई भी परिसूत्र नहीं है लेकिन इसका प्रयोग [S] पक्ष के बाद बिना किसी

संयोजक चिन्ह के साथ किया जाता है।

Examples: Administrative Report on University Education in India

T4.44r

Report of Ministry of Finance, Government of Rajasthan

X 7.4437r

s = Statistics (if periodicals) (क्रमिक रूप से प्रकाशित होने वाले ऑंकड़े) - परिसूत्र = s[T]

सामान्य एकल अंक s का परिसूत्र दिया गया है। अगर Statistics क्रमिक रूप से प्रकाशित की जाती है तो s के पश्चात [T] पक्ष में Statistics के प्रथम प्रकाशन वर्ष के एकल अंक को (CD) द्वारा प्राप्त किया जायेगा जिससे सभी Statistics को फलकों (Selves) पर एक साथ रखा जा सके।

Example: - Annual statistics of corn production in USA, First published, 1969.

X 8 (J385): 2.73sN69

11.3.1.3 केवल काल पक्ष के बाद प्रयुक्त होने वाले (Applicable only after time facts) : - इस श्रेणी के अन्तर्गत निम्न वर्णित पूर्ववर्ती सामान्य एकल (ACI) आते हैं :-

ACI- Applicable only after [T] (पूर्ववर्ती सामान्य एकल का प्रयोग [T] Time Facet के बाद होता है।

s = Statistics (if stray) (क्रमिक रूप से प्रकाशित न होने वाले आँकड़े) - सामान्य एकल s = Statistics का प्रयोग उस स्थिति में किया जाता है जब आँकड़े क्रमिक रूप से प्रकाशित न होकर यदाकदा प्रकाशित हुए हों।

Example: Statistics of Public Libraries in India brought up to 1980

22.44'N9s

Statistics of Export of Electronic Tools from China in 1980's

x8(D65, 8) : 545.41'N9s

t = Commission Report (आयोगों के प्रतिवेदन) -

Example Report of Advisory Committee on Public Libraries in Pakistan 1975

22.44Q7 'N57 t

Report of Indian Labour Commission (1999)

X·9.44 'N99t.

t4 = Survey (सर्वेक्षण)

Example: Survey Report of Adult Education in Ahemdabad, 1989

T3.443181 'N89t4

t5 = Plan (योजना) -

Example : Planning of Library Building in India.

NA44,22t5

t6 = Ideal (आदर्श)

Example: Ideal of Library Classification

2:51t6

v = Source material (स्त्रोत सामग्री) -

Examples: Source Material for the study of Nuclear Engineering dur ing 19th century.

D7' Mv

v5= Literature (साहित्य), v6= Traditions: v7 = Archacology (As in V History) v8 Archive) (as in V history)

Example: Literature on Assam Chief Ministry

W,21.4477v5

11.3.2 परवर्ती सामान्य एकल Posteriorising Common Isolate - ये ऐसे एकल हैं जिनका प्रयोग निर्धारण संयोजक चिन्हों के साथ होता है। ये निम्नवत् 2 प्रकार के होते हैं :-

(i) Posteriorising Common Isolate: Energy Common Isolates (परवर्ती ऊर्जा सामान्य एकल)

(ii) Posteriorising Common Isolate : Personality Common Isolates) (परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकल)

11.3.2.1 परवर्ती सामान्य एकल-ऊर्जा (PCI-Energy) - इस श्रेणी में सामान्य एकलों का कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है। इनका प्रयोग मुख्य वर्ग सहित उनके किसी भी पक्ष के साथ किया जा सकता है। इसका संयोजक चिन्ह : (Colon) है।

Example: Weighing of cotton yarn

M7; 1: c1

Research on University Education

T4 : f

Observations on wheat Agriculture

J382: f2

Reporting on Medical Education in India

T9(L).44:r

Surveying the Moghal Architecture in Inida.

NA44, J.44:u

11.3.2.2 परवर्ती सामान्य एकल - व्यक्तित्व (PCI - Personality)- परवर्ती व्यक्तित्व सामान्य एकलों का प्रयोग किसी संस्था, संघ, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, सरकारी विभागों इत्यादि को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। इन सामान्य एकलों को व्यक्तित्व पक्ष (Personality Facet)के संयोजक चिन्ह (Comma (,)] से जोड़ा जाता है। इनका प्रयोग सामान्यतः [S] पक्ष के बाद किया जाना चाहिए जैसा कि नियम 27, पृष्ठ 1.48 पर है।

Example: Library Profession of Inida

2·44,b

Medical Professional in Asia

L·4,b

व्यक्तित्व सामान्य एकलों के लिए निम्नवत् परिसूत्र का प्रावधान है।

परिसूत्र = (CI), [P], [P2] : [E]

[P] पक्ष - विशिष्ट संस्था के लिए एकल अंक (P)पक्ष में दिये जायेगें। स्थानीकृत संस्था (Localised Body) के लिए एकल अंक (AD) द्वारा प्राप्त करके वर्गांक बनाये जायेंगे। स्थानीकृत संस्था हमेशा संस्थान होगी।

Example: Guru Nanak Regional Engineering College, Delhi

D·4451t4,G

Non-Localised Body - अस्थानीकृत संस्था के लिए एकल अंक (CD) द्वारा प्राप्त किया जायेगा। नियम 271 पृष्ठ 1.48 के अनुसार '9' अंक का प्रयोग (CD) से पहले अस्थानीकृत संस्था के लिए करना अनिवार्य है :-

Examples: Indian Council of Agriculture Research (Founded in twentieth century)

J·44, f, 9N

उपरोक्त संस्था राष्ट्रीय स्तर की है अत :

प्रस्तुत उदाहरण में 9 संख्या स्थानीकृत तथा अस्थानीकृत संख्या के लिए प्रयुक्त एकल अंक के भेद को स्पष्ट करती है (योजक चिन्ह कामा (,) का प्रयोग पक्ष उपनियम के अनुसार किया गया है।

Example : Bundelkhand Agriculture Research

J.44, t4, B

उपरोक्त उदाहरण उच्च शैक्षणिक संस्था (Higher Educational Institution) है अतः PCI Personality Common Isolate t4=Higher का प्रयोग किया गया है। यह संस्था स्थानीकृत हैं (Localised)है अतः [P] पक्ष [AD] से प्राप्त किया है।

[P2], [E] तथा [T] पक्षों का प्रयोग = आवश्यकता पड़ने पर PCI-Personality Common Isolate के साथ मुख्य वर्ग V History से [P2],[E] तथा [T] पक्षों का प्रयोग किया जा सकता है। (नियम 272 ए पृष्ठ 1.48)। इस परिसूत्र की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। [C1], [P], [P2]: [E]'[T] सर्वप्रथम Personality Common Isolate फिर इसके लिए [P] पक्ष को AD से या CD से प्राप्त करना होगा इसके बाद मुख्य वर्ग v History के [P2] व [E] पक्षों से उपयुक्त एकल संख्या प्राप्त करके प्रयोग की जायेगी तथा यदि आवश्यकता हो तो [T] पक्ष का भी प्रयोग किया जाता है।

Example: Functions of the vice-chancellor of the U.P.R.T. Open University during 2008 - 2011

T4·44,t4,U,12:3'P11←Po8

उपरोक्त उदाहरण का निम्नवत विश्लेषण कर सकते हैं।

T4	=	Basic class
44	=	India
,	=	PCI (Personality) का संयोजक चिन्ह
t4	=	PCI (Personality) उच्च शैक्षिक संस्था
, U	=	स्थानीकृत संस्था का नाम (AD) द्वारा

, 12 = [P2] के रूप में मुख्य वर्ग V History से

: 3 = [E] के रूप में मुख्य वर्ग V History से

P11←Po8 = समय पक्ष (Time Isolates से)

11.4 भौगोलिक एकल (Space Isolate)

भौगोलिक एकल संख्या प्रणाली का प्रयोग करने के मूल में विषय के अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र से सुसम्बद्ध होना आवश्यक है। या फिर यह भी कह सकते हैं कि जब विषय का अनुसंधान, अध्ययन व मनन भौगोलिक परिसीमा में किया जाता है तब भौगोलिक एकल संख्या का प्रयोग किया जाता है।

पृष्ठ 2.8 भौगोलिक एकल सारणी पाठ 4 (Space Isolate chapter 4) पर दी है इससे सम्बन्धित नियम भाग 1 में पृष्ठ 1.51 पर दिये हैं। परिशिष्ट (Annexure)पृष्ठ 20, 21, 22, 23 पर संशोधित नियम गये हैं।

भौगोलिक एकल (Space Isolate) के लिए [S] पक्ष का प्रावधान है। इस पक्ष का प्रयोग मुख्य वर्गों के पक्ष परिसूत्र में नहीं दिया गया है क्योंकि ये एक सामान्य पक्ष है और आवश्यकता पड़ने पर भौगोलिक एकलों का प्रयोग भौगोलिक एकल सारणी (Space Isolate, chap4) से प्राप्त कर किसी भी मुख्य वर्ग में किया जा सकता है। इस पक्ष का संयोजक चिह्न Dot (.) है। सारणी में इस पक्ष की एकल संख्याओं के लिए इण्डो अरेबिक अंकों (Indo-Arabic Numerals) का प्रयोग किया गया है। इनको पुनः विभाजित करने के लिए विभिन्न प्रकार के मण्डलों (Zones) तथा दिशानुसार विभागों (Orientation Division) आदि की एकल संख्याएँ दी गई हैं।

भौगोलिक सारणी (Space Isolate Table 4)के बाद पृष्ठ 2.18 पर भौगोलिक अनुक्रमणी (Geographical Index) का उल्लेख है जिसका व्यवस्थापन वर्णक्रम विधि (Alphabetical) में अंकित है।

भौगोलिक विभागों (Geographical Divisions)में संशोधन - नियम संख्या 40 पृष्ठ 1.51 पर स्थान एकल के नियम संशोधित कर दिये गये हैं तथा ये संशोधन परिशिष्ट (Annexure) पृष्ठ 18 से 21 पर दिये हैं। इसके अनुसार [S] पक्ष को 4 खण्डों (Blocks) में विभाजित कर दिया है।

- इनमें 2 Mother country का प्रावधान मितव्ययता की दृष्टि से किया है।

पुस्तकालय में स्वदेश सम्बन्धित साहित्य बहुत अधिक आता है। पुस्तकालय में श्रम व समय से बचत को ध्यान में रखकर अपने देश के लिए वर्गांक को एक ही अंक (one digit) द्वारा व्यक्त किया है।

3 Favoured Country वह देश होता है जिसे पुस्तकालय मातृ देश के बाद प्राथमिकता देना चाहता है। इसके लिए यह देखना आवश्यक है कि अपने देश (मातृ देश) के बाद कौन सा मित्र देश एकल संख्या 4-8 में उल्लिखित है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत के अनेक राज्यों का पुनर्गठन हुआ है। उनके परिवर्तित नाम, स्थान एकल (Space Isolate) Chapter 4 में यथास्थान दिये गये हैं।

भौगोलिक एकल का प्रयोग निम्न प्रकार से भी किया जाता है :-

राजनीतिक विभाग का प्रयोग : कालक्रम विधि (CD) में - अनुसूचियों में अनेक स्थानों पर कालक्रम विधि (CD) का प्रयोग भी विश्व की लगभग सम्प्रभुता सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं (Near Soverign International Organisations) के वर्गांक निर्मित करने के लिए गया है।

Example : League of Nations areas

1N

South-East Asian Nations

43

Organization of African Unity (OAU, 1963)

6N7

2. अध्यारोपण विधि (SID) का प्रयोग - ऐसे साम्राज्यों के वर्गांक निर्मित करने के लिए जो विश्व के एक से अधिक क्षेत्रों में फैले हुए थे उनके लिए अध्यारोपण विधि (SID) का प्रयोग किया जाता है।

Example : Rice Growing States in British India

44-56 (J381)

History of British Empire

VI-56

3. विषय विधि (SD) का प्रयोग - भौगोलिक एकल के साथ आवश्यकतानुसार विषय विधि का प्रयोग निम्नानुसार किया जाता है : उदाहरणार्थ-

English speaking countries of the world

1 (P111)

4. जनसंख्यानुसार विभाग (Population Clusters)- जनसंख्यानुसार विभाग (Population Clusters) के वर्गांकों के लिए वर्णक्रम विधि (AD) द्वारा निर्मित किया जाता है। गाँव, शहर, तहसील, या छोटी भौगोलिक इकाई के नाम के प्रथम अक्षर को अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर में लिखा जाता है। राजनीतिक विभाग व जनसंख्यानुसार विभाग के बीच संयोजक चिन्ह [Dot (.)] का प्रयोग होता है। जनसंख्यानुसार विभाग से पूर्व राजनीतिक विभाग आवश्यक है।

Example: Education in Moradabad

T.445255.M

जब एक ही अक्षर से आरम्भ होने वाले जनसंख्या विभाग एक से अधिक हों तो वर्णक्रम विधि के प्रयोग सम्बन्धी नियमों को अपना कर दो स्थानों के बीच का अन्तर स्पष्ट करने के लिए प्रथम स्थान के नाम का प्रथम अक्षर तथा बाद वाले नाम के साथ अगला अक्षर लगाना चाहिए।

Example: Economics of Madurai

X.4411.MA

4. प्राकृतिक लक्षण विभाग (Physiographical Divisions) - प्राकृतिक विभागों के लिए [S] पक्ष के द्वितीय स्तर (level) [S2] पक्ष के रूप में संसार के प्राकृतिक विभागों को दिया है इसके लिए अंग्रेजी वर्णमाला के लघु अक्षरों (Roman small letters) का प्रयोग किया गया है।

Space Isolate (GD) Page 2.17 पर दिये गये "42 Isolate in [S2]" की एकल संख्याओं को Annexure Page 24 part 2 से लेना है जो निम्न है -

प्राकृतिक विभागों के प्रयोग के लिए यह आवश्यक नहीं कि इससे पहले अन्य विभाग की एकल संख्या का प्रयोग हो। प्राकृतिक विभाग की एक संख्या [S] पक्ष के किसी भी अन्य विभागों के साथ भी हो सकता है।

Examples: Travel in Forests of Africa

U8.6.f

Fauna and Flora of Indian forests

G:12.44.f

11.5 भाषा एकल (Language Isolate)

भाषा एकल सारणी (Language Isolate Table) पाठ 5 अनुसूची के पृष्ठ 2.26 से 2.27 पर दी गयी है। इससे सम्बन्धित नियम पृष्ठ 1.54 पर दिये गए है। भाषा एकल का प्रयोग मुख्य वर्ग O= Literature तथा P= Linguistics में [P]पक्ष के लिए विशेष रूप से किया गया है इसके अलावा ग्रन्थांक (Book Number) के परिसूत्र में L पक्ष के लिए भी भाषा एकल (Language Isolate) का प्रयोग किया गया है। वस्तुतः इस अनुसूची का प्रयोग निर्देशानुसार सभी मूलवर्गों के लिए मान्य है।

किसी किसी भाषा का भाषा सारणी की अनुसूची में उल्लेख नहीं है, जैसे - राजस्थानी। लेकिन यह कहा जा सकता है कि भाषा राजस्थानी अनुसूची में वर्णित किसी भाषा (तीन मुख्य समूहों अथवा इनके अन्तर्गत वर्णित किसी भाषा) जैसे अपभ्रंश से सम्बन्ध रखती है तो उस भाषा (राजस्थानी) के लिए एकल अंक इस प्रकार दिये जायेंगे।

(i) सबसे पहले अनुसूची में वर्णित उस भाषा एकल के अंक दिये जायेंगे जिससे उसका सम्बन्ध हो अर्थात अपभ्रंश के एकल संख्या 1518 ।

(ii) 1518 के साथ संख्या 9 जोड़ी जायेगी अर्थात 15189 ।

(iii) इसके बाद भौगोलिक क्षेत्र के अंक जोड़े जायेंगे जिसमें सम्बन्धित भाषा (राजस्थानी) का प्रादुर्भाव हुआ हो अर्थात राजस्थान।

इस प्रकार भौगोलिक विधि (CD) द्वारा प्राप्त राजस्थान के लिए प्रदत्त एकल अंक 4437 हैं अतः राजस्थानी भाषा का एकल अंग होगा 151894437

इसी प्रकार अन्य भाषा एकलों के लिए अंक 4 से 9 निर्धारित किये हैं तथा भौगोलिक विधि (GD) द्वारा उनके लिए एकल अंकों का निर्माण किया जाता है। (GD) के द्वारा उस भौगोलिक क्षेत्र के अंक जोड़े जाते हैं, जिसमें उस भाषा का प्रादुर्भाव हुआ हो।

Example: Baluchi = P16+9+44Q75

= P16944Q75

भाषा सारणी में अंक 4 से 9 के अन्तर्गत उन भाषाओं के वर्गांक बनाने का प्रावधान है जिनका प्रचलन सर्वप्रथम सम्बन्धित महाद्वीप अथवा उपद्वीप में हुआ। नियम संख्या 54 पृष्ठ 1.54 के अनुसार भौगोलिक एकल संख्या को भौगोलिक विधि से प्राप्त

किया जाता है।

Example: P42 - Japanese Language

P438 - Burmese Language

P 44 - Indian Language

इस प्रकार P Linguistics मुख्य वर्ग के साथ भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक संख्या को सीधा जोड़ दिया जाता है जहाँ सम्बन्धित भाषा का सर्वप्रथम प्रचलन हुआ। भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक संख्या भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त की जाती है।

Bibliography of Kashmiri Documents in All Subjects

a 3154

Cataloguing of English Language Periodicals

2; 3111 – 46 : 55

इन उदाहरणों में (Language Isolate) भाषा एकल भाषा सारणी Page 2.26 से Kashmiri 154 तथा English Language-111 प्रतीक एकल प्राप्त किये हैं तथा मूल एकल अंक 3By Language के साथ सीधे बिना किसी संयोजक चिन्ह के जोड़ा गया है।

Gernerallia Bibliography के पक्ष की एकल संख्या 95 Translation (अनुवाद) के अन्तर्गत दो भाषाओं (मूलभाषा तथा अनुवाद भाषा)का होना स्वाभाविक है। 95 के पश्चात मूल भाषा के एकल अंक तथा अनुवाद की भाषा के एकल अंक, भाषा एकल सारणी से जोड़ने तथा दोनों भाषा के बीच में Hyphen (-) का प्रयोग करने का विशेष प्रावधान है।

Example : Bibliography of French books translated into English

a95122-111

Bibliography of Nepali Books translated into Bengali

a951595-157

कालक्रम विधि (CD) के प्रयोग के द्वारा कृत्रिम भाषाओं के वर्गांक बनाने के लिए एकल संख्या P99 के अन्तर्गत प्रावधान है। कृत्रिम भाषा के लिए कालक्रम विधि (CD) के प्रयोग का नियम, नियम भाग में तथा निर्देश भाषा सारणी में दिये हैं। (CD) के रूप में उस काल की प्रतीक एकल संख्या का प्रयोग किया जाता है जिसमें भाषा का

उदभव हुआ हो, इस प्रकार के अनेक उदाहरण सारणी में दिये है।

Example: 99 Artificial Languages [To be divided by (CD)]

P99M-Soiresol

इनमें मुख्य वर्ग के साथ (CD) के प्रयोग द्वारा भाषा का उदभव का काल, वर्ष अंकों में जोड़ा है। इस तरह के निर्देश पृष्ठ 1.105 में दिये हैं।

द्वि-बिन्दु वर्गीकरण की भाषा एकल सारणी में यद्यपि एकल संख्याएँ अति लधु हैं तथापि विविध विधियों के प्रयोग द्वारा विश्व की वर्तमान व भविष्य की सभी भाषाओं के वर्गांक निर्मित करने की क्षमता रखती हैं।

11.6 काल एकल (Time Isolate)

पुस्तकालय विज्ञान के अध्येताओं को इस तथ्य का भली भाँति ज्ञान होना आवश्यक है कि काल, कालावधि और ऋतुओं आदि के सूचक समय के लिए काल एकल का प्रयोग किया जाता है। शताब्दी (Century), दशाब्दी (Decade) सत्र अथवा वर्ष (Year), भूवैज्ञानिक समय (Geological Time) तथा Featured Time, जैसे - मौसम, ऋतुओं आदि के सूचक समय हेतु द्विबिन्दु वर्गीकरण में काल एकल का प्रयोग किया जाता है।

काल एकल (Time Isolate) Chronological Division पर अनुसूची के Chapter 3 पर दी गयी है। इस अध्याय में निम्न दो अनुसूचियाँ दी गई हैं :-

(i) Isolates in [T] : Chronological Divisions (प्रथम स्तर काल पक्ष)

(ii) Isolates in [T2] : Featured time (द्वितीय स्तर काल पक्ष)

Isolates in [T] काल पक्ष - ईसा से 9999 वर्ष पूर्व के लिए अर्थात प्राचीन काल के लिए एकल अंक A दिया गया है।

(a) **ईसा से पूर्व का समय (BC Time)** - ईसा से पूर्व के समय के लिए रोमन बड़े अक्षरों ABC का प्रयोग हुआ है। ईसा से 9999 वर्ष से 1000 वर्ष पूर्व के काल का एकल अंक B है तथा ईसा 999 वर्ष से 1 वर्ष पूर्व के काल का एकल अंक C है। ईसा से 9999वर्षों के काल को दो एकल अंकों में विभाजित किया है। एकल संख्या B को 9000 वर्षों के लिए तथा एकल अंक C को 999 वर्षों के लिए।

एकल संख्या C के बाद पहली संख्या शताब्दी, दूसरी संख्या दशाब्दी तथा तीसरी संख्या वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है। इसी प्रकार एकल संख्या B के पश्चात प्रथम दो संख्याओं शताब्दी, तीसरी संख्या दशाब्दी तथा चौथी संख्या वर्ष का प्रतिनिधित्व करती है।

इसी तरह दशाब्दी के लिए प्रावधान है B के साथ तीनों एकल संख्याओं तथा एकल अंक C के साथ दो संख्याओं का प्रयोग होगा-

(b) ईसा के बाद का समय (AD Time) - ईसा के बाद के समय को प्रदर्शित करने के लिए रोमन बड़े अक्षर D,E,F.......YC का प्रयोग है - अकेला अंक D 10शताब्दियों (Centuries) के लिए प्रयुक्त है। अंक D को अंक 0से 9 द्वारा विभाजित कर 10अलग अलग शताब्दियों (Centuries)में बदला जा सकता है।

एकल अंक E से YC- Chapter 3 में काल एकल 999AD के बाद वाले समय के लिए रोमन बड़े अक्षर E से YC तक एकल संख्याओं का प्रयोग है। प्रत्येक अक्षर एक शताब्दी का प्रतिनिधित्व करने वाला अंक (Digit) होगा। केवल अंक D ने 1000वर्ष अर्थात प्रथम शताब्दी से दसवीं शताब्दी तक के काल का प्रतिनिधित्व किया। किन्तु D अंक के बाद E से YC तक का प्रत्येक अंक केवल एक ही शताब्दी अर्थात 100वर्ष के काल का प्रतिनिधित्व करता है।

Examples: E = 11th Century 1000 AD to 1999 AD

J = 16th Century 1500 AD to 1599 AD

शताब्दी अंक के बाद अंक 0 से 9 लगाकर विभाजित कर दशाब्दी अंक निर्मित किये जा सकते हैं। दशाब्दी की प्रतीक एकल संख्या दो अंकों (Two digigs)को मिलाकर निर्मित की जाती है।

Examples:

3rd Decade of 20 century AD = N2

1960's or 7th Decade of 20th Century = N6

इन शताब्दी अंक को पुनः वर्षों में बदला जा सकता है -

1977 = N77

1981 = N81

ईसा से पूर्व का समय (BC Time) - पुस्तकों को बढ़ते काल की ओर व्यवस्थित करने के लिए इसकी (BC time = ईसा से पूर्व) गणना विपरीत दिशा में करनी होती है। डॉ. रंगनाथन ने इसके लिए Method of Complements विधि अपनायी है। इस विधि के द्वारा 9999 ईसा पूर्व से 1000 ईसा पूर्व के समय को दर्शाया गया है तो जिस वर्ष की प्रतीक संख्या प्राप्त करनी है। उसे 9999 में से घटाने के बाद जो संख्या आये उसे अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर B के साथ जोड़ देना होता है।

Example: 5001 BC = 9999
— 5001
4998 = B 4998

इसी प्रकार 999 से 1 ईसा पूर्व के काल को दर्शाने के लिए अंग्रेजी वर्णमाला के बड़े अक्षर C का प्रयोग करते हैं। जिस वर्ष की प्रतीक संख्या प्राप्त करनी हो उसे 999 में से घटाया जाता है।

Example: 999
–400
599 = C 599

(i) परिसीमित समय अवधि (Bounded Duration of Time)- किसी भी विषय का गहन विस्तृत तथा विशेष अध्ययन के लिए काल (Time) की पाबन्दी की जाती है। ये भी सम्भव है कि विशिष्ट विषय का अध्ययन काल की किसी एक अवधि से दूसरी अवधि तक किया गया हो।

दोनों अवधियों को प्रतीक चिन्ह पश्चमुखी तीर (Backward arrow)द्वारा जोड़ा जाता है।

Examples: Library Classification from 1876 AD to 1933 AD

2:51 'N33 ← M76

Agriculture in India from 17th century through 19th Century AD

J. 44 'M ← K

(ii) भूत काल (PastTime) - जो समय बीत चुका है उसे दर्शाने के लिए काल की प्रतीक संख्या के साथ पश्चमुखी तीर (Backward Arrow ←) चिन्ह का प्रयोग किया जाता है :

उदाहरणार्थ :- Library classification before 1947

2 : 51'N47←

(iii) भविष्य काल (Future Time) - भविष्यकाल या आने वाले समय को दर्शाने के लिए निश्चित काल की प्रतीक संख्या के साथ अग्रमुखी तीर [Forward arrow]→ का चिन्ह लगाया जाता है।

Examples: Future of Science

A 'N →

Future of library Science

2.51 'N →

अन्तिम प्रभावी दशक (Latest effective Decade)- द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में अनेक स्थानों पर अन्तिम प्रभावी दशक (LED) के रूप में समय प्राप्त करने के निर्देश दिये गए हैं। अन्तिम प्रभावी दशक से सम्बन्धित वर्गांक बनाने के लिए शताब्दियों को 5 भागों में बाँटा जाता है। नियम भाग 3120 पृष्ठ 1.49 पर दिये नियम के अनुसार -

1900= N1 (जब दशक अंक 0 अथवा 1 हो तो अन्तिम प्रभावी दशक के लिए अंक 1 का प्रयोग होगा।)

1920 = N3 (जब दशक अंक 2 अथवा 3 हो तो अन्तिम प्रभावी दशक के लिए अंक 3 का प्रयोग होगा।)

1945 = N5 (जब दशक अंक 4 अथवा 5 हो तो अन्तिम प्रभावी दशक के लिए अंक 5 का प्रयोग होगा।)

1961= N7 (जब दशक अंक 6 अथवा 7 हो तो अन्तिम प्रभावी दशक के लिए अंक 7 का प्रयोग होगा।)

1985 = N9 (जब दशक अंक 8 अथवा 9 हो तो अन्तिम प्रभावी दशक के लिए अंक 9का प्रयोग होगा।)

[T] पक्ष का द्वितीय स्तर (Second Level of Time Facet) -पृष्ठ 2.7 पर द्वितीय स्तर काल पक्ष अर्थात [T2] की अनुसूची दी है, जैसे-

c Day time	n5 Autumn
d Night	n7 Winter

c Twilight	p Meteorological period
n Season	p1 Dry
n1 Spring	p5 Wet
n3 Summer	p8 Snow

इस प्रकार इस पक्ष में Featured Time जैसे - दिन, रात मौसम आदि के लिए एकल संख्या दी है। [T] एवं [T2] पक्षों का संयोजक चिन्ह एक उद्धरण चिन्ह (Single inverted comma) से जोड़ा जाता है।

Examples: Human Migration in Snow Times.
U42'p8
Humidity in Winter Season of 1981
U285 'N81'n7

11.7 सारांश (Summary)

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में सामान्य एकलो के द्वारा विभिन्न नियमों में प्रयुक्त होने वाले एक जैसे एकलों को अलग से देते हुए एवं उनके संयोजन की व्यवस्था प्रदान की गई है। जिससे कोलन क्लासीफिकेशन की अनुसूची बहुत बड़ी न होते हुए भी भूत भविष्य एवं वर्तमान में सभी विषयों हेतु स्थान प्रदान करने में सक्षम है।

11.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. Selected works in French literature.
2. Current books on Ayurvedic medicine
3. A study research in Education.
4. Love in English Poetry
5. Discussion on Christian culture
6. Management of Financial Institution in India.
7. Ganga River
8. Travel in desert of Rajasthan
9. Cataloguing of English Language periodicals
10. Bibliography of Bangla books translated into hindi.
11. University education in India after 1980.

इकाई -12 : दशा सम्बन्ध (Phase relation) का वर्ग संख्या निर्माण में प्रयोग

इकाई की रूपरेखा

12.0 उद्देश्य (Objective)

12.1 विषय प्रवेश (Introduction)

12.2 दशा सम्बन्ध (Phase relation)

12.3 दशा सम्बन्धों के स्तर एवं प्रकार

(Levels and kinds of Phase relation)

12.3.1 अन्तः विषयी दशा सम्बन्ध (Intra subject Phase Relation)

12.3.2 अन्तःपक्ष दशा सम्बन्ध (Intra facet phase relation)

12.3.3 अन्तः पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra array phase relation)

12.4 सारांश (Summary)

12.5 अभ्यास हेतु प्रश्न

12.0 उद्देश्य (Objective)

विषय जगत का निर्माण एवं विकास अनेक प्रकार की विधियों, शोध एवं विकास प्रक्रियाओं एवं अध्ययनों से होता है । आज हम देखते हैं कि नित नये नये विषयों का जन्म हो रहा है। इन नये विषयों का विकास पुराने विषयों के पारस्परिक सम्बन्धों, प्रभावों एवं अन्तरों आदि के आधार पर होता है। डॉ. रंगनाथन ने विषयों के मध्य इस तरह के सम्बन्धों को अभिव्यक्ति प्रदान करने हेतु दशा सम्बन्ध (Phase Relation) की व्यवस्था द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में की है। इस इकाई में हम इन्हीं सम्बन्धों एवं उनके प्रकारों के बारे में चर्चा करेंगे।

12.1 विषय प्रवेश (Introduction)

इस खण्ड की पूर्व की दो इकाइयों इकाई -10 एवं इकाई-11 में आप ने द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में किस प्रकार से विभिन्न प्रकार की युक्तियों एवं सामान्य एकलों के प्रयोग द्वारा विषयों को स्थान एवं अभिव्यक्ति प्रदान की गई है, इसके बारे में विस्तार से जाना। वर्तमान समाज में सूचना विस्फोट की स्थिति, शोध एवं विकास की प्रक्रिया में

तेजी के कारण अन्तर्विषयी विषयों का निर्माण हो रहा है। इन अन्तर्विषयी विषयों को जानने एवं ये विषय जिन विषयों से निकल कर आये हैं उनसे उनके सम्बन्ध के स्तर एवं प्रकारों को जानने हेतु दशा सम्बन्ध (Phase Relation) का ज्ञान अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। इस इकाई में हम इसी पर विस्तार पूर्वक चर्चा करेंगे।

12.2 दशा सम्बन्ध (Phase Relation)

ज्ञान जगत में विभिन्न विषयों एवं उनके विभिन्न पक्षों में आपस में सम्बन्ध होते हैं। इस प्रकार के सम्बन्ध प्रायः दो मूलवर्गों के मध्य, एक मूलवर्ग के दो पक्षों के मध्य तथा एक ही पक्ष के एकलों के मध्य तथा एक ही एकल के दो उप एकलों के मध्य हो सकते हैं जिन्हें डॉ॰ रंगनाथन ने दशा, सम्बन्ध (Phase Relation) की संज्ञा दी है।

12.3 दशा सम्बन्धों के स्तर एवं प्रकार (Levels and Kinds of Phase relation)

द्विबिन्दु वर्गीकरण के 6वें संशोधित संस्करण में दशा सम्बन्धों के तीन स्तरों एवं तीनों स्तरों पर 5 प्रकारों का प्रावधान है। जिसे नीचे दिये गये चार्ट के अनुसार समझा जा सकता है।

दशा सम्बन्ध (Phase Relation)

स्तर 1	स्तर 2	स्तर 3
अन्तः विषय दशा सम्बन्ध (Intra subject phase relation)	अन्तःपक्ष दशा सम्बन्ध (Intra facet phase relation)	अन्तः पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra array phase relation)
प्रकार	प्रकार	प्रकार
1. सामान्य (General)	1. सामान्य (General)	1. सामान्य (Gen.)
2. उन्मुख (Bias)	2. उन्मुख (Bias)	2. उन्मुख (Bias)
3. तुलनात्मक (Comparison)	3. तुलनात्मक (Comp)	3. तुलनात्मक (Comp)
4. विभेद (Difference)	4. विभेद (Diff)	4. विभेद (Diff)
5. प्रभाव (Influencing)	5. प्रभाव (Influ)	5. प्रभाव (Influ)

दशा सम्बन्ध विषय जगत के क्षेत्र में विषयों के निर्माण की एक विधि है।यह विधि शिथिल समुच्चय (Loose Assemblage) की प्रक्रिया से सम्बन्धित है। इन सम्बन्धों को जो पारस्परिक होते है, जोड़ने के लिए योजक चिन्ह शून्य तथा Small roman Letter का प्रयोग किया जाता है।

12.3.1 अन्तः विषय सामान्य सम्बन्ध (Intra subject phase relation)

जब सम्बन्ध दो भिन्न-भिन्न मुख्य वर्गों के बीच दर्शाया गया हो, जिनसे संयुक्त विषय का निर्माण होता हो। विभिन्न सम्बन्धों को अन्तः विषय (Intra Subject) के अनुसार निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है:-

(1) किसी एक विषय का दूसरे मूल विषय के साथ सम्बन्ध।

(2) किसी एक मूल विषय का किसी दूसरे संयुक्त विषय के साथ सम्बन्ध।

(3) किसी संयुक्त विषय का किसी अन्य मूल विषय के साथ सम्बन्ध।

(4) किसी संयुक्त विषय का किसी अन्य संयुक्त विषय के साथ सम्बन्ध।

(1) Intra-Subject General Relation (अन्तः विषय सामान्य सम्बन्ध)- जब सम्बन्ध दो मुख्य वर्गों के बीच दर्शाया गया हो और उन सम्बन्धों का विषय, न किसी प्रकार का झुकाव, न किसी प्रकार की तुलना, न अन्तर हो, न ही प्रभाव हो वहाँ पर दो या दो से अधिक विषयों का सामान्य सम्बन्ध होता है। इसका योजक चिन्ह 0a

Example: Relation between Political science and History

W0a V

General relation between Religion and Philosophy

Q0aR

(2) Intra-Subject Bias Relation (अन्तः विषय- उन्मुख सम्बन्ध)- जब एक विषय का दूसरे विषय पर झुकाव हो तो वहाँ Bias Relation होता है। अतः किसी मूल विषय को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाय कि अन्य मूल विषयों से सम्बन्ध लोगों के लिए उपयोगी हों। इसका योजक चिन्ह 0b है।

Example: Biology For Doctors

G0bL

Mathematics for Civil Engineers

B0bD

(3) Intra-Subject Comparison Relation (अन्तः विषय तुलनात्मक सम्बन्ध) - जब दो विषयों के मध्य तुलना हो तो वहाँ पर अन्तः विषय तुलनात्मक सम्बन्ध (Intra subject comparision relation) का प्रयोग होगा। तुलनात्मक सम्बन्ध पहचानना आसान होता है। यहाँ पर भी सामान्य दशा सम्बन्ध की तरह मिश्रित वर्ग के

उस अंग को प्रथम अंग माना जायेगा जो द्वि बिन्दु वर्गीकरण पद्धति के क्रम में पहले आता है। इसका योजक चिन्ह Oc है।

Example: Useful arts compared with Fine arts

M0cN

Compared-Biology and Medicine

G0cL

(4) Intra-Subject Difference Relation (अन्तः विषय-विभेद सम्बन्ध)- जब दो विषयों के मध्य अन्तर हो या दोनों में भेद पाया जाये वहाँ पर अन्तः विषय-विभेद सम्बन्ध (Intra subject difference relation) होता है। इसका योजक चिन्ह 0d है। यहाँ पर भी पहले आने वाला मुख्य वर्ग प्रथम दशा माना जायेगा और बाद में आगे आने वाला मुख्य वर्ग द्वितीय दशा।

Example: Difference between useful arts and Fine arts

M0dN

Plant life and Animal life difference

I0dK

(5) Intra-Subject Influencing Relation (अन्तः विषय-प्रभाव सम्बन्ध)- जब एक विषय दूसरे विषय को प्रभावित करता है तो ऐसा सम्बन्ध अन्तः विषय-प्रभाव सम्बन्ध (Intra subject influencing relation) कहलाता है। वर्गांक निर्माण में विषयों का अनुक्रम निश्चित करते समय इस बात को ध्यान रखना है कि प्रभावित विषय (Influenced Subject) प्रथम पक्ष होगा तथा प्रभाव डालने वाले विषय (Influencing subject) द्वितीय पक्ष इसका संयोगी चिन्ह Og है।

Example: Geopolities-(Influence of Geography on Politics)

W0gU

Adult education influencing poling in democracy

W6: 9120g T3

12.3.2 अन्तः पक्ष दशा सम्बन्ध (Intra Facet phaserelation)

जब किसी एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष (Facet) के दो समकक्ष एकलों (Co-ordinate array isolates) में सम्बन्ध प्रदर्शित किया जाता है तो वह अन्तः पक्ष - दशा सम्बन्ध Intra Facet Phase Relation कहलाता है। ये सम्बन्ध किसी मुख्य

वर्ग के [P] Personality Facet, [M] Matter Facet, [E] Energy Facet, [S] Space Facet की दो एकल संख्याओं के मध्य हो सकता है।

(1) Intra-Facet General Relation (अन्तः पक्ष सामान्य सम्बन्ध)- इस प्रकार के सम्बन्धों के बीच न किसी प्रकार का झुकाव, न तुलना, न ही अन्तर न ही प्रभाव का बोध हो वहाँ पर Intra -Facet General Relation होता है। यह सम्बन्ध एक मख्य वर्ग के एक ही पक्ष के दो समकक्ष एकलों के बीच होना चाहिए। इसका संयोजक चिन्ह Oj है।

Example: Ireatment of Neck and Ear
L170j183:4:6
Hindusim and Jainism
Q20j 3

(2) Intra-Facet Bias Relation (अन्तः पक्ष-उन्मुख सम्बन्ध) - जब किसी एक मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष का झुकाव दूसरे पक्ष पर होता है तब वहाँ पर अन्तः पक्ष-उन्मुख सम्बन्ध (Intra-Facet Bias Relation) होता है। इसमें जो विषय पहले आता है उसे प्रथम पक्ष के रूप में वर्गीकृत करते हैं। इसका योजक चिन्ह Okहै।

Example: Indian History baised American History
V440k73
Political Geography baised to Economic Geography
U50k6

(3) Intra Facet Comparison Relation (अन्तः पक्ष-तुलनात्मक सम्बन्ध)- जब किसी मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की दो समकक्ष एकल संख्याओं के बीच तुलनात्मक सम्बन्ध होता है तब इसे अन्तः पक्ष-तुलनात्मक सम्बन्ध (Intra Facet Comparison Relation) कहते हैं। इसका योजक चिन्ह Om है।

Example: Comparative study of water and oil colour painting
NQ : 30m4
Christianity and muhammdanism-compared
Q60m7

(4) Intra Facet Difference Relation (अन्तः पक्ष विभेद सम्बन्ध) - जब एक मुख्य वर्ग के किसी पक्ष की दो समकक्ष एकल संख्याओं के बीच अन्तर दर्शाया

जाये तो वहाँ पर अन्तः पक्ष-विभेद सम्बन्ध (Intra-Facet Difference Relation) होता है। इसका योजक चिन्ह On है।

Examples: Difference in the Adult Education Techniques in India and United States

T3:3.44On 73

Rainfall in India and Europe- differenciate

U2855.44On5

(5) Intra-Facet Influencing Relations (अन्तः पक्ष प्रभाव सम्बन्ध)- जब किसी मुख्य वर्ग के किसी एक पक्ष की दो समकक्ष एकल संख्याओं में से एक एकल दूसरे एकल को प्रभावित करता है तो वहाँ पर अन्तः पक्ष-प्रभाव सम्बन्ध (Intra-Facet influcing relation) होता है। नियमानुसार जिस एकल संख्या पर प्रभाव पड़ता है वह पहले रखी जाती है तथा प्रभाव डालने वाली एकल संख्या बाद में। इसका प्रतीक चिन्ह Or है।

Example: Influence of Hindi poetry on Hindi drama

O152,2 or 1

Influence of Muslim culture on Hindu Culture

Y73 (Q2) 0r (Q7):1

12.3.3 अन्तः पंक्ति दशा सम्बन्ध (Intra Array phase relation)

जब किसी मुख्यवर्ग के एक ही पक्ष की एक शृंखला (Chain) तथा उसकी दो पंक्तियों अथवा एकल संख्याओं में पारस्परिक सम्बन्ध दर्शाया जाता है तो इस प्रकार का सम्बन्ध अतः पंक्ति दशा सम्बन्ध कहलाता है। ये सम्बन्ध किसी भी मुख्य वर्ग के (P,M,E,S) पक्षों की पंक्ति एकलों के मध्य हो सकता है। यह भी पाँच प्रकार के होते हैं -

(1) Intra-Array General Relation (अन्तः पंक्ति सामान्य सम्बन्ध)- जब किसी मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष की एक श्रृंखला (Chain) की दो पंक्तियों (Arrays) अथवा एकलों में सामान्य प्रकार का सम्बन्ध होता है तो वह अन्तः पंक्ति सामान्य सम्बन्ध कहलाता है ये सम्बन्ध [P],[M],[E],[S] पक्षों की एक शृंखला और उसके दो पंक्ति (Arrays) एकलों के मध्य हो सकते हैं। इनका प्रतीक चिन्ह ot है। दूसरे पक्ष में वर्गांक प्रयोग करते समय प्रथम पक्ष की Common संख्या को हटा दिया जाता

है।

Example: Technology of coal and petroleum

F551ot5

Relation between human lips and tongue

L211ot3

(2) Intra-Array Bias Relation (अन्तः पंक्ति उन्मुख सम्बन्ध)- जब किसी मुख्य वर्ग के एक ही पक्ष की एक श्रृंखला (Chain) की दो पंक्तियों (Arrays) अथवा एकलों में एक पक्ष का झुकाव दूसरे पक्ष पर प्रदर्शित हो तो वहाँ अन्तः पक्ष का झुकाव दूसरे पक्ष पर प्रदर्शित हो तो वहाँ अन्तः पक्ष उन्मुख सम्बन्ध (Intra Array Bias relation) होता है। इसका योजक चिन्ह Ou है :-

Example: Reserve Bank rate of interest for Commercial Bank in India.

X6210u5: 11.44

Rural Sociology for city people

Y310u5

(3) Intra-Array Comparison Relation (अन्तः पंक्ति तुलनात्मक सम्बन्ध)- जब एक मुख्य वर्ग के एक पक्ष की एक श्रृंखला के मध्य दो पंक्तियों अथवा एकलों में तुलनात्मक सम्बन्ध हो वहाँ पर Intra Array Comparison Relation होता है। इसका प्रतीक चिन्ह Ov है।

Example: Comparative Study between Hindi and Bengali Literature

0152Ov7

Customs in Rural and Urban society, a comparative study

Y310v3:356

(4) Infra Array Difference relation (अन्तः पंक्ति-विभेद सम्बन्ध)- जब एक मुख्य वर्ग की एक पक्ष की एक श्रृंखला की दो पंक्तियों के मध्य अन्तर स्पष्ट हो रहा हो तो वहाँ अन्तः पंक्ति विभेद सम्बन्ध (Infra Array Difference Relation) होता है। इसका चिन्ह 0w है।

Example: Difference in the naming ceremony of Brahmans and Kashatriya in India.

Y59230w4:3411.44

University and Research Libraries differentiated

2340w6

(5) Intra-Array Influence Relation (अन्तः पंक्ति प्रभाव सम्बन्ध) - जब किसी एक मुख्य वर्ग के एक पक्ष की एक श्रृंखला के दो पंक्तियों अथवा एकल संख्याओं में एक एकल दूसरे एकल को प्रभावित करता है। तब वहाँ अन्तः पंक्ति प्रभाव सम्बन्ध (Intra Array Influence Relation) होता है। प्रभावित होने वाला एकल पहले रखा जाता है तथा प्रभाव डालने वाला एकल बाद में। इसका योजक चिन्ह 0y है।

Example: Family ethics : influence of parents on children
R42250y1
Influence of classification on cataloguing
2:550y1

12.4 सारांश (Summary)

इस प्रकार हम देखते हैं कि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति में विषयों के पारस्परिक सम्बन्धों को दर्शाने हेतु दशा सम्बन्ध का प्रावधान किया गया है। नये विषयों के आविर्भाव में इस सम्बन्ध का अत्यन्त ही महत्व है, जो नवीन विषयों की उत्पत्ति का कारक होता है। दशा सम्बन्ध के प्रावधान द्वारा अनुसूची में अनावश्यक वृद्धि पर नियंत्रण रखते हुए सुविधा जनक बनाया गया है। इसके द्वारा एकल अंकनों की पुनरावृत्ति को भी रोका जाता है। वर्गीकरण पद्धति की अनुसूची में मितव्ययिता रखने हेतु यह सर्वाधिक प्रचलित युक्ति है।

12.5 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. Relation between regulation od diet and nursing.
2. Comparison between perfume and oil.
3. Comparison between murder and suicide.
4. Difference between vitamin A and vitamin B.
5. Comparative study of coal and gas fuels.

उत्तर प्रदेश
राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय
प्रयागराज

BLIS-104
पुस्तकालय वर्गीकरण
प्रायोगिक

खण्ड
5

कोलन क्लासीफिकेशन (6वाँ संशोधित संस्करण) : भाग-3

इकाई - 13
मुख्य वर्ग a से लेकर F तक वर्गांक निर्माण 215

इकाई - 14
मुख्य वर्ग G से लेकर L तक वर्गांक निर्माण 242

इकाई - 15
मुख्य वर्ग M से लेकर Q तक वर्गांक निर्माण 274

इकाई - 16
मुख्य वर्ग R से लेकर Z तक वर्गांक निर्माण 295

विशेषज्ञ समिति - पाठ्यक्रम अभिकल्पन

डॉ0 पाण्डेय एस0 के0 शर्मा — अवकाश प्राप्त मुख्य ग्रंथालयी, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली,

डॉ0 ए0 पी0 गक्खर — विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इला0

डॉ0 यू0 सी0 शर्मा — एसोसियेट प्रो0 एवं विभागाध्यक्ष, बी0आर0 अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा

डॉ0 सोनल सिंह — एसोसिएट प्रोफेसर, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन.

डॉ0 ए0 पी0 सिंह — एसोसिएट प्रोफेसर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ0संजीव सर्राफ — उपपुस्तकालयाध्यक्ष, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ0 टी0एन0 दुबे (सदस्य सचिव) — विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0प्र0रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक मण्डल

डॉ0 टी0 एन0 दुबे — विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

श्री आर0 जे0 मौर्य — सहायक ग्रन्थालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

श्री राजेश गौतम — प्रवक्ता, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 मांगेराम — उपपुस्तकालयाध्यक्ष, दयालबाग एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट,

परिमापक

डॉ0 टी0 एन0 दुबे — विश्वविद्यालय ग्रंथालयी, उ0 प्र0 रा0ट0 मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुत पाठ्य सामग्री में विषय से सम्बन्धित सभी तथ्य एवं विचार मौलिक रूप से लेखक के स्वयं के हैं।

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठ्य-सामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना, मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

खण्ड-5: कोलन क्लासीफिकेशन (6वाँ संशोधित संस्करण) : भाग-3

प्रस्तावना

डॉ0 एस0आर0रंगनाथन द्वारा प्रतिपादित कोलन क्लासीफिकेशन (सी.सी.) पूर्णतया पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है। इसका प्रथम संस्करण 1933 में तथा अंतिम सप्तम् संस्करण 1987 में प्रकाशित हुआ। लेकिन आपके पाठ्यक्रम के अनुसार आपको कोलन क्लासीफिकेशन (षष्ठम् संस्करण) द्वारा प्रायोगिक वर्गीकरण प्रक्रिया से अवगत कराया गया है।

इस खण्ड में कुल चार इकाइयाँ हैं जिनका विवरण निम्नवत है :-

इकाई-13 मुख्य वर्ग a से लेकर F तक वर्गांक निर्माणः- इस इकाई के अन्तर्गत आप मुख्य वर्ग सामान्य ग्रन्थ सूची (Generalia Bibliography),ग्रंथालय विज्ञान (Library Science), प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science), गणित (Mathematics), भौतिक विज्ञान (Physics), अभियांत्रिकी (Engineering), रसायन विज्ञान (Chemistry),एवं प्रौद्योगिकी (Technology) से सम्बन्धित विषयों की पुस्तकों के लिए वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे।

इकाई-14 मुख्य वर्ग G से लेकर L तक वर्गांक निर्माण :- इस इकाई के अन्तर्गत आप मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (Biology), भूविज्ञान (Geology), खनिकर्म विज्ञान (Mining), वनस्पति विज्ञान (Botany), कृषि विज्ञान (Agriculture), जन्तु विज्ञान (Zoology), पशुविज्ञान (Animal Husbandary), औषधि विज्ञान (Medicine), एवं औघधि प्रभाव विज्ञान (Pharmacognosy), से सम्बन्धित विषयों की पुस्तकों के लिए वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे।

इकाई-15 मुख्य वर्ग M से लेकर Q तक वर्गांक निर्माण :- इस इकाई के अन्तर्गत आप मुख्य वर्ग उपयोगी कलायें (Useful Arts), आध्यात्मिक अनुभव एवं रहस्यवाद (Spiritual Experience and Mysticism), ललितकलायें (Fine Arts), 'साहित्य (Literature), भाषा विज्ञान (Linguistics) एवं धर्म (Religion)से सम्बन्धित विषयों की पुस्तकों के लिए वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे।

इकाई-16 मुख्य वर्ग R से Z तक वर्गांक निर्माण :- इस इकाई के अन्तर्गत आप मुख्य वर्ग दर्शन शास्त्र (Philosophy), मनोविज्ञान (Psychology), शिक्षा (Education), भूगोल (Geography), इतिहास (History), राजनीतिशास्त्र Political Science), अर्थशास्त्र (Economics), समाजशास्त्र (Sociology) एवं कानून (Law) से सम्बन्धित विषयों की पुस्तकों लिए वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे।

इकाई -13 : मुख्य वर्ग a से लेकर F तक वर्गांक निर्माण

संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 विषय प्रवेश

13.2 वर्गांक निर्माण

13.2.1 मुख्य वर्ग सामान्य ग्रन्थ सूची (Generalia Bibliography) (a) का वर्गांक निर्माण

13.2.2 मुख्य वर्ग ग्रन्थालय विज्ञान (Library Science) (2) का वर्गांक निर्माण

13.2.3 मुख्य वर्ग प्राकृतिक विज्ञान (Natural Science) (A) का वर्गांक निर्माण

13.2.4 मुख्य वर्ग गणित (Mathematics) (B) का वर्गांक निर्माण

13.2.5 मुख्य वर्ग भौतिक विज्ञान (Physics) (C) का वर्गांक निर्माण

13.2.6 मुख्य वर्ग अभियांत्रिकी (Engineering) (D) का वर्गांक निर्माण

13.2.7 मुख्य वर्ग रसायन विज्ञान (Chemistry) (E) का वर्गांक निर्माण

13.2.8 मुख्य वर्ग प्रौद्योगिकी (Technology) (F) का वर्गांक निर्माण

13.3 सारांश

13.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

13.0 उद्देश्य

पुस्तकों को पुस्तक निधानी तक पहुंचाने एवं उनके लिए एक निश्चित स्थान तय करने के लिए पुस्तक का वर्गीकरण होना आवश्यक होता है। द्विबिन्दु वर्गीकरण मुक्त पक्षात्मक वर्गीकरण पद्धति है निरन्तर वर्धनशील बहुआयामी विषय जगत को सफलता से वर्गीकरण करने में यह पद्धति पूर्णतः सक्षम है। इस इकाई में हम मुख्य वर्ग सामान्य वांङमय सूची (a) से लेकर मुख्य वर्ग प्रौद्योगिकी (F) तक के विषयों से सम्बन्धित पुस्तकों के लिए वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे।

13.1 विषय प्रवेश

वर्गांकों के निर्माण हेतु कोलन क्लासीफिकेशन पद्धति में प्रत्येक विषय के लिए पक्ष-परिसूत्र (Facet formula) दिया गया है। जिसके आधार पर वर्गांकों का निर्माण

किया जाता है। इन पक्ष परिसूत्रों के संयोजन हेतु द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के प्रथम भाग में नियमों एवं दृष्टान्तों के आधार पर वर्गांकों के निर्माण करने की प्रक्रिया के बारे में हम इस इकाई में अध्ययन करेंगे।।

14.2 वर्गांक निर्माण

14.2.1 मुख्य वर्ग सामान्य वांङ्मय सूची (a) का वर्गांक निर्माण

सामान्य ग्रन्थ सूची

a=GENERALIA BIBLIOGRAPHY

पक्ष–परिसूत्र– a[P], [P2] [P3], [P4]

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत उन पुस्तकों की सूचियाँ जिनका सम्बन्ध किसी विशिष्ट विषय से नहीं होता बल्कि उनमें एक से अधिक विषयों की अध्ययन सामग्री का उल्लेख हेता है। इन सूचियों में विशेष विषय न होकर प्रकाशनों की सूचियाँ हैं। ऐसे प्रकाशनों को ज्ञान की किसी विशिष्ट शाखा के अन्तर्गत रखना सम्भव नहीं होता इस बात को ध्यान में रखकर (Generalia Bibliography) मुख्य वर्ग का प्राविधान किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या– a[P], [P2] [P3], [P4]

Facet	Term	(in) By
[P]	Material	Enumeration
[P2]	Kind	Enumeration
[P3]	Area/Country	(GD)
	Publisher/Book-seller	(AD)
[P4]	Period/Origin	(CD)

[P] Facet का विश्लेषण–इस पक्ष के अन्तर्गत सूची में सम्मिलित विभिन्न प्रकार की अध्ययन सामग्री का उल्लेख है जैसे– Printed Book, Manuscript द्विबिन्दु वर्गीकरण अनुसूची भाग में पृष्ठ संख्या 2.29 पर महत्वपूर्ण एकल संख्याओं का उल्लेख है–जो निम्नवत् है:–

2. **By Script (To be divided by Language)**–यह किसी पुस्तक में लिखी भाषा की ओर इंगित करता है, जो CC के भाग–2 के Chapter 5 में पृष्ठ 2.26 पर दी गयीं हैं। भाषा एकल (Language Isolate) की सारणी से देखकर इसे निम्नवत जोड़ा

जाता है।

Examples:

Bibliography in Hindi Script

a2 + 152 = a2152

Bibliography of books written in Hindi Script

a2 + 152 = a2152

Bibliography written in Pali

a2 + 1511 = a21511

Bibliography of Tamil

a2 + 31 = a231

3 **By Language-** (भाषा के अनुसार) के नीचे निर्देश दिये गये हैं जो एकल संख्या 2 के तरह ही है। किसी विशिष्ट भाषा के अन्तर्गत पुस्तकों की सूची का वर्गांक प्राप्त करने के लिए एकल संख्या 3 का प्रयोग करेंगे।

Examples:

Bibliography of Hindi Books

a3 + 152 = a3152

Bibliography of Published books in English

a3 + 111 = a3111

4. **By Nature of publication-**(प्रकाशन की प्रकृति के अनुसार)

Examples: Bibliography of Reference Books

a47

Bibliography of Thesis

a494

5. **By Agency of Publication-** (प्रकाशन संस्थान के अनुसार जैसे)–

54 University

55 Government

58 Private

Examples: Bibliography of Government publication

a55

6. **By Age of Publication-** (इसके अन्तर्गत प्रकाशन के समय का पता चलता है।)

61 Old Publication

66 Current Publication

Examples: Bibliography of Current Publications.

a66

Old Books Bibliography

a61

7. **By Edition-** (इस एकल को संस्करण के लिए प्रयोग किया जाता है)–

a 71 First publication

a 75 Deluxe publication

a 77 Autograph publication

Examples: A Bibliography of Deluxe Edition's Book.

a75

list of Books related to Ist Edition

a71

8. **By Social group of Readers-** (To be divided as in Y Sociology) एकल संख्या 8 Main Class Sociology के [P] पक्ष की भाँति विभाजित करने के निर्देश हैं। समाज के किसी विशिष्ट वर्ग के प्रकाशन की सूची के सन्दर्भ में इस एकल संख्या का प्रयोग होगा।

Examples: Bibliography of Hindus

a873(Q2)

Bibliography of Working Class People

a849

95 Translation (to be divided first by the Language of the Original and then by the Language of the Translation. A hyphen (-) should be inserted between the two Language numbers) एकल संख्या 95 के अन्तर्गत ऐसी पुस्तकों की सूचियों को वर्गीकृत किया जाता है जिसका अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में हुआ हो। दोनों भाषा एकल संख्याओं के बीच hyphen (-) का प्रयोग किया जाता है।

Example : A Bibliography of English books translated in to Hindi

a95111-152

यहाँ पर 95 Translation के लिए इसके बाद English Language की एकल संख्या जो Chapter 5 (Page 2.26) से ली गयी है तथा अनुवाद की भाषा Hindi भी Chapter 5 से लेकर दोनों भाषाओं

के मध्य hyphen (-) लगाया गया है। इस तरह के शीर्षक को एकल संख्या 3 Language के अन्तर्गत वर्गीकृत करना गलत होगा।

[P2] तथा [P3] पक्ष की व्याख्या– [P2] पक्ष की एकल संख्या 1 List of publications in a geographical area है। विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र से सम्बन्धित एकल संख्या को भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त कर, एकल संख्या 1 के साथ सीधा जोड़ देना होगा। [P2] तथा [P3] में परिसूत्र के अनुसार कोई भी संयोजक चिन्ह नहीं है। भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या लेने के लिए [P3] पक्ष के अनुसार (GD) (अध्याय 4) से प्राप्त करना होगा।

Example: Bibliography of reference books published in USA

a47,173

यहाँ पर 47 Reference book [P] पक्ष है। एकल संख्या 1 [P2] पक्ष तथा 73 निर्देशानुसार (GD) से प्राप्त किया हे।

Catalogue of thesis available in libraries in Delhi

a494,24451

यहाँ पर 494=Thesis [P] पक्ष की एकल संख्या है।
2= Library Cataloeue [P2] पक्ष की एकल संख्या है।
4451 = Delhi [P3] पक्ष है जो (GD) से प्राप्त है।

नोट–[P2] पक्ष की एकल संख्या 3Publishers Catalogue तथा 4 Book- seller Catalogue है– किसी विशिष्ट प्रकाशक या पुस्तक विक्रेता द्वारा प्रकाशित पुस्तक की सूची को प्रकाशक/पुस्तक विक्रेता के नाम के द्वारा वर्णक्रम विधि प्राप्त करने का प्रावधान है। यह नियम भाग पृष्ठ 1.63(AD) के लिए किसी प्रकार के संयोजक चिन्ह के बिना लिखा जाता है।

Example : Y.K. Publishing House publications,a14, 3Y,

A catalogue of English books published by McGraw Hill Publications.

a3111,3M

[P4] पक्ष–[P4] पक्ष को Chapter 3 Time Isolate Page 2.7 के Chronological Division से प्राप्त किया जाता है।, [P4] पक्ष के लिए संयोजक चिन्ह कोमा (,) का प्रयोग है।

Examples: Catalogue of reference books published in U.P. up to 1975

a47, 14452, N7

[P] [P2] [P3] [P4]

a47, 14452, N7

47 = Reference Books [P] पक्ष

1 = [P2] पक्ष

4452 = UP [P3] पक्ष है जो GD से लिया है।

N7 = काल सूचक एकल संख्या (CD) से LED (अन्तिम प्रभावी दशक) के अनुसार प्राप्त की गई है।

14.2.2 मुख्य वर्ग ग्रन्थालय विज्ञान (2) का वर्गांक निर्माण

ग्रन्थालय विज्ञान

2=LIBRARY SCIENCE

पक्ष–परिसूत्र–2[P]; [M]: [E] [2P]

पुस्तकालय पुस्तकों का संग्रह स्थल होता है। साथ ही ग्रन्थालय के अनेक कार्य होते हैं जो विभिन्न विधियों, गतिविधियों, क्रियाकलापों प्रक्रियाओं एवं समस्याओं आदि से सम्बन्धित होते है। ग्रन्थालय विज्ञान में हम इन सभी बातों को क्रमबद्ध तरीकों से तथा सैद्धान्तिक पद्धति द्वारा पूर्ण करते हैं।

परिसूत्र की व्याख्या– 2[P]; [M]: [E] [2P]

[P] पक्ष की व्यवस्था–

इस पक्ष के अन्तर्गत 1 से लेकर 97 तक एकल संख्याओं का समावेश पुस्तकालय के प्रकार से सम्बन्धित है।

Examples:

(1) Research Library

(MC) [P]

2 36

(2) Medical Library

24 (L)

(3) National Library

213

[M] पक्ष की व्याख्या–इस पक्ष के अन्तर्गत पदार्थ (Matter) के विषय में Same as foci in [P] Generalia Bibliography के लिए निर्देशित है। अतः इस मुख्य वर्ग में पदार्थ (Matter) Generalia Bibliography Main Classe के [P] पक्ष की एकल संख्या से लाना होगा। जैसे– Books, Manuscripts, Periodicals, etc.

Examples: (1) Periodicals in University Library

234;46

(2) Printed Books in Blind Library

268;14

(3) Manuscripts in Religious Library

24(Q); 12

(4) Patents of Industrial Libraries

24(X8); 48

[E] [2P] पक्ष की व्याख्या– इस पक्ष के अन्तर्गत ग्रन्थालय विज्ञान की प्रक्रियाएँ, विधि, क्रियाकलापों तथा समस्याओं के अलावा पुस्तकालय में दी जानी वाली सेवा, पुस्तकालय प्रशासन आदि का वर्णन है।

Examples:

(1) Classification in University Library

234:51

2 Main class

34 University

: Energy का संयोजक चिन्ह

51 Classification

(2) Function of Insurance Library

24(X81):3

(3) Classification of Government Reports in a research Library

236;55:51

नोट– CC के नियम भाग–1 के नियम संख्या 92351 तथा 92355 के अनुसार [E][2P] की एकल संख्याएँ 51 अथवा 55 हो तो विशिष्ट वर्गीकरण अथवा सूचीकरण संहिताओं का वर्गांक बनाने के लिए कालक्रम विधि (CD) से अंकन प्राप्त करने का प्रावधान है जो उनके निर्मित वर्ष से सम्बन्धित होगा।

Examples: (1) Colon Classification Scheme

2:51N33

(2) Dewey Decimal classification Scheme

2:51M76

(3) Universal Classification Scheme

= 2:51M96

(4) Anglo American Catalgouing Rules II

= 2:55M78

(5) Classified Catalogue Code

= 2:55N34

यदि [E] में 51 Classification हो तो [2P] के रूप में वर्गीकरण करने वाले विषय को जोड़ा जाता है जिसका वर्गांक विषय विधि से लाकर अंक 9 के बाद जोड़ा जायेगा।

Examples: (1) Dewey Decimal Classification of Medicine
2:51M76,9(L)

(2) Colon Classification of History
2:51N33,9(V)

(3) Classification of Hindi Literature Books.
2:51,9(0152)

(4) Cataloguing of Economic Books by A.A.CR2
2:55,M78,9(X)

(5) Accession of Physics books
2:84, 9 (C)

14.2.3 मुख्य वर्ग प्राकृतिक विज्ञान (A) का वर्गांक निर्माण

प्राकृतिक विज्ञान

A=NATURAL SCIENCE

द्विबिन्दु वर्गीकरण (Colon Classification) के भाग दो में Chapter 1, Main Class No. 2.4 में A-Natural Science को सम्मिलित किया गया है लेकिन अनुसूची में इस मुख्य वर्ग का उल्लेख कहीं पर भी देखने को नहीं मिलता। Natural Science एक बहुत ही विस्तृत विषय है तथा ज्ञान जगत में जितने भी विषय होते हैं वे सब अधिकतर प्राकृतिक विषय से सम्बन्धित होते हैं

Examples: German-English dictionary of Scientific Terms.

A:(P113:4)R 111

Scientific Biography International (Youngest born, 1950)

Awl, N5

Indian Science Congress

A.44, g9N

14.2.4 मुख्य वर्ग गणित (B) का वर्गांक निर्माण

गणित

B=MATHEMATICS

डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने गणित मुख्य वर्ग में निश्चित एक परिसूत्र न देकर परम्परागत आधार पर अनेक प्रामणिक वर्गों (Canonical divisions) में विभाजित किया है।

Examples: B1 Arithmetic, B2 Algebra, B3 Analysis आदि

प्रत्येक प्रामाणिक वर्ग को उपवर्गों में विभाजित किया गया है और यदि आवश्यकता समझी गई है तो उसका अलग परिसूत्र भी दिया गया है।

नियम भाग Part 1 के पेज 1.65 में स्पष्ट निर्देश है कि इस प्रमाणिक वर्ग के अन्तर्गत Cardinal number, Ordinal Number, ransfinite number तथा इससे सम्बन्धित पुस्तकों को वर्गीकृत ीं किया जाना चाहिए इसके लिये उपयुक्त वर्ग 31 Foundation of analysis है। B13 Integer (Theory of number) Arithmatic के उपविभागों में हैं। B15 Algebraic number and ideal number, B16 Hyper complex number का उल्लेख है।

B13 theory of Numbers को higher Arithmatic पद से निर्दिष्ट किया गया है। इसके अन्तर्गत परम्परागत रूप से पूर्णांकों के तत्वों (Properties of integers) का अध्ययन करना होता है।

पक्ष– परिसूत्र– B13 [P], [P2]: [E] [2P]

Facet	Term	(in) By
[P]	Number	Enumeration
[P2]	Theory	Enumeration
[E]	Methoe	Enumeration

[P] पक्ष–

Examples: Theory Number defined by Factor properties

B132

Number defined by partition properties

B135

[P2] पक्ष–किसी विशिष्ट प्रकार की Theory, Form तथा Equation के वर्गांक, उसके अविष्कार की तिथि (शताब्दी, दशाब्दी तथा वर्ष अंकों) के आधार पर निर्मित किया जा सकता है।

Examples : (1) Goldbatch's theorem of integers

B13, 5L

[P2] पक्ष की एकल संख्या 5 Form including partition Lउस शताब्दी का प्रतीक हैं। जिसमें theorem का अविष्कार हुआ तथा इसे (CD) से प्राप्त किया गया।

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत पूर्णांकों के लिए Methods का उल्लेख है।

Examples: (1) Geometrical method for prime number
B131:6

B2 Algebra - A Text Book of Matrix
B245

Examples: Modern Algebra
B24N

B25 = Higher algebra

पक्ष परिसूत्र – B25[P],[P2]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Form	Enumeration
[P2]	Degree	Enumeration
[E] [2P]	Transformation	Enumeration

[P] पक्ष के अन्तर्गत Forms, [P2] पक्ष के अन्तर्गत Degree तथा [E] [2P] के अन्तर्गत Transformations का उल्लेख है। विशिष्ट प्रकार के Transformations के वर्गांक निर्मित करने के लिए कालक्रम विधि (CD) का प्रयोग किया गया है।

Examples : Higher Algebra Cremona Transformations
[P] [E]
B25: 8M

यहाँ एकल संख्या 8 Special Transformations को कालक्रम विधि (CD) के द्वारा विशेषता प्रदान की है। Cremona Transformations के सिद्धान्त के अविष्कार की प्रतीक संख्या (CD) द्वारा 8 के साथ जोड़ी गयी एकल संख्या M उस शताब्दी का प्रतीक है।

B33 Differential and Integral Equations- B33 Differential and Integral Equation का अलग परिसूत्र है–

पक्ष–परिसूत्र– **B33 [P], [P2], [P3]: [E] [2P]**

Facet	Term	(IN) By
[P]	Equation	Enumeration
[P2]	Degree	Enumeration
[P3]	Order	Enumeration
[E] [2P]	Problem	Enumeration

Examples: Theory of Ordinary Differential Equations

B331

Differential Integral Equations Fourth Order

B33,4

B37 Real variables तथा B38 Complex variables के लिए अलग से उपसूत्र दिये हैं– B37 - Real variable-

B37- Real Vraiable

पक्ष–परिसूत्र–B37 [P] : [E] [2P]

Examples: Two variables

[P]

B372

Family of Functions of Two variables

[P][E] [2P]

B372: 92

B38 Complex variable

पक्ष–परिसूत्र–B38 [P] : [E] [2P]

B38 का [P] पक्ष B37 की तरह है तथा [E] [2P] पक्ष में भी एकल संख्याएँ B37 तरह ही हैं।

B39 Special Function- B39 के अन्तर्गत विभाजन B392 Integral of Algebraic Function को कालक्रम विधि (CD) से विभाजित करने का निर्देश है।

Examples: Hyperbolic Function

B392L

Function defined by Contour Integral

B393

Mertomorphic Function

B399M

B4 Other Calculus - B4 Other Calculus के लिए किसी परिसूत्र का प्रावधान नहीं है। इसी प्रकार B5 Trigonometry के भी कोई परिसूत्र नहीं है।

Examples: Vector Algebra and Calculus

B466

Advance Calculus

B4 'N

Text - Book of Trigonometry

B5

B6 Geometry

पक्ष–परिसूत्र– **B6 [P] : [E] [2P]**

Facet	Term	(IN) By
[P]	Space	Enumeration
[E][2P]	Method	Enumeration

Geometry का Favoured System Euclidean है। अतः Euclidean Geometry = B6. इसके अलावा ज्यामिति की अन्य पद्धतियाँ Non-Euclidean Geometry कहलाती हैं। इसके वर्गांक कालक्रम (CD) विधि से बनाये गये हैं।

Examples:

Coordinate Geometry of three dimensions

B63

Hyperbolic Geometry

B6M5

[E][2P]पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के Methods का उल्लेख है।

Examples: Differential Geometry

B6:3

Algebraic Geometry

B6:2

B7 Mechanics

पक्ष–परिसूत्र– **B6 [P] : [E] [2P]**

परिसूत्र की व्याख्या–

Facet	Term	(IN) By
[P]	Matter	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

Examples: Mechanics of Solid Particles

B711

Compressible Liquid

B755

Hydrodynamics (Motion of Liquids)

B75:3

B9 Astronomy-

पक्ष–परिसूत्र– **B9 [P] : [E] [2P]**

Facet	Term	(IN) By
[P]	Body	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

परिसूत्र की व्याख्या–[P] = इस पक्ष में पृथ्वी सूर्य, चन्द्र, तारे, गृह, कृत्रिम सैटलाइटस तथा खगोलीय पिण्डों को अंकित किया गया है।

Planetary System-Artificial Satellites.

B97894

[E] [2P] पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत समस्या होती है। इसमें समय की गणना, मानक समय (Standard Time), खगोल भौतिकी, भूगणितीय खगोल विज्ञान, गृहों की स्थिति परिभ्रमण, वातावरण, तापमान इत्यादि विषयों को रखा जाता है।

Examples: Standard Year

B9 : 165

Indian Standard Time

B9 : 165.44

Astro- Chemistry

B9 (E)

14.2.5 मुख्य वर्ग भौतिक विज्ञान (C) का वर्गांक निर्माण

भौतिक विज्ञान

C=(PHYSICS)

वैज्ञानिक विषयों के अन्तर्गत Physics (भौतिकशास्त्र) का अलग तथा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत पदार्थ के गुण, ध्वनि, ऊर्जा, प्रकाश, विद्युत तथा चुम्बकत्व आदि सम्मिलित किये जाते हैं। इस मुख्य वर्ग में इनकी अवस्थाओं, आकार, प्रकृति, गुणों, प्रभावों सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने भौतिक विज्ञान विषय को कई प्रामाणिक वर्गों (Canonical Classes) में विभाजित किया है। इनमें से कई प्रामाणिक वर्ग को निश्चित लक्षणों के आधार पर पुनः विभाजित करके विषय की गहनता को व्यक्त किया गया है।

C 1 Fundamentals (मौलिक तत्व)

इस विभाजन वर्ग का कोई परिसूत्र नहीं दिया है। इसका

विभाजन निम्न प्रकार किया गया है–

Examples: Introduction of Fundamental Gravitation
C18
Space : Introduction
C15

C2 Properties of Matter (पदार्थ के गुण)–

पक्ष परिसूत्र–C2 [P] : [E] [2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Body	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– भौतिकी के 2 एकल संख्या Properties of Matter के [P] पक्ष के अन्तर्गत पदार्थ की विभिन्न अवस्थाओं का उल्लेख है।

Examples: Physical Properties of solids
C21

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत पदार्थ के गुणों से सम्बन्धित समस्याओं का उल्लेख है–

Examples: Gases Diffusion
C28:63
Pressure in Liquids
C25:7

C3 Sound (ध्वनि)–

पक्ष–परिसूत्र–C3 [P] : [E] [2P]; [2M]

Facet	Term	(In) By
[P]	Wave Length	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2M]	Matter	Enumeration
		C2 Properties of Matter [P]

इस वर्ग [P] के पक्ष के अन्तर्गत ध्वनि (Sounds) के विभिन्न प्रकार तथा [E] [2P] पक्ष में ध्वनि के प्रकार से सम्बन्धित समस्याएँ हैं और [2M] पक्ष को C2 Properties of Matter [P] के पक्ष से लिया जाता है तथा; (Semicolon) से जोड़ा जाता है जो Matter

का संयोजक चिन्ह है।

Examples: Audible Sound Pitch

C31:31

Velocity Sound through Liquids

C3:21;5

C4 Heat (Thermal Physics) (ऊष्मा)–

पक्ष–परिसूत्र–C4: [E] [2P]; [2M]

Facet	Term	(IN) By
[P]	State	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2M]	Matter	Enumeration C2 Properties of Matter [P]

अनुसूची में [P] पक्ष का कोई उल्लेख नहीं है केवल [E] [2P] पक्ष है। जिसमें ऊष्मा (Heat) से सम्बन्धित समस्याओं को दिया है। [2M] पक्ष को C2 Properties of Matter से लाना है।

Examples: Boiling Point of Liquid

C4: 552;5

Radiation of Heat

C4: 25

C5 Light Radiation (प्रकाश विकीर्णन)–

पक्ष–परिसूत्र– C5 [P] : [E] [2P]; [2M]

Facet	Term	(IN) By
[P]	State	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2M]	Matter	Enumeration C2 Properties of Matter [P]

इस वर्ग के [P] पक्ष में प्रकाश के प्रकार एवं किरणों का उल्लेख किया गया है। [E] [2P] पक्ष में प्रकाश का विकीर्णन प्रभाव, संकुचन, अवशेषण आदि का उल्लेख किया गया है। [2M] पक्ष उसी प्रकार C2 Properties of Matter के [P] पक्ष से आवश्यकतानुसार लिया जाता है।

यहाँ पर [E] [2P] की एकल संख्या 38 Effects को कालक्रम विधि (CD) के द्वारा विशेषता प्रदान की गयी है। भौतिकशास्त्र में प्रकाश के प्रभावों पर शोध कार्य को उनके अविष्कार के वर्ष

की प्रतीक संख्या को कालक्रम विधि के द्वारा प्राप्त करके बनाया है।

Examples : Reflection of Bluelight
C516:22
Raman effects on light Radiation
C51:38N28

C6 Electricity (विद्युत)–

पक्ष परिसूत्र–C6 [P] : [E] [2P]; [2M]

Facet	Term	(IN) By
[P]	State	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2M]	Matter	C2 Properties of Matter [P]

इस मुख्य वर्ग में सभी पक्षों का उल्लेख है। इसमें [P] पक्ष विद्युत के प्रकार हैं। [E] [2P] पक्ष में विद्युत सम्बन्धी समस्याएँ आती हैं। [2M] पक्ष C2 Properties of Matter के [P] पक्ष से आवश्यकतानुसार लिया जाता है।

Examples: Direct Current in Primary cells
C623:11
Transformation of Electricity in liquids
C6:4;5

C7 Magnetism (चुम्बकत्व)–

पक्ष–परिसूत्र–C7 [P] : [E]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Magnetism	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

इस वर्ग में [P] पक्ष में चुम्बकत्व के विभिन्न प्रकार तथा [E] पक्ष में चुम्बकत्व की केवल दो प्रक्रियाएँ दी हैं।

Examples: Intensity of Dia Megnetism
C72:2

C8 Cosmic Hypotheses (ब्रह्माण्डीय परिकल्पनाएँ)–Cosmic Hypo heses के केवल दशमलव विभाजन दिये हैं। इसकों पक्षों

में विभाजित करने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

Examples: Theory of Cosmic Matter

C83

C9 Specials (वैशिष्ट्य)– भौतिकशास्त्र मुख्य वर्ग के अन्तर्गत निम्न Specials तथा Systems का उललेख है।

C9B3 Specials के सूत्र में [P] के साथ [E] [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ वे हैं जो C5 Radiation के लिए दी हैं। साथ ही कुछ अन्य एकल संख्याओं का भी अनुसूची में उल्लेख है।

Examples: Waste Product of Neutron

C9B31:774

Effect of cosmic rays

C9B38:38

Systems (पद्धतियाँ या प्रणालियाँ)–अन्त में Physics के Systems का उल्लेख है। Systems को (CD) से प्राप्त किया गया है। अनुसूची में कुछ उदाहरण इस प्रकार दिये हैं–

Examples: CK = Gravitation Theory (K = 1600-1699)

नोट– डॉ. एस.आर.रंगानाथन ने Specials व Systems को [P] पक्ष का विस्तार माना है। इन्हें [P] पक्ष के पूर्व रखने का नियम है। पहले Systems का प्रयोग होगा बाद में Specials का इसके बाद [P] पक्ष रखा जाता है। वर्गांक में जो भी पक्ष पहले प्रयोग में लाया जाये उसे मुख्यवर्ग के साथ सीधा जोड़ दिया जाता है। बाद में आने वाले पक्षों के लिए संयोजक चिन्ह कामा (,) का प्रयोग होता है। इस प्रकार के निर्देश नियम भाग 054 पृष्ठ 1.24 पर दिये गये हैं।

Examples: Band Spectrum According to wave Mechanics

CN2,5:33

14.2.6 मुख्य वर्ग अभियांत्रिकी (D) का वर्गांक निर्माण

अभियान्त्रिकी

D=ENGINEERING

पक्ष–परिसूत्र–D [P], [P2] : [E] [2P]

अभियांत्रिकी के अन्तर्गत परम्परागत विभाग Civil Engineering तथा Mechanical Engineering है। Civil Engineering

एक भ्रामक पद है। इसके अन्तर्गत Irrigation and Drainage work, Building तथा Transport-track आते हैं। लेकिन हम देखते हैं कि द्वि–बिन्दु वर्गीकरण में इन्हें अलग से एकल संख्याएँ दी गयी हैं।

परिसूत्र की व्याख्या–D [P], [P2] : [E] [2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Work	Enumeration
[P2]	(1) Part (for all Except D6)	Enumeration; Differentiated
	(2) Field of application for D6	Enumeration; Differentiated
[E][2P]	Problem	Enumertion

[P] पक्ष Work Facet है। इसके अन्तर्गत अभियान्त्रिकी से सम्बन्धित कार्यों का उल्लेख किया गया है। [P] पक्ष एकल संख्या D1 Civil Engineering है। इसके कोई उपविभाजन नहीं है। [P] की एकल संख्या D2 Irrigation and drainage work है जिसके उपविभाजनों में जल प्राप्ति के स्त्रोत जैसे River Tank, Drainage subsoil आदि हैं।

इसी प्रकार [D] 3 Building Engineering है। जिसके उपविभाजन में विभिन्न प्रकार के पदार्थों का उल्लेख है जो कि गृह निर्माण सम्बन्धित हैं।

D4 - यातायात से सम्बन्धित वाहनों से है। इसके उपविभाजन निम्नवत् हैः–

Examples: D41 Land Transport (भूमि यातायात)

D411 = Road

D415 = Rail Road

D416 = Bridge

D42 Water-ways (जल यातायात)

D5 Transport-Vehicle [P]पक्ष की एकल संख्या है। इसके अन्तर्गत यातायात के लिए काम आने वाले विभिन्न वाहनों से सम्बन्धित यांत्रिकी कार्यों का उल्लेख है। जैसे– D51 Land Transport-Vehicle (भूमि पर चलने वाले वाहन)।

D5153 = Railway Carriage (रेल पटरी पर चलने वाले वाहनों

जैसे–रेलवे ट्रक, डाइनिंग कार, सैलून आदि।)

D6 Mechanical Engineering है। इसका उपविभाजन D62 Principles of Mechanism (यांत्रिकी के सिद्धान्त) है। इसके उपविभाग निम्नवत् हैं:–

D64 = Heat Engineering (ऊष्मा अभियांत्रिकी)

D66 = Electrical Engineering (विद्युत अभियांत्रिकी),इत्यादि।

D8 Municipal Engineering [P] पद की एकल संख्या के अन्तर्गत जल वितरण, जल प्रदूषण जल शुद्धिकरण इत्यादि विषय शामिल हैं। जैसे– D8553 इस एकल संख्या के अन्तर्गत जल शुद्धिकरण के अनेक तरीके हैं।

Examples: D8553 = Purification of Water by Chemical Treatment.

इस एकल संख्या के अन्तर्गत दिए गये निर्देशानुसार विशिष्ट प्रकार के रसायन से जल को शुद्ध करना हो तो D8553 को उस विशिष्ट रसायन की द्योतक एकल संख्या से विभाजित करना होगा। E मुख्य वर्ग से वह रसायन की प्रतीक एकल संख्या को लाना होगा।

Examples: Purification of water (Water supply) by Salts.

D85534

इस उदाहरण में D8553 Chemical Treatment है और 4 एकल संख्या E मुख्य वर्ग Chemistry से Salt की है।

[P2] पक्ष की एकल संख्या [P] पक्ष की एकल संख्याओं के लिए अलग–अलग दी गयी हैं। [P] और [P2] पक्ष की एकल संख्याओं को, कोमा संयोजक चिन्ह के द्वारा जोड़ा जायेगा।

2 Irrigation [P]पक्ष की एकल संख्या एवं उसके उपविभाजनों के लिए [P2] पक्ष का अलग प्रावधान है:–

Example: River Flood Protecting and river training work engineering

[P] [P2]

D26, 8

यहाँ पर 26 एकल संख्या River के लिये [P] पक्ष से ली है और [P2] पक्ष से एकल संख्या 8 Flood protecting and river training से लेकर वर्गांक तैयार किया गया है।

3 Building [P] पक्ष की एकल संख्या एवं उसके उपविभाजनों के लिए [P2] पक्ष का अलग से उल्लेख है।

7 Window की एकल संख्या है जो [D3] Building तथा उसके उपविभागों के लिए [P2] पक्ष हेतु दी गई है। [P] पक्ष की एकल संख्या, D411 सड़क यातायात, D415 रेलमार्ग यातायात D416 पुल मार्ग, 42 जलमार्ग, 43 नभ मार्ग के लिए भी [P2] पक्ष दिया गया है। अतः [P2] पक्ष का प्रयोग करते समय ध्यान रखना होगा कि उसी से सम्बन्धित [P] पक्ष की एकल संख्या के साथ ही प्रयोग हो।

Example :

Underground Railway Platform

D4154,87

D5. Transport-Vehicle [P] पक्ष की एकल संख्या है। इसके लिए [P2] पक्ष का अलग उपविभाजन दिया गया है। 5 Vehicle के लिए [P2] पक्ष के अन्तर्गत वाहनों के विभिन्न भागों (Parts) का उल्लेख है। इस पक्ष की एकल संख्याओं का प्रयोग [P] पक्ष की एकल संख्या 5 व उसके उपविभाजनों के साथ किया जा सकता है।

Examples: Brakes of cycle

D5125,8

Axle of a Motorcycle

D5135,2

D6 Mechanical Engineering [P] पक्ष की एकल संख्या है इसके उपविभागों के लिए [P2] पक्ष की एकल संख्या अलग से दी है।

Examples: Computer

D65, 8 (B)

Drilling Tools

D6, 845

[P2] पक्ष की एकल संख्या 8 Other Machinery को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने के निर्देश हैं। अनुसूची में कुछ वर्गांक उदाहरण के लिए दिये भी हैं। जैसे–

D6, 8(M14) = Printing

Examples: Electronic Clocks

D65,8 (B9:165)

Electronic Printing Machines

D65, 8 (M14)

[P] पक्ष के 64 Heat Engine, 65 Electronic Engineering, 66 Electrical Engineering 7 Nuclear Engineering के लिए [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ अलग–अलग दी हैं।

Examples: Nuclear Fuel Engineering

D7, 15

Underground electrical trarsmission lines

D66, 24

Serveying for underground Railway Platform

D4154, 87:2

Working of a Radio

D65, 43: 83

Repair of Harvesting Machinery

D6, 8 (J:7): 85

Special Common Isolates (विशिष्ट सामान्य एकल)– अनुसूची के अन्त में कुछ विशिष्ट सामान्य एकल भी दिये हैं। इनका प्रयोग [P] पक्ष की एकल संख्या 66 के साथ प्रयोग करने के निर्देश हैं। यह 'पूर्ववर्ती सामान्य एकल (Anteriorising Common Isolates) है। अतः इसे बिना किसी संयोजक चिन्ह के प्रयोग में लाया जाता है।

Examples: Energy meter for overhead transmission of two phases.
D6642, 21e5

14.2.7 मुख्य वर्ग रसायन विज्ञान (E) का वर्गांक निर्माण

रसायन विज्ञान
E=CHEMISTRY

पक्ष–परिसूत्र– E[P],[P2]:[E][2P],[2P2]

मुख्य वर्ग E Chemistry के अन्तर्गत रसायनशास्त्र के संयोजन (Composition), बनावट, (Structure), गुणों (Properties), तथा परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या– E [P], [P2] : [E] [2P], [2P2]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Substance	Enumeration
[P2]	Combination	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2P2]	Method	For 3 of [E]

[P] पक्ष=इसके अन्तर्गत सभी पकार के रासायनिक द्रव्यों का उल्लेख किया गया है। [P] पक्ष की एकल संख्या 1 Inorganic Substance को 8 Group में विभाजित किया गया है–

इस प्रकार एकल संख्या 1 को विभाजित करने वाला पहला अंक उस ग्रुप का प्रतीक है जिसके अन्तर्गत वह द्रव्य आता है दूसरा अंक Periodic Table से लेकर आना होता है–

Examples: 100 = Helium (He)

यहाँ 1= Inorganic Substance, प्रथम शून्य का प्रतीक अंक है, दूसरा शून्य आवर्त का प्रतिनिधित्व करने वाला अंक है।

इसी प्रकार

Hydrogen (H) = 110 (1+ 1+0) = 110

Iron (Fe) = 182 (1+ 8+ 2) = 182

तत्व अंक (Element Number) डॉ. रंगानाथन के अनुसार अंक 1 के आगे जोड़ने वाले अंकों से निर्मित एकल संख्या तत्व अंक कहलाती है। तत्व अंक सामान्यतः ग्रुप अंक तथा आवर्त्त अंक से मिलकर बनता है। आवर्त अंक, आवर्त सारणी (Periodic Table) से लेते हैं।

Examples: E18 Gold का तत्व अंक

जबकि Gold का वर्गांक E118 है। उपर्युक्त कथ्य के अनुसार E1 के बाद 18 आया है। इस प्रकार Gold का तत्व अंक18 हुआ।

पूर्ण तत्व अंक (Full Element Number)–

Element Number+Valency Number = Full Element Number

Examples: Radium = 129 (12+ 9) = 129

Gas = 198 (19 + 8) = 198

यहाँ तत्व अंक में संयोजकता अंक (Valency Number) जोड़ने से पूर्ण तत्व बना है।

2.= Hydroxyl. Basic Oxide (To be divided by the constituent element and its valency)=[P] पक्ष की एकल संख्या 2Basic Oxides है। इसे उस तत्व से जिससे वह Oxide बना है तथा संयोजकता अंक से विभाजित करने के निर्देश अनुसूची में हैं।

Example: यदि Gold Oxide या Gold Hydroxide का वर्गांक बनाने के लिए Hydroxide की एकल संख्या के साथ Gold तत्व अंक 18 को जोड़ देगे तो वर्गांक बनेगा।

Example :

Sodium oxide = E2+11+1=E2111

इसी प्रकार

3 = Acid. Acidic Oxide - (To be divided by the Constituent element and its valency) इसे भी पूर्ण तत्व अंक से विभाजित करने के निर्देष अनुसूची में हैं–

Examples: Nitric Acid = E3+50+5=E3505

4= Salt (To be divided by the constituent element and their respective Valencies).

Examples: Salt of Arsenie = E4+53+5=E4535

Salt of Fluorine = E4+70+7+E4707

[P2] पक्ष–[P] पक्ष के द्रव्य अंक 5,6,7 व 8 के लिए दिया गया है।

Examples: Methane nitro compound

E611, 57

Sulpher compound of nitrogen ring

E85,6

[E] [2P] पक्ष–[E] [2P] के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की रासायनिक समस्याओं का उल्लेख किया है।

Examples: Dehydration of Methan

E611: 82

Organic Physical Chemistry

E5:2

[2P2] पक्ष– यह पक्ष केवल [E] पक्ष की एकल संख्या 3 Analytical Chemistry के लिए है।

Examples: Colorimetry of Gold = E118:3,E1

P.H Value of Salts = E4:3,T6

Specials (वैशिष्टय) – मुख्य वर्ग में केवल एक E9G Biochemistry विशिष्ट वर्ग दिखाया है। अन्य मुख्य वर्गों की भाँति इसका प्रयोग भी करते हैं।

Biochemistry of Fats = E9G, 94

14.2.8 मुख्य वर्ग प्रौद्योगिकी (F) का वर्गांक निर्माण

प्रौद्योगिकी

F=TECHNOLOGY

पक्ष–परिसूत्र–F[P] : [E] [2P]

मुख्य वर्ग तकनीकी विज्ञान को प्रौद्योगिकी भी कहा जाता है। इस मुख्य वर्ग में पदार्थों का अध्ययन, प्रयोग और उसके उपयोग की चर्चा की गई है। द्वि–बिन्दु वर्गीकरण में रासायनिक प्रौद्योगिकी (Chemical technology) जिसके रसायनिक उत्पादनों, औद्योगिक प्रौद्योगिकी (Industrial technology), उत्पादनों (Products) तथा उपोत्पादनों (Byproducts) का उल्लेख है।

प्रौद्योगिकी और रसायनविज्ञान दोनों में विभिन्न पदार्थों का अध्ययन किया जाता है फिर भी दोनों में पर्याप्त अन्तर है। रसायन विज्ञान में पदार्थ के संयोजन, संरचना, उनके गुणों का अध्ययन होता है जबकि प्रौद्योगिकी का सम्बन्ध पदार्थ के उपयोग एवं प्रयोग से होता है।

परिसूत्र की व्याख्या– F [P]:[E] [2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Substance	Enumeration
[E][2P]	Problem and Process	Enumeration and (AD)

[P] पक्ष–[P] पक्ष के अन्दर वे पदार्थ आते हैं जो E Chemistry के [P] पक्ष में दिये गये हैं। इसके अलावा अनेक अतिरिक्त एकल संख्याओं को अनुसूची में दिया गया है।

Example: Food technology

F53

Washing soap technology

F94966

Face cosmetic technology

F951

[E] [2P] पक्ष–यह पक्ष समस्याओं एवं प्रक्रियाओं से सम्बन्धित है। अनुसूची में दिये निर्देशानुसार [E] [2P] पक्ष की एकल संख्या मुख्य

वर्ग E Chemistry से लाया जायेगा। जिसमें E Chemistry के [E] पक्ष की एकल संख्या 8 Manipulation के विभाजन ही प्रयोग में लाने है। नियम F22 पृष्ठ 1.77 के अनुसार 8 अंक को छोड देना है।

Examples: Fermentation of Alcohol

F54: 7

Industrial Oxidation

F:1

E Chemistry के [E] पक्ष में 87 Fermentation एवं 81 एकल संख्या Oxidation की है। दोनों उदाहरणों में नियमानुसार 8 अंक हटा दिया गया है। इन दोनों को नियम F23 पृष्ठ 1.78 के अनुसार संयोजी चिन्ह Colon (:) से जोड़ा जाता है।

इसी प्रकार–

पदार्थ पर यह निर्भर करता है कि प्रक्रिया पक्ष की एकल संख्या क्या होगी? इसका निर्धारण वर्ण क्रम विधि (AD) के द्वारा प्राप्त किया जाता है। जो नियम संख्या F2 पृष्ठ 1.77 पर दिया गया है।

Examples: XYZ Process of Fermentation of Alcohol

F54:X:7

यहाँ पर XYZ एक प्रक्रिया की विधि है। इसलिए प्रथम अक्षर X को समस्या 87 (Fermentation) से पहले जोड़ा गया है। समस्या में से भी 8 को हटा दिया गया है और दोनों के बीच में योजक चिन्ह (:) लगाया गया है।

14.3 सारांश

इस प्रकार अलग-अलग मुख्य वर्गों a से लेकर F तक वर्गांक के निर्माण कैसे किया जाता है और वर्गांक के विभिन्न पक्षों को जोड़ने हेतु पक्ष-परिसूत्र का प्रयोग कैसे किया जाता है इस अध्याय में आपने सीखा। मुख्य वर्ग a से लेकर F तक के विषयों की प्रकृति एवं विकास को भी इस वर्गांक निर्माण की प्रक्रिया में आपने जाना जो पुस्तकालय विज्ञान के छात्र के रूप में हमें आगे अपने ज्ञान को संवर्द्धित करने एवं परिष्कृत करने के साथ, जब आपको पुस्तकालय कर्मी के रूप में कार्य करेंगे उस समय

सन्दर्भ सेवाओं इत्यादि को प्रदान करने में सहायक होगा।

14.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

निम्न के वर्गांक बनाइये

(1) Exhibition of Current Research Journals in India, 1664.

(2) Bibliography of Manuscripts.

(3) A Bibliography of Children books

(4) Translation Hindi to English: A Bibliography.

(5) Catalogue of thesis available in the Agra University Library (Founded in 1927).

(6) Book Fair in Delhi, 1999.

(7) Union Catalogue of Hindi Books.

(8) Reference service through manuscripts

(9) Preparation of thesis in blind library in Arbia

(10) Technical treatment of film scripts in city library of Bihar in 1444.

(11) American library Association (ALA) Cataloguing Rules (1876).

(12) Bibliographic Classification (BC).

(13) Microfilm in Research library.

(14) College library administration in India...

(15) Fundamentals of Mechanics

(16) Operation Research

(17) Vector Analysis

(18) Text-book of Trigonometry

(19) Text-book of Matrix

(20) College Trigonometry

(21) Calculus Differentation and Integral

(22) Sound Velocity.

(23) Power Electronics.

(24) Heat, Thermodynamics and Statistical Physics.

(25) Diffusion of Gases at low temperature according to Wave Machanics.

(26) Soild State Physics.

(27) Digital Computer Designing.

(28) Guru Nanak Engineering College, Ludhiana.

(29) Dairy Machinery.

(30) Mining Equipment.

(31) Storage of Weak Current.

(32) Maintenance of Underground Electrical Transmission Line.

(33) Advanced Physical Chemistry.

(34) Biochemistry of Hernia.

(35) Mendeleev's Periodic Table, 1986.

(36) Atomic weight of Potassium.

(37) Mixture in Gold.

(38) Ionisation of Metals.

(39) Nirma Washing Powder.

(40) Technology of Iron.

(41) Petroleum Technology of U.K.

(42) Manufacturing of Face Cosmetics.

(43) Colouring Asian Paints.

इकाई -14 : मुख्य वर्ग G से L तक वर्गांक निर्माण

संरचना

14.0 उद्देश्य

14.1 विषय प्रवेश

14.2 वर्गांक निर्माण

14.2.1 मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (Biology) (G) का वर्गांक निर्माण

14.2.2 मुख्य वर्ग भू विज्ञान (Geology) (H) का वर्गांक निर्माण

14.2.3 मुख्य वर्ग खनिकर्म विज्ञान (Mining) (Hz) का वर्गांक निर्माण

14.2.4 मुख्य वर्ग वनस्पति विज्ञान (Botany) (I) का वर्गांक निर्माण

14.2.5 मुख्य वर्ग कृषि विज्ञान (Agriculture) (J) का वर्गांक निर्माण

14.2.6 मुख्य वर्ग जन्तु विज्ञान (Zoology) (K) का वर्गांक निर्माण

14.2.7 मुख्य वर्ग पशु विज्ञान (Animal Husbandary) (Kz) का वर्गांक निर्माण

14.2.8 मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान (Medicine) (L) का वर्गांक निर्माण

14.2.9 मुख्य वर्ग औषधि प्रभाव विज्ञान (Pharmacognosy) (Lx) का वर्गांक निर्माण

14.3 सारांश

14.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप निम्नलिखित बातों को जानने में सक्षम होंगे।

(1) मुख्य वर्ग G से L तक वर्गांक निर्माण कैसे करते हैं।

(2) System और Special क्या होते हैं और इनके प्रयोग द्वारा कैसे वर्गांकों का निर्माण किया जाता है।

14.1 विषय प्रवेश

पिछली इकाई में आपने मुख्य वर्ग सामान्य वाङ्मय सूची से लेकर प्रौद्योगिकी

(F) के वर्गांकों के निर्माण की प्रक्रिया जानी। इस इकाई में इससे आगे मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (G) से लेकर औषधि विज्ञान (L) तक के वर्गांकों के निर्माण के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा की गयी है।

14.2 वर्गांक निर्माण

14.2.1 मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (G) का वर्गांक निर्माण

जीव विज्ञान

G=BIOLOGY

पक्ष–परिसूत्र–G [P]: [E] [2P]

इस मुख्य वर्ग में जीव सम्बन्धी विषयों का जैविक घटनाक्रम के रूप में सामान्य अध्ययन किया जाता है। विशिष्ट प्रकार के जीव, पौधे पशु तथा मानव आदि इसके अध्ययन क्षेत्र में नहीं आते हैं।

परिसूत्र की व्याख्या–G[P] : [E] [2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Organ and Special Groupings	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत जीव के उन मूलभूत तत्वों का उल्लेख है जिसकी उपस्थिति जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक है। जैसे–Cells, Tissues, Nucleus आदि।

Examples: Biology of cell (Cytology)

G11

G12 Tissue (other divisions same as in L Medicnine and I Botany as the case may be)| G12 को L Medicine तथा I Botany मुख्य वर्गों से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Biology of Skin

G87 (87 एकल संख्या L medicine) से ली गई हैं)

95 Ecological Group एकल संख्या के अन्तर्गत ऐसे जीवों के वर्ग हैं जो विशेष प्रकार के प्राकृतिक वातावरण में उत्पन्न होने के कारण विशिष्टता रखते हैं। जैसे समुद्री जीव, पर्वतीय जीव, जंगली जीवन आदि। इन जीवों को वहाँ के वातावरण

का प्रभाव अधिक प्रभावित करता है। यही कारण है कि वहाँ के वातावरण के अनुरूप ही इनका जीवन बनता व पनपता है, जैसे–

G9518 = Mountain Life

G9551 = Underground Life

[E] [2P]पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत सामान्य जीवन सम्बन्धी समस्याओं को लिया गया है।

Example: Life in pictures
G:14
Classification of life
G:11

एकल संख्या 346 के निर्देश के अनुसार 341 Inanition, 345 Water fasting तथा 346 Fasting को 33 Metabolism की भाँति विभाजित किया गया है। संख्या 33 Metabolism के सभी उपविभाजनों 341, 345, 346 के साथ प्रयोग किया जा सकता है।

Examples: Physical effects of Fasting
G:346C

[2M] पक्ष का प्रयोग– यद्यपि परिसूत्र के अन्तर्गत यह पक्ष नहीं है, लेकिन [E] पक्ष की एकल संख्या 33 Metabolism या इसके उपविभागों, 341 Inanition, 345 Water Fasting, 346 Fasting का प्रयोग किया जाये तो [2M] पक्ष का प्रयोग किया जा सकता है। डॉ. एस.आर. रंगानाथन के अनुसार यदि [E] पक्ष के बाद [M] पक्ष आता है तो वह [2M] पक्ष कहलाता है। अनुसूची में [2M] पक्ष नहीं है यह [E] Chemistry के [P] पक्ष के समान ही है। [M] पक्ष को विषय विधि द्वारा भी प्रयोग किया जा सकता है।

Examples: Chemical effect of nitrogen on tissue
G12:33E;150
Chemical effect of drugs on tissues
G12:33E; (F56)

उपरोक्त उदाहरणों में [E] [2P] पक्ष के बाद [2M] का प्रयोग हुआ है, प्रथम उदाहरण में [2M] पक्ष की एकल संख्या E Chemistry के [P] पक्ष से ली गयी है।

नियम संख्या G25 पृष्ठ 1.79 में [E][2P] की व्याख्या अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस नियम के अनुसार इस पक्ष की एकल संख्या 12 से 18 तथा 5 व उसके उपविभागों का जब भी प्रयोग किया जाए इनके तुरन्त बाद [S] पक्ष का प्रयोग किया जा सकता है, क्योंकि जीवन के प्राकृतिक इतिहास (Natural History) तथा परिस्थितिकी (Ecology) आदि का अध्ययन बिना स्थान एकल के अर्थहीन व अधूरा है।

Examples: Fauna and Flora of India

G: 12.44

Ecology of Indian Ocean

G: 5.95

4 Pathology के लिए [2P] पक्ष– [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Pathology (Disease) है। इसके [2P] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख नहीं किया गया है। इसे मुख्य वर्ग L Medicine के 4 Disease के लिए दिये गये [2P] पक्ष की भाँति विभाजित करने के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं। [2P] पक्ष के अन्तर्गत रोगों के विभिन्न कारकों का उल्लेख मुख्य वर्ग Medicine में पृष्ठ 2.84 पर किया गया है।

डॉ. रंगानाथन ने [2P] पक्ष की एकल संख्या को [E] पक्ष की एकल संख्या के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधे जोड़ने का निर्देश दिया है।

Examples: Pathology of Cells

G11:4

इसी प्रकार–

Infection in Plant

G:42

5 Ecology, 6 Genetic, 7 Development तथा 8 Manipulation के लिए एकल संख्याएँ दी गई हैं–

Examples: Theory of Evolution of life

G:66

Winter Ecology of life.

G:5567.

विशिष्ट वर्ग (Special Class)– मुख्य वर्ग के अन्त में कुछ विशिष्ट वर्गों का उल्लेख है। डॉ. रंगानाथन ने विशिष्ट वर्ग (Specials Class) को [P] पक्ष का विस्तार माना है। (SpF) तथा [P] पक्ष के बीच संयोजक चिन्ह [Comma (,)] अल्पविराम

के प्रयोग करने का प्रावधान है।

Examples: Old age tissues

(System), [P]

G9E, 12

Physical effects of Fasting on the Embryo cells

(System), [P]: [E] [2P]

G9B,11:346C

14.2.2 मुख्य वर्ग भू-विज्ञान (H) का वर्गांक निर्माण

भू–विज्ञान

H=GEOLOGY

भू–विज्ञान मुख्य वर्ग में भू (भूमि, पृथ्वी) के गर्भ से उत्पन्न होने वाली वस्तुएँ जैसे– खनिज, चट्टानों आदि तथा भू–गर्भ में होने वाली विभिन्न प्रकार की हलचलों आदि का अध्ययन किया जाता है।

भू–विज्ञान ऐसा मुख्य वर्ग है जो कई प्रमाणिक वर्गों (Canonical Classes) में विभाजित है। जैसे–

H1 Mineralogy (खनिज विज्ञान)

H2 Petrology (चट्टान विज्ञान)

H3 Structural Geology (संरचनात्मक भू–वैज्ञानिकी)

H4 Dynamic Geology (गतिशील भू–विज्ञान)

H5 Stratography (स्तरक्रम विज्ञान)

H6 Palaeontology (जीवाश्म विज्ञान)

H7 Economic Geology (आर्थिक भू–विज्ञान)

H8 Cosmic Hypotesis (ब्रह्माण्डीय परिकल्पना)

H1-Minerology (खनिज विज्ञान)

पक्ष–परिसूत्र–H1 [P] : [E] [2P]

[P] पक्ष– इस पक्ष के नीचे निर्देश दिया है कि इस पक्ष की एकल संख्या E Chemistry मुख्य वर्ग के समान है। साथ ही कुछ अतिरिक्त एकल संख्याएँ भी दी गई हैं। इन अतिरिक्त एकल संख्याओं के अन्तर्गत 9 Precious Stone (कीमती

पत्थर) तथा उसके उपविभाग है–

Examples: Mineralogy of gold

H1118

Mineralogy of diamond stone

H191

पहले उदाहरण में 118 एकल संख्या Gold के लिए E Chemistry से लेकर वर्गांक बनाया गया है तथा दूसरे उदाहरण में 191 अनुसूची से Diamond stone के लिए लिया गया है।

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष की एकल संख्या '1 Preliminaries' के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार इसे मुख्य वर्ग G Biology की भाँति विभाजित करना है। अन्य एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख है–

Examples: Classification of Zinc minerals

H1123:11

उपरोक्त उदाहरण में 123 संख्या Zinc के लिए E Chemistry मुख्य वर्ग के [P] पक्ष से है तथा 11 एकल संख्या मुख्य वर्ग G Biology के [E][2P] पक्ष से है।

H2 Petrology (चट्टान विज्ञान) – इस प्रमाणिक वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की चट्टानों का अध्ययन किया जाता हे।

परिसूत्र– H2 [P]:[E][2P]

इसका परिसूत्र H1 Mineralogy के समान ही है। [E] [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ 8 Crystallography को छोड़कर H1 के समान ही है।

Examples: Genesis of Volcanic Rocks

H211 : 16

Description of Sedimentary Rocks

H23:13

H3 Structural Geology (संरचनात्मक भू–वैज्ञानिकी)– इस प्रमाणिक वर्ग का कोई परिसूत्र नहीं दिया है। केवल विभाजन का उल्लेख है।

Structural geology of mountain building

H36

H4 Dynamic Geology (गतिशील भू–विज्ञान)– इस प्रामाणिक वर्ग के अन्तर्गत पृथ्वी की आन्तरिक गतिविधियों तथा बाह्य प्रभावों से होने वाले परिवर्तनों जैसे–ज्वालामुखी, ग्लेशियर, गर्म पानी के सोते, पृथ्वी का धंस जाना व ऊपर ऊठ जाना तथा पृथ्वी पर वर्षा, बाढ़, वायु तथा पेड़ पौधों सें होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। इसका कोई परिसूत्र नहीं दिया गया है। केवल विभाजन दिये गये हैं–

Geysers in Himachal

H412.4445

Earthquakes of Quetta

H4132.44Q7591

N5 Stratigraphy (स्तरक्रम–विज्ञान)– इसका भी कोई परिसूत्र नहीं हैं। इसके अन्तर्गत पृथ्वी के निर्माण के बाद विभिन्न भूगर्भशास्त्रीय युगों में विभाजित पृथ्वी की सतहों का उल्लेख है।

Example: Cambrian Stratigraphy of the World

H521.1

N6 Palaeontology (जीवाश्म विज्ञान)– जीवाश्म जन्तुओं एवं वनस्पतियों दोनों में हो सकते हैं अतः इसके लिये निर्देश (नियम 16 पृष्ठ 1.80) दिए गए हैं कि वनस्पतियों से सम्बन्धित जीवाश्म मुख्य वर्ग I Botany के अन्तर्गत वर्गीकृत किये जाते हैं, जबकि जन्तुओं से सम्बन्धित जीवाश्म के लिए मुख्य वर्ग K Zoology के [P] पक्ष से किसी भी प्राणी की एकल संख्या को लेकर जोड़ा जाता है।

Examples: Bird fossils

H696

Reptilia Fossils

N694

इस प्रामाणिक वर्ग के साथ काल पक्ष का प्रयोग अत्यन्त आवश्यक है। काल पक्ष की संख्याएँ सारणी (Time Isolates Table) से न लेकर H5 Stratigraphy से लेना होता है। H5 के स्थान पर अंक A का प्रयोग आवश्यक है जो नियम H68u, पृष्ठ 1. 80 के अनुसार है।

Examples: Recent Time

A55

Cainozoic aves

H696'A4

भूगर्भशास्त्रीय समय (Geological Time) की गणना शताब्दी या सहस्त्राबादी में नहीं की जा सकती क्योंकि वैज्ञानिक विकास के परिवर्तनों की प्रक्रिया इतनी धीमी होती है कि समय गणना की सामान्य इकाइयाँ इसको मापने के लिए सक्षम नहीं है।

H7 Economic Geology (आर्थिक भू–विज्ञान)–

पक्ष–परिसूत्र–H7[P]:[E][2P]

इस प्रामाणिक वर्ग के अन्तर्गत कच्चे धात्विक पदार्थों, भूमिगत पानी तथा ऐसे पदार्थों का अध्ययन किया जाता है जिसका आर्थिक दृष्टि से महत्त्व हो। कच्चे धात्विक पदार्थो के अन्तर्गत वे सभी प्रकार की धातुएँ शामिल हैं जिनसे कीमती व उपयोगी धातु इतनी मात्रा में उपलब्ध हो कि उनको भूमि से निकालना लाभप्रद हो।

इसका परिसूत्र H1 व H2 की तरह है।

[P] पक्ष– H7 Economic Geology का यह पक्ष मुख्य वर्ग E Chemistry, H1 Mineralogy तथा F Technology के समान है। इस पक्ष के अन्तर्गत वे समस्त धातुएँ आती है जिनका आर्थिक महत्त्व हो तथा धातु में धात्वीय गुणों की पर्याप्त मात्रा हो।

Examples: Gold Deposits of UK

H7118.56

Salt Deposits of Pakistan

H74.44Q7

[E] [2P] पक्ष– इस प्रामाणिक वर्ग के अन्तर्गत [E][2P] पक्ष H1 Mineralogy के समान है तथा H1 में दिये गये निर्देश पक्ष की कुछ एकल संख्याओं को मुख्य वर्ग G Biology के [E] [2P] पक्ष से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Examples: Genesis of Iron Deposits in Bihar

H7182:6.4473

H8 Cosmic Hypothesis (ब्रह्माण्डीय परिकल्पना)–इस प्रामाणिक वर्ग का न तो अनुसूची में परिसूत्र दिया है और न कोई उपविभाजन। इस प्रामाणिक वर्ग को विशिष्ट प्रकार की परिकल्पना के लिए कालक्रम विधि (CD) के द्वारा व्यक्तित्व प्रदान किया जा सकता है।

Examples: Lord Kelvin's theory about the age of Earth, 1899

H8M9

14.2.3 मुख्य वर्ग खनिज विज्ञान (Hz) का वर्गांक निर्माण

खनिकर्म विज्ञान

HZ=MINING

पक्ष–परिसूत्र– HZ[P],[P2]:[E][2P]

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के खनिजों के खनन (Mines) तथा विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा उनमें मिली अशुद्धियों को दूर कर उन्हें उपयोगी बनाने के कार्य का अध्ययन करते हैं।

परिसूत्र की व्याख्या– HZ[P],[P2]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Substance	Enumeration
[P2]	Work	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष–[P] पक्ष के अन्तर्गत शुद्ध धात्विक पदार्थों का उल्लेख है। यह पक्ष E Chemistry, H1 Minerology तथा F Technology के [P] पक्षों के समान है। [P] पक्ष के अन्तर्गत वे पदार्थ रखे गये हैं जिनमें कच्चे धात्विक पदार्थों में अनेक अशुद्ध पदार्थ रहते हैं। इसके अलावा वे पदार्थ तथा धातुएँ हैं जिसे निकालना आर्थिक दृष्टि से लाभदायक साबित हो। मुख्य वर्ग E Chemistry में इस प्रकार के पदार्थों का विस्तार से वर्णन है।

[P2] पक्ष– इस पक्ष में विभिन्न प्रकार की खान तथा उनके विभिन्न भागों का उल्लेख है, उदाहरण–

Examples: Gold mines of Jaipur

HZ118.4437

Mining System in Australia

HZ.8

[E] [2P] पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत खनिकर्म में होने वाली प्रक्रियाओं का उल्लेख है।

Examples: Timbering the tunnels of Lead mines

HZ148,3:18

Heating of Iron mines

HZ182:54

14.2.4 मुख्य वर्ग वनस्पति विज्ञान (I) का वर्गांक निर्माण

वनस्पति विज्ञान
I=BOTANY

पक्ष–परिसूत्र– I[P],[P2]:[E][2P]

Botany मुख्य वर्ग के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों के प्राकृतिक वर्गों (Natural groups), उनकी संततियों (Families of Plants) तथा उनसे सम्बन्धित विभिन्न पहलुओं व समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

परिसूत्र की व्याख्या–I [P],[P2]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Natural group	Enumeration
[P2]	Organs	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– [P] पक्ष के अन्तर्गत वनस्पतियों के प्राकृतिक वर्गों तथा उनकी संततियों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है।

सम्पूर्ण विश्व की वनस्पतियों को दो भागें में बाँटा गया है। नियम भाग पृष्ठ 1.83 में स्पष्ट निर्देश हैं–

Cryptogamia (पुष्पहीन पौधे)	**Phanerogamia (पुष्पदार पौधे)**
1. Cryptogamia	5. Phanerogamia
2. Thallophyta	6. Gymnosperm
3 Bryophyta	7. Monocotyledon
4. Pteridophyta	8. Dicotyledon

Botany के नियम भाग पृष्ठ 1.83 में स्पष्ट लिखा है कि [P] पक्ष की एक एकल संख्या " 2 Thallophyta", "3 Bryophyta" तथा "4 Pteridophyta" वस्तुतः "1 Cryptogamia" के ही विभाग हैं। अर्थात एकल संख्याऐं 1 से 4 तक सभी पुष्पहीन वनस्पति की श्रेणी नें आती हैं। इसी प्रकार [P] पक्ष की ही एकल संख्या "6 Gymnosperm" "7 Monocotyledons" तथा "8 Dicotyledons" भी एकल संख्या "5 Phanerogamia" के विभाग हैं। अर्थात् ये सब पुष्पयुक्त वनस्पति की श्रेणी में आते हैं। संक्षेप में 1 से 4 Cryptogamia (पुष्पहीन वनस्पति) तथा 5 से 8 Phanerogamia (पुष्पयुक्त वनस्पति) है। दोनों श्रेणी की वनस्पतियों की संततियों का अनुसूची में वर्णानात्मक विस्तार है जैसे–

I42	Fern Plant
I8311	Rasaceae Plant
I95124	Forest plants

95 Ecological group के अन्तर्गत निर्देश के अनुसार वातावरण से प्रभावित होने वाले पौधों के वर्गांक मुख्य वर्ग G Biology के [P] पक्ष के एकल संख्या 95 के उपविभागों की तरह ही होंगे।

अतः हम कह सकते हैं कि 95 = Groupings of Ecological plants के वर्गांक बनाने के लिए हमें G Biology मुख्य वर्ग के [P] पक्ष से 95 Ecological groups से एकल प्रयोग करना है:–

Examples: Mountain plants

I9518

Forest Plants

I95124

यहाँ पर दोनों उदाहरणों में G Biology मुख्य वर्ग के [P] पक्ष के एकल संख्या 195 के साथ एकल संख्याओं को निर्देशानुसार जोड़कर वर्गांक निर्मित किया गया है।

[P2] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत पौधों के विभिन्न भागों का उल्लेख है जैसे– जड़, तना, डाली, पत्ती, फूल आदि।

Examples: Rose flower

I8311, 16

Primary root of fungi plant

I23, 133

यदि पौधों के कार्यशील अंगों (Functional system of organs) से सम्बन्धित वर्गांक बनाना हो तो मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से संख्या प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Examples: Circulatory System of Fungi Plants.

I123,3

उपरोक्त उदाहरण में [P2] पक्ष की एकल संख्या '3' Circulatory System मुख्य वर्ग L Medicine से प्राप्त की गयी है।

[E] [2P] पक्ष--मुख्य वर्ग I Botany में [E] [2P] पक्ष मुख्य वर्ग G Biology के [E] [2P] के समान है ये निर्देश दिये गए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि G Biology मुख्य वर्ग में जो [E] [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ हैं वे ही एकल संख्याएँ I Botany के [E] [2P] की एकल संख्या के रूप में प्रयोग में लायी जायेगी। अनुसूची में केवल 8 Paleobotany अतिरिक्त एकल संख्या दी गई है।

Examples: Plant Classification

I:11

Fungi nomenclature

I23 :11

Chemical effect in plant

I: 33C

इन उदाहरणों में [E] [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग G Biology के [E] [2P] से ली गई है।

I Botany में वैशिष्ट्य (Specials) पक्ष का प्रयोग भी मुख्य वर्ग G Biology के समान ही है।

14.2.5 मुख्य वर्ग कृषि विज्ञान (J) का वर्गांक निर्माण

कृषि विज्ञान

J=AGRICULTURE

पक्ष–परिसूत्र–J[P],[P2]:[E][2P]:[2E][3P]

यह मुख्य वर्ग प्रकृति सम्बन्धी उपयोगी पौधों का अध्ययन करता है। इसके अन्तर्गत भूमि को कृषि योग्य बनाने के तरीकों, उसकी जुताई,

बुवाई, रोगों की रोकथाम के उपायों तथा सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

परिसूत्र की व्याख्या– J[P],[P2]:[E][2P]:[2E][3P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Plant	Enumeration and (AD)
[P] Array 1	Utility	Enumeration
[P] Array 2	Part	Enumeration
[P2]	Organ	Enumeration
[E]	Problem	Enumeration
[2P]	(1) Nature for 1 soil of [E]	Enumeration
	(2) Substance for 2 Manure of [E]	Enumeration
	(3) Substance for 3 Propagation of [E]	Enumeration
	(4) Cause for 4 Disease of [E]	Enumeration
	(7) Material for 7 Harvesting of [E]	Enumeration
[2E] [3P]	Operation	Enumeration

[P] पक्ष– यह पक्ष इस मुख्य वर्ग का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के उपयोगी पौधों का विस्तार से वर्णन है। [P] पक्ष को तीन एकल संख्याओं में बाँटा है–

1 = Utility array of [P] (उपयोगिता प्रतीक पंक्ति)– पौधों की प्राथमिक उपयोगिता को ध्यान में रखकर इस अंक का निर्माण हुआ है इसलिए इसे प्रथम क्रम की पंक्ति (First order array) कहा जाता है।

उदाहारण स्वरूपः–

J1 = Decoration

J3 = Food

J94 = Sugar

2= Part array of [P] (पौधे के विशिष्ट भागों का प्रतीक एकल संख्या)–[P]पक्ष को प्रदर्शित करने वाला दूसरा अंक Part array से लिया जाता है। इस Part array के भी अनुसूची [P] पक्ष के अन्तर्गत उपविभाजन दिये गये हैं। इसके अन्तर्गत पौधे के उन सभी उपयोगी भागों का उल्लेख है जो मनुष्य

के किसी न किसी उपयोग में लाये जाते हैं। जैसे–पौधे की जड़, तना, पत्ती, फूल, फल आदि। पौधो के एक भाग के अनेक उपयोग हो सकते हैं जैसे पत्ती (Leaf)। पालक, मैथी इत्यादि भोजन के रूप में मानव लेते हैं और यह घास के रूप में पशु आहार है। चाय के रूप में पेय तथा पीपरमेन्ट के रूप में औषधि। Seed (बीज) के भी अनेक उपयोग हैं। कॉफी के रूप में पेय, मूंगफली तथा सरसों रूप में खाद्य पदार्थ तथा रूई के रूप में वस्त्र रेशा।

Utility array + Part array वर्गांक बनाने में पौधों के विभिन्न भागों के उपयोग से सम्बन्धित जानकारी देता है जैसे– Utility array [P] पक्ष की एकल संख्या 3 Food के साथ Part array की एकल संख्याएँ जोड़ने से पौधों की खाद्य पदार्थ के रूप में उपयोगिता प्रदर्शित करने वाले वर्गांक बनाने में सहायक होते हैं।

उदाहारण स्वरूपः–

J31 = Sap Food
→Mainclass
→Utility Array
→Part Array

3 = Genus and Species Number (वंश तथा जाति अंक)– Utility array तथा Part array को विभाजित करने वाला तीसरा अंक Genus या Species Number होता है यह अंक Utility तथा Part की विशेषता बताने वाला अंक होता है। दूसरे शब्दों में एक सी विशेषता वाले पौधों को अलग करने के लिए वरेण्य विधि (FD) के द्वारा प्राथमिकता के क्रम में इसे व्यवस्थित किया जाता है। यह क्रम संख्या Indo-Arabic Number 1,2,3.............लगाकर प्रदर्शित की जाती है।

Example: [Basic Class] + Utility Array + Part Array+Species Number = Whole Plant.

उदाहारण स्वरूपः–

J381 = Rice Food
-Mainclass
-Utility Array
-Part Array
-Genus and Species Number

4 = Cultivar Number- कभी–कभी किसी विशिष्ट प्रकार के पौधे की आवश्यकता पड़ने पर Cultivar Number के द्वारा पुनः विभाजित कर विशिष्ट किस्म का पौधा बनाया जा सकता है। इसके लिए वर्णक्रम विधि AD का प्रयोग किया जाता है।

J381H = Hansraj Rice (हंस राज चावल चावलों की एक खास किस्म है।)

J371K = Kashmiri apple

इन उदाहरणों में वर्णक्रम विधि (AD) के द्वारा उनकी किस्म के नाम का प्रथम अक्षर लगाकर विशिष्टता प्रदान की गयी है यह [P] पक्ष को विभाजित करने वाला चौथा अंक है।

[P2] पक्ष– [P2] पक्ष–परिसूत्र के अन्तर्गत है। अनुसूची में इसकी एकल संख्याएँ नहीं दी गई है। इस पक्ष के लिए एकल संख्या [P] पक्ष के लिए दी गयी Party array से लाकर उपयोग में लाया जाता है।

Examples: Stem of a rice plant

J381,4

Roots of Potato Plant

J341,3

[E] [2P] पक्ष तथा [2E] [3P] पक्ष–अनुसूची में परिसूत्र के अनुसार [E] पक्ष की एकल संख्याएँ–

[E] पक्ष के लिए 1 Soil के लिए [2E] पक्ष– इसके लिए एकल संख्या 2 Tillage 4 Damage, 6 Improvement, 7 Conservation etc. हैं–

Examples: Conservation of Soil for pulse crop

[P] [E] [2E]

J388 :1 :7

[E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure के लिए [2P] पक्ष–[E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure के लिए [2P] पक्ष का प्रावधान गया किया है।

Examples: Fertiliser for rice crop

J381:24

Potassic fertiliser for cotton

J781:243

Green manure for Barley

J386:21

इन उदाहरणों में [E] पक्ष की एकल संख्या 2 Manure के लिए [2P] पक्ष का प्रयोग किया गया है। [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को [E] के साथ सीधा जोड़ने का प्रावधान है।

2[E] पक्ष का प्रयोग –

Examples: Application of Nitrogenous in Khas Khas.

J531:241:3

Storage of green manure

J: 21:8

[E][2P] पक्ष के बाद [2E] का प्रयोंग कोलन (:) के साथ होता है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 3 Propagation के लिए [2P] पक्ष– [E] पक्ष के 3 Propagation के लिए [2P] Part array के समान है। [2P] की एकल संख्याएँ Part array से ली जाती है।

Examples: Seed for Rice Crops.

[P] [E]

J381 : 38

Whole Plant of Onion

J321 : 397

[E] पक्ष की एकल संख्या 3 Propagation के लिए [2E] पक्ष– एकल संख्या 3 Propagation के लिए [2E] पक्ष का अनुसूची में उल्लेख है जैसे:–

Examples: Storing of seeds for corn crops

J385 : 38:8

Transplanting Rice Plants

J381 : 397 :5

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Diseases के लिए [2P] पक्ष– [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के लिए [2P] पक्ष

मुख्य वर्ग L Medicine के समान है। वहाँ [2P] पक्ष में रोग के विभिन्न कारकों को दिया है। इन्हें नियमानुसार एकल संख्या 4 के साथ जोड़कर विभिन्न रोगों के कारकों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। परिसूत्र के अनुसार [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष को सीधा जोड़ दिया जाता है।

Examples: Infection disease of Apple

J371:42

Virus disease of Wheat

J382:423

प्रस्तुत उदाहरण में 4 Disease के लिए कौन–सी Disease है इसका अंक L Medicine के [2P] से लिया गया है। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार L Medicine का [2E] पक्ष भी हम प्रयोग कर सकते हैं। यथा:–

Control measure for the virus disease of wheat

J382:423:55

[E] पक्ष की एकल संख्या 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष–[E] पक्ष की एकल संख्या 7 के लिए [2P] पक्ष के लिए As in Part array of [P] का उल्लेख है।

Examples: Harvesting of Rice

J381:78

इस उदाहरण में 7 Harvesting के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्या 8 को Part array से लिया है जो कि Seed का है।

इसी प्रकार

[2E] [3P] पक्ष की व्याख्या–J Agriculture मुख्य वर्ग के [2E] [3P] पक्ष को पृष्ठ 2.66 पर दिया है जिसका उपयोग [E] पक्ष की किसी भी एकल संख्या के साथ किया जा सकता है।

Examples: Curing of Coco Seed

J482:78:6

Yield of fruit crop

J37:77:7

Speicals and Systems (विशिष्ट वर्ग एवं प्रमाणित वर्ग)– मुख्य वर्ग के अन्त में Specials and Systems पक्षों की एकल

संख्याओं का उल्लेख किया है। वर्गांक में पक्षों का अनुक्रम पहले (SmF), इसके बाद (SpF) तथा सबसे बाद में [P] पक्ष को रखा जाता है। नियमानुसार इन एकलों को Comma (,) के चिन्ह से जोड़ते हैं।

Examples: Dry Forestry for Fruits
JB, 9D,37
Organic manure for forests
JB:25

ध्यान रखने योग्य बातें– यदि किसी पुस्तक में Special तथा System दोनों हों तो सबसे पहले System आयेगा बाद में, [(Comma) (,)] से Special को जोड़ते हैं फिर (Comma), के द्वारा [P] लाते हैं।

यदि मुख्य वर्ग (Main Group), Special, System तीनों उपस्थित हों ता मुख्य वर्ग का अंक सूचक जैसे J है को एक बार ही प्रयोग में लायेंगे। वह भी सबसे पहले अर्थात् System के साथ अन्य में J को हटाकर शेष अंकों को प्रयोग में लाया जायेगा।

14.2.6 मुख्य वर्ग जन्तु विज्ञान (K) का वर्गांक निर्माण

जन्तु विज्ञान
K=ZOOLOGY

पक्ष–परिसूत्र– K[P],[P2]:[E][2P]

इस मुख्य वर्ग को प्राणीशास्त्र भी कहते हैं। क्योंकि उसके अन्तर्गत जल, थल व नभ पर रहने वाले समस्त जीव जन्तुओं, पशु–पक्षियों तथा कीड़े–मकोड़ों आदि का अध्ययन किया जाता है।

इस मुख्य वर्ग के अन्त में जीव जगत की समस्याओं का भी अध्ययन कराया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या– K Zoology मुख्य वर्ग के नियम भाग में दिये गये निर्देशानुसार इसका परिसूत्र मुख्य वर्ग I Botany के समान है–

पक्ष–परिसूत्र– KP,P2:E2P

Faect	Term	(IN) By
[P]	Natural group	Enumeration
[P2]	Organs	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत पशु, पक्षियों के प्राकृतिक वर्गों (Natural Groups) का वर्णन है। जन्तुओं को उनकी मूलभूत विशेषताओं के आधार पर प्रमुख रूप से दो भागों में बाँटा है।

(1) Invertebrates (बिना रीढ़ की हड्डी वाले जीव जन्तु)

(2) Vertebrates (रीढ़ की हड्डी वाले जीव जन्तु)

अनुसूची के अन्तर्गत प्रथम श्रेणी में आने वाले (बिना रीढ़ की हड्डी वाले जीव जन्तु K2 से लेकर K8 के उपवर्गों में हैं। K9 के अन्तर्गत Vertebrates (रीढ़ की हड्डी वाले जीव जन्तु) को रखा है।

[P] पक्ष में आने वाले सभी जीव जन्तुओं के नामों की अनुक्रमणी (Zoology: Index to Natural Groups) मुख्य वर्ग K Zoology की अनुसूची के ठीक बाद पृष्ठ संख्या 2.73 पर दी है जो वर्णानुक्रम द्वारा व्यवस्थित है।

[P2] पक्ष– इस पक्ष का अनुसूची में उल्लेख नहीं है। पशुओं के अधिकतर अंग मानव के अंगों के समान होते हैं अतः अंगों के लिए L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्याओं का प्रयोग यहाँ [P2] पक्ष के रूप में किया जाता है।

Examples: Legs of wild animal

K9954, 134

Hair of the aves

K96,881

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष के निर्देशों के अनुसार मुख्य वर्ग G Biology के [E] [2P] पक्ष के समान ही हैं। अनुसूची में केवल दो अतिरिक्त एकल संख्याएँ दी हैं।

Examples: Preliminaries of invertibrates

K1:3

Anatomy of a frog

K9325:2

[2M] पक्ष– इस पक्ष को परिसूत्र में नहीं दिया गया है तथा अनुसूची में भी एकल संख्या नहीं है। तथापि यह पक्ष K-Zoology का महत्त्वपूर्ण पक्ष है क्योंकि ये पक्ष [E][2P] के बाद

प्रयोग हुआ है। डॉ. रंगानाथन के अनुसार [2M] के रूप में प्रयुक्त इस पक्ष की एकल संख्या मुख्य वर्ग E Chemistry के [P] पक्ष से लाकर प्रयुक्त करनी होगी।

(2) Chemical effect of phosphorus on eye of snake

K94,185:33E;151

Specials (विशिष्ट वर्ग)–इस मुख्य वर्ग में (SpF) पक्ष का उसी प्रकार प्रयोग किया जायेगा जैसा कि मुख्य वर्ग G Biology में किया है।

इस पक्ष की एकल संख्याएँ न तो अनुसूची में दी हैं और न ही इस समबन्ध में नियम भाग में कुछ निर्देश हैं।

Examples: Old age mammals

K9E, 97

14.2.7 मुख्य वर्ग पशु विज्ञान (KZ) का वर्गांक निर्माण

पशु विज्ञान

KZ=ANIMAL HUSBANDRY

पक्ष–परिसूत्र–KZ[P],[P2]:[E][2P]:[2E][3P]

मुख्य वर्ग KZ Animal Husbandry के अन्तर्गत उन पशुओं का अध्ययन किया गया है जो हमारे दैनिक जीवन में बहुत ही उपयोगी हैं। इस मुख्य वर्ग में ऐसे पशुओं का विभाजन उनकी उपयोगिता को दृष्टि में रखकर किया गया है। पशुओं के खानपान, स्वास्थ्य, प्रजनन आदि समस्याओं के साथ ही उनके उत्पादनों, तथा उत्पादनों के संग्रह, शीत, भण्डारण, उपयोग से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन इस मुख्य वर्ग में किया गया है।

नियम भाग में दिये गये निर्देशानुसार इस मुख्य वर्ग का पक्ष–परिसूत्र तथा एकल संख्याओं का निर्माण मुख्य वर्ग J Agriculture कृषि के समान ही किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या–KZ[P],[P2]:[E][2P]:[2E][3P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Animal	Enumeration
[P] Array	Utility	Enumeration
[P] Array	Part	Enumeration

[P2]	Organ	(मुख्य वर्ग L
[E]	Problem	Medicine के समान)
[2P]	(1) Substance for 1 Food for [E] (4) Cause for 4 Disease of [E] (7) Material for 7 Harvesting of [E]	Enumeration Enumeration Enumeration
[2E] [3P]	Operation	Enumeration

[P] पक्ष– मुख्य वर्ग के [P] पक्ष में उपयोगी पशुओं का उल्लेख है। इस पक्ष का निर्माण दो प्रकार की पंक्तियों को मिलाकर होता है। प्रथम पंक्ति (Utility array) पशु की उपयोगिता को बताती है तथा द्वितीय पंक्ति में (Part array) पशु के अंगों व उनसे प्राप्त पदार्थों को बताती है। दोनों पंक्तियों से निर्मित एकल संख्या से उपयोगी पशु जगत को उसके उपयोग की दृष्टि से विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया है। एक श्रेणी के पशुओं को एक निश्चित क्रम प्रदान करने की दृष्टि से वरेण्य श्रेणी विधि (Favoured Category Device) (FD) का प्रयोग किया गया है। तीसरा अंक पशु अंक (Animal Number) कहलाता है।

1 Utility array (उपयोगिता की प्रतीक एकल पंक्ति)– यह पंक्ति पशुओं की उपयोगिता दर्शाने वाली पंक्ति है। इस पंक्ति की एकल संख्याएँ J Agriculture मुख्य वर्ग में दी गयी Utility array के समान है। केवल एकल संख्या 2,4,5 अनुसूची में अतिरिक्त रूप से उल्लिखित है।

उदाहरणः– KZ1 = Decoration

2 Part array (अंग एकल पंक्ति)- Part array के अन्तर्गत पशु के विशिष्ट अंगों की अलग–अलग उपयोगिता हो सकती है यह बताया गया है। [P] पक्ष का निर्माण करने वाली दूसरी पंक्ति एकल संख्याएँ हैं।

उदाहरणः– KZ54 = Pet animal

3 Animal Number (पशु अंक)– Utility array + Part array + Animal number से मिलकर तीन अंकों में एकल संख्या निर्मित होती है वह विशिष्ट प्रकार के पशुओं का प्रतीक होता है। इससे इस मुख्य वर्ग का निर्माण होता है।

उदाहरणः–

KZ311 = Cow
- Mainclass
- Utility Array
- Part Array
- Animal Number

[P2] पक्ष– मुख्य वर्ग का यह पक्ष पशुओं के अंगों से सम्बन्धित है। इस पक्ष का प्रावधान यद्यपि नियम भाग में दिया है लेकिन अनुसूची में इसका उल्लेख नहीं है। पशु और मानव की शारीरिक संरचना या अंग लगभग एक से होते हैं। यही कारण है पशु के अंगों से सम्बन्धित एकल संख्याएँ आवश्यकतानुसार मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष से प्राप्त की जायेंगी।

Examples: Skin of Cow

KZ311, 87

[E][2P] पक्ष– इस पक्ष में पशुओं की समस्याओं का उल्लेख है।

Examples: Training of Elephant.

KZ447:8

Classification of Fish

KZ332:915

[E] पक्ष की एकल संख्या 1 Feeding, 4 Disease तथा 7 Harvesting (Produce) के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ अलग से दी गई हैं।

1 Feeding के लिए [2P] पक्ष– 1Feeding के[2P] पक्ष को विषय विधि (SD) से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Examples: Grass feed for the she buffalo

KZ312:1 (J251)

Grain for Cow

KZ311:1 (J38)

1 Feeding के लिए [2E] पक्ष– इस पक्ष के लिए अनुसूची में एकल संख्याएँ दी हैं–

Examples: Preparation of feed for Pet Dog

KZ541:1:3

Storage of leaf for horse

KZ442:1(J25):8

4 Disease [2P] पक्ष एकल संख्या के लिए पक्ष–4 Disease के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग L Medicine से लेकर आना है ऐसे निर्देश अनुसूची में दिये गए हैं।

Examples: Tuberculosis in cat

KZ542:421

उपरोक्त उदाहरण में [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष मुख्य वर्ग L Medicine से प्राप्त किया गया है।

4 Disease के [2E] [3P] पक्ष को भी मुख्य वर्ग L Medicine से प्राप्त करना है। ये निर्देश हैं।

Examples: Treatment of Camel's fever by injection

KZ446:414:616

7 Produce, Harvest [E] पक्ष एकल संख्या के लिए [2P] पक्ष–7 Produce के लिए [2P] पक्ष की एकल संख्याओं को दो भागों में विभाजित किया है:

(a) [2P] पक्ष–[P] पक्ष की एकल संख्या 31 के लिए [2P]– 31 [P] पक्ष की एकल संख्या दूध देने वाले पशुओं की प्रतीक संख्या है इन पशुओं का उत्पादन दूध, घी, पनीर आदि हैं। 31 के लिए दिये गए [2P] पक्ष में इन्हीं पदार्थों का उल्लेख है।

Examples: Produce of milk giving Animals

KZ31:7

She goat milk

KZ313:71

यहाँ पर 7 Produce के साथ 1 को सीधा जोड़कर वर्गांक को पूर्ण किया है।

(b) [P] 35 के लिए [2P] पक्ष– [P] पक्ष में 35 अण्डे देने वाले पशुओं के प्रतीक हैं। इनके उत्पादन अण्डे होते हैं। 35 के लिए दिये [2P] पक्ष की एकल संख्याएँ 5 Egg तथा 6 Yolk है।

[2E] [3P] पक्ष– अनुसूची के निर्देशानुसार [2E] [3P] पक्ष मुख्य वर्ग J Agriculture के समान हैं।

Examples: Cleaning of bee's honey

KZ611: 71:5

Use of Cow's milk

KZ311:71:97

Specials (विशिष्ट वर्ग)– इस पक्ष की एकल संख्याएँ न तो नियम भाग में निर्देशित हैं न ही अनुसूची में तथापि इस पक्ष का प्रयोग G Biology के अनुसार आवश्यकता पड़ने पर करना चाहिए–

14.2.8 मुख्य वर्ग औषधि विज्ञान (L) का वर्गांक निर्माण

औषधि विज्ञान

L=MEDICINE

पक्ष–परिसूत्र–L[P]:[E][2P]:[2E][3P]

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत मनुष्य के शरीर से सम्बन्धित समस्त विषयों को सम्मिलित किया गया है। मनुष्य के अंग, प्रत्यंगों तथा उनसे सम्बन्धित रोग, रोगों का निदान, उनका उपचार तथा चिकित्सा के प्रकार व तरीकों इत्यादि को लिया गया है।

पक्ष–परिसूत्र–L[P]:[E][2P]:[2E][3P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Organ	Enumeration
[E]	Problems	Enumeration
[2P]	(4) cause (For 4 disease of [E]	Enumeration
[2E][3P]	Handling of disease	Enumeration

[P] पक्ष– इस पक्ष की एकल संख्याओं को दो भागों में बाँटा गया है। दोनों के अन्तर्गत मानव शरीर के विभिन्न अंगों तथा उनका निर्माण करने वाले तत्वों को रखा गया है।

[P] पक्ष की दो एकल संख्याओं को एक साथ प्रयोग में लाने के लिए प्रमुख अंग की प्रतीक एकल संख्या को पहले रखा जाता है तथा दूसरे अंग के प्रतीक एकल संख्या को बाद में। दोनों एकल संख्या को Autobias Device की एकल संख्या

होने कारण एक छोटी आड़ी रेखा [Hyphen (-)] से जोड़ दिया जाता है। इस विधि के द्वारा प्रमुख अंग के साथ–साथ उससे सम्बन्धित अंग को भी प्रदर्शित किया जा सकता है।

Examples: Veins of Neck

L17 -36

Head Hair

L18-881

[E] [2P] पक्ष–इस पक्ष के अन्तर्गत मानव के स्वास्थ्य तथा उसके विभिन्न अंगों की संरचना व क्रियाओं आदि का वर्णन है।

3 =Physiology - 3 Physiology के उपविभाजन Main class G Biology के [E] पक्ष में दिये गये 3 Physiology से प्राप्त करना होगा।

Examples: Human Metabolism

L: 33

Katabolism in human body

L:332

L9F (Female) के लिए विशिष्ट वर्ग अनुसूची में अतिरिक्त एकल संख्याएँ दी गयी हैं जिनका प्रयोग L9F के साथ ही किया जा सकता है अन्य कहीं ऐसा नहीं देखा गया।

Examples: Birth Control

L9F:394

Artificial abortion

L9F : 345

प्रस्तुत उदाहरणों में [E][2P] के लिए प्रयुक्त सभी एकल संख्याएँ स्त्री जाति की Physiology से सम्बन्धित है अतः L9F के साथ प्रयोग किया गया है।

4 = Disease –4 एकल संख्या [E] पक्ष की है। मानव शरीर में रोग अथवा व्याधि उत्पन्न करने वाले अनेक कारण हो सकते हैं। इस प्रकार के कारणों के लिए [2P] पक्ष के रूप में अनुसूची में 2.84 व 2.85 पर एकलों का प्रावधान है।

[E] पक्ष के [2P] पक्ष की संख्या को बिना किसी संयोजक चिन्ह से सीधा जोड़ दिया जाता है।

Example: Kidney disease

L15:4

5 = Public health and hygiene (good health)- इस एकल संख्या के अन्तर्गत मनुष्य के स्वास्थ्य से सम्बन्धित सभी पक्षों का उल्लेख है। यही कारण है इसके अन्तर्गत जन्म एवं मृत्यु सम्बन्धी आँकड़े, सरकार द्वारा जन स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद वस्तुओं पर नियन्त्रण, व्यापक रूप से फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम आदि विषयों को सम्मिलित किया है।

51 Vital Statistics, 523 Food, Beverage के अन्तर्गत दिये गये निर्देश के अनुसार इसे मुख्य वर्ग E Chemistry तथा F Technology के [P] पक्ष की एकल संख्याओं से विभाजित किया जा सकता है।

Examples: State control on edible oil

L: 523943

54 Prevention of disease in general- 54 [E] पक्ष की एकल संख्या का प्रयोग व्यापक रूप से फैलने वाली बीमारियों जैसे हैजा, चेचक, मलेरिया, इत्यादि से रोकथाम के लिए ही किया जाना चाहिए अन्य साधारण बीमारियों के लिए नहीं। 54 एकल संख्या को [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease की भाँति विभाजित करना होता है।

Examples: Cholera control programme

L25:54251

इस प्रकार–

Malaria control programme

L35:54261

577 Clothing को M7 Textiles के अनुसार विभाजित करने के निर्देश दिये गये हैं–

Examples: Cotton clothes for Human health

[BC] [E] [2P] [M]

L : 577; 1

[2E] [3P] पक्ष–[2E][3P] प्रावधान विशेष रूप से 4 Disease के लिए हुआ है। इसे Handling Facet भी कहा जाता है इसमें–

[2E] [3P] का प्रयोग 4 Disease के लिए किया गया है अतः

इसका प्रयोग [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease के बिना कभी नहीं हो सकता। वर्गांक बनाते समय [2E] [3P] पक्ष से पूर्व [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Disease का प्रयोग अनिवार्य है। बिना रोग के प्रतीक एकल संख्या के [2E][3P] पक्ष का प्रयोग करना गलत है।

Examples: Treatment of neck cancer through Radio Therapy

L17 : 47257:625

X-ray diagnosis of bone fracture

L82: 477: 6253

Surgery of appendix

L27219: 415:7

Symptoms of Jaundice

L291 : 453:3

वैशिष्ट्य एवं प्रणालियां (Special and Systems) का विश्लेषण– 3[M] पक्ष [2E] [3P] पक्ष के बाद यदि [M] का प्रयोग किया जाता है तो वह [3M] पक्ष कहलाता है। इस मुख्य वर्ग में [3M] का प्रयोग [2E] [3P] पक्ष की एकल संख्याओं के लिए औषधि की विधियों में किसी विशेष प्रकार के पदार्थ का उपयोग दर्शाने के लिए किया जाता है। उदाहरणार्थः–

Treatment of Fungus Disease by saline water injection=

L:433:616;41171

यदि (SmF) तथा (SP) पक्ष एक साथ हो तो सबसे पहले (SmF) उसके बाद (SP) तथा बाद में मुख्य वर्ग के [P][E][2P] तथा [2E][3P] पक्षों का प्रयोग करना चाहिए।

(SmF), (SpF) तथा [P] पक्षों के लिए संयोजक चिन्ह (,) का प्रयोग किया जाता है।

Examples: Unani Treatment of ear disease of children

(SmF) (SpF) [P] [E] [2E]

LD, 9C, 183 : 4:6

यहाँ पर दोनों का प्रयोग (,) संयोजक चिन्ह लगाकर हुआ है। इसके बाद, [Comma (,)] से ही [P] पक्ष की एकल संख्या 183 = ear को जोड़ते हैं।

इस प्रकार–

Homeopathy Treatment of the eye disease of old age
LL, 9E, 185: 4:6

Public hygiene during war times by Ayurvedic Methods
LB, 9V : 55

इसी प्रकार–

यदि दो System का एक साथ प्रयोग करना हो तो सामान्य पद्धति (General system) का प्रयोग किया जायेगा।

Examples: Treatment of skin diseases by Homeopathy and Naturopathy

LA, 87: 4:6

Allopathy का आजकल अधिक प्रचलन होने के कारण उसे डॉ. रंगानाथन ने Favoured system माना है अतः Allopathy treatment के लिए L मुख्य वर्ग के प्रयोग का प्रावधान है।

Examples: Treatment of Heart diseases by allopathy medicine

L32: 4:6

Treatment of blood infection cure by allopathy

L35 : 42:6

14.2.9 मुख्य वर्ग औषधि प्रभाव विज्ञान (LX) का वर्गांक निर्माण

औषधि प्रभाव विज्ञान
LX=PHARMACOGNOSY

मुख्य वर्ग औषधि प्रभाव विज्ञान के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की औषधियों के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है। ये औषधियाँ पशुओं, वनस्पतियों तथा खनिज से प्राप्त की जाती है।

इस मुख्य वर्ग को परम्परागत वर्गों (Canonical Classes) में बाँटा गया है–

LX3 Pharmacology (औषधि विज्ञान)–

इस वर्ग के अन्तर्गत औषधियों तथा उनसे होने वाले प्रभावों का अध्ययन किया गया है–

पक्ष–परिसूत्र–LX3[P]:[E][2P]

Facet	Term	(In) By
[P]	Substance	Enumeration
[E]	Action (Effect)	Enumeration
[2P]	Organ	(SD)

[P] पक्ष– इस मुख्य वर्ग में [P] पक्ष की एकल संख्यायें E Chemistry मुख्य वर्ग के [P] पक्ष से लेने के निर्देश हैं।

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत औषधियों के प्रभावों का उल्लेख हैं। [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष को नियम भाग में दिये गये निर्देशानुसार विषय विधि (SD) से प्राप्त करना होगा।

Examples: After effects of antibiotics

LX3:91

Irritation in Skin

LX3:5(L87)

Benzenoid depression in kidneys.

LX371:3(L51)

इन उदाहरणों में [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त किया है। विषय विधि से मानव शरीर के उन अंग प्रत्यंगों से सम्बन्धित एकल संख्याओं को प्राप्त किया गया है जिन पर औषधि का प्रभाव पड़ रहा है जिसे L Medicine मुख्य वर्ग से लाते हैं।

LX5 Pharmacopoeia (औषधि कोश)

परिसूत्र– LX5 [P], [P2]

इसमें औषधियों की मानकसूची (Standard List for Drugs) सम्बन्धी विषयों को दिया गया है–

Faect	Term	(In) By
[P]	Nation (राष्ट्र)	By GD (Geographical Division)
[P2]	Kind (प्रकार)	By Enumeration

[P] पक्ष– नियम भाग–I के निर्देशानुसार इस प्रामाणिक वर्ग के [P] पक्ष के लिए भौगोलिक विधि (Geographical Division)

से एकल संख्या प्राप्त करने का प्रावधान है।

[P2] पक्ष– इस पक्ष का अनुसूची में कुल 3 एकल संख्याओं का उल्लेख है।

Examples: An-offical source-book of Indian drugs

LX544,2

LX8 Pharmacy- इसका न तो कोई परिसूत्र दिया है और न ही कोई उपविभाजन।

Examples: Pharmacy: A theory

LX8

Indian Pharmacy

LX8.44

14.3 सारांश

इस प्रकार इस इकाई में आपने यह जाना कि Systems और Specials क्या होते हैं, इनके प्रयोग के द्वारा वर्गांकों का निर्माण कैसे किया जाता है। इसी इकाई में आपने मुख्य वर्ग जीव विज्ञान (G) से लेकर औषधि प्रभाव विज्ञान (LX) तक के वर्गांकों के निर्माण सम्बन्धी प्रक्रिया को समझा। इस इकाई में आपने द्वितीय एवं तृतीय Round उर्जा के बारे में भी ज्ञानार्जन किया एवं उसके प्रयोग के बारे में जानकारी एकत्र की।

14.3 अभ्यास हेतु प्रश्न

निम्न के लिए वर्गांक बनाइए

(1) Cytology Genetics and Molecular Biology.

(2) Principles of Genetics.

(3) Animal Ecology: An Introduction.

(4) Nucleus Microphotography.

(5) Tissue Structure.

(6) Tropical Ecology.

(7) Mineralogy of Sulphur.

(8) Artificial production of sedimentary rocks.

(9) Classification of Gold.

(10) Artificial production of Coal.

(11) Underground water in Ganges Delta.

(12) Surface transport in Sulphur Mines.

(13) Copper pits

(14) Lighting arrangemnt in mines in Pakistan.

(15) Drilling for oils.

(16) Improvement of califlower.

(17) Use of Sugarcane.

(18) Transplanting of violet flower whole plant.

(19) Cold storage of mangos.

(20) Parmal Rice in USA.

(21) Transplanting Rose Stems

(22) Chemical effect of Sulphur on Plant tissues.

(23) Nitrogen Metabolism in plants.

(24) Paleobotany

(25) Reproduction in flowering plants

(26) Primulates leaf morphology

(27) Aves Physiology.

(28) Animal Kingdom of Nepal.

(29) Nervous disease of flying animals.

(30) Invertebrate Practical Zoology.

(31) Courting among primates.

(32) Fish Breeding.

(33) Corn Feeding to Dog.

(34) Storing of Starch Feed for Cat.

(35) Cold Storage of Buffalo Cheese

(36) Egg of fowl.

(37) Cow's milk.

(38) Fever law of good health.

(39) Physical fitness of human body.

(40) Thermotherapy of chicken-pox in embryo in Unani System.

(41) Stomach pain by fast-cure.

(42) Treatment of liver inflammation by regulation of diet.

(43) Heart depression by Potassium.

(44) Acidic effects on human skin.

(45) Intestine depression by Magnesium chloride.

(46) Eastern Pharmacist in India.

इकाई -15 : मुख्य वर्ग M से Q तक वर्गांक निर्माण

संरचना

15.0 उद्देश्य

15.1 विषय प्रवेश

15.2 वर्गांक निर्माण

15.2.1 मुख्य वर्ग उपयोगी कलाएं (Useful Arts) (M) का वर्गांक निर्माण

15.2.2 मुख्य वर्ग आध्यात्मिक अनुभव एवं रहस्यवाद (Spiritual Experience and Mysticism) (Δ) का वर्गांक निर्माण

15.2.3 मुख्य वर्ग ललित कलाएं (Fine Arts) (N) का वर्गांक निर्माण

15.2.4 मुख्य वर्ग साहित्य (Literature) (O) का वर्गांक निर्माण

15.2.5 मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान (Linguistics) (P) का वर्गांक निर्माण

15.2.6 मुख्य वर्ग धर्म (Religion) (Q) का वर्गांक निर्माण

15.3 सारांश

15.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

15.0 उद्देश्य

इकाई 13 और 14 में आपने मुख्यवर्ग a से लेकर मुख्य वर्ग L तक के विषयों हेतु वर्गांक निर्माण के बारे में अध्ययन किया। इसी क्रम में इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्न बातें जानने में सक्षम होंगे।

(1) मुख्य वर्ग M से Q तक के लिए वर्गांक निर्माण कैसे करें।

(2) मुख्य वर्ग साहित्य के लिए भाषा के वर्गांक कैसे बनाएं एवं कहाँ से प्राप्त करें।

15.1 विषय प्रवेश

जैसा कि आपको ज्ञात है कि द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति वैश्लेषी-संश्लेषणात्मक वर्गीकरण पद्धति है। इस पद्धति में प्रत्येक विषय के लिए अलग से पक्ष परिसूत्र दिये गये हैं उन्हीं के आधार पर विषय से सम्बन्धित पुस्तकों का वर्गांक निर्माण किया जाता है। इन वर्गांकों के निर्माण के समय मूलभूत श्रेणियों के विभिन्न स्तरों एवं आवर्तनों से भी आपका परिचय होगा। इस इकाई में आप मुख्य वर्ग M से लेकर Q तक के वर्गांक निर्माण प्रक्रिया को आसानी से समझ सकेंगे।

15.2 वर्गांक निर्माण

15.2.1 मुख्य वर्ग उपयोगी कलाएं (M) का वर्गांक निर्माण

उपयोगी कलाएँ

M=USEFUL ARTS

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वे सभी विषय सम्मिलित हैं जिनका सम्बन्ध उपयोगी कलाओं से है। डॉ. रंगानाथन के शब्दों में एक Hold-all Class है क्योंकि इसके अन्तर्गत उपयोगी कलाओं एवं खेलकूद से सम्बन्धित जितने भी वर्ग होते हैं या हो सकते हैं, को सम्मिलित किया गया है।

उदाहरण– M1- Book productin and description as an art

M1435 Art of offset printing, आदि।

M7- Textiles, MJ7- Rope making तथा MA- Home and Hotel Science का अलग से परिसूत्र दिया गया है।

अनुसूची में संशोधन– M मुख्य वर्ग की अनुसूची में पृष्ठ 2.88 पर M3 Domestic Science से M98 Packaging तक दी गयी एकल संख्याओं को निरस्त करके उसके स्थान पर पृष्ठ 27 पर दी गई परिशिष्ट (Annexure) मे संशोधित किये हुए वर्गांक प्रस्तुत किये गये हैं इनमें केवल M7 Textile का पक्ष परिसूत्र दिया गया है–

M7 Textiles पक्ष परिसूत्रः M7 [P] ; [M] : [E] [2P]- M7 Textile का संशोधन पक्ष–परिसूत्र पृष्ठ 27 पर परिशिष्ट में है। इसके अन्तर्गत Textile से सम्बन्धित [P] तथा [M] पक्ष की एकल संख्याएँ निम्न हैं–

[P]	**पक्ष**		**[M] पक्ष**
1.	Yarn	1.	Cotton
2.	Rope	2.	Wool
3.	Cloth	3.	Silk
4.	Knit fabric	4.	Flax
5.	Carpet	5.	Coir
		6.	Hemp
		7.	Jute
		8.	Sisal
		9.	Other similar fibres
		998	Metal

Examples: Manufacturing of woolen cloth.

[P] [M]

M73 ; 2

Silk Yarn Manufacture

M71; 3

Cotton Carpet

M75;1

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष की एकल संख्याओं को दो भागों में बाँटा गया है–

(a)–Foci in [E] if no [P] अर्थात् [P] पक्ष उपस्थित न हो तो निम्न [E] पक्ष का उपयोग किया जायेगाः–

1. Sorting
2. Ginning
3. Bailing
4. Scouring
5. Carding
6. Oiling
7. Washing

Examples: Sorting of Cotton

[MC] [M] [E]

M7; 1: 1

Washing of wool

M7; 2:7

Carding of hemp

M7; 6:5

(b)- Foci in [E] if [P]–निर्देशानुसार [P] पक्ष के उपस्थित होने पर निम्न [E] पक्ष का प्रयोग किया जायेगाः–

1. Spinning
2. Twisting
3. Weaving
4. Knitting
5. Bleaching
6. Sizing
7. Dyeing
8. Printing

इसके बाद अन्य उपयोग में आने वाली कलाओं के वर्गांक प्रस्तुत किये गए हैं जो निम्न हैं–

M8 Dress making

M92 Masonry

M95 Photography

M97 Leather industry

M98 Packaging

Examples: Spinning of silk cloth

[P] [M] [E]

M73; 3:1

Dyeing of jute carpet

M75; 7:8

Weaving of woollen yarn

M71; 2:3

MA-Home and Hotel Science- MA Home and Hotel Science का पक्ष–परिसूत्र परिशिष्ट पृष्ठ 25 पर दिया है जिसके अन्तर्गत केवल [P] पक्ष की ही व्यवस्था है–

2. Maintenance
3. Cooking
4. Serving
5. Beauticulture

Examples: Cooking Art

MA3

Beauty Culture

MA7

Maintenance of

MA2

MJ7 Rope making- MJ7 Rope making पक्ष का परिसूत्र–MJ7 [P]: [E][2P] है।

[P] पक्ष– इस पक्ष में रस्सी बनाने के काम में आने वाले विभिन्न पदार्थों का उल्लेख है।

A Coir Rope

MJ72

Metal Rope

MJ798

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत नियम वे ही हैं जो M7 Textile में हैं अर्थात् MJ7 का [E] [2P] पक्ष M7 के समान है। इसके अतिरिक्त कुछ प्रामाणिक वर्गांकों का भी उल्लेख है। इन प्रामाणिक वर्गांको डॉ. रंगानाथन ने विषय विधि (SD) की सहायता से बनाया है।

MNR Muscial instruments making

MV4 Science of war

MV45 Naval Science

MV48 Airfight

MX411 Traffic regulation in road, आदि।

Example: Sizing of metal rope

[P] [E]

MJ798:6

Dyeing of sisal rope

MJ 76:8

MY– Physicial training, sports, games, use of leisure, hobby– इस वर्ग में विभिन्न खेलों को लिया गया है, खेलों की सम्पूर्ण तालिका अनुसूची में दी गई है।

MY2 Athletics

MY2131 Tennis

MY5 Animal racing

MY6 Hunting

Example: Bird hunting MY68

Cricket MY2141

15.2.2 मुख्य वर्ग अध्यात्मिक अनुभव एवं रहस्यवाद (Δ) का वर्गांक निर्माण

आध्यात्मिक अनुभव एवं रहस्यवाद

Δ=SPIRITUAL EXPERIENCE AND MYSTICISM

पक्ष–परिसूत्र– Δ[P],[P2]:[E][2P]

ज्ञान जगत् में आध्यात्मिक ज्ञान तथा रहस्यवाद ऐसी शाखा है, जिसका विश्व की किसी वर्गीकरण पद्धति में उल्लेख नहीं है। चूँकि डॉ. एस. आर. रंगानाथन से ज्ञान जगत का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं रहा इसका परिणाम है कि द्विबिन्दु वर्गीकरण

पद्धति में इसे एक मुख्य वर्ग के रूप में प्रस्तुत करना उनकी अनूठी विद्वता है। वे ज्ञान के मार्गों के कोने कोने को झांक आये थे तथा उन्होंने उस ज्ञान को अमरत्व प्रदान किया। डा. रगनाथन का मत था कि एक समय आयेगा जब अन्य वर्गीकरण प्रणालियों में भी इसे ज्ञान की एक प्रमुख शाखा के रूप में स्थान दिया जायेगा।

परिसूत्र की व्याख्या–Δ[P], [P2]:[E][2P]

Facet	Term	(In) By
[P]	Religion	Enumeration
[P2]	Entity	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष–[P] पक्ष की एकल संख्याएँ मुख्य वर्ग Q Religion के [P] पक्ष के समान है तथा अनुसूची में उल्लिखित है।
Example: Hindu spiritual experience

Δ 2

Buddhistic mysticism

Δ 4

[P2] पक्ष– [P] पक्ष के अन्तर्गत उन सत्ताओं (Entities) को दिया गया है जिसका उल्लेख आध्यात्मिक एवं रहस्यवाद की पुस्तकों में दिया होता है, जैसे–ईश्वर, परियाँ, प्रेतात्मा, सूर्य, चाँद, तारे, पृथ्वी आदि।

Angels in Hindu Mysticism Δ2,12

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष में विभिन्न प्रकार के रहस्यवाद से सम्बन्धित प्रकृतियों व क्रिया–कलापों (Practices) को लिया गया है, जैसे–हस्तरेखा, विज्ञान,फलित ज्योतिष, शगुन, लक्षण, भविष्यवाणी आदि। जैसे–

Example: Δ:36 Meditation

Δ:8 Occultism

Example: Voice of devils

[P][E][2P]

Δ, 12: 893

Breath control in Hatha Yoga

Δ22:34

15.2.3 मुख्य वर्ग ललित कलाएं (N) का वर्गांक निर्माण

ललित कलाएं
N=FINE ARTS

N-Fine Arts मुख्य वर्ग ऐसे कलाओं से सम्बन्धित है जिसमें सौन्दर्य हों, जिन्हें देखकर या सुनकर आनन्द की अनुभूति होती हो। इस मुख्य वर्ग को डा. रंगनाथन ने 22 प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया है। इन सब प्रामाणिक वर्गों में से जिनको आवश्यक समझा गया है उसका अलग से पक्ष परिसूत्र भी दिया है।

NA Architecture (वास्तुकला)

पक्ष–परिसूत्र– NA [P],[P2][P3],[P4]:[E]

Facet	Term	(In) By
[P],[P2]	Style	(GD) and (CD)
[P3]	Utility	Enumeration
[P4]	Part	Enumeration
[E]	Technique	Enumeration

परिसूत्र की व्याख्या– [P] तथा [P2] दोनों को मिलाने से Style Facet बनता है तथा परिसूत्र के अनुसार इन दोनों को (GD) और (CD) से प्राप्त किया जायेगा।

Example: Indian architecture = NA44

यहाँ पर 44[P] पक्ष है जिसे (GD) भौगोलिक विधि द्वारा प्राप्त किया है।

Mughal architecture = NA44, J

यहाँ पर [P] पक्ष Geographical Device से लिया गया है और [P2] पक्ष कालक्रम विधि (Chronological Division) से प्राप्त किया है।

इसी प्रकार–

Indian architecture of Victoria Era

NA44, M

[P2] पक्ष के लिए J तथा M शताब्दी प्रतीक एकल संख्याएँ हैं। इसी प्रकार इंग्लैण्ड का 11वीं शताब्दी का काल नारमन काल था अतः

Norman England Acrhitecture

NA 561, E

[P3] पक्ष– वास्तुकला के अन्तर्गत भवन निर्माण कला आती है। इस पक्ष की एकल संख्या 2 Building है। इसके अन्तर्गत 22 Library building है जिसे 2 प्रमुख वर्ग Library Science के [P] पक्ष की भाँति विभाजित करने के निर्देश अनुसूची में दिये हैं।

Example: National library architecture

NA, 2213

Indian Architecture of library building of mediaeval Period.

NA44,J22

यदि अन्य भवन के वास्तुकला का वर्गांक बनाना हो तो विषय विधि (SD) की सहायता से वर्गांक बनाने का प्रावधान है, जैसे–भवन, होटल, म्यूजियम, कार्यालय भवन आदि का उल्लेख है।

Architecture of Hindu temples in persian style

NA45,C9(Q2)

प्रस्तुत उदाहरण में [P3] पक्ष की एकल संख्या 9 को (SD) के द्वारा विभाजित कर Hinduism के लिए वर्गांक Q2 को प्राप्त किया है।

[P4] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत भवन के विभिन्न भागों से सम्बन्धित तथ्यों का उल्लेख है। इसे संयोजक चिन्ह (,) कोमा से जोड़ने का प्रावधान है।

Example: Floor of the Italian residential building.

NA52, 3,3

Door of the Japanese castle

NA42,37,8

[E] पक्ष– इस प्रामाणिक वर्ग के [E] पक्ष में विभिन्न प्रकार के भवनों के स्थान निर्धारण, बनावट, योजना, नमूने आदि से सम्बन्धित तथ्यों का उल्लेख है।

Example: Elevation of dome of city dwelling Greek style

NA51,35, 65:4

Plans of Mughal hospital ceilings

NA44,J9(L),633:3

NB Town Planning (शहर निर्माण योजना)

पक्ष–परिसूत्र–NB[P],[P2][P3],[P4]:[E]

इस प्रामाणिक वर्ग के [P][P2] पक्ष NA Architecture के

समान है। [P3] तथा [P4] पक्षों को अनुसूची से परिगणना द्वारा प्राप्त किया जाता है। [E] पक्ष NA Architecture के समान है।

Example: Location of public baths in Mughal town.

NB44,J3,62:1

Planning for theater in contemporary Indian villages.

NB44,P1,691:3

इन उदाहरणों में [P] पक्ष की एकल संख्या (GD) से प्राप्त की गई है, इसके बाद [P2] एवं [P3] पक्ष है तत्पश्चात [P4] पक्ष की एकल संख्याएँ हैं। [E] पक्ष की एकल संख्याएँ (1,3) 1 = Location तथा 3 = Plans की हैं जो अनुसूची के [E] पक्ष से प्राप्त की गई हैं।

ND Sculphture (स्थापत्य कला)

पक्ष–परिसूत्र–ND[P],[P2][P3];[M]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P],[P2]	Style	(GD) amd (CD)
[P3]	Figure	Enumeration
[M]	Material	Enumeration
[E][2P]	Technique	Enumeration

इस प्रामाणिक वर्ग में [P] [P2] Style Facet हैं, यह पक्ष प्रामाणिक वर्ग NA Architecture के समान है।

[P3] पक्ष– इस पक्ष में जिस स्वरूप या आकृति में स्थापत्य कला की अभिव्यक्ति हुई है उसका उल्लेख इस प्रामाणिक वर्ग में है।

Example: Greek sculpture of a human bust

[P] [P3]

ND58, 18.

M पक्ष– [M] पक्ष के अन्तर्गत स्थापत्यकला के लिए जिन पदार्थों का उपयोग हुआ है उनका समावेश है, जैसे–लकड़ी, हाथी के दाँत, पत्थर, संगमरमर आदि।

Example :-

Buddhistic Stone Iconography

ND44,C9(Q);4

[E] [2P] पक्ष– इसका उल्लेख अनुसूची में है।

Example :-

Design of muntain in Bronze.

ND,216;5:4

NQ Painting (चित्रकला)

पक्ष–परिसूत्र–[P],[P2][P3];[M]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P],[P2]	Style	(GD) amd (CD)
[P3]	Figure	Enumeration
[M]	Material	Enumeration
[E][2P]	Technique	Enumeration

परिसूत्र की व्याख्या–

[P] व [P2] पक्ष–यह Style Facet है जो प्रामाणिक वर्ग NA Architecture के समान है।

[P3] पक्ष–यह पक्ष प्रामाणिक वर्ग ND Sculpture के समान है।

[M] पक्ष–[M] पक्ष का उल्लेख अनुसूची में दिया गया है।

[E] [2P] पक्ष–[E] [2P] पक्ष का उल्लेख भी अनुसूची में है।

Example :-

Oil colour Painting of earth on stone in Britain

NQ56,21;4:4

NR Music (संगीत कला)

पक्ष परिसूत्र–NR[P],[P2][P3]; [M]: [E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P],[P2]	Style	(GD) amd (CD)
[P3]	Music	Enumeration
[M]	Instrument	Enumeration
[E][2P]	Technique	(To be worked out)

परिसूत्र की व्याख्या–

[P], [P2] पक्ष– यह पक्ष NA Architecture के [P] व [P2] पक्ष से लाना है।

[P3] पक्ष– इस प्रमाणिक वर्ग का [P3] पक्ष अनुसूची में प्रस्तुत किया गया है।

[M] पक्ष– इस पक्ष का अनुसूची में उल्लेख है।

[E] [2P]पक्ष– यह पक्ष अनुसूची में प्रस्तुत नहीं है। इस पक्ष के अन्तर्गत संगीत की तकनीकियों का अध्ययन होता है।

Example: Jain music

[P]

NR44

Persian music

NR45, C

Harmonium in Indian dramatic music.

NR44,91;291

15.2.4 मुख्य वर्ग साहित्य (O) का वर्गांक निर्माण

साहित्य

O=LITERATURE

पक्ष–परिसूत्र–O[P],[P2][P3],[P4]

साहित्य विषय के अन्तर्गत विभिन्न भाषाओं के साहित्य को वगीकृत किया जाता है। जो विभिन्न रूपों में हमारे सामने है, जैसे–काव्य, गद्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि। विभिन्न रचनाओं तथा कृतियों से सम्बन्धित पुस्तकों का वर्गीकरण इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत किया जाता है।

व्याख्या परिसूत्र–O[P],[P2![P3],[P4]

Facet	Term	(In) By
[P]	Language	Enumeration
[P2]	Form	Enumeration
[P3]	Author	(CD) Minimum of three digits or Author born of the 1800, CD will be in one digit there after AD will be used
P4	Work	Enumeration

[P] = यह पक्ष Language Facet है। साहित्य में भाषा का अर्थ उस भाषा से है जिसमें मूल कृति लिखी गयी हैं। इस पक्ष की एकल संख्या के लिए भाषा सारणी (Language Isolate Chapter 5, Page 2.26) से प्राप्त करने के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं।

[P2] पक्ष– साहित्य को लिखने के लिए रूप (Form) की आवश्यकता होती है। बिना रूप (Form) के साहित्य की कृति की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने इसे Form Facet [P2] के रूप में सामने रखा है। साहित्य को व्यक्त करने के लिए अनेक विधाएँ हो सकती हैं, जैसे–कविता, नाटक उपन्यास, गद्य, कहानी, लेख, निबन्ध आदि। साहित्य की ये विधाएँ ही रूप–पक्ष है। इस पक्ष की एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख हैं।

परिसूत्र के अनुसार [P] [P2] पक्ष के लिए संयोजक चिन्ह [Comma] (,) अल्पविराम का प्रयोग करना है।

Example :-

Hindi drama 0152,2

English fiction 0111,1

[P3] पक्ष– यह लेखक (Author Facet) है। परिसूत्र के अनुसार लेखक पक्ष के लिए एकल संख्या लेने के लिए लेखक के जन्म वर्ष को आधार माना जाता है। जो कालक्रम विधि (CD) के द्वारा तीन अंकों (Three digits) की प्रतीक एकल संख्या को प्राप्त किया जाता है जो पृष्ठ 2.7 पर उल्लिखित है।

Examples:

Munshi Prem Chand (born 1880 AD = M80)

Maxim Gorky (born 1882 AD = M82)

Kalidas (born 400 AD = D40)

Form Facet [P2] तथा Author Facet [P3] के बीच में किसी भी संयोजक चिन्ह का प्रयोग नहीं हुआ है। अतः दोनों की एकल संख्या बिना किसी संयोजक चिन्ह के जोड़ दी जायेगी।

Example: Fiction of Munshi Prem Chand (born 1880)

O152, 3M80

Stories of Amrita Pritam (born 1919)

O153, 3N19

Ramcharit Manas by Tulsidas (born 1534)

O152, 1J34

Alphabetical Device (वर्णक्रम विधि) का प्रयोग लेखक एकल प्राप्त करने के लिए– [P3] लेखक पक्ष में निर्देश दिये गये हैं कि यदि लेखक की जन्म तिथि ज्ञात न हो तो 1800 के बाद जन्में लेखक की शताब्दी का अनुमान लगाकर शताब्दी अंक (Century digit) को प्रथम अंक के रूप में प्रयोग किया

जाता है। बाद का अंक वर्णक्रम विधि (AD) के द्वारा प्राप्त किया जाता है।

शताब्दी अंक के साथ लेखक के नाम का प्रथम अक्षर बड़े अक्षरों (Capital letters) के रूप में सीधा जोड़ दिया जाता है यदि आवश्यकता पड़े तो लेखक के नाम का प्रथम, प्रथम दो व प्रथम तीन अक्षर भी प्रयोग में लाये जा सकते हैं। जैसे–

Example: Dramas of Bernard Shaw

[P] [P2] [P3]

0111, 2 MB

यहाँ पर Bernard Shaw की जन्म तिथि ज्ञात नहीं है इनके जन्म की शताब्दी (1800-1899) ज्ञात कर उसका शताब्दी अंक M प्रयोग में लाया गया है इसके साथ दूसरा अंक B का प्रयोग किया गया है जो Bernard Shaw के नाम का प्रथम अक्षर है।

[P4] पक्ष– यह रचना अथवा कृति पक्ष से सम्बन्धित पक्ष है। पुस्तकालय में लेखक की प्रत्येक कृति को उचित क्रम में व्यवस्थित करने के लिए साहित्य के वर्गांक में एक क्रम संख्या दी जाती है। ताकि एक लेखक द्वारा एक ही रूप में रचित सभी कृतियों को एक साथ रखा जा सके इसे कृति को Work Number कहा जाता है। अनेको लेखकों की एक से अधिक रचनाएँ हो सकती है उन्हें Shelves पर व्यवस्थित करने की दृष्टि से इस पक्ष [P4] का विशेष महत्त्व है।

[P4] Work Number पक्ष के लिए संयोजक चिन्ह [Comma (,)] का प्रावधान है। कृति पक्ष के लिए कृति संख्या (Work Number) को विशेष प्रकार के फार्मूला द्वारा प्राप्त किया जाता है–

(1) जिन लेखकों अथवा कवियों ने 8 से कम रचनाएँ लिखी हैं उनकी रचनाओं को क्रमशः 1,2,3..................8 तक अंकों के रूप में लिखा जायेगा।

Examples: Sur Sagar by Surdasji (Hindi poet, born in 1478) His Ist work

[P] [P2] [P3] [P4]

O152, 1 I78, 1

सूरदास जी की काव्य रचनाएँ 8 से कम है अतः इनको रचनाओं को क्रमशः 1,2,3 अंक प्रदान किया जायेगा। सूरसागर सूरदास की पहली काव्य कृति है अतः 1 अंक प्रदान किया है।

(2) यदि किसी लेखक ने आठ से अधिक रचनाएँ लिखी हैं और 64 से कम तो उनकी कृति संख्या (work Number) प्राप्त करने के लिए एक दूसरा फार्मूला प्रयोग में लाया जाता है यह संख्या दो अंकों (Two digits) से मिलकर बनता है।

इस प्रकार रचनाओं की संख्या 64 हो सकती है। अतः 64 रचनाओं को 8 भागों में विभाजित कर दिया जाता है इस प्रकार प्रत्येक भाग 8 रचनाओं का एक ग्रुप बन जाता है। इन अंकों को दो अंकों में लिखा जाता है। पहला अंक ग्रुप का सूचक होता तथा दूसरा अंक इस ग्रुप में उस रचना के क्रम का सूचक–

1	2	3	4	5	6	7	8	Ist Group
11	12	13	14	15	16	17	18	Work No.
9	10	11	12	13	14	15	16	IInd Group
21	22	23	24	25	26	27	28	Work No.
17	18	19	20	21	22	23	24	IIIrd Group
31	32	33	34	35	36	37	38	Work No.
25	26	27	28	29	30	31	32	IV Group
41	42	43	44	45	46	47	48	Work No.
33	34	35	36	37	38	39	40	Vth Group
51	52	53	54	55	56	57	58	Work No.
41	42	43	44	45	46	47	48	VI Group
61	62	63	64	65	66	67	68	Work No.
49	50	51	52	53	54	55	56	VIIth Group
71	72	73	74	75	76	77	78	Work No.
57	58	59	60	61	62	63	64	VIIIth Group
81	82	83	84	85	86	87	88	Work No.

इस प्रकार कुल 64 रचनाओं के लिए 8 ग्रुप बनेंगे प्रत्येक ग्रुप में 8रचनाएँ होंगी। उपर्युक्त उदाहरण के अनुसार रचनाओं को प्रतीक चिन्ह दो अंकों (Two digits or double figures) में लिखा जाता है। यदि प्रथम रचना है तो न. 1 न लिखकर 11 न लिखा जायेगा (जैसा कि तालिका द्वारा दर्शाया है)। इसी प्रकार यदि लेखक की 16 वीं रचना है तो उसे Work No. 28 दिया जायेगा।

Example: Kavi Keshavdas by Kavipriya (born 1560) (His IInd work

O152, 1J60,12

Meghdoot by Kalidas (born 400 AD, his 14th work)

O15, 1D40, 26

Kafan by Munshi Prem Chand (born 1880, his 25th work)

O152, 3M80, 41

(3) 64 से अधिक किन्तु 512 से कम रचनाओं के लिए भी दूसरा तरीका है इसे 3 संख्याओं (Three digits) में लिख जायेगा। इस फार्मूले के अनुसार प्रथम संख्या मुख्य ग्रुप की सूचक दूसरी संख्या अधीनस्थ ग्रुप तथा तीसरी संख्या उस रचना की सूचक होगी जो उस ग्रुप के अन्तर्गत आती है।

Example: Julius Caesar by William Shakespeare
(born 1564, his 77th work)
O111, 3J64, 125

15.2.5 मुख्य वर्ग भाषा विज्ञान (P) का वर्गांक निर्माण

भाषा विज्ञान

P=LINGUISTICS

पक्ष–परिसूत्र–P[P],[P2][P3]:[E][2P]

भाषा विज्ञान के अन्तर्गत भाषा सम्बन्धित जितने भी पहलू होते हैं सबका अध्ययन किया जाता है, जैसे– भाषा, उनके स्वर–व्यंजन व्याकरण, उच्चारण, वाक्य विन्यास, आदि।

परिसूत्र विश्लेषण–P[P],[P2][P3]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Language	Eumeration
[P2]	Variant, Stage	Enumeration (CD)
[P3]	Element	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– [P] पक्ष भाषा से सम्बन्धित है। इनके एकल संख्या के लिए Chapter 5 (Language Isolate) से Language की एकल संख्या को लाया जाता है।

Example: English language
P111

[P2] पक्ष– [P2] पक्ष के अन्तर्गत Variant रूप में Slang, Dialect रूप में तथा Jargon से सम्बन्धित एकल संख्या दी गई है।

Example: Middle English P111,E

[P] पक्ष के अन्तर्गत भाषा है तथा [P2] पक्ष उस भाषा के सोपान (Stage) का सूचक है। भाषा के सोपानों को शताब्दी अंक (Century digit) के रूप में कालक्रम विधि (CD) से प्राप्त किया जाता है। भाषा के किसी विशिष्ट सोपान का आरम्भ शताब्दी अंक उस काल की प्रतीक संख्या है।

यदि कोई ग्रन्थ भाषा के Variant–Dialect, Slang अथवा Jargon से सम्बन्धित हो तो Language Isolate के साथ [P2] पक्ष के रूप में उपयुक्त Variant एकल संख्या का योग होगा।

Example: Dialects of English

P111, 9D

Cambridge dialect of English

P111,9D56117

यहाँ पर एकल संख्या 9D dialect [P2] पक्ष की है जिसे Geographical Division से 56117 = Cambridge से विभाजित किया गया है। Cambridge वह भौगोलिक क्षेत्र है जहाँ यह Dialect प्रचलित है।

9J Jargon की प्रतीक एकल संख्या के बाद सम्बन्धित भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या लगानी चाहिए। Jargon के आरम्भ होने की प्रतीक एकल संख्या को शताब्दी अंक (Century digit) के रूप में लाया जा सकता है। भौगोलिक एकल संख्या व शताब्दी अंक को संयोजक चिन्ह [Comma (,)] से संयोजित करना चाहिए।

Example: Anglo Indian Jargon

P111, 9J44, L

यदि किसी पुस्तक की आख्या में Variant तथा Stage दोनों का उल्लेख हो रहा है तो Stage एकल संख्या को पहले लायें, बाद में Variant एकल संख्या को लगाया जाता है, दोनों को अलग करने के लिए Comma (,) का प्रयोग होता है।

Example: Old Himachali Hindi

P152, D,9D4442

[P3] पक्ष– यह पक्ष element facet है। इस **पक्ष** में भाषा के मूलभूत तत्त्वों का उल्लेख है। जैसे–अक्षर,शब्द, स्वर, व्यंजन, संज्ञा, सर्वनाम, विश्लेषण, क्रिया, समुच्चय बोधक व विस्मय बोधक पद, मुहावरे, वाक्य विराम चिन्ह आदि आते हैं। परिसूत्र के अनुसार [P2][P3] दोनों बिना किसी योजक चिन्ह के जोड़े जायेंगे।

Example: Vowels of old French language

[P][P2][P3]

P122,A11

Nasal vowels of Sanskrit

[P] [P3]

P15, 1108

यहाँ पर Common Isolate 08 = Nasal है जिसे 11 Vowel के साथ सीधा जोड़ दिया गया है।

[P3] की एकल संख्या 4 Phrases तथा 5 Clauses को भी एकल संख्या "3" Wordकी ही भाँति प्रयोग किया जायेगा।

Example: Stems of clause of old Icelandic

P117, J502

प्रस्तुत उदाहरणों 4 Phrases, 5 Clauses दोनों में दिये गए निर्देशानुसार to be divided as "3" word के उपविभाजन 02 Stem के लिए प्रयुक्त है।

7 एकल संख्या Pieces of Composition को मुख्य वर्ग O = Literature के [P2] पक्ष से लाने के निर्देश है।

Example: Drama piece of Composition of Modern Tamil

[P] [P2] [P3]

P31, J 72

[E] [2P] पक्ष– यह पक्ष भाषा के उच्चारण (Pronunciation), भाषा सम्बन्धी व्याकरण (Grammer), वाक्य विन्यास (Syntax), वाक्य विश्लेषण आदि विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित है।

Example: Clause analysis of London, Dialect of Modern Swedish

P114, J9D56124, 5:33

Grammer of English Language

[P] [E]

P111 : 2

शब्दकोश (Dictionary)– ज्ञान जगत के क्षेत्र में शब्दकोश महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। ये वे सन्दर्भ ग्रन्थ हैं जिसको पाठक सबसे अधिक प्रयोग करते हैं। अतः डॉ.एस.आर.रंगानाथन का कहना है कि इनका वर्गांक छोटा होना चाहिए। इस बात का ध्यान रखकर शब्दकोशों का वर्गांक निर्मित करते समय [P3] पक्ष की एकल संख्या 3 Word को छोड़कर वर्गांक बनाना चाहिए

क्योंकि अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के अर्थ होते हैं। यदि 3 एकल संख्या का प्रयोग करके वर्गांक बनाया जाता है तो वर्गांक लम्बा हो जायेगा इसलिए 3 एकल संख्या का प्रयोग न किया जाये। यह नियम केवल शब्दकोशों के वर्गांक निर्मित करने के लिए ही है अन्य प्रकार के कोशों के वर्गांक का निर्माण करते समय हमें [P3] पक्ष की एकल संख्याओं को नहीं छोड़ना चाहिए।

Example: Sanskrit language dictionary

P15:4k

Kashmiri language dictionary

P154:4k

द्विभाषी शब्दकोशों के अन्तर्गत दो भाषाएँ होती हैं, पहली भाषा जो मूल भाषा होती है, दूसरी भाषा अनुवाद भाषा (जिसमें शब्दों का अर्थ दिया होता है)। मूल भाषा [P] पक्ष के रूप में Chapter 5 से लायी जाती है जबकि अनुवाद भाषा दो अक्षर की जगह छोड़कर ग्रन्थांक (Book Number) के रूप में अंकित किया जाता है। अनुवाद भाषा भी Chapter 5, Language Isolate द्वारा ही प्राप्त की जाती है।

Example: English Hindi dictionary

P111:4K 152

Hindi-Panjabi dictionary in 1975

P152: 4K 153

15.2.3 मुख्य वर्ग धर्म (Q) का वर्गांक निर्माण

धर्म

Q=RELIGION

पक्ष–परिसूत्र–Q[P]:[E][2P]

इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत विश्व के प्रमुख धर्मों तथा ध ार्मिक, सम्प्रदायों की शाखा, उपशाखा तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं को सम्मिलित किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या–Q[P]:[E][2P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Religion	Enumeration (GD) and (CD)
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– Q Religion मुख्य वर्ग के अन्तर्गत संसार के सभी प्रमुख धर्मों को परवर्तीकाल के सिद्धान्त (Principle of later in time) के आधार पर व्यवस्थित किया गया है। हिन्दू धर्म (वैदिक) विश्व का ऐसा धर्म है जिसका उद्‌भव सबसे पहले हुआ क्योंकि ये धर्म आर्य जाति ने अपनाया जो सृष्टि में सबसे पहली जाति थी। अतः उसे अनुसूची में सबसे पहले स्थान दिया गया है और हम यह देखते हैं कि इस वर्ग के उपवर्ग अन्य धर्मों से बहुत अधिक हैं।

भक्ति भावनाओं मान्यताओं, कर्मकाण्डों की विभिन्नताओं के आधार पर कुछ धर्म अनेक शाखाओं, उपशाखाओं, पंथों व सम्प्रदायों में बँट गये हैं। इनका वर्गांक निर्मित करने के लिए कालक्रम विधि (CD) के प्रयोग के निर्देश दिये गये हैं। Q29 = Other Post Vedic religion के अन्तर्गत दिये निर्देशों के आधार पर कालक्रम विधि (CD) का प्रयोग अनेक सम्प्रदायों के वर्गांक निर्मित करने के लिए हैं।

Example: Arya Samaj
Q29M8
Bramo Samaj
Q92M2

इस प्रकार Q68 के अन्तर्गत Other Christian religion के वर्गांक तथा Q78 के अन्तर्गत Other Mohammedan religion के वर्गांक निर्मित किये जायेंगे।

Q8 Other religions- 8 एकल संख्या के अन्तर्गत विभिन्न देशों के धर्मों के वर्गांक भौगोलिक विधि (GD) और वरेण्य विधि (FD) के द्वारा निर्मित किये जा सकते हैं। अनुसूची में इस सन्दर्भ में निर्देश हैं।

Example: Pre-confucianism
P8411
Confuciansism
P8412

यहाँ पर 41 China का है जिसको अनुसूची में धर्म को मिलाकर एकल संख्या प्रदान की गई है। इन दोनों उदाहरणों में Q8 के साथ वरेण्य श्रेणी विधि (FD) के द्वारा वरीयता के

आधार पर एकलों का व्यवस्थापन है।

[E] [2P] पक्ष– यह पक्ष समस्या पक्ष है। इसमें पौराणिक गाथाएँ, ईश्वर मीमांसा, धर्माचरण, धर्मोपदेश, पवित्र धर्म स्थल, धर्म प्रचार के बनाये संघ संस्थान, आदि आते हैं। जैसे–

Example: Mythology of Christians
Q6:1

[E] पक्ष की एकल संख्या 2 Scripture के अन्तर्गत धर्मों के पवित्र ग्रन्थों, जैसे–बाइबिल, कुरान आदि को वर्गीकृत किया जा सकता है। इन धार्मिक ग्रन्थों के वर्गांक (FD) के द्वारा बनाये गये हैं। द्विबिन्दु वर्गीकरण पद्धति के भाग 3 (Part III) में इस प्रकार के अनेक बने हुए वर्गांकों (Ready-made class numbers) का उल्लेख है।

5 Preachings [E] पक्ष की एकल संख्या के अन्तर्गत धर्मोपदेश, प्रवचन आदि आते हैं।

Example: Preaching of Guru Nanak
Q8441:51

[E] पक्ष एकल संख्या 6 Religious Institutions के अन्तर्गत पवित्र पूजा–स्थल, जैसे– मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरिजाघर आदि तथा 65 के अन्तर्गत धर्म प्रचार के लिए भेजे जाने वाले शिष्टमण्डलों का उल्लेख हैं

Example: Buddhist monastries
Q4:6
Religious associations
Q:68

15.3 सारांश

इस इकाई के अनुशीलन के उपरान्त अब आप मुख्य वर्ग M से Q तक के वर्गांक का निर्माण करना जान गये हैं। एक पुस्तकालय कर्मी के रूप में कार्य करते समय आप इन वर्गांकों के निर्माण में सक्षम होने के साथ-साथ इन विषयों के विभिन्न महत्वपूर्ण पहलुओं को समझने में सक्षम होंगे।

15.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

(1) Mughal town planning.
(2) Jain paintings.

(3) Irish Music.

(4) Model for city planning

(5) Location for parks in cities of Mughal India.

(6) Life after death in Vedic Hinduism.

(7) Holi festival.

(8) Ganga water

(9) Roza.

(10) Sri Guru Granth Sahib (Sikh Scriptures).

(11) The Holy Quran.

(12) 'Deepshikha' by Mahadevi Verma (Hindi poetess, born 1904)

(13) Kankal by Jai Shankar Prasad.

(14) The Merchant of Venice.

(15) Indian Flora in Sanskrit literature.

(16) Mahabharta.

(17) Islamic Myticism.

(18) Hindu Spiritual technique.

(19) Biography of Purohit Swami.

(20) Lakes in mystic experience.

(21) Weaving of silk yarn in Bombay.

(22) Knitting of metal ropes.

(23) Boating in Fatehsagar lake of Udaipur city.

(24) Geometrical instrumnets.

(25) Women and home science (1926+UK).

इकाई -16 : मुख्य वर्ग R से Z तक वर्गांक निर्माण

संरचना

16.0 उद्देश्य

16.1 विषय प्रवेश

16.2 वर्गांक निर्माण

16.2.1 मुख्य वर्ग दर्शनशास्त्र (Philosophy) (R) का वर्गांक निर्माण

16.2.2 मुख्य वर्ग मनोविज्ञान (Psychology) (S) का वर्गांक निर्माण

16.2.3 मुख्य वर्ग शिक्षा (Education) (T) का वर्गांक निर्माण

16.2.4 मुख्य वर्ग भूगोल (Geography) (U) का वर्गांक निर्माण

16.2.5 मुख्य वर्ग इतिहास (History) (V) का वर्गांक निर्माण

16.2.6 मुख्य वर्ग राजनीतिशास्त्र (Political Science) (W) का वर्गांक निर्माण

16.2.6 मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र (Economics) (X) का वर्गांक निर्माण

16.2.6 मुख्य वर्ग समाजशास्त्र (Sociology) (Y) का वर्गांक निर्माण

16.2.6 मुख्य वर्ग कानून (Law) (Z) का वर्गांक निर्माण

16.3 सारांश

16.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

16.0 उद्देश्य

पूर्व की इकाईयों 13, 14, 15 की भांति इस इकाई में भी आप वर्गांक निर्माण करना सीखेंगे। इस इकाई के अध्ययनोंपरान्त आप मुख्य वर्ग दर्शन शास्त्र (R) से लेकर मुख्य वर्ग कानून (Z) तक के लिए वर्गांक निर्माण के बारे में सम्यक ज्ञानार्जन कर लेंगे।

16.1 विषय प्रवेश

प्रत्येक ग्रन्थालय का आधार पाठ्यसामग्री और यदि इनका व्यवस्थापन सही-सही तरीके से न हो तो इनकी पुर्नप्राप्ति सुविधाजनक न होने के कारण यह आधारशिला निष्प्रयोज्य साबित होगी। सही व्यवस्था होने के लिए आवश्यक है कि इनका सही ढंग से वर्गीकरण किया जाय। तभी इन्हें पुस्तक निधानियों (Book Selves) पर सुचारू रूप से क्रमबद्ध ढंग से व्यवस्थित किया जा सकता है। इनका वर्गीकृत होना पुस्तक सूची

(Catalogue) की समुचित उपयोगिता को भी सिद्ध करता है। इस इकाई में आप पूर्व की इकाईयों 13, 14,15 से आगे के मुख्य वर्गों R से Z तक के वर्गांकों का निर्माण करना सीखेंगे।

16.2 वर्गांक निर्माण

16.2.2 मुख्य वर्ग दर्शनशास्त्र (R) का वर्गांक निर्माण

दर्शनशास्त्र

R=PHILOSOPHY

डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने दर्शनशास्त्र मुख्य वर्ग को अनेक प्रामाणिक वर्गों में विभाजित किया है। जैसे–

R1 Logic (तर्कशास्त्र)

R2 Epistemology (ज्ञान मीमांसा)

R3 Metaphysics(तत्व मीमांसा)

R4 Ethics (नीतिशास्त्र) इत्यादि

कुछ प्रामाणिक वर्गों के पक्ष–परिसूत्र भी दिये गये हैं। इन प्रामाणिक वर्गों में R3, R4, R6 महत्त्वपूर्ण वर्ग हैं अतः इन्हीं का पक्ष विश्लेषणात्मक विवेचन हम प्रस्तुत अध्याय में करेंगे।

R3 Metaphysics

पक्ष–परिसूत्र–R3[P], [P2]

परिसूत्र की व्याख्या–

Facet	Term	(IN) By
[P] [P2]	View Subject	Enumeration (SD)

[P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत तत्व मीमांसा से सम्बन्धित विचार धाराओं की एकल संख्याएँ हैं।

Example: Teleology philosophy

R36

9 Other special views [P] पक्ष की एकल संख्या के अन्तर्गत विषय विधि (SD) के प्रयोग द्वारा अन्य विषय प्राप्त करने का प्रावधान है।

Example: Eductional philosophy

R39 (T)

यहाँ पर एकल संख्या 9 को विषय विधि (SD) से विभाजित कर वांछित विषय T प्राप्त किया गया है।

P2 पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत दिये गये निर्देशों के अनुसार इस पक्ष की समस्त एकल संख्याएँ विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त की जाती है।

Christian Metaphysics R3, (Q6)

Metaphysics of number theory R3, (B12)

इन उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्याएँ विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त की गयी है।

P4 Ethics

पक्ष–परिसूत्र–R4 [P], [P2]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Topic	Enumeration
[P2]	Controlling Principle	Enumeration

[P] पक्ष– R4 Ethics के [P] पक्ष की एकल संख्या 1 Personal ethies है इसके अन्तर्गत मानवीय आचरण सम्बन्धी एकलों का उल्लेख है, जैसे–सच्चाई, झूठ, नम्रता, अभिमान, क्रोध, आदि।

Example: Ethics of truth and falsehood.

R411

इसी पक्ष के अन्तर्गत 2 एकल संख्या Family ethics की है जिसमें परिवार के सदस्यों तथा सम्बन्धियों की एकल संख्याएँ हैं। जैसे–

R4211 Husband

R4215 Wife

R4217 Marriage

Example: Ethics of marriage

R4217

3 Social ethics [P] पक्ष की एकल संख्या है। इस वर्ग के अन्तर्गत समाज के व्यक्तियों का एक दूसरे के प्रति व्यवहार व शिष्टाचार से सम्बन्धित एकल संख्या दी गई है। जैसे–बातचीत करते समय, यात्रा काल में, दाह–संस्कार के अवसर पर, विवाहोत्सव, आदि के अवसर पर

R432 Truth and Slander

R434 Etiquette

R4 Ethics के अन्तर्गत 3W = State ethics को मुख्य वर्ग W Political Science के [P] पक्ष की एकल संख्या से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: State ethics in a representative democracy.

R43W61

यहाँ पर W के साथ जुड़ी एकल संख्या 61 Representative democracy के लिए प्रयुक्त है जिसे मुख्य वर्ग 'W' Political Science के [P] पक्ष से लाकर जोड़ा गया है।

इसी प्रकार–

Example: Ethics of librarianship

R42

एकल संख्या 6 Ethics for leisure and amusement को 'MY' Physical training, Sports, Games की तरह त्रिभाजित करना है, जैसे–

Ethics in Indoor Games

[P]

R463

Ethics of test cricket

R462141

P2 पक्ष– इस पक्ष का सूची में उल्लेख है, जैसे–

R4,3 Conscience

जिन एकल संख्याओं का अनुसूची में उल्लेख नहीं है उन्हें विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Example: Behaviour towards animals in Hinduism

R47, (Q2)

R6 Indian Philosophy- भारतीय दर्शन को Favoured system मानकर इसे विशिष्टता प्रदान करने के लिए अलग प्रामाणिक वर्ग बनाया गया है। इसका कारण इस विषय पर साहित्य का पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होना है।

पक्ष–परिसूत्र– **R6[P],[P2][P3],[P4]**

Facet	Term	(In) By
[P]	System:	Enumeration
[P2]	(1) For R61 to R64 canonical (With thier own facets) (2) For R 65 to R6893 Basic text (in the first octave) canonical with their own facets (in the second octave)	As for R Enumeration As for R

[P] पक्ष– [P] पक्ष के अन्तर्गत भारतीय दर्शन की विभिन्न पद्धतियों का उल्लेख हैं।

R61 - Hindu Philosophy

R694 - Buddhistic Philosophy.

[P2] पक्ष– परिसूत्र के अनुसार R61 to R64 तक की एकल संख्याएँ [P2] पक्ष Philosophy के परम्परागत वर्गों से प्राप्त होगी।

[P2] में दिये गए निर्देशानुसार R65 से R6893 तक की एकल संख्याएँ [P] पक्ष के दो भागों में बाँटी हैं। मूलपाठ के घोतक एकल संख्या प्रथम अष्टम (First octave) के रूप में [P2] पक्ष के अन्तर्गत वर्णित हैं

Example: DVaita philosophy of Bhagvad Gita.

R68,6

इन उदाहरणों के अतिरिक्त यदि भारतीय दर्शन के अध्ययन में R68 से R6893 तक के वर्गों के लिए दूसरे पदों (Other texts) की एकल संख्याओं की आवश्यकता हो तो उसके लिए [P2] पक्ष के दूसरे अष्टम के अंक 9 का प्रयोग करेंगे तथा सम्बन्धित विषय R Philosophy के परम्परागत वर्गों से प्राप्त कर 9 अंक के साथ सीधा जोड़ देंगे।

Example: Ambiguity in Hindu Vedanta Philosophy.

[P] [P2]

R65,9195

इस उदाहरण में Other Text के [P2] पक्ष की एकल संख्या 195 नियमानुसार परम्परागत वर्ग R1 Logic से प्राप्त की गई है।

R7 Favoured System- इस प्रामाणिक वर्ग के अन्तर्गत उस देश को वर्गीकृत किया जाता है जिस पर पुस्तकालय का विशिष्ट संग्रहं है। यह पुस्तकालय की नीति पर निर्भर करता है कि

वह किस देश के दर्शन को उसके अन्तर्गत रखें।

R8 Other Systems - R8 Other systems प्रामाणिक वर्ग के अन्तर्गत दर्शन की अन्य पद्धतियों के भौगोलिक क्षेत्र के आधार पर वर्गीकृत करने के निर्देश हैं। इसे भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त किया जाता है।

Example: British Philosophy.
R856
Greek Epistemology
R851,2

दोनों उदाहरणों में 56 British तथा 51 Greek की एकल संख्याएँ (GD) से प्राप्त की गई है।

16.2.2 मुख्य वर्ग मनोविज्ञान (S) का वर्गांक निर्माण

मनोविज्ञान

S=PSYCHOLOGY

पक्ष–परिसूत्र–S[P]:[E][2P]:[2E][3P]

मनोविज्ञान के अन्तर्गत वे सब विषय आते हैं जो मन से सम्बन्धित है। अतः मनोविज्ञान मन का विज्ञान होता है। इस मुख्य वर्ग में मन की स्थिति, मस्तिष्क की प्रतिक्रियाओं तथा मन के भावों का अध्ययन किया जाता है।

परिसूत्र की व्याख्या– S[P]:[E][2P]:[2E][3P]

Facet	Term	(In) By
[P]	Entity	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[2E][3P]	21 Static sense	Enumeration
	3 characters of conciousness	

[P] पक्ष– इस पक्ष के अन्तर्गत वे सारे व्यक्ति व समुदाय शामिल हैं जिनका अध्ययन मनोविज्ञान के क्षेत्र में आता है, जैसे–नवजात शिशु से लेकर वृद्ध तक, सभी स्त्री पुरुष, सभी व्यवसायों में संलग्न व्यक्ति, सभी असामान्य व्यक्ति–गूँगे, बहरे, लंगड़े–लूले आदि। इसके लिए अनुसूची में एकल संख्याएँ दी गई हैं।

विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए व्यक्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन S 4 Vocational Psychology के अन्तर्गत आता है। S4 को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने का नियम है।

एकल संख्या S5 के अन्तर्गत स्त्री व पुरुषों का मनोविज्ञान तथा S6 के अन्तर्गत असामान्य व्यक्तियों के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है।

Psvchology of male people S51

S7 Psychology of Race को मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष की एकल संख्या 7 Race as a social group की भाँति विभाजित करने के निर्देश अनुसूची के नियम भाग पृष्ठ 1.112 पर दिये गये हैं जिनकी सहायता से विभिन्न प्रकार की जाति, प्रजाति से सम्बन्धित व्यक्तियों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

Example: Psychology of Metal-age man
S718
Psychology of Gypsy
S738

इन उदाहरणों में S7 के उपविभाजन, मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष में वर्गांक Y7 से लाकर जोड़े हैं।

Y7 के अन्तर्गत अनेक जातियों, प्रजातियों के वर्गांक विषय विधि (SD) के द्वारा बनाये जाते हैं इन्हें भी S7 के लिए प्रयोग में लाया जाता है।

Example: Psychology of Aryan
S73(P1)
Psychology of Indian
S73(P15)
Psychology of Hindu
S73(Q2)

Y7 के अन्तर्गत अनेक वर्ग भौगोलिक विधि (GD) से निर्मित किये गए हैं। S7 को सम्बन्धित भौगोलिक क्षेत्र की प्रतीक एकल संख्या से विभाजित किया जा सकता है।

Example: Indian race- a psychological study
S744

S8 Social Psychology- किसी प्रजाति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, यदि सामाजिक दृष्टिकोण द्वारा करना हो तो उसे S8 के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है। S8 को मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष से विभाजित करने का नियम अनुसूची में दिया गया है।

Example: Social psychology of Rural people.

S831

Social psychology of the Sikhs

S873 (Q8441)

इन उदाहरणों में S8 के साथ संलग्न एकल संख्याएँ निर्देशानुसार मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष से लाकर जोड़ी गई है।

S9 Animal psychology के अन्तर्गत पशुओं के मनोविज्ञान का अध्ययन है।

[E][2P] पक्ष– [E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 1 Nervous reaction है जिसे मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्या "7" Nervous system" से प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Example: Reaction of sympathetic nerves in old persons

S38 : 181

इस उदाहरण में S38 = Psychology of old age people तथा S38:1 Nervous reaction on old age people हुआ Sympathetic nerve के लिए L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्या 781 से लेकर 1 Nervous reaction एकल संख्या के साथ 781 के अंक 81 से विभाजित कर दिया गया है। अन्य उदाहरण–

A studv of fear among the Europeans S76:526

[2E][3P] पक्ष– [E] पक्ष की एकल संख्या 21 Static sense तथा उसके उपविभाजनों के लिए तथा 3 Characters of consciousness तथा इसके उपविभाजनों के लिए [2E] [3P] पक्ष अलग से दिया गया है।

Example: Physiological pathology of colour sense among toddlers

[P]	[E][2P]	[2E][3P]
S12:	255:	3

Psychometry of Infants

S13:3:6

Systems (प्रणालियाँ)- S Psychology मुख्य वर्ग के अन्त में Psychology के Systems का उल्लेख है। System पक्ष के प्रयोग सम्बन्धी नियमों के अनुसार System पक्ष की एकल संख्याओं का प्रयोग कालक्रम विधि (CD) के द्वारा निर्मित किया गया है।

Example: Typological study of the temperament of primitives

SN2, 72:75

Psycho-analytical study of Mongolian peole

SM9,873(P41)

16.2.3 मुख्य वर्ग शिक्षाशास्त्र (T) का वर्गांक निर्माण

शिक्षा—शास्त्र

T=EDUCATION

पक्ष—परिसूत्र—T[P]:[E][2P],[2P2]

शिक्षाशास्त्र मुख्य वर्ग में शिक्षा के विभिन्न स्तर तथा शिक्षा प्राप्त करने के लिए विभिन्न श्रेणी के व्यक्ति व समुदायों का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त शिक्षण के पाठ्यक्रम (Curriculum), शिक्षण की तकनीकियों (Teaching techniques), छात्रों के कार्यों (Students' works),शिक्षा के आँकलन (Education measurements), छात्र—छात्राओं के जीवनों (Students' lives) तथा शिक्षण की व्यवस्था (Management) आदि समस्यामूलक विषयों को इस मुख्य वर्ग में शामिल किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या— **T[P], [E] [2P], [2P2]**

Facet	Term	(IN) By
[P]	Educand	Eumeration
[E]	Problem	Enumeration
[2P]	Subject	Enumeration
	2 Curriculun.,	
	3- Teaching Teachniques	(SD)
	4-Student's work,	
	5-Educational measurement	
	in [E}]	
[2P2]	Method	Enumeration

[P] पक्ष—[P] पक्ष के अन्तर्गत मुख्य वर्ग में शिक्षा के विभिन्न स्तर जैसे— प्राथमिक, सेकेण्डरी, प्रौढ़ तथा विश्वविद्यालयी शिक्षा का उल्लेख इसके साथ ही उन समुदायों का भी समावेश है जिन्हें शिक्षा प्रदान की जाती है, जैसे—स्त्री, पुरुष, असामान्य व्यक्ति, पिछड़ी जाति तथा समाज में निवास करने वाले विभिन्न श्रेणियों तथा व्यवसायों के लोग। जैसे—

T55 Women's education

[P] पक्ष की एकल संख्या 9 के अन्तर्गत समाज के Other classes या अन्य वर्गों के लिए शिक्षा सम्बन्धी वर्गांक निर्मित करने के निर्देश हैं। इसके लिए विषय विधि (SD) के द्वारा वर्गांक प्राप्त करने के निर्देश अनुसूची में दिये गये हैं।

Example: Education for working class people

T9(Y49)

Education for old person

T9(Y13)

यहाँ पर "T9 other classes" को विषय विधि (SD) के द्वारा, समाज में रहने वाले विभिन्न वर्गों से सम्बन्धित एकल संख्याओं को, मुख्य वर्ग Y Sociology के [P] पक्ष से प्राप्त किया गया है।

[E][2P] पक्ष– [E] [2P] पक्ष में निम्न एकल संख्याओं का प्रावधान किया गया हैं:–

इन एकल संख्याओं में से 2 Curriculums, 3 Teaching technique, 4 Student's work तथा 5 Educational measurements के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (SD) से प्राप्त करने के निर्देश अनुसूची में दिये हैं।

Teaching of LIb. Sci. at University level

T4:3(2)

इन उदाहरणों में [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष को विषय विधि (SD) से प्राप्त किया गया है।

[2P2] पक्ष– [E][2P] पक्ष में 3 Teaching Technique, 4 Student's work तथा 5 Educational measurement के लिए [2P2] पक्ष दिया गया है।

[2P2] पक्ष के जोड़ने के नियम– यदि [E] पक्ष के बाद [2P] पक्ष का प्रयोग किया जाता है तो उसके लिए संयोजक चिन्ह की आवश्यकता नहीं होती है, किन्तु जब [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष आये इसके तुरन्त बाद [2P2] पक्ष का प्रयोग किया जाए तो संयोजक चिन्ह [Comma (,)] का प्रयोग अनिवार्य है।

Example: Secondary education through audio-visual method

[P][E][2P2]

T2:31

Elementary education in mother tongue method

[P] [E][2P2]

T15: 331

इन उदाहरणों में [E] पक्ष के बाद [2P2] पक्ष प्रयोग हुआ है यही कारण है संयोजक चिन्ह नहीं लगाया है। लेकिन यदि [E] पक्ष के साथ [2P] पक्ष प्रयोग होता है और उसके बाद [2P2] पक्ष का प्रयोग हो तो संयोजक चिन्ह [Comma (,)] का प्रयोग अनिवार्य है।

Example: Ability test for scientific researches by viva voce

[P][E][2P][2P2]

T48 : 5 (A), 7

Home work in colon classification to postgradue students

T45:4 (2:51N3),1

Teaching of Algebra in Intermediate Schools by Audio- visual method

T2:3 (B2),1

Research students library work in library cataloguing

T48:4 (2:55), 2

प्रस्तुत उदाहरणों में [2P2] पक्ष का प्रयोग [E] के लिए [2P] पक्ष के बाद हुआ है अतः संयोजक चिन्ह [Comma (,)] का प्रयोग किया गया है।

[E] पक्ष की एक अन्य एकल संख्या 8 Management है इसके अन्तर्गत जो निर्देश दिये हैं उनके अनुसार इस एकल संख्या को मुख्य वर्ग X Economics के [E] पक्ष में Managemnt की भाँति विभाजित करेंगे।

Example: Financial administration in Indian Universities

T4:8D.44

Office management of secondary education

T2:8M

भाषाओं की शिक्षण व्यवस्था– [E] पक्ष के लिए [2P] पक्ष जब भाषा सम्बन्धी एकलों को प्राप्त करना हो तो अनुसूची में दिये गये निर्देश के अनुसार भाषा एकल के साथ भाषा सोपान (Stage Number) का प्रयोग नहीं करना है। भाषा एकल मात्र ही प्रयोग में लाना है। परन्तु तीन परिस्थितियों में भाषा एकल संख्या के स्थान पर अनुसूची में दिये विशेष संख्याओं का प्रयोग करना है–

Example -

P1 – Mother Tongue

P5 – Foreign Language

P8 – Classical Language

Teaching of Middle English

T:3 (P111)

इस उदाहरण में मुख्य वर्ग P= Linguistics में Middle English = P111, E है जबकि इसके स्थान पर केवल (P111) का प्रयोग किया गया है और भाषा का सोपान E छोड़ दिया गया है यदि English को मातृभाषा के रूप में प्रयोग में लायें तो–

Example: Teaching of English as mother tongue

T: 3 (P1)

इसी प्रकार भारत के सन्दर्भ में हिन्दी मातृभाषा है अतः उसकी एकल संख्या P152 न प्रयोग करके P1 Mother tongue का प्रयोग होगा।

Example: Teaching of Hindi language in Pre-school child in India.

[P] [E][P] [S]

T15: 3[P1].44

Systems (प्रणालियाँ)– (SMF) पक्ष का प्रयोग इस मुख्य वर्ग में शिक्षा प्रदान करने की विभिन्न प्रणालियों के रूप में आया है। जिन्हें कालक्रम विधि (Chronological devices) द्वारा निर्मित करने का प्रावधान है। किसी विषय का वर्गांक बनाते समय यदि किसी विशेष प्रणाली का उल्लेख करना हो तो उसे System की एकल संख्या के रूप में पहले रखते हैं बाद में संयोजक चिन्ह [Comma (,)] का प्रयोग किया जाता है।

Example: Headmaster of Knidergarten Elementry School

(SmF) [P] [2P2]

TL8, 15: 87

Basic secondary school education

TN3, 2

16.2.4 मुख्य वर्ग भूगोल (U) का वर्गांक निर्माण

भूगोल

U=GEOGRAPHY

पक्ष–परिसूत्र–U[P].[S] '[T]

मुख्य वर्ग भूगोल के अन्तर्गत पृथ्वी की भौगोलिक स्थिति, उसकी गति, मौसम, सामुद्रिक गतिविधियाँ, सामुद्रिक संपदा, व्यापारिक मार्गों, विभिन्न देशों की मानवीय, राजनैतिक, आर्थिक भूगोल, यात्रा आदि का उल्लेखनीय वर्णन रहता है।

परिसूत्र की व्याख्या–U[P].[S]'[T]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Geography	Enumeration

इस मुख्य वर्ग में डॉ. रंगानाथन ने [P] पक्ष में जैविक–भूगोल Bio-geography, राजनीतिक (Political)], आर्थिक (Economic) तथा मानव भूगोल (Human Geography) आदि को शामिल किया है।

[S] पक्ष तथा [T] पक्ष– भूगोल विषय का अध्ययन किसी देश व काल के सन्दर्भ में ही सार्थक है क्योंकि भूगोल के अधिकांश विषयों के अध्ययन के साथ देश व काल पक्षों का प्रायः प्रयोग होता है। इस कारण परिसूत्र में [S] व [T] पक्षों का उल्लेख है।

Example: A Text-book of Economic Geography of India
U6.44
Industrial geography of USA in 1984
U672.73'N84
Climatology and Oceanography
U25-81

U Geography मुख्य वर्ग के अन्तर्गत [S] पक्ष Geographical Division (GD) Chapter 4, Space Isolate, Page. 2.8 से लाया जाता है तथा [T] पक्ष की एकल संख्याएँ Chapter 3, Time Isolate, Page 2.7 Chronological division (CD) से लाना होता है।

Example: Human geography of Brazil forests
U47.7918.f
Rainfall in Kashmir in summer of 1981
U2855.441 'N82' n3
Evolution of geography thought in India
U(R).44

16.2.5 मुख्य वर्ग इतिहास (V) का वर्गांक निर्माण

अध्याय–4.28

इतिहास

v=HISTORY

पक्ष–परिसूत्र–V[P],[P2]:[E][2P]'[T]

इतिहास के अन्तर्गत वे सारी घटनाएँ आती हैं जो घट चुक होती हैं। अतः इतिहास हमें यह बताता है कि क्या हो चुका है, उसी के आधार पर भविष्य का निर्धारण होता है। अतः हम कह सकते हैं कि अतीत की घटनाक्रमों का लेखा विधिवत् प्रस्तुत करना इतिहास है। द्विबिन्दु वर्गीकरण में इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत सरकार के प्रमुख अंगों, उनके अनेक क्रियाकलापों तथा राज्य व नागरिकों के सम्बन्धों, राज्य के विदेशी सम्बन्ध, नागरिकों के अधिकारों तथा अन्य सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन किया गया है।

परिसूत्र की व्याख्या–**V[P],[P2]:[E][2P]'[T]**

Facet	Term	(IN) By
[P]	Community	(GD)
[P2]	Part	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration
[T]	Chronology	(CD)

[P] पक्ष– [P] पक्ष इस मुख्य वर्ग का Community Facet है। इस पक्ष के द्वारा विभिन्न देशों से सम्बन्धित एकल संख्याएँ प्राप्त की जाती हैं। अनुसूची में दिये गये निर्देशानुसार इस पक्ष को भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त किया जाता है।

Example: History of Asia

V4

History of China

V41

इन उदाहरणों में [P] पक्ष को भौगोलिक विधि (GD) से प्राप्त किया गया है जो Chapter 4, Space Isolate: Geographical Division, Page 2.8 से प्राप्त करके बिना किसी संयोजक चिन्ह के मुख्य वर्ग V History के साथ जोड़ दिया जाता है।

[P2] पक्ष– डॉ. एस.आर.रंगानाथन ने V-History मुख्य वर्ग में [P2] पक्ष के अन्तर्गत सरकार के विभिन्न अंगों को रखा है। किसी भी देश की सरकार के प्रमुख अंगों में उसका प्रधान (Head), उसकी

कार्य–पालिका (Executive), व्यवस्थापिका (Legislature), न्यायपालिका (Judiciary), राजनीतिक दल (Political Parties), स्थानीय संस्थाएँ (Local Bodies), लोक सेवा (Civil Services) आदि हो सकते हैं।

किसी देश व उसके प्रदेश की सरकारें तथा स्थानीय संस्थाओं के सन्दर्भ में इन अंगों को भिन्न–भिन्न नामों से जाना जाता है। ज़ैसे–

1 = Head का प्रयोग President, King, Queen, Chairman के लिए।

2 = Executive का प्रयोग Cabinet, Council of ministers के लिए।

21 = First Minister का प्रयोग Prime Minister/Chief Minister के लिए।

Example: President of USA

V73,1

Prime Minister of India

V44,21

Chief Minister of UP

V4452,21

राज्य सरकारों के सन्दर्भ में 3 Legislature का प्रयोग राज्य विधान सभा State Legislature के लिए किया जाता है। 3 Legislature (व्यवस्थापिका) को अलग–अलग देशों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। जैसे–

Vidhan Sabha Rajasthan V4437,3

Legislature of UP V4452, 3

द्वि–बिन्दु वर्गीकरण पद्धति में First House (निम्न सदन के लिए) तथा Second House (उच्च सदन के लिए) प्रयोग किया गया है। क्योंकि प्रायः सभी देशों में संसद के दो सदन होते है– First House (प्रथम सदन) अथवा Lower House (निम्न सदन)। यह सदन जनता का प्रतिनिधित्व करने वाला होता है उसे अलग–अलग देशों में अलग–अलग नामों से जाना जाता है। इसके लिए 31 एकल संख्या First House का प्रयोग किया गया है। जैसे–

Lok Sabha – भारत में - V44, 31

House of Representative – अमेरिका में - V73, 31

House of Commons – इंग्लैण्ड में - V56, 31

Second House (द्वितीय सदन) अथवा Upper House (उच्च सदन)– Second House में परोक्ष रूप में चुने हुए सदस्य होते हैं जो प्रथम सदन की अपेक्षा कम महत्त्वपूर्ण होते हैं अतः इसे द्वितीय स्थान पर रखा गया है। अलग–अलग देशों में इसे अलग–अलग नामों से जाना जाता है इसके लिए एकल संख्या 32 का प्रावधान है।

Example: House of representatives in USA
V73,32
Rajya Sabha of India
V44,32

Specific Parties (विशिष्ट राजनीतिक दल) के वर्गांक निर्मित करने के लिए कालक्रम विधि (CD) का प्रावधन है। इसके लिए काल एकल (Time-Isolate-Chapter 3) पृष्ठ 2.7 से प्रयुक्त एकल संख्या प्राप्त कर, दल विशेष का वर्गांक बनाया जाता है। जिस वर्ष में दल निर्मित हुआ (स्थापित) हुआ उस वर्ष की प्रतीक एकल संख्या को काल एकल सारणी से प्राप्त कर राजनीतिक दल की प्रतीक एकल संख्या 4 के साथ जोड़कर विशिष्ट राजनैतिक दल का वर्गांक निर्मित किया जा सकता है।

Example: B.J. Party of (India) (Established, 1980)
[P] [P2]
V44, 4N80
Labour party (England) (Established, 1914)
V56, 4N14

इन उदाहरणों में सर्वप्रथम [P] पक्ष के रूप में उस देश को रखा गया है जिस देश का वह राजनीतिक दल है, इस दल की स्थापना वर्ष की प्रतीक एकल संख्या काल क्रम विधि (CD) द्वारा प्राप्त की जाती है। इस कालक्रम विधि के द्वारा किसी भी देश के अनेक राजनीति दलों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

Local Bodies (स्थानीय निकाय)– सरकार के स्थानीय कार्य को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए अनेक स्थानीय निकाय होती हैं, जैसे– Urban local bodies (शहरी स्थानीय निकाय) जैसे– नगर परिषद, नगर पालिका, महानगर पालिका (Municipalities) आदि। इसके लिए एकल संख्या 61 का प्रावधान है।

Larger rural bodies (ग्रामों की बड़ी संस्थाएँ), जैसे– जिला परिषद, जिला बोर्ड (District boards) आदि। इसके लिए एकल सख्या 63 का प्रावधान है।

Primary rural bodies (प्राथमिक ग्रामीण संस्थाएँ), जैसे– ग्राम पंचायतें (Village Panchayats) आदि। इसके लिए एकल संख्या 64 का प्रावधान है।

Example: District Boards of Uttar Pradesh

[P] [P2]

U4452,63

Municipal Board of Agra City

V445244,61

किसी विशेष कार्य को सम्पन्न करने हेतु अस्थायी समिति के वर्गांक को विषय विधि (SD) के द्वारा वर्गांक बनाकर प्रयोग किया जाता है।

Example: Sanitation committee for the city of Delhi.

V4481,68(D8)

इस उदाहरण में [P2] पक्ष की एकल संख्या 68 Adhoc body for special function के लिए प्रयोग किया गया है। D8 Sanitary engineering को विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित किया है। इसी तरह अन्य कार्यकारी संस्थाओं को 93 की एकल संख्या से वर्गीकृत कर विशेष प्रकार की संस्था के लिए विषय विधि (SD) का प्रयोग किया जा सकता है।

[E] [2P] पक्ष–[E] [2P] पक्ष की एकल संख्या 1 Policy है जिसके कई उपविभाग हैं।

Example: Home policy of Pakistan

V44Q7:11

Federal policy of USA

V73: 12

State control of Pakistan

V44Q7:35

Relation of M.P. State with back ward class

V4471:47

Struggle for freedom of the people of Rajasthan

V4437:51

Freedom of migration for the people of India

V44:58(U42)

V : 19 Host Class (अतिथेय वर्ग)– मुख्य वर्ग V History में V : 19 Foreign policy को अतिथेय वर्ग प्रदान करके डॉ. रंगानाथन ने अनोखी बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। इस वर्ग के अनुसार किसी देश की विदेशी नीति किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित हो तो परिशिष्ट भाग के पृष्ठ 28 में उसके लिए अलग से प्राविधान किया गया है, इन्हें विषय विधि (Subject Device) के रूप में प्रयोग में लाया जाता है–

V:19[P],[P2]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Community	(GD)
[P2]	Subject	Enumeration and (SD)

इतिहास मुख्य वर्ग के अन्तर्गत अनुसूची में पृष्ठ 2.108 पर कुछ एकल संख्याओं को निरस्त करके उनके स्थान पर परिशिष्ट (Annexure) के पृष्ठ 28 पर अतिरिक्त एकलों का प्रावधान किया है।

Example: US armament policy towards Pakistan.
V73: 1944Q7,(zS)
US armament policy
V73: 19(zS)
Indian foreign policy for peace
V44: 19(zQ)

दो देशों के बीच सम्बन्धा (Relation between two countries)– ऐसे दो देशों का सम्बन्ध जिसका कोई विषय न हो या साधारण सम्बन्धा हों तो दोनो देशों के वैदेशिक सम्बन्ध दर्शाने के लिए सर्वप्रथम जिस देश के वैदेशिक सम्बन्ध दर्शाने हों उस देश की प्रतीक एकल संख्या को [P] पक्ष के रूप में (GD) से प्राप्त करके [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 19 Foreign policy लेंगे। इसके बाद उस देश की प्रतीक एकल संख्या लेंगे जिसके साथ वैदेशिक सम्बन्ध प्रदर्शित करने हैं उस एकल संख्या को भौगोलिक विभाजन (GD) से लेकर 19 के साथ बिना किसी संयोजक चिन्ह के सीधा जोड़ देंगे। इस प्रकार दो देशों के बीच विदेश सम्बन्ध (Foreign relation) के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

Example: India's foreign relation with US/
V44: 1973
China Foreign relation with USA
V41: 1973

इन उदाहरणों में प्रथम देश की प्रतीक एकल संख्या मुख्य वर्ग के बाद है इसको [P] पक्ष के रूप में भौगोलिक विभाजन (GD) से प्राप्त किया गया है। दूसरे देश की एकल संख्या भी भौगोलिक विभाजन (GD) से प्राप्त करके दोनों देशों की एकल संख्याओं के बीच 19 Foreign policy [E] पक्ष की एकल संख्या को संयोजक चिन्ह [Colon (:)] के द्वारा सीधा जोड़ दिया गया है। प्रथम एकल संख्याएँ उस देश की हैं जिसके विदेश सम्बन्ध किसी अन्य देश के साथ प्रदर्शित करने हैं तथा दूसरी एकल संख्या उस देश की है जिसके साथ सम्बन्ध प्रदर्शित किये गये हैं।

विशेष प्रकार की विदेश–नीति इस प्रकार के वर्गांक निर्माण के लिए परिशिष्ट (Annexure) में प्रावधान– जब नीति किसी एक देश के सन्दर्भ में, जिसका कोई विषय हो उसके लिए परिशिष्ट (Annexure) में अतिरिक्त एकलों का प्रावधान पृष्ठ संख्या 28 पर किया गया है। इन्हें विषय विधि (SD) के रूप में लेना होता है।

Example: Pakistan war policy
V44Q7:19(zM)
India's peace Policy
V44: 19(zQ)

ये उदाहरण विदेश नीति से सम्बन्धित हैं, लेकिन नीति किसी विशिष्ट देश के साथ न होकर विदेश नीति का एक विशिष्ट विषय है अतः इस विशिष्ट विषय की एकल संख्याओं का प्रयोग आतिथेय वर्ग (Host class) V: 19 के साथ [P] पक्ष के रूप में किया गया है। प्रथम उदाहरण में यह सम्बन्ध युद्ध (War) से सम्बन्धित है तथा दूसरे उदाहरण में नीति का विषय शान्ति (Peace) है। इन विषयों को परिशिष्ट (Annexure) Page 28 से प्राप्त कर प्रयोग किया गया है। परिशिष्ट में जो और विषय दिये हैं इन्हें भी विषय विधि (SD) से प्राप्त किया जा सकता है।

Example: India's foreign economic policy
V44:19(X)
Foreign Trade policy of China
V41:19(X:5)

(b) दो देशों के मध्य विदेश नीति किसी विशिष्ट विषय के साथ– दो देशों के बीच, जिसका कोई विषय भी हो तो सम्बन्धित विषय को पक्ष [2P2] के रूप में विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त करते हैं। [2P2] की एकल संख्या को संयोजक चिन्ह

[Comma (,)] से जोड़ते हैं।

Example: Russia's Defence relation with China

V58: 1941, (zP)

History of Cold war between USA and Pakistan

V73:1944Q7,(zE)

उपरोक्त उदाहरणों में (i) विदेश सम्बन्ध दो देशों के बीच है। (ii) विदेश सम्बन्ध किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्धित हैं। दोनों देशों के बीच विदेश सम्बन्धों का वर्गांक बनाने के बाद सम्बन्धित विषय (SD) के रूप में प्रयुक्त किया गया है तथा (SD) के प्रयोग से पहले संयोजक चिन्ह [Comma (,)] लगाया गया है।

2= Constitution (संविधान)– किसी भी देश के संविधान से सम्बन्धित विषय को W= Political Science मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वर्गीकृत न करके इसे V History मुख्य वर्ग के अन्तर्गत वर्गीकृत करेंगे जबकि संविधान राजनीति से सम्बन्धित है। (नियम V32 पृष्ठ 1.115–16)

Example: Function of the viceroy general of British India.

[P] [P2][E]

V2-56,11:3

Government of UP and state roadways

V4452:3(X411)

[E][2P] की एकल संख्या 512=Liberty of family है। इसे मुख्य वर्ग Z law के [P2] पक्ष की एकल संख्या 12 By Fiduciary relation से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: Liberty of divorce in India

V44:51227

यहाँ 512 Liberty of family को [E] पक्ष से प्राप्त निर्देशानुसार मुख्य वर्ग Z Law के [P2] पक्ष की एकल संख्या 12 Fiduciary relation (न्यासीय सम्बन्धों) से विभाजित किया है। अतः 12 के उपविभाजन 27 Divorce को लाकर सीधा 512 के साथ जोड़ा गया है।

Example: Equal eligibility of office in USA

V73:58(W28)

58 Others rights के अन्तर्गत अन्य प्रकार के अधिकारों को

विषय विधि (SD) के द्वारा प्राप्त करने के निर्देश हैं।

Example: Literature as a source of history of Rajasthan

[P] [E][2P]

V4482:67

Tradition as a source of British history

V56:66

किसी देश के इतिहास को जानने व समझने के लिए वहाँ के पुरालेख (Epigraphy), शिलालेख (Archacology), सिक्के (Coins), मुहरें (Numismaties), वंशावली वंश चिन्ह (Genealogy) तथा कालक्रम (Chronology) आदि महत्त्वपूर्ण होते हैं।

Example: Study of Indian coins

[P] [E][2P]

V44: 73

चुनाव प्रक्रिया तथा चुनाव के तरीके भी इतिहास मुख्य वर्ग का महत्त्वपूर्ण विषय है। इसके अन्तर्गत नामांकन, माताधिकार का प्रयोग, मतगणना, परिणामों की घोषणा, आपत्ति याचिका आदि विषयों का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

Example: Nomination of member of parliament in India, 1999

[P] [P2] [E][2P] [T]

V44,3:911'N99

Declaration of Lok Sabha (India) Results, 1999

[P] [P2] [E][2P] [T]

V44,31:914'N99

बाधित समय (Bounded Time)

यदि समयावधि दो निश्चित समय इकाईयों (एक समय से लेकर दूसरे समय तक) को बोधक हो तो उन्हें उल्टे तीर के निशान (Backward arrow) से दर्शाते हैं। इनमें पहले वाली इकाई का वर्गांक बाद में तथा बाद वाली इकाई को पहले रखते हैं।

Example: Europen History during 1556-1605

V5'KO54←J56

निश्चित अवधि के बाद का इतिहास (Future Time)– नविष्य काल को दर्शाने के लिए अग्रमुखी तीर (Forward arrow) का प्रयोग किया जाता है।

Example: Future of Indian History

V44'P→

जीवनी (Biography) – नियम भाग पृष्ठ 1.116 पर V9y7 में ऐतिहासिक पुरुषों की जीवनियों के वर्गांक निर्मित करने के लिए संशोधन किया गया है। संशोधन नियम परिशिष्ट (Annexure) के पृष्ठ 25 पर दिये हैं इस नियमानुसार V=History में ऐसे व्यक्ति की जीवनी जिसकी अपने देश, राज्य जिला, स्थानीय क्षेत्र के इतिहास के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हो, वर्गीकृत करना चाहिए।

Example: Biography of Napolean

V53y7L69

Biography of Kennedy (President of USA)

V73y7N17

16.2.6 मुख्य वर्ग राजनीति शास्त्र (W) का वर्गांक निर्माण

राजनीति शास्त्र

W=POLITICAL SCIENCE

पक्ष–परिसूत्र–W[P],[P2]:[E][2P]

समाज विज्ञान की राजनीति शास्त्र एक महत्वपूर्ण शाखा है। जिसमें विभिन्न प्रकार के राज्यों, शासन प्रणालियों, उनके अंगों तथा उनके क्रियाकलापों व समस्याओं का अध्ययन किया जाता है।

मुख्य वर्ग इतिहास और मुख्य वर्ग राजनीतिशास्त्र दोनों विषयों में एकरूपता होने के कारण पहचानना कठिन हो जाता है। ऐसी स्थिति में विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है कि सिद्धान्तों के अध्ययन सम्बन्धी विषयों को मुख्य वर्ग W Political Science के अन्तर्गत वर्गीकृत करना चाहिए तथा व्यावहारिक पक्षों का अध्ययन मुख्य वर्ग V-History के अन्तर्गत करना चाहिए।

परिसूत्र की व्याख्या–W[P],[P2]:[E][2P

Facet	Term	(IN) By
[P]	Type of state	Enumeration
[P2]	Part	Enumeration
[E][2P]	Problem	Enumeration

[P] पक्ष– मुख्य वर्ग W राजनीतिशास्त्र की अनुसूची में [P] पक्ष में शासन की विभिन्न प्रणालियों का उल्लेख है। इन एकल संख्याओं का विभाजन परवर्ती विकास के सिद्धान्त (Principle

of later in evolution) के आधार पर किया गया है, जैसे–

W1	Anarchy
W2	Primitive
W3	Feudal
W4	Monarchy
W41	Absolute
W46	Limited
W5	Oligarchy
W6	Democracy
W61	Representative
W62	Direct
W64	Dictatorship
W691	Communism
W7	Utopia
W8	Change of form of State
W81	Revolution
W87	Passive resistance (non-violence)
W94	Nationality
W95	World state

[P2] पक्ष– W= मुख्य वर्ग की अनुसूची पृष्ठ 2.110 में निर्देश दिया हैं कि [P2] पक्ष मुख्य वर्ग V History के समान ही हैं तथा जिसे उसी मुख्य वर्ग से प्राप्त करना है। **[P2]** पक्ष के अन्तर्गत राज्यों के विभिन्न अंगों को दर्शाया गया है।

Example: Prime Minister in democracy

[P] [P2]
W6,21
Judiciary in Oligrachy
W5,7

[E] [2P] पक्ष– इस पक्ष की एकल संख्याएँ भी V History मुख्य वर्ग के समान हैं जिसे उसी मुख्य वर्ग से लाने के निर्देश हैं।

Example: Theory of International relations

W:19
Civil duties in dictatorship
W64:5
Election methods
W:91

16.2.7 मुख्य वर्ग अर्थ शास्त्र (X) का वर्गांक निर्माण

अर्थशास्त्र

X=ECONOMICS

पक्ष–परिसूत्र–X[P]:[E][2P]

ज्ञान जगत के लिए जितने भी विषय हैं उन सब में अर्थशास्त्र सबसे महत्वपूर्ण विषय है। इस मुख्य वर्ग के अन्तर्गत डॉ. एस.आर. रंगानाथन ने विभिन्न प्रकार के व्यापारों, व्यावसायिक संस्थानों, वस्तुओं के उत्पादन, वितरण तथा उपभोग एवं उससे सम्बन्धित समस्याओं का वर्णन किया है।

परिसूत्र की व्याख्या– X[P]:[E][2P]

Facet	Term	(In) By
[P]	Business	Enumeration
[E] [2P]	Problems	Enumeration

[P] पक्ष– यह पक्ष व्यापार (Business) पक्ष है। इसमें संचार, यातायात के साधनों, व्यापार के तरीकों, मुद्रा, बैंकिंग, सामाजिक वित्त, बजट, बीमा, औद्योगिक कारखानों आदि की एकल संख्याएँ दी गई हैं।

"54 Commerce by transport" को व्यापार पक्ष के [P] पक्ष की एकल संख्या 4 Transport से विभाजित करने के निर्देश हैं। 4 Transport के उपविभाग, यातायात के अनेक प्रकार के साधन हैं जैसे–

Example :-

Trade by Railway Transport

X5415

Roadways Business Transport

X5411

प्रस्तुत उदाहरणों में 54 Transport के साथ निर्देशानुसार 15 Railway का तथा 11 Road की एकल संख्याएँ ली गई हैं।

61 Money के लिए [M] पक्ष–61 एकल संख्या के लिए अनुसूची पृष्ठ 2.112 पर अलग से [M] पक्ष दिया गया है–

Example: Silver currency

X61;2

Paper currency

X61;4

72 उपविभाजन में 7243 Business एकल संख्या में [P] पक्ष के साथ व्यापार संबंधी एकलों से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Tax on retail business

X7243512

इस उदाहरण में 72 Tax की एकल संख्या है, इसके बाद 7243 Business की एकल संख्या इसी के नीचे निर्देशानुसार Retail की एकल संख्या 5 Commerce से 512 एकल संख्या ली गयी है।

8 (A) Industry (औद्योगिक प्रतिष्ठान)–विषय विधि (SD) के प्रयोग द्वारा अनेक प्रकार के औद्योगिक प्रतिष्ठानों के वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं।

Example: Textile Industry

X 8 (M7)

Iron industry

X 8 (F182)

विषय विध (SD) में विषय की एकल संख्याओं को सम्बन्धित मुख्य वर्ग से लाकर वर्तुलाकार कोष्ठक में रखा जाता है।

[E][2P] पक्ष– [E][2P] पक्ष के अन्तर्गत उपयोग, उत्पादन, व्रितरण, विदेशी व्यापार, प्रबन्ध कौशल, श्रमिक समस्यायें, औद्योगिक सम्बन्ध इत्यादि विषय रखे गये हैं।

Example: Standard of living

(BC) [E][2P]

X : 16

Demand and supply theory

X : 73

Office management

X : 8M

62 Bank तथा 72 Tax [P] पक्ष की एकल संख्याओं के लिए [E][2P] पक्ष की अतिरिक्त संख्याएँ–

Example: Rate of interest in commercial Banks

X 625: 11

Progressive property taxatiaon

X722:13

[E] पक्ष हेतु: यहाँ पर 62 Bank के लिए तथा 72 Taxation दोनों के लिए दी गई अतिरिक्त एकल संख्या अनुसूची के अनुसार वर्गांक निर्मित किया गया है।

9 Labour Problems (श्रमिक समस्यायें)–[E][2P] पक्ष में एकल संख्या 9 (श्रमिक समस्याएँ) हैं। गहन वर्गीकरण की दृष्टि से इसे तीन खण्डों में बाँटा गया है। यदि आवश्यकता हो तो तीनों खण्डों की एकल संख्याओं को एक साथ प्रयोग में लाया जा सकता है। इनको [E] पक्ष में [2P] पक्ष के स्तरों के रूप में प्रयोग में ला सकते हैं। इनका संयोजक चिन्ह [Comma (,)] है।

नोट– मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र के [E][2P] पक्ष में 9Personal Management and Labour Problems (कार्मिक प्रबन्ध तथा श्रमिकों की समस्याएँ) को तीन खण्डों (Sectors) में बाँटा गया है।

	Least Concret Sector	More Concrete Sector	Still More Concrete Sector
91	Job Evaluation	99A Grades	9A Type of Labour
915	Job classification	99B Manual (Wages)	9B Child
916	Job rating	99C Unskilled	9F Female
92	Merit rating	99D Semi-skilled	9F5 Married
93	Wage	99G Supervisors	9F6 Pregnant
94	Safety measure	99N Intellectual	9G4 Part-timed
95	Employment and Service	99R Creative (Research)	9H5 Urban
			9J2 Migrant
952	Recruitment	99 Technical	9K5 Alien
958	Social security	99VAdministrative	9N Non-paid
9581	Pension	99W Policy-making	9P8 Blind
96	Employee Service		9 Prisoner
97	Industrial relation		

जोड़ने के नियम–

(a) अनुसूची के अन्त में आनेवाले खण्ड Still more concrete sector of 9 (जो पृष्ठ 2.114 पर 9A Type of labour से 9Q Prisoners तक) की यदि एकल संख्य वर्गांक में हो तो पहले रखा जायेगा।

(b) इसके बाद आने वाला खण्ड More concrete sector of 9 (जो पृष्ठ 2.114) पर ही बीच में) 99 A Grade से लेकर 99 W Policy-marking तक की एकल संख्याओं को रखा जाता है।

(c) 9 Labour की जुड़ने वाली तीसरी एकल संख्या के लिए सबसे अन्त में लेकिन अनुसूची में पहले आने वाले खण्ड Least concrete sector of 9 जो पृष्ठ 2.11.3 से पृष्ठ 2.114 के ऊपर तक 91 Job evalution से 9915 Full employment तक की एकल संख्याओं को रखा जाता है।

Example: Wages in cycle industry

X8 (D5125): 93

Wagesof unskilled female workers in cycle industry

x8(D5125):9F,9C,3

इन उदाहरणों में तीनों एकल संख्याओं का अलग–अलग खण्डों (Secotrs) से लेकर संयोजक चिन्ह [Comma (,)] की सहायता से व्यवस्थित किया गया है।

मुख्य वर्ग X प्रतीक चिन्ह के साथ Cycle industry की एकल संख्या X8 (D5125) के साथ Energy का संयोजक चिन्ह [Colon (:)] के साथ इन तीनों Sector (खण्डों) से ली गयी एकल संख्याओं को नियमानुसार क्रम से जोड़ा गया है। अतः वर्गांक बना–

Example: X8(D5125):9F,9C,3

किन्तु नियमानुसार प्रथम बार प्रयुक्त खण्ड (Sector) की एकल संख्या के अलावा अन्य Sector से ली गयी एकल संख्याओं में सामान्य अंक (Common digit) 9 को छोड दिया गया है।

X8 (D5125): 9F,9C,3

सबसे पहले 9F Female (Still more concrete sector) बाद में 99C Unskilled (more concrete sector) तथा इसके बाद 93 Wages (least concrete sector) को रखा गया है। बाद वाले Sectors की एकल संख्याओं से सामान्य अंक 9 को छोड़ दिया जाता है।

इसी प्रकार–

Working hours ot seasonal unskilled labour in tea plantation

X8 (J451): 9G5, 9C, 55

97 Industrial Relation ;औद्योगिक सम्बन्ध का भी तीन सेक्टरों (Sectors) में विभाजन है– [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 9 Personnel Management की भाँति ही 97 Industrial Relation को भी डॉ. रंगानाथन ने 3 खण्डों (Sectors) में बाँटा

है। जो पृष्ठ 2.113 तथा 2.114 पर 971 Moral maintenance से 9915 Full employment तक तीन खण्डों में विभाजित है। इसके नियम वही हैं जो 9 Personal management के हैं। Still more conerete sector of 97 पहले, More concrete sector of 97 बीच में तथा Least concret sector of 97, बाद में लिया जायेगा।

Example: Arbitration in strike

X:979D,6

Systems and Specials- X मुख्य वर्ग अर्थशास्त्र में Systems और Specials दोनों का प्रावधान है इसके वहीं नियम है जो L Medicine के हैं। संक्षेप में पहले System facet उसके बाद Special facet तथा बाद में [P] पक्ष का प्रयोग किया जाता है। इनके लिए संयोजक चिन्ह [Comma (,)] अल्पविराम का प्रयोग किया जाता है।

Example: Small scale industries

X9B, 8 (A)

Large scale co-operative textile industry

(SmF)	(SpF)	[P]
XM,	9D,	8(M7)

wages of female workers in public sector eycle industry in sociolist economy

XM2, 9W, 8 (D5125): 9F, 3

16.2.8 मुख्य वर्ग समाजशास्त्र (Y) का वर्गांक निर्माण

समाजशास्त्र
Y=SOCIOLOGY

पक्ष–परिसूत्र– Y[P]:[E][2P]:[2E][3P]

समाजशास्त्र मुख्य वर्ग में समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन किया गया है। इस में समाज की गतिविधियाँ, क्रियाकलापों, विकृतियों, अपराध वृत्तियों आदि समस्याओं का वर्णन है।

परिसूत्र की व्याख्या–Y[P]:[E][2P]:[2E][3P]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Group	Enumeration
[E] [2P]	Problem	Enumeration
[2E][3P]	Secondary Problem	Enumeration

[P] पक्ष– समाजशास्त्र के [P] पक्ष के अन्तर्गत समाज के विभिन्न वर्गों का विस्तार है। समाज में रहने वाले विभिन्न वर्गों

व समुदायों को विशेषताओं के आधार पर प्रस्तुत कर उन्हें उपवर्गों में बाँटा गया है–

[P] पक्ष– में 11 Child है। इसे मुख्य वर्ग S= Psychology की भाँति विभाजित करने के निर्देश हैं। मुख्य वर्ग "S Psychology" में Child की प्रतीक एकल संख्या 1 दी है तथा इसे विभाजित कर 11 New born, 12 Toddler, 13 Inflant, 15 Pre-adolescent इत्यादि वर्गाँक बनाये गये हैं। अतः Y Sociology के 11 Child को Psychology की तरह ही विभाजित करना होगा।

इस प्रकार– New born child as a social group

Y111

2. Family –एकल संख्या 2 Family के लिए हैं इसकी एकल संख्या प्राप्त करने के लिए R4 Ethics की भाँति विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: Social Study of husband wife relation

Y21

6. Abnromal and defective को मुख्य वर्ग S Psychology की भाँति उपविभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: Sociological study of abnormal blinds

Y68

73 Ethnological division- वर्ग के विभाजन विषय विधि (SD) के द्वारा बनाये गये हैं। अनुसूची में इससे सम्बन्धित कुछ उदाहरण दिये गये हैं–

Y73 (Q2) Hindu

Example: Muslim community

Y 73 (Q7)

Teutonic community

Y 73 (P11)

यहाँ भाषा की प्रतीक संख्या को,भाषा सारणी पाठ 5 से प्राप्त कर विषय विधि के रूप में प्रयोग किया गया है।

74 to 79 Territorial Division – इस वर्ग के अन्तर्गत किसी भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले सामाजिक वर्ग से सम्बन्धित वर्गांक निर्मित किये जा सकते हैं। इसके लिए भौगोलिक एकल संख्या 4 से 9 को भौगोलिक सारणी पाठ 4 से लेकर [P] पक्ष की एकल संख्या 7 के साथ जोड़ा जा सकता है इस प्रकार भौगोलिक

समुदाय का वर्गांक बनाया जा सकता।

Example: Australian social group

Y78

9 Others के अन्तर्गत अन्य समुदायों के वर्गांक विषय विधि (SD) के द्वारा बनाने के निर्देश हैं।

Example: City woman of USA

Y 15-35.73

A social study of urban woman

Y 15-33 (अध्यारोपण विधि)

[E] [2P] पक्ष– यह पक्ष समाज के क्रियाकलापों, गतिविधियों तथा समस्याओं से सम्बन्धित है। इसके अन्तर्गत सभ्यता व संस्कृति, समाज के लोगों के क्रियाकलापों व उनकी गतिविधियों (आचरण, शिष्टाचार, समारोह, रीतिरिवाज, त्यौहार तथा अंधविश्वास),का उल्लेख है। इसके अतिरिक्त इस पक्ष में सामाजिक कुरीतियों, विपदाओं, जैसे– नशाखोरी, चरित्रहनन, बेकारी, धूम्रपान, अपराध वृत्ति, जनसंख्या आदि सामाजिक समस्या का उल्लेख है।

[E] [2P] पक्ष की एकल संख्याओं के विभाजन के लिए जगह–जगह पर निर्देश दिये गये हैं–

3. Activity के अन्तर्गत दिये गये निर्देशानुसार 3 को R4 Ethics के [P] पक्ष से विभाजित किया है।

Example: Marriage as a social activity

Y: 3217

217= [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 3 में दिये गये निर्देशानुसार R4 के [P] पक्ष की एकल संख्या है, जो Marriage के लिए प्रयुक्त की गयी है।

इसी प्रकार–

Marriage cermony according to Hindus

Y73 (Q2) : 3217

Inauguration of a river dam

Y: 348 (D26,8)

35 "As if activity" तथा उसके उपविभाजन = 351 Folklore, 354 Superstition, 356 Custom को मुख्य वर्ग Δ (Delta) Spritual Experience and Mysticism के [P2] पक्ष की भाँति तथा विषय विधि (SD) से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: Superstitions about devilism in christians.

Y73 (Q6):35412

इस उदाहरण में [E] पक्ष की एकल संख्या 12 को Δ (Delta) मुख्य वर्ग के [P2] पक्ष से लाया गया है।

4. Social Pathology –परिसूत्र के अनुसार अनुसूची मे [E][2P] पक्ष में एकल संख्या 4 Social pathology लिए उदधृत किया गया है। इसके अन्तर्गत समाज में व्याप्त बुराइयों, विपदाओं, आपदाओं तथा अपराधवृत्ति पर विशेष ध्यान दिया गया है। मनुष्य के शरीर पर नशीले पदार्थों, जैसे– तम्बाकू, शराब, अफीम आदि से प्रभाव। समाज के लोगों के शारीरिक मानसिक नैतिक एवं चारित्रिक पतन, गरीबी, बेक़ारी, अकाल, बाढ़, आगजनी, युद्ध से उत्पन्न यातनाएँ, अनेक अपराध–आत्महत्या, चोरी, बालात्कार आदि का वर्णन है।

Example: Unemployment in city

Y 35:433

Tabacco habits of working class

Y49:412

45 Crime (To be subdivided as in "Z law"- [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 45 Crime के लिए प्रयुक्त है जिसे हमें 'Z Law' के [P2] पक्ष से लेकर आना है। Law मुख्य वर्ग में 5 एकल संख्या के उपविभाजन Crime के लिए दिये गये हैं। इनका प्रयोग मुख्य वर्ग Y Sociology की एकल संख्या 45 Crime के वर्गांक बनाने के लिए करना होगा।

Example: A social study of war crime in Bangladesh

Y : 45ZA. 44Q71

Sociology of murders

Y : 45 112

5 Demography - [E][2P] पक्ष के 5 Demography एकल संख्या के अन्तर्गत Population study (जन सांख्यिकी) का वर्णन है।

Example: Concentration of population in Nations

Y 38: 585

7 Personality मुख्य वर्ग के [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality को मुख्य वर्ग S Psychology के [E] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality से लेकर आने के निर्देश हैं।

Example: Personality of service class lady

Y 15-41:7

Drug habit in child

Y11: 796

उपरोक्त उदाहरणों में Y Sociology के [E][2P] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality को मुख्य वर्ग Psychology के [E] पक्ष की एकल संख्या 7 Personality से विभाजित किया गया है।

81 Habitat – निवास स्थान को प्रमाणिक वर्ग NA Architecture के [P3] पक्ष की भाँति विभाजित करना है।

Example: Urban workmen housing

Y33: 819A

84 Transport-Track को मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष से 4 Transport-track से विभाजित करने के निर्देश हैं।

85 Transport - Vehicle की मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष की एकल संख्या 5 से विभाजित करने का निर्देश है।

Example: Social implication of use of cycle in Urbans

Y33 : 855125

इस उदाहरण में 85 से जोड़ी गयी एकल संख्या मुख्य वर्ग D Engineering के [P] पक्ष की एकल संख्या 5 Transport Vehicle से प्राप्त D 5125 = Cycle है।

86 Ornaments को मुख्य वर्ग L Medicine के [P] पक्ष की एकल संख्या 1 Basic and Regional organs of human body से विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example: Women earring

Y 15: 8683

उपरोक्त उदाहरण में 86 Ornaments के साथ जोड़ी गयी एकल संख्या 83 Ear की प्रतीक अंक हैं। L Medicine मुख्य वर्ग में निर्देशानुसार [P] पक्ष से प्राप्त की गयी हैं। वहाँ पर 183 Ear है। अतः निर्देशानुसार एकल 183 का प्रथम अंक 1 छोड़कर उसके उपविभाजन 83 का ही प्रयोग किया गया है।

[2E][3P] पक्ष– [2E][3P] जहाँ हो उसे Secondary Problem facet कहा जाता है। [E] का द्वितीय आवर्तन (Second Round Energy).[2E][3P] पक्ष कहलाता है। [2E][3P] पक्ष [E] पक्ष की एकल संख्याएँ निम्न प्रकार से हैं–

[E] पक्ष की एकल संख्याएँ 1,3,7,8 के लिए [2E][3P] पक्ष– [E] पक्ष के अन्तर्गत दी गयी एकल संख्या 1 Nomeniclature

को "G Biology" के [E] पक्ष की एकलसंख्या 1 की भाँति विभाजित करने के निर्देश हैं–

Example: Popular description of equipments of metal age people

Y 718:8: 13

1 Nomenclature को मुख्य वर्ग G Biology के [E] पक्ष की एकल संख्या 1 की भाँति विभाजित किया गया है। इस प्रकार 1 Nomeniclature के साथ 3 Popular description की प्रतीक एकल संख्या 3 जोड़ दी गयी है।

[E] पक्ष की एकल संख्या 4 Social Pathology के लिए [2E][3P] पक्ष– [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Social pathology के लिए यह पक्ष अलग से हैं।

Example: Flood relief work

Y : 4355: 67

[2E][3P] पक्ष की एकल संख्या 5 Prevention है। इसको विषय विधि (SD) से विभाजित कर रोकथाम के उपायों को उदाहरण सहित अनुसूची में उल्लेख है।

Example: Prevention of social evils by religious methods

Y : 44: 5 (Q)

इन उदाहरणों में [2E][2P] पक्ष की एकल संख्या 5 Prevention को विषय विधि (SD) से विभाजित किया गया है।

5 Demography [E] [2P] पक्ष की एकल संख्या है। इसके लिए [2E][3P] पक्ष [E] पक्ष की एकल संख्या 4 Pathology के लिए निर्देश दिये गये। यदि आवश्यकता पड़े तो शब्दावली में परिवर्तन किया जा सकता है। ऐसे निर्देश अनुसूची में हैं।

Example: Remedy for concentration of population in cities

Y 35: 585: 6

16.2.9 मुख्य वर्ग कानून (Z) का वर्गांक निर्माण

कानून

Z LAW

पक्ष–परिसूत्र–Z[P],[P2],[P3],[P4]

मुख्य वर्ग कानून के अन्तर्गत अन्तर्राष्ट्रीय कानून, विभिन्न

देशों के कानून धर्म व धार्मिक सम्प्रदायों के कानून व उसके प्राविधानों तथा सम्बन्धित समस्याओं का उल्लेख है।

परिसूत्र की व्व्यख्या–Z[P],[P2],[P3],[P4]

Facet	Term	(IN) By
[P]	Community	GD for a nation and any other localized community and (SD) for other cultural groups
[P2]	Law I	Enumeration
[P3]	Law II	Enumeration
[P4]	Only for 7 Judgement and decree in [P3]	Enumeration

[P] पक्ष– मुख्य वर्ग Z का [P] पक्ष Community Facet है भौगोलिक विधि (GD) से किसी राष्ट्र या भौगोलिक क्षेत्र के लिए वर्गांक बनाया जाता है।

Indian Law

Z 44

International Law of USA

Z73

किसी विशेष प्रकार की संस्कृति, समुदाय व धार्मिक समुदाय के लिए विषय विधि (SD) द्वारा वर्गांक निर्मित किया जाता है।

Hindu Law

[P]

Z (Q2)

प्रस्तुत नियम राजनीतिक दृष्टि से स्वतन्त्र राज्यों या सरकारों से सम्बन्धित परिस्थिंतियों के नियंत्रित करने वाले सार्वजनिक अन्तर्राष्ट्रीय कानून का सूचक है।

[P2] पक्ष– इस पक्ष की एकल संख्या– इस प्रकार इस पक्ष की एकल संख्या 1 Legal person है। अर्थात् वह व्यक्ति जिस पर कानून लागू होता है। उस व्यक्ति को उसकी आयु व लिंग (Age and Sex), पारिवारिक सम्बन्ध (Fiduciafy relations), निवास (Residence), व्यवसाय (Occupation), स्तर (Status), Abnormality विषमता तथा Association (संघ) आदि को दृष्टिं में रखकर विभाजित किया गया है। क्योंकि अलग–अलग श्रेणी

के व्यक्तियों पर कानून भी अलग–अलग प्रकार का लागू होता है।

Example: Divorce in Muslim Law
Z(Q7),1227
Hindu law of adoption
Z(Q2),1235

एकल संख्या 04 Abetment (प्रेरित करना) को सामान्य एकल की भाँति [P2] पक्ष की एकल संख्या 5 Crime के अन्तर्गत दर्शाया गया है। इसे किसी भी एकल संख्या के साथ बाद में जोड़ा जाता है।

Example: British law relating to abetment of murder
[P] [P2]
Z56, 511204

प्रस्तुत उदाहरण में [P2] पक्ष की एकल संख्या 5112 Murder है एकल संख्या 04 Abetment को 5112 के साथ निर्देशानुसार जोड़ दिया गया है।

6 Conflict of laws- "All the divisions of Z based on [P2] and in addition the following". अर्थात् [P2] पक्ष की एकल संख्या 6 Conflict of law को [P2] पक्ष की सभी एकल संख्याओं के साथ पहले जोड़ा जाता है।

Example: Conflict of law relating to immovable property in Britishlaw
Z 56, 621

[P2] पक्ष की एकल संख्या 6 Conflict of laws के साथ [P2] पक्ष की ही एकल संख्या 21 Immovable property जोड़ दी गई है।

97 Regulative law [P2] पक्ष की एकल संख्या है। इसे विषय विधि (SD) के द्वारा विभाजित करने के निर्देश हैं।

Example :-

US war law of mines
Z73, A2113
Evidence in war law
Z, A94

उपरोक्त उदाहरणों में [P2] पक्ष की एकल संख्या के पूर्व ABCD लगाने का निर्देश है।

[P3] पक्ष– [P3] पक्ष Z Law के परिसूत्र में सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष है इसके अन्तर्गत [P2] पक्ष की एकल संख्या 1 Legal person, 2 Property, 3. Contract, 7 Cause of action, 8 Court, 94 Evidence इसके अलावा A,B,C,D, War के लिए अलग–अलग [P3] पक्ष दिया गया है।

Example: Indian law of local bodies jurisdiction

[P] [P2] [P3]

Z44, 186, 1

Right of succession of female in India law

Z44, 115,6

P2 पक्ष की एकल संख्या '2Property' के लिए (P3)

American law relating to landlord and tenants.

[P] [P2] [P3]

= Z73,211,3

Property as stridhan in jewish law.

Z (Q5), 2, 1456

[P2] पक्ष की एकल संख्या 3 Contract के लिए [P3] पक्ष के अन्तर्गत एकल संख्या "1 Capacity" तथा शेष एकल संख्या [P2] पक्ष की एकल संख्या "11 By age and Sex" से लेकर 197 Benami तक की सभी एकल संख्याओं का प्रयोग [P3] पक्ष के रूप में किया जा सकता है।

Example: Benami transactions in China contract law

[P] [P2] [P3]

Z41, 33, 197

[P3] पक्ष [P2] पक्ष की एकल संख्या " 7 Cause of Action के लिए–

Example: Oath summary trials in Pakistan law

[P] [P2][P3]

Z44Q7,751,521

Civil Procedure in summary trial

Z,7511,11

"8 Court" के लिए [P3] पक्ष– [P2] पक्ष की एकल संख्या–

Example: High court judges in Delhi

Z4451, 83, 11

"94 Evidence" के लिए [P3] पक्ष–

Example: Admissibility of hearsay evidence in Hindu law

Z (Q2), 9414,3

A, B, C, D War के लिए [P2] पक्ष तथा [P3] पक्ष की एकल संख्याएँ–

Example: Warfare in International law prisoners of land

Z1, B, 6

Truce proposals in naval warfare

Z1, C, 51

P4 पक्ष– " 7 Judgement and decree" [P2] की एकल संख्या के लिए [P4] पक्ष का विशेष रूप से प्रावधान है।

Example: American law of award partition in Session cases

Z73, 755, 75, 2

प्रस्तुत उदारहण में 73 = American [P] पक्ष, 755 = Session case [P2] पक्ष 75= Award [P3] पक्ष, 2 = Partition [P4] पक्ष है।

Temporary injuction in contested case in Pakistan

Z44Q7, 71, 5

[E] [2P] पक्ष– [E][2P] पक्ष सामान्य पक्ष के रूप में प्रयुक्त नहीं हुआ हैं, बल्कि [P2] पक्ष की एकल संख्या 98 Documents के लिए ही विशेष में रूप दिया गया है।

Example: Indian law of cancellation of deeds

Z 44, 981: 5

Registration of legal document

Z, 98:3

16.3 सारांश

इस प्रकार आपने पुस्तकालय वर्गीकरण का कार्य द्विबिन्दु वर्गीकरण की सहायता से करना सीखा। जो पुस्तकों को सहायक अनुक्रम में रखने हेतु वापस की गई पुस्तकों को पुस्तक निधानियों पर यथा स्थान पहुँचाने हेतु एवं पुस्तकालय विज्ञान के पंचसूत्रों की मांगों को पूरा करने हेतु अत्यन्त ही आवश्यक है। इस इकाई के

अध्ययनोपरान्त आप पुस्तकों को उनसे सम्बन्धित विषयों के साथ रखने एवं उनके वर्गीकरण की प्रक्रिया को विस्तार पूर्वक समझा।

16.4 अभ्यास हेतु प्रश्न

(1) Upanishad.
(2) Symbolic logic.
(3) Aristotle' views on categories.
(4) Philosophy of History
(5) Bhagvata.
(6) Yoga philosophy
(7) Psychology of new born.
(8) Automatic function in hearing of a crimial psychology.
(9) Psychology of Librarians.
(10) Hindu Social psychology.
(11) Home science curriculum for female college students.
(12) Merrill-Palmar Intelligence test.
(13) Teaching of Linguistics.
(14) Examining vocational students in foreign language.
(15) University examinations.
(16) Practical Geography.
(17) Human Geography.
(18) Economic and Commercial Geography of India.
(19) Agriculture Geography.
(20) History of Mediaeval India.
(21) Struggel of Freedom (1857 to 1947).
(22) Indian-Russia peace Policy.
(23) Janta Party.
(24) Indian National Congress.
(25) Select constitutions
(26) Constitutional development and national movement of India
(27) India : Electoral reforms
(28) Freedom of press in Inida
(29) Functions of legislature in world state
(30) State Bank of India.

(31) India foreign trade.

(32) Agriculture finance in Pakistan.

(33) Profit sharing by Alien clerical staff.

(34) Industrial relations in public sector textile industries in socialism.

(35) Bank financing in socialism.

(36) Deed of gift contract in Buddhistic law of China.

(37) Judge of Supreme Court of India.

(38) International law in political science.

(39) Conflict in Tort against crime conducted by woman in political of Australia.

(40) Declaration of land war in Japan.

(41) The sacred laws of the Aryas.

(42) Unemployment of Harijans.

(43) Social life of engineers.

(44) Social culture dimension of rural development.

Rough Work

Rough Work

Rough Work